Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व्यास उवाच॥ पुरा त्रेतायुगे प्राप्ते वैष्णवांशो रघूद्वहः ॥ सूर्यवंशे समुत्पन्नो रामो राजीवलोचनः ॥ १ ॥ स रामो लक्ष्मणश्चैव काकपक्षधरावुभौ ॥ तातस्य वचनात्तौ तु विश्वामित्रमनुव्रतौ ॥ २ ॥ यज्ञसंरक्षणार्थाय राज्ञा दत्तौ कुमारकौ ॥ धनुःशरधरौ वीरौ पितुर्वचनपालकौ ॥ ३ ॥ पथि प्रव्रजतोर्यावत्ताडकानाम राक्षसी ॥ तावदागम्य पुरतस्तस्थौ वै विघ्नकारणात् ॥ ४ ॥ ऋषेरनुज्ञया रामस्ताडकां समघातयत् ॥ प्रादिशच्च धनुर्वेदविद्यां रामाय

दो० । रावण राक्षस को हन्यो यथा देव रघुनाथ । सोइ तीस अध्याय में वर्णित उत्तम गाथ ॥ व्यासजी बोले कि पुरातनसमय त्रेतायुग प्राप्त होने पर विष्णुजी के अंश रघुनायक कमललोचन श्रीरामचन्द्रजी सूर्यवंश में उत्पन्न हुए हैं ॥ १ ॥ और काकपक्षधारी श्रीराम व लक्ष्मणजी वे दोनों पिता के वचन से विश्वामित्रजी के अनुगामी हुए ॥ २ ॥ यज्ञ की रक्षा के लिये राजा दशरथ ने उन दोनों कुमारों को दिया और धनुष व बाण को धारनेवाले वे वीर पिता वचन के पालक हुए ॥ ३ ॥ जब मार्ग में जाते थे तब तक ताड़का नामक राक्षसी आकर विघ्न के कारण आगे स्थित हुई ॥ ४ ॥ और ऋषि की आज्ञा से श्रीरामजी ने ताड़का को मारा और

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विश्वामित्रजी ने श्रीरामजी के लिये धनुर्वेदविद्या को बतलाया ॥ ५ ॥ और इन्द्र के संयोग से गौतमकी स्त्री अहल्या शिला उन श्रीरामचन्द्रजी के चरणतलों के स्पर्श से फिर स्वरूपवती होगई ॥ ६ ॥ और विश्वामित्र का यज्ञ वर्तमान होने पर रघूत्तम रघुनाथजी ने उत्तम बाणों से मारीच व सुबाहु को मारा ॥ ७ ॥ और जनक के घर में धरा हुआ शिवजी का धनुष तोड़डाला और श्रीरामचन्द्रजी ने पन्द्रहवें वर्ष में छः वर्ष की मैथिली ॥ ८ ॥ व अयोनिजा सुन्दरी सीताजी को जब व्याहा तब हे राजन् ! सीताजी को पाकर श्रीरामजी कृतार्थ हुए ॥ ९ ॥ व जब अयोध्याजी को गये तब हे राजन् ! परशुरामजी को देखकर देवताओं को भी दुस्सह समर

गाधिजः ॥ ५ ॥ तस्य पादतलस्पर्शाच्छिला वासवयोगतः ॥ अहल्या गौतमवधूः पुनर्जाता स्वरूपिणी ॥ ६ ॥ विश्वामित्रस्य यज्ञे तु सम्प्रवृत्ते रघूत्तमः ॥ मारीचं च सुबाहुं च जघान परमेषुभिः ॥ ७ ॥ ईश्वरस्य धनुर्भग्नं जनकस्य गृहे स्थितम् ॥ रामः पञ्चदशे वर्षे षड्वर्षां चैव मैथिलीम् ॥ ८ ॥ उपयेमे यदा राजन्रम्यां सीतामयोनिजाम् ॥ कृतकृत्यस्तदा जातः सीतां सम्प्राप्य राघवः ॥ ९ ॥ अयोध्यामगमन्मार्गे जामदग्न्यमवेक्ष्य च ॥ संग्रामोऽभूत्तदा राजन्देवानामपि दुःसहः ॥ १० ॥ ततो रामं पराजित्य सीतया गृहमागतः ॥ ततो द्वादशवर्षाणि रेमे रामस्तया सह ॥ ११ ॥ सप्तविंशतिमे वर्षे यौवराज्यप्रदायकम् ॥ राजानमथ कैकेयी वरद्वयमयाचत ॥ १२ ॥ तयोरेकेन रामस्तु ससीतः सहलक्ष्मणः ॥ जटाधरः प्रव्रजतां वर्षाणीह चतुर्दश ॥ १३ ॥ भरतस्तु द्वितीयेन यौवराज्याधिपोस्तु मे ॥ मन्थरावचनान्मूढा वरमेतमयाचत ॥ १४ ॥ जानकीलक्ष्मणसखं रामं प्राव्राजयन्नृपः ॥ त्रिरात्रमुदकाहारश्चतुर्थेह्नि

हुआ ॥ १० ॥ तदनन्तर परशुरामजी को जीतकर श्रीरामजी सीता समेत घर को आये तदनन्तर श्रीरामजी ने उन जानकीजी समेत बारह वर्ष तक रमण किया ॥ ११ ॥ इसके अनन्तर सत्ताईसवें वर्ष में युवराजता को देनेवाले राजा दशरथ से कैकेयी ने दो वरों को मांगा ॥ १२ ॥ उन दोनों में से एक वर से सीता समेत व लक्ष्मण सहित श्रीरामजी जटाओं को धारण कर चौदह वर्ष तक वन को जावैं ॥ १३ ॥ और मेरे दूसरे वरदान से भरतजी युवराजता के स्वामी होवैं मंथरा के वचन से मूढ़ कैकेयी ने इस वर को मांगा ॥ १४ ॥ और राजा दशरथ ने जानकी व लक्ष्मण सखावाले श्रीरामजी को वनवास दिया और तीन रात्रि तक जलाहारी व चौथे दिन

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

फल को भोजन करनेवाले ॥ १५ ॥ श्रीरामजी ने पांचवें दिन चित्रकूट में निवास किया तब हा राम! ऐसा कहते हुए दशरथजी स्वर्ग को चलेगये ॥ १६ ॥ वे दशरथजी ब्राह्मण का शाप सफल कर स्वर्ग को गये तदनन्तर भरत व शत्रुघ्न चित्रकूट में आये ॥ १७ ॥ व हे राजन्! रामजी से पिता को स्वर्ग में प्राप्त बतलाकर भरतजी इन श्रीरामजी के लौटने के लिये समझा कर ॥ १८ ॥ तदनन्तर भरत व शत्रुघ्नजी नंदिग्राम को आये और वहां राज्य को धारण किये दोनों पादुका पूजन में परायण हुए ॥ १९ ॥ और श्रीरामजी महात्मा अत्रिजी को देखकर दण्डकारण्य को आये व राक्षसगणों के मारने के प्रारंभ में विराध के मारने पर ॥ २० ॥ साढ़े तेरह वर्ष

फलाशनः ॥ १५ ॥ पञ्चमे चित्रकूटे तु रामो वासमकल्पयत् ॥ तदा दशरथः स्वर्गं गतो राम इति ब्रुवन् ॥ १६ ॥ ब्रह्मशापं तु सफलं कृत्वा स्वर्गं जगाम सः ॥ ततो भरतशत्रुघ्नौ चित्रकूटे समागतौ ॥ १७ ॥ स्वर्गतं पितरं राजन् रामाय विनिवेद्य च ॥ सान्त्वनं भरतश्चास्य कृत्वा निवर्तनं प्रति ॥ १८ ॥ ततो भरतशत्रुघ्नौ नन्दिग्रामं समागतौ ॥ पादुकापूजनरतौ तत्र राज्यधरावुभौ ॥ १९ ॥ अत्रिं दृष्ट्वा महात्मानं दण्डकारण्यमागमत् ॥ रक्षोगणवधारम्भे विराधे विनिपातिते ॥ २० ॥ अर्द्धत्रयोदशे वर्षे पञ्चवट्यामुवास ह ॥ ततो विरूपयामास शूर्पणखां निशाचरीम् ॥ वने विचरतस्तस्य जानकीसहितस्य च ॥ २१ ॥ आगतो राक्षसो घोरः सीतापहरणाय सः ॥ ततो माघासिताष्टम्यां मुहूर्ते वृन्दसंज्ञके ॥ २२ ॥ राघवाभ्यां विना सीतां जहार दशकन्धरः ॥ मारीचस्याश्रमं गत्वा मृगरूपेण तेन च ॥ २३ ॥ नीत्वा दूरं राघवं च लक्ष्मणेन समन्वितम् ॥ ततो रामो जघानाशु मारीचं मृगरूपिणम् ॥ २४ ॥ पुनः प्राप्याश्रमं

पंचवटी में बसे तदनन्तर उन्हों ने शूर्पणखा राक्षसी को विरूप किया और जानकी समेत वन में घूमते हुए उन श्रीरामजी के ॥ २१ ॥ वह भयंकर रावण राक्षस सीता जी के हरने के लिये आया तदनन्तर माघ की कृष्ण पक्षवाली अष्टमी में वृन्दसंज्ञक मुहूर्त में ॥ २२ ॥ रावण ने मारीच के आश्रम को जाकर श्रीराम व लक्ष्मणजी के बिना सीताजी को हरलिया और उस मृगरूपधारी मारीच ने ॥ २३ ॥ लक्ष्मण समेत श्रीरामजी को दूर ले जाकर माया किया तदनन्तर मृगरूपी मारीच को श्रीराम जी ने शीघ्रही मारा ॥ २४ ॥ फिर आश्रम को प्राप्त होकर श्रीरामजी ने सीता के बिना आश्रम को देखा और वहां हरी जाती हुई वे सीताजी कुररी पक्षिणी की नाईं

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रोनेलगीं ॥ २५ ॥ कि हे राम! हे राम! राक्षस से हरी हुई मेरी रक्षा कीजिये रक्षा कीजिये जैसे क्षुधा से संयुत बाजपक्षी चिल्लाती हुई वर्तिका (बटेर) को लेजाता है ॥ २६ ॥ वैसेही कामदेव के वश में प्राप्त यह राक्षस रावण जनक की कन्या (जानकी) जी को लिये जाता है तब उस वचन को सुनकर पक्षिराज गीध ने ॥ २७ ॥ राक्षसेन्द्र रावण से युद्ध किया व रावण से मारा हुआ वह गिरपड़ा और माघ के कृष्णपक्ष की नवमी में रावण के मन्दिर में बसती हुई जानकीजी को ॥ २८ ॥ ढूंढ़ते हुए वे राम, लक्ष्मण दोनों भाई उस समय ॥ २९ ॥ जटायु को देखकर व राक्षस से हरी हुई सीता को जानकर तदनन्तर उन श्रीरामजी ने पक्षी गृध्रराज का दाहा-

रामो विना सीतां ददर्श ह ॥ तत्रैव ह्रियमाणा सा चक्रन्द कुररी यथा ॥ २५ ॥ रामरामेति मां रक्ष रक्ष मां रक्षसा हृताम् ॥ यथा श्येनः क्षुधायुक्तः क्रन्दन्तीं वर्तिकां नयेत् ॥ २६ ॥ तथा कामवशं प्राप्तो राक्षसो जनकात्मजाम् ॥ नयत्येष जनकजां तच्छ्रुत्वा पक्षिराट् तदा ॥ २७ ॥ युयुधे राक्षसेन्द्रेण रावणेन हतोऽपतत् ॥ माघासितनवम्यां तु वसन्तीं रावणालये ॥ २८ ॥ मार्गमाणौ तदा तौ तु भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥ २९ ॥ जटायुषं तु दृष्ट्वैव ज्ञात्वा राक्षससंहृताम् ॥ सीतां ज्ञात्वा ततः पक्षी संस्कृतस्तेन भक्तितः ॥ ३० ॥ अग्रतः प्रययौ रामो लक्ष्मणस्तत्पदानुगः ॥ पम्पाभ्याशमनुप्राप्य शबरीमनुगृह्य च ॥ ३१ ॥ तज्जलं समुपस्पृश्य हनुमद्दर्शनं कृतम् ॥ ततो रामो हनुमता सह सख्यं चकार ह ॥ ३२ ॥ ततः सुग्रीवमभ्येत्य अहनद्वालिवानरम् ॥ प्रेषिता रामदेवेन हनुमत्प्रमुखाः प्रियाम् ॥ ३३ ॥ अङ्गुलीयकमादाय वायुसूनुस्तदा गतः ॥ सम्पातिर्दशमे मासि आचख्यौ वानराय ताम् ॥ ३४ ॥ ततस्त

दिक कर्म किया ॥ ३० ॥ आगे श्रीरामजी चले व उनके पीछे लक्ष्मणजी चले और पंपासर के समीप प्राप्त होकर शबरी के ऊपर दयाकर ॥ ३१ ॥ उस पंपासर के जल को स्पर्श कर उन्हों ने हनुमान्जी का दर्शन किया तदनन्तर श्रीरामजी ने हनुमान्जी के साथ मित्रता की ॥ ३२ ॥ तदनन्तर सुग्रीव के समीप जाकर बालि वानर को मारा और श्रीरामदेवजी ने हनुमान् आदिक वानरों को सीताजी के समीप पठाया ॥ ३३ ॥ तब हनुमान्जी अँगूठा को लेकर गये और दशवें महीने में संपाति वानर ने हनुमान् वानर से उन जानकीजी को कहा ॥ ३४ ॥ तदनन्तर उस संपाति के वचन से हनुमान्जी सौ योजन समुद्र को नांघगये व उन्होंने उस रात में लंका में

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जानकीजी को सब ओर ढूंढा ॥ ३५ ॥ और उसी रात के शेष रहने पर हनुमान्जीको सीताजी का दर्शन हुआ और द्वादशी में हनुमान्जी शिशम के वृक्षपै चढ़े ॥ ३६ ॥ और उस रातमें उन्होंने जानकीजी के विश्वास के लिये कथा को कहा तदनन्तर तेरसि तिथि में अक्षकुमार आदिकों के साथ युद्ध वर्तमान हुआ ॥ ३७ ॥ और तेरसि में मेघनादने हनुमान्जी को ब्रह्मास्त्र से बांध लिया और हनुमान्जी ने कठोर व रूखे वचनों को राक्षसाधिप रावण से कहा व ब्रह्मास्त्र से संयुत तथा बँधेहुए उन्होंने पुच्छ से संयुत आग से लंका को जलादिया ॥ ३८।३९ ॥ और पौर्णमासी में हनुमान्जी का महेन्द्र पर्वत पै आगमन हुआ व मार्गशीर्ष की परेवा से पांच दिनों से मार्गमें ॥ ४० ॥

द्वचनादब्धिं पुप्लुवे शतयोजनम् ॥ हनुमान्निशि तस्यां तु लङ्कायां परितोऽचिनोत् ॥ ३५ ॥ तद्रात्रिशेषे सीताया दर्शनं तु हनूमतः ॥ द्वादश्यां शिंशपावृक्षे हनुमान्पर्यवस्थितः ॥ ३६ ॥ तस्यां निशायां जानक्या विश्वासायाह संकथाम् ॥ अक्षादिभिस्त्रयोदश्यां ततो युद्धमवर्त्तत ॥ ३७ ॥ ब्रह्मास्त्रेण त्रयोदश्यां बद्धः शक्रजिता कपिः ॥ दारुणानि च रूक्षाणि वाक्यानि राक्षसाधिपम् ॥ ३८ ॥ अब्रवीद्वायुसूनुस्तं बद्धो ब्रह्मास्त्रसंयुतः ॥ वह्निना पुच्छयुक्तेन लङ्काया दहनं कृतम् ॥ ३९ ॥ पूर्णिमायां महेन्द्राद्रौ पुनरागमनं कपेः ॥ मार्गशीर्षप्रतिपदः पञ्चभिः पथि वासरैः ॥ ४० ॥ पुनरागत्य वर्षेऽह्नि ध्वस्तं मधुवनं किल ॥ सप्तम्यां प्रत्यभिज्ञानदानं सर्वनिवेदनम् ॥ ४१ ॥ मणिप्रदानं सीतायाः सर्वं रामाय शंसयत् ॥ अष्टम्युत्तरफाल्गुन्यां मुहूर्त्ते विजयाभिधे ॥ ४२ ॥ मध्यं प्राप्ते सहस्रांशौ प्रस्थानं राघवस्य च ॥ रामः कृत्वा प्रतिज्ञां हि प्रयातुं दक्षिणां दिशम् ॥ ४३ ॥ तीर्त्वाहं सागरमपि हनिष्ये राक्षसेश्वरम् ॥ दक्षिणाशां

फिर आकर वर्ष दिनमें मधुवनको विध्वंस किया और सप्तमीमें चीन्ह को दिया व सब वृत्तान्त निवेदन किया ॥ ४१ ॥ हनुमान्जी ने सीताजी के मणि प्रदान आदि समस्त वृत्तान्तको श्रीरामजी से निवेदन किया और अष्टमीमें उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में विजय संज्ञक मुहूर्त्त में ॥ ४२ ॥ सूर्यनारायण के मध्य में प्राप्त होनेपर श्रीरामजी का प्रस्थान हुआ व श्रीरामजी दक्षिण दिशा को जाने के लिये प्रतिज्ञा करके ॥ ४३ ॥ यह कहा कि मैं समुद्र को भी उतरकर रावण को मारूंगा और दक्षिण दिशा को जातेहुए उन

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

श्रीरामजी के सुग्रीव मित्र हुए ॥ ४४ ॥ और सात दिनों में समुद्र के किनारेपर सेनाका टिकाश्रय हुआ व पौष के शुक्लपक्ष की परेवा से तीज तिथितक सेना समेत श्रीरामजी समुद्र के समीप टिकेरहे ॥ ४५ ॥ और चौथि तिथि में विभीषणजी श्रीरामचन्द्रजी को मिले व पंचमी तिथि में समुद्र को उतरने के लिये सलाह हुई ॥ ४६ ॥ और श्रीरामजी ने चार दिन अन्न जल को छोड़कर व्रत किया तब समुद्र से वर मिला व यत्न दिखलाया गया ॥ ४७ ॥ और दशमी तिथि में सेतु का प्रारम्भ हुआ व तेरसि में समाप्तहुआ और चौदसि तिथि में श्रीरामजी ने सुवेल पर्वत पै सेना को टिकाया ॥ ४८ ॥ व पौर्णमासी तिथि से दुइज तक तीन दिनों से सेना उतरी और वीर

प्रयातस्य सुग्रीवोऽथाभवत्सखा ॥ ४४ ॥ वासरैः सप्तभिः सिंधोस्तीरे सैन्यनिवेशनम् ॥ पौषशुक्लप्रतिपदस्तृतीयां यावदम्बुधौ ॥ उपस्थानं ससैन्यस्य राघवस्य बभूव ह ॥ ४५ ॥ विभीषणश्चतुर्थ्यां तु रामेण सह सङ्गतः ॥ समुद्रतरणार्थाय पञ्चम्यां मन्त्र उद्यतः ॥ ४६ ॥ प्रायोपवेशनं चक्रे रामो दिनचतुष्टयम् ॥ समुद्राद्वरलाभश्च सहोपायप्रदर्शनः ॥ ४७ ॥ सेतोर्दशम्यामारम्भस्त्रयोदश्यां समापनम् ॥ चतुर्दश्यां सुवेलाद्रौ रामः सेनां न्यवेशयत् ॥ ४८ ॥ पूर्णिमास्या द्वितीयायां त्रिदिनैः सैन्यतारणम् ॥ तीर्त्वा तोयनिधिं रामः शूरवानरसैन्यवान् ॥ ४९ ॥ रुरोध च पुरीं लङ्कां सीतार्थं शुभलक्षणः ॥ तृतीयादिदशम्यन्तं निवेशश्च दिनाष्टकः ॥ ५० ॥ शुकसारणयोस्तत्र प्राप्तिरेकादशीदिने ॥ पौषासिते च द्वादश्यां सैन्यसंख्यानमेव च ॥ ५१ ॥ शार्दूलेन कपीन्द्राणां सारासारोपवर्णनम् ॥ त्रयोदश्याद्यमान्ते च लङ्कायां दिवसैस्त्रिभिः ॥ ५२ ॥ रावणः सैन्यसंख्यानं रणोत्साहं तदाऽकरोत् ॥ प्रययावङ्गदो

वानरों की सेनावाले श्रीरामजी ने समुद्र को उतरकर ॥ ४९ ॥ सीता के लिये उत्तम लक्षणोंवाले श्रीरामजी ने लंकापुरी को घेरलिया और तीज से लगाकर दशमीतक आठ दिन सेना टिकी रही ॥ ५० ॥ और वहां एकादशी तिथि में शुक व सारण मंत्री का मिलाप हुआ व पौष के कृष्णपक्ष में द्वादशी तिथि में सेना की गिनती हुई ॥ ५१ ॥ व कपीन्द्रों के मध्य में श्रेष्ठ सुग्रीव ने सारांश व असारांश का वर्णन किया और तेरसि से लगाकर अमावस तक लंका में तीन दिनों से ॥ ५२ ॥ रावण

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने सेना की गिनती की तब युद्ध करने का उत्साह किया व माघशुक्ल की प्रतिपदा तिथि में अंगद दूतता में गये ॥ ५३ ॥ तब माघशुक्ल द्वितीया तिथि में सीताजी को पति का माया से मस्तकादि का दर्शन कराया गया और सात दिनों में अष्टमी पर्यन्त ॥ ५४ ॥ राक्षसों व वानरों का बड़ा भारी युद्ध हुआ व माघशुक्ल नवमी तिथि में रात्रि को युद्ध में मेघनाद ने ॥ ५५ ॥ श्रीराम व लक्ष्मणजी को नागपाश से बाँध लिया व वानरेशों के विकल होने पर व सबों की आशा टूटने पर ॥ ५६ ॥ उस समय श्रीरामजी ने पवन के उपदेश से गरुड़ को स्मरण किया और दशमी में नागपाश से छुड़ाने के लिये गरुड़जी आये ॥ ५७ ॥ व माघशुक्ल

दौत्ये माघशुक्लाद्यवासरे ॥ ५३ ॥ सीतायाश्च तदा भर्तुर्मायामूर्धादिदर्शनम् ॥ माघशुक्लद्वितीयायां दिनैः सप्तभिर
ष्टमीम् ॥ ५४ ॥ रक्षसां वानराणां च युद्धमासीच्च संकुलम् ॥ माघशुक्लनवम्यां तु रात्राविन्द्रजिता रणे ॥ ५५ ॥
रामलक्ष्मणयोर्नागपाशबन्धः कृतः किल ॥ आकुलेषु कपीशेषु हताशेषु च सर्वशः ॥ ५६ ॥ वायूपदेशाद्गरुडं स
स्मार राघवस्तदा ॥ नागपाशविमोक्षार्थं दशम्यां गरुडोऽभ्यगात् ॥ ५७ ॥ अवहारो माघशुक्लस्यैकादश्या दिनद्वय
म् ॥ द्वादश्यामाञ्जनेयेन धूम्राक्षस्य वधः कृतः ॥ ५८ ॥ त्रयोदश्यां तु तेनैव निहतोऽकम्पनो रणे ॥ मायासीतां दर्श
यित्वा रामाय दशकन्धरः ॥ ५९ ॥ त्रासयामास च तदा सर्वान्सैन्यगतानपि ॥ माघशुक्लचतुर्दश्या यावत्कृष्णादि
वासरम् ॥ ६० ॥ त्रिदिनेन प्रहस्तस्य नीलेन विहितो वधः ॥ माघकृष्णद्वितीयायाश्चतुर्थ्यन्तं त्रिभिर्दिनैः ॥ ६१ ॥
रामेण तुमुले युद्धे रावणो द्रावितो रणात् ॥ पञ्चम्या अष्टमी यावद्रावणेन प्रबोधितः ॥ ६२ ॥ कुम्भकर्णस्तदा चक्रे

की एकादशी से दो दिन तक फिर युद्ध हुआ व द्वादशी तिथि में हनुमान्जी ने धूम्राक्ष को मारा ॥ ५८ ॥ व तेरसि तिथि में उन्हीं ने समर में अकंपन को मारा व रावण ने श्रीरामजी को माया की सीता को दिखलाकर ॥ ५९ ॥ उस समय सेना में प्राप्त सब लोगों को डरवाया व माघशुक्ल की चौदसि से कृष्णपक्ष की परेवा तक ॥ ६० ॥ तीन दिन में नील वानर ने प्रहस्त का वध किया व माघकृष्ण की द्वितीया से चौथि तक तीन दिनों में ॥ ६१ ॥ श्रीरामजी ने बड़े युद्ध में रावण को युद्ध से भगा दिया व पंचमी से लगाकर अष्टमी तक रावण ने कुंभकर्ण को जगाया तब कुंभकर्ण ने चार दिन तक भोजन किया और कुंभकर्ण ने नवमी से लगाकर

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चार दिनों तक युद्ध किया ॥ ६२ । ६३ ॥ व श्रीरामजी ने युद्ध में बहुत वानरों को खानेवाले कुंभकर्ण को मारा और अमावस के दिन शोकाभ्यवहार हुआ ॥ ६४ ॥ और फाल्गुन की प्रतिपदा से लगाकर चौथि तक चार दिनों में नरांतक आदिक पांच राक्षस मारे गये ॥ ६५ ॥ और पंचमी से सप्तमी तक तीन दिन में अतिकाय का वध हुआ व अष्टमी से द्वादशी तक पांच दिन में निकुंभ व कुंभ ये दोनों मारे गये और मकराक्ष चार दिनों में मारा गया व फाल्गुन के कृष्णपक्ष की दुइज के दिन मेघनाद जीता गया ॥ ६६ । ६७ ॥ और तीज से लगाकर सप्तमी तक पांच दिन तक ओषधी लाने की व्यग्रता से युद्ध बन्द रहा ॥ ६८ ॥ और अष्टमी में

ऽभ्यवहारं चतुर्दिनम् ॥ कुम्भकर्णोऽकरोद्युद्धं नवम्यादिचतुर्दिनैः ॥ ६३ ॥ रामेण निहतो युद्धे बहुवानरभक्षकः ॥ अमावास्यादिने शोकाऽभ्यवहारो बभूव ह ॥ ६४ ॥ फाल्गुनप्रतिपदादौ चतुर्थ्यन्तैश्चतुर्दिनैः ॥ नरान्तकप्रभृतयो निहताः पञ्च राक्षसाः ॥ ६५ ॥ पञ्चम्याः सप्तमीं यावदतिकायवधस्त्र्यहात् ॥ अष्टम्या द्वादशीं यावन्निहतौ दिनपञ्चकात् ॥ ६६ ॥ निकुम्भकुम्भौ द्वावेतौ मकराक्षश्चतुर्दिनैः ॥ फाल्गुनासितद्वितीयाया दिने वै शक्रजिज्जितः ॥ ६७ ॥ तृतीयादौ सप्तम्यन्तदिनपञ्चकमेव च ॥ ओषध्यानयवैयग्र्यादवहारो बभूव ह ॥ ६८ ॥ अष्टम्यां रावणो मायामैथिलीं हतवान्कुधीः ॥ शोकावेगात्तदा रामश्चक्रे सैन्यावधारणम् ॥ ६९ ॥ ततस्त्रयोदशीं यावद्दिनैः पञ्चभिरिन्द्रजित् ॥ लक्ष्मणेन हतो युद्धे विख्यातबलपौरुषः ॥ ७० ॥ चतुर्दश्यां दशग्रीवो दीक्षामापावहारतः ॥ अमावास्यादिने प्रागाद्युद्धाय दशकन्धरः ॥ ७१ ॥ चैत्रशुक्लप्रतिपदः पञ्चमीं दिनपञ्चके ॥ रावणो युध्यमानोऽभूत्प्रचुरो रक्षसां वधः ॥ ७२ ॥

कुबुद्धि रावण ने मायारूपिणी जानकीजी को मारा तब शोक के वेग से श्रीरामजी ने सेना का निश्चय किया ॥ ६९ ॥ तदनन्तर त्रयोदशी से पांच दिनों में प्रसिद्ध बल व पौरुषवाला मेघनाद युद्ध में लक्ष्मणजी से मारा गया ॥ ७० ॥ और चौदसि में युद्ध बंद होने के कारण रावण यज्ञदीक्षा को प्राप्त हुआ व अमावस दिन में रावण युद्ध के लिये गया ॥ ७१ ॥ और चैत के शुक्लपक्ष की परेवा से पंचमी तक पांच दिन रावण युद्ध करता रहा और राक्षसों का बहुत वध हुआ ॥ ७२ ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व चैत के शुक्लपक्ष की अष्टमी तक रथ व अश्वादिकों का नाश हुआ और चैत के शुक्लपक्ष की नवमी में लक्ष्मणजी के शक्ति का भेदन होने पर ॥ ७३ ॥ क्रोध से संयुत श्रीरामजी ने रावण को भगा दिया और विभीषण के उपदेश से हनुमान्जी का युद्ध हुआ ॥ ७४ ॥ और हनुमान्जी लक्ष्मणजी के लिये ओषधी लाने के कारण द्रोणाचल को आये व विशल्यकरणी ओषधी को लाकर उसको लक्ष्मणजी को पिला दिया ॥ ७५ ॥ व दशमी में युद्ध शांत रहा और रात्रि में राक्षसों का युद्ध हुआ और एकादशी में श्रीरामजी के लिये रथ व मातलि सारथी प्राप्त हुआ और द्वादशी से लगाकर कृष्णपक्ष की चौदसि तक अठारह दिनों में श्रीरामजी ने रावण को

चैत्रशुक्लाष्टमीं यावत्स्यन्दनाश्वादिसूदनम् ॥ चैत्रशुक्लनवम्यां तु सौमित्रेः शक्तिभेदने ॥ ७३ ॥ कोपाविष्टेन रामेण द्रावितो दशकन्धरः ॥ विभीषणोपदेशेन हनुमद्युद्धमेव च ॥ ७४ ॥ द्रोणाद्रेरोषधीं नेतुं लक्ष्मणार्थमुपागतः ॥ विशल्यां तु समादाय लक्ष्मणं तामपाययत् ॥ ७५ ॥ दशम्यामवहारोऽभूद्रात्रौ युद्धं तु रक्षसाम् ॥ एकादश्यां तु रामाय रथो मातलिसारथिः ॥ ७६ ॥ प्राप्तो युद्धाय द्वादश्या यावत्कृष्णां चतुर्द्दशीम् ॥ अष्टादशदिनै रामो रावणं द्वैरथेऽवधीत् ॥ ७७ ॥ संस्कारा रावणादीनाममावास्यादिनेऽभवन् ॥ संग्रामे तुमुले जाते रामो जयमवाप्तवान् ॥ ७८ ॥ माघशुक्लद्वितीयादिचैत्रकृष्णचतुर्द्दशीम् ॥ सप्ताशीतिदिनान्येवं मध्ये पञ्चदशाहकम् ॥ ७९ ॥ युद्धावहारः संग्रामो द्वासप्ततिदिनान्यभूत् ॥ वैशाखादितिथौ राम उवास रणभूमिषु ॥ अभिषिक्तो द्वितीयायां लङ्काराज्ये विभीषणः ॥ ८० ॥ सीताशुद्धिस्तृतीयायां देवेभ्यो वरलम्भनम् ॥ दशरथस्यागमनं तत्र चैवानुमोदनम् ॥ ८१ ॥ हत्वा

द्वैरथ युद्ध में मारा ॥ ७६ । ७७ ॥ और अमावस के दिन रावणादिकों के संस्कार हुए व बड़ाभारी संग्राम होने पर श्रीरामजी ने जीत को पाया ॥ ७८ ॥ इस प्रकार माघ महीने के शुक्लपक्ष की द्वितीया से लगाकर चैत महीने की कृष्णपक्षवाली चौदसि तक सत्तासी दिन हुए और बीच में पंद्रह दिन ॥ ७९ ॥ युद्ध बंद हुआ और बहत्तरि दिन युद्ध हुआ व वैशाख की प्रतिपदा तिथि में श्रीरामजी ने युद्धभूमियों में निवास किया और दुइज तिथि में लंका के राज्य पै विभीषण का अभिषेक किया गया ॥ ८० ॥ और तीज तिथि में सीताजी की शुद्धि हुई व देवताओं से वरदान मिला और वहां दशरथ का आगमन हुआ व अनुमोदन हुआ ॥ ८१ ॥ और

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लक्ष्मण के बड़े भाई व्यापक श्रीरामजी शीघ्रता से लंकेश रावण को मारकर राक्षस से दुःखित पवित्र जानकीजी को लेकर ॥ ८२ ॥ वैशाख की चौथि में श्रीरामजी पुष्पक विमान पै बैठकर व बड़ी प्रीति से जानकीजी को लेकर लौटे ॥ ८३ ॥ फिर आकाश के द्वारा अयोध्यापुरी को लौटे और चौदह वर्ष पूर्ण होने पर वैशाख की पंचमी में ॥ ८४ ॥ गणों समेत श्रीरामजी भारद्वाजजी के आश्रम में पैठे और छठि तिथि में वे पुष्पक विमान के द्वारा नंदिग्राम में आये ॥ ८५ ॥ और सप्तमी तिथि में इन रघुनाथजी का अयोध्यापुरी में अभिषेक किया गया दश अधिक चौदह महीने तक जानकीजी ने ॥ ८६ ॥ श्रीरामजी से रहित होकर रावण के घर

त्वरेण लङ्केशं लक्ष्मणस्याग्रजो विभुः ॥ गृहीत्वा जानकीं पुण्यां दुःखितां राक्षसेन तु ॥ ८२ ॥ आदाय परया प्रीत्या जानकीं स न्यवर्तत ॥ वैशाखस्य चतुर्थ्यां तु रामः पुष्पकमाश्रितः ॥ ८३ ॥ विहायसा निवृत्तस्तु भूयोऽयोध्यां पुरीं प्रति ॥ पूर्णे चतुर्दशे वर्षे पञ्चम्यां माधवस्य च ॥ ८४ ॥ भारद्वाजाश्रमे रामः सगणः समुपाविशत् ॥ नन्दिग्रामे तु षष्ठ्यां स पुष्पकेण समागतः ॥ ८५ ॥ सप्तम्यामभिषिक्तोऽसावयोध्यायां रघूद्वहः ॥ दशाहाधिकमासांश्च चतुर्दश हि मैथिली ॥ ८६ ॥ उवास रामरहिता रावणस्य निवेशने ॥ द्वाचत्वारिंशके वर्षे रामो राज्यमकारयत् ॥ ८७ ॥ सीता यास्तु त्रयस्त्रिंशद्वर्षाणि तु तदाभवन् ॥ स चतुर्दशवर्षान्ते प्रविष्टः स्वां पुरीं प्रभुः ॥ ८८ ॥ अयोध्यांनाम मुदितो रामो रावणदर्पहा ॥ भ्रातृभिः सहितस्तत्र रामो राज्यमकारयत् ॥ ८९ ॥ दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च ॥ रामो राज्यं पालयित्वा जगाम त्रिदिवालयम् ॥ ९० ॥ रामराज्ये तदा लोका हर्षनिर्भरमानसाः ॥ बभूवुर्धनधान्याढ्याः पुत्रपौत्रयुता नराः ॥ ९१ ॥ कामवर्षी च पर्जन्यः सस्यानि गुणवन्ति च ॥ गावस्तु घटदोहिन्यः पादपाश्च सदा

में निवास किया बयालीसवें वर्ष में श्रीरामजी ने राज्य किया ॥ ८७ ॥ तब सीताजी के तेंतीस वर्ष हुए और रावण का गर्व नाशनेवाले वे प्रभु श्रीरामजी प्रसन्न होकर चौदह वर्ष के अन्त में अयोध्या नामक अपनी पुरी में पैठे और वहां भाइयों समेत श्रीरामजी ने राज्य किया ॥ ८८ । ८९ ॥ गेरह हज़ार वर्ष तक श्रीरामजी राज्य को पालन कर स्वर्ग को चलेगये ॥ ९० ॥ उस श्रीरामजी के राज्य में मनुष्यों के मन हर्ष से पूर्ण हुए व पुत्रों और पौत्रों से संयुत मनुष्य धन व धान्य से युक्त हुए ॥ ९१ ॥ और

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मेघ इच्छा के अनुकूल बरसते थे व अन्न गुणवान् होते थे और गौवैं घड़ाभर दूध देनेवाली थीं व वृक्ष सदैव फलते थे ॥ ९२ ॥ व हे नराधिप ! श्रीरामजी के राज्य में मानसी व्यथा व रोग न हुए और स्त्रियां पतिव्रता हुईं व मनुष्य पितरों की भक्ति में परायण हुए ॥ ९३ ॥ और ब्राह्मणलोग सदैव वेद में परायण हुए व क्षत्रिय ब्राह्मणों के सेवक हुए और वैश्य जातिवाले लोग सदैव ब्राह्मणों व गौवों की भक्ति को करते थे ॥ ९४ ॥ व उस राज्य में संकरवर्ण व संकर आचरण नहीं हुआ है और स्त्री बंध्या व दुर्भाग्यवती तथा काकबंध्या और मृतवत्सा नहीं होती थी ॥ ९५ ॥ और कोई भी स्त्री विधवा न हुई व पतिसंयुत स्त्री विलाप नहीं करती थी और कोई मनुष्य माता, पिता व गुरु का अपमान नहीं करते थे ॥ ९६ ॥ और कोई पुण्यकारी मनुष्य वृद्धों का वचन उल्लंघन नहीं करता

फलाः ॥ ९२ ॥ नाधयो व्याधयश्चैव रामराज्ये नराधिप ॥ नार्यः पतिव्रताश्चासन्पितृभक्तिपरा नराः ॥ ९३ ॥ द्विजा वेदपरा नित्यं क्षत्रिया द्विजसेविनः ॥ कुर्वते वैश्यवर्णाश्च भक्तिं द्विजगवां सदा ॥ ९४ ॥ न योनिसङ्करश्चासीत्तत्र नाचारसङ्करः ॥ न बन्ध्या दुर्भगा नारी काकबन्ध्या मृतप्रजा ॥ ९५ ॥ विधवा नैव काप्यासील्लप्यते न सभर्तृका ॥ नावज्ञां कुर्वते केपि मातापित्रोर्गुरोस्तथा ॥ ९६ ॥ न च वाक्यं हि वृद्धानामुल्लङ्घयति पुण्यकृत् ॥ न भूमिहरणं तत्र परनारीपराङ्मुखाः ॥ ९७ ॥ नापवादपरो लोको न दरिद्रो न रोगभाक् ॥ न स्तेयो द्यूतकारी च मैरेयी पापिनो न हि ॥ ९८ ॥ न हेमहारी ब्रह्मघ्नो न चैव गुरुतल्पगः ॥ न स्त्रीघ्नो न च बालघ्नो न चैवानृतभाषणः ॥ ९९ ॥ न वृत्तिलोपकश्चासीत्कूटसाक्षी न चैव हि ॥ न शठो न कृतघ्नश्च मलिनो नैव दृश्यते ॥ १०० ॥ सदा सर्वत्र पूज्यन्ते ब्राह्मणा

था व उस राज्य में पृथ्वी का हरण नहीं होता था और मनुष्य पराई स्त्रियों से विमुख होते थे ॥ ९७ ॥ व मनुष्य कलंक में तत्पर नहीं होता था और निर्धनी व रोगी नहीं होता था और चोर, जुँवारी व मदिरा पीनेवाला और पापी मनुष्य नहीं होते थे ॥ ९८ ॥ और सुवर्ण को चुरानेवाला, ब्रह्मघाती व गुरु की शय्या पै जानेवाला नहीं हुआ और न स्त्री को मारनेवाला तथा न बालघाती और न असत्यवादी हुआ ॥ ९९ ॥ और जीविका को लोप करनेवाला व झूंठी गवाही देनेवाला मनुष्य नहीं हुआ और न शठ न कृतघ्न न मलीन देख पड़ता था ॥ १०० ॥ व हे राजन् ! बहुतही प्रसिद्ध श्रीरामजी के राज्य में सदैव सब कहीं वेदों के पार-

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गामी ब्राह्मण पूजे जाते थे और कोई अवैष्णव व व्रतविहीन न था ॥ १ ॥ और उन श्रीरामजी के राज्य करते हुए बड़े ऐश्वर्यवान् व तपस्या के निधान ब्रह्मपुत्र वसिष्ठजी मुनियों समेत अनेक तीर्थों को करके आये और श्रीरामजी ने मुनियों समेत गुरु वसिष्ठजी को अभ्युत्थान व अर्घ, पाद्य और मधुपर्कादि पूजा से पूजन किया व मुनिश्रेष्ठ वसिष्ठजी ने श्रीरामजी से कुशल पूंछा ॥ २ । ३ । ४ ॥ कि हे राम ! राज्य, घोड़ा, हाथी, ख़ज़ाना, देश व उत्तम बन्धु तथा सेवकों में कुशल है उस समय मुनि के ऐसा पूंछने पर ॥ ५ ॥ रामजी बोले कि आप की प्रसन्नता से इस समय व सदैव सब कहीं मेरे कुशल है और श्रीरामजी ने मुनिश्रेष्ठ वसिष्ठजी से

वेदपारगाः ॥ नावैष्णवोऽव्रती राजन् रामराज्येऽतिविश्रुते ॥ १ ॥ राज्यं प्रकुर्वतस्तस्य पुरोधा वदतां वरः ॥ वसिष्ठो मुनिभिः सार्द्धं कृत्वा तीर्थान्यनेकशः ॥ २ ॥ आजगाम ब्रह्मपुत्रो महाभागस्तपोनिधिः ॥ रामस्तं पूजयामास मुनिभिः सहितं गुरुम् ॥ ३ ॥ अभ्युत्थानार्घपाद्यैश्च मधुपर्कादिपूजया ॥ पप्रच्छ कुशलं रामं वसिष्ठो मुनिपुङ्गवः ॥ ४ ॥ राज्ये चाश्वे गजे कोशे देशे सद्भ्रातृभृत्ययोः ॥ कुशलं वर्त्तते राम इति पृष्टे मुनेस्तदा ॥ ५ ॥ राम उवाच ॥ सर्वत्र कुशलं मेऽद्य प्रसादाद्भवतः सदा ॥ पप्रच्छ कुशलं रामो वसिष्ठं मुनिपुङ्गवम् ॥ ६ ॥ सर्वतः कुशली त्वं हि भार्यापुत्रसमन्वितः ॥ स सर्वं कथयामास यथा तीर्थान्यशेषतः ॥ ७ ॥ सेवितानि धरापृष्ठे क्षेत्राण्यायतनानि च ॥ रामाय कथयामास सर्वत्र कुशलं तदा ॥ ८ ॥ ततः स विस्मयाविष्टो रामो राजीवलोचनः ॥ पप्रच्छ तीर्थमाहात्म्यं यत्तीर्थेपूत्तमोत्तमम् ॥ १०९ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणेधर्मारण्यमाहात्म्येरामचरित्रवर्णनंनामत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥ * ॥

कुशल पूंछा ॥ ६ ॥ कि स्त्री व पुत्र समेत तुम सब ओर से कुशल समेत हो तब उन वसिष्ठजी ने श्रीरामजी से सब कहीं कुशल कहा व जिस प्रकार पृथ्वी में सब तीर्थ और क्षेत्र व स्थान जिस प्रकार सेवन किये गये उस सब को कहा ॥ ७ । ८ ॥ तदनन्तर विस्मय से संयुत कमललोचन श्रीरामजी ने उस तीर्थ के माहात्म्य को पूंछा जो कि तीर्थों में उत्तमोत्तम था ॥ १०९ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणेधर्मारण्यमाहात्म्येदेवीदयालुमिश्रविरचितायांभाषाटीकायांरामचरित्रवर्णनंनामत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० । धर्मारण्यक्षेत्र को गये यथा श्रीराम । इकतिसवें अध्याय में सोइ चरित सुखधाम ॥ श्रीरामजी बोले कि हे मानद, भगवन्, विभो ! तुम ने जिन तीर्थों को सेवन किया है इनके मध्य में जो उत्तम तीर्थ हो उसको मुझ से कहिये ॥ १ ॥ और मैंने सीताजी के हरने में ब्रह्मराक्षसों को मारा है उस पाप की शुद्धि के लिये उत्तम तीर्थों में भी उत्तम तीर्थ को कहिये ॥ २ ॥ वसिष्ठजी बोले कि गंगा, नर्मदा, तापी, यमुना, सरस्वती, गंडकी, गोमती व पूर्णा ये नदियां भलीभांति पवित्रकारक हैं॥ ३॥ और इन नदियों के मध्य में त्रिपथगामिनी गंगाजी श्रेष्ठ हैं हे राघव ! ये गंगाजी दर्शनही से पाप को जलाती हैं ॥ ४ ॥ और कलियुग में नर्मदा नदी देखकर सौ

श्रीराम उवाच ॥ भगवन्यानि तीर्थानि सेवितानि त्वया विभो ॥ एतेषां परमं तीर्थं तन्ममाचक्ष्व मानद ॥ १ ॥ मया तु सीताहरणे निहता ब्रह्मराक्षसाः ॥ तत्पापस्य विशुद्ध्यर्थं वद तीर्थोत्तमोत्तमम् ॥ २ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ गङ्गा च नर्मदा तापी यमुना च सरस्वती ॥ गण्डकी गोमती पूर्णा एता नद्यः सुपावनाः ॥ ३ ॥ एतासां नर्मदा श्रेष्ठा गङ्गा त्रिपथगामिनी ॥ दहते किल्बिषं सर्वं दर्शनादेव राघव ॥ ४ ॥ दृष्ट्वा जन्मशतं पापं गत्वा जन्मशतत्रयम् ॥ स्नात्वा जन्मसहस्रं च हन्ति रेवा कलौ युगे ॥ ५ ॥ नर्मदातीरमाश्रित्य शाकमूलफलैरपि ॥ एकस्मिन्भोजिते विप्रे कोटिभोजफलं लभेत् ॥ ६ ॥ गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि ॥ मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छ ति ॥ ७ ॥ फाल्गुनान्ते कुहूं प्राप्य तथा प्रौष्ठपदेऽसिते ॥ पक्षे गङ्गामधि प्राप्य स्नानं च पितृतर्प्पणम् ॥ ८ ॥ कुरुते पिण्डदानानि सोऽक्षयं फलमश्नुते ॥ शुचौ मासे च सम्प्राप्ते स्नानं वाप्यां करोति यः ॥ ९ ॥ चतुरशीतिनरकान्न

जन्मों का पाप व जाकर तीन सौ जन्मों का पाप और नहाकर हज़ार जन्मों का पाप नाश करती है ॥ ५ ॥ नर्मदा के किनारे प्राप्त होकर शाक, मूल व फलों से भी एक ब्राह्मण को भोजन कराने पर मनुष्य कोटि ब्राह्मणों के भोजन का फल पाता है ॥ ६ ॥ और सौ योजनों से भी जो गंगा गंगा ऐसा कहता है वह सब पापों से छूट जाता है व विष्णुलोक को जाता है ॥ ७ ॥ फागुन के अन्त में अमावस को प्राप्त होकर व भादौं के कृष्णपक्ष में गंगा के समीप प्राप्त होकर जो स्नान व पितरों का तर्पण करता है ॥ ८ ॥ व जो पिंडदान करता है वह अक्षय फल को भोगता है और आषाढ़ महीना प्राप्त होने पर जो बावली में स्नान करता है ॥ ९ ॥ हे राजन् !

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वह चौरासी नरकों को नहीं देखता है व हे राम! तपती के स्मरण में महापातकियों के भी ॥ १० ॥ सात गोत्रों को व एक सौ एक पुश्तियों को वह उधारता है व यमुना में नहाकर मनुष्य समस्त पातकों से छूट जाता है ॥ ११ ॥ और बड़े पापों से युक्त भी वह उत्तम गति को प्राप्त होता है व कृत्तिका नक्षत्र के योग में कार्त्तिकी पौर्णमासी में जो सरस्वतीजी में नहाता है ॥ १२ ॥ उत्तम देवताओं से स्तुति किया जाता हुआ वह गरुड़ पै चढ़कर स्वर्ग को जाता है और जहां प्राची सरस्वती है वहां कातिक महीने में जो नहाकर ॥ १३ ॥ प्राची सरस्वती व माधवजी की स्तुति करता है वह उत्तम गति को प्राप्त होता है और गंडकी नामक पवित्र तीर्थ में जो

पश्यति नरो नृप ॥ तपत्याः स्मरणे राम महापातकिनामपि ॥ १० ॥ उद्धरेत्सप्तगोत्राणि कुलमेकोत्तरं शतम् ॥ यमुनायां नरः स्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ११ ॥ महापातकयुक्तोऽपि स गच्छेत्परमां गतिम् ॥ कार्त्तिक्यां कृत्तिकायोगे सरस्वत्यां निमज्जयेत् ॥ १२ ॥ गच्छेत्स गरुडारूढः स्तूयमानः सुरोत्तमैः ॥ स्नात्वा यः कार्त्तिके मासि यत्र प्राची सरस्वती ॥ १३ ॥ प्राचीं च माधवं स्तौति स गच्छेत्परमां गतिम् ॥ गण्डकीपुण्यतीर्थे हि स्नानं यः कुरुते नरः ॥ १४ ॥ शालग्रामशिलामर्च्य न भूयः स्तनपो भवेत् ॥ गोमतीजलकल्लोलैर्मज्जयेत्कृष्णसन्निधौ ॥ १५ ॥ चतुर्भुजो नरो भूत्वा वैकुण्ठे मोदते चिरम् ॥ चर्मण्वतीं नमस्कृत्य अपः स्पृशति यो नरः ॥ १६ ॥ स पूर्वजांस्तारयति दश पूर्वान्दशापरान् ॥ द्वयोश्च सङ्गमं दृष्ट्वा श्रुत्वा वा सागरध्वनिम् ॥ १७ ॥ ब्रह्महत्यायुतो वापि पूतो गच्छेत्परां गतिम् ॥ माघमासे प्रयागे तु मज्जनं कुरुते नरः ॥ १८ ॥ इह लोके सुखं भुक्त्वा अन्ते विष्णुपदं व्रजेत् ॥ प्रभासे ये

मनुष्य स्नान करता है ॥ १४ ॥ वह शालग्रामशिला को पूजकर फिर दूध पीनेवाला नहीं होता है और श्रीकृष्णजी के समीप जो गोमतीजल की बड़ी भारी लहरियों से नहाता है ॥ १५ ॥ वह मनुष्य चतुर्भुज होकर वैकुंठ में बहुत दिनों तक आनन्द करता है व चर्मण्वती नदी को प्रणाम कर जो मनुष्य जल को स्पर्श करता है ॥ १६ ॥ वह दश पहले व दश पीछे के पितरों को तारता है और दोनों के संगम को देखकर व समुद्र की ध्वनि को सुनकर ॥ १७ ॥ ब्रह्महत्या से संयुत भी मनुष्य पवित्र होकर उत्तम गति को प्राप्त होता है और माघ महीने में जो मनुष्य प्रयाग में स्नान करता है ॥ १८ ॥ वह इस लोक में सुख को भोगकर अन्त में

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विष्णुजी के स्थान को जाता है व हे राम ! प्रभासक्षेत्र में जो मनुष्य तीन रात्रि तक ब्रह्मचारी होते हैं ॥ १६ ॥ वे यमलोक व कुंभीपाकादिक को नहीं देखते हैं और जो मनुष्य नैमिषारण्यवासी होता है वह देवत्व को प्राप्त होता है ॥ २० ॥ जिस कारण देवताओं का स्थान है उसी कारण वह पृथ्वी में दुर्लभ है व हे राम ! कुरुक्षेत्र तीर्थ में चन्द्रमा व सूर्य के ग्रहण में ॥ २१ ॥ हे नृपेन्द्र ! सुवर्ण के दान से फिर मनुष्य स्तन पीनेवाला नहीं होताहै और श्रीस्थल में दर्शन करके मनुष्य पाप से छूट जाता है ॥ २२ ॥ और सब दुःखों के विनाशक विष्णुलोक में वह पूजा जाता है व हे राघव ! पृथ्वी में जो मनुष्य कपिला गऊ को स्पर्श करता है ॥ २३ ॥ वह

नरा राम त्रिरात्रं ब्रह्मचारिणः ॥ १६ ॥ यमलोकं न पश्येयुः कुम्भीपाकादिकं तथा ॥ नैमिषारण्यवासी यो नरो देवत्वमाप्नुयात ॥ २० ॥ देवानामालयं यस्मात्तदेव भुवि दुर्लभम् ॥ कुरुक्षेत्रे नरो राम ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ॥ २१ ॥ हेमदानाच्च राजेन्द्र न भूयःस्तनपो भवेत् ॥ श्रीस्थले दर्शनं कृत्वा नरः पापात्प्रमुच्यते ॥ २२ ॥ सर्वदुःखविनाशे च विष्णुलोके महीयते ॥ कपिलां स्पर्शयेद्यो गां मानवो भुवि राघव ॥ २३ ॥ सर्वकामदुघावासमृषिलोकं स गच्छति ॥ उज्जयिन्यां तु वैशाखे शिप्रायां स्नानमाचरेत् ॥ २४ ॥ मोचयेद्रौरवाद् घोरात्पूर्वजांश्च सहस्रशः ॥ सिन्धुस्नानं नरो राम प्रकरोति दिनत्रयम् ॥ २५ ॥ सर्पपापविशुद्धात्मा कैलासे मोदते नरः ॥ कोटितीर्थे नरः स्नात्वा दृष्ट्वा कोटीश्वरं शिवम् ॥ २६ ॥ ब्रह्महत्यादिभिः पापैर्लिप्यते न च स कचित् ॥ अज्ञानामपि जन्तूनां महाऽमेध्ये तु गच्छताम् ॥ २७ ॥ पादोद्भूतं पयः पीत्वा सर्वपापं प्रणश्यति ॥ वेदवत्यां नरो यस्तु स्नाति सूर्योदये शुभे ॥२८॥

सब कामनाओं को देनेवाले ऋषिलोक स्थान को जाता है और वैशाख में उज्जयिनीपुरी में जो शिप्रा नदी में स्नान करता है ॥ २४ ॥ वह हज़ारों पूर्वजों को भयंकर रौरव नरक से छुड़ाता है व हे राम ! जो मनुष्य तीन दिन तक समुद्रस्नान करता है ॥ २५ ॥ वह मनुष्य सब पापों से शुद्धचित्त होकर कैलास में आनन्द करता है और कोटितीर्थ में नहाकर मनुष्य कोटीश्वर शिवजी को देखकर ॥ २६ ॥ वह कभी ब्रह्महत्यादिक पापों से लिप्त नहीं होता है और बहुतही अशुद्ध स्थान में जानेवाले मूर्ख भी प्राणियों का ॥ २७ ॥ सब पातक विष्णुजी के चरण से उपजे हुए जल को पीकर नाश हो जाता है और उत्तम सूर्योदय में जो मनुष्य वेदवती नदी में नहाताहै ॥२८॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वह सब रोग से छूट जाता है व उत्तम सुख को पाता है हे राम ! सब कहीं तीर्थस्नान, पान व अवगाहन से ॥ २९ ॥ मनुष्यों के सब पापों को लीला से नाश करते हैं तीर्थों के मध्य में धर्मारण्य उत्तम तीर्थ कहा जाता है ॥ ३० ॥ जो कि पुरातन समय में पहले ब्रह्मा, विष्णु व शिवादिकों से स्थापित किया गया है सब वनों व तीर्थों के मध्य में विशेष कर ॥ ३१ ॥ धर्मारण्य से श्रेष्ठ भुक्ति, मुक्ति को देनेवाला तीर्थ नहीं है स्वर्ग में देवता धर्मारण्यनिवासी जनों की प्रशंसा करते हैं ॥ ३२ ॥ हे रामदेव ! वे पवित्र और वे पुण्यकारी मनुष्य हैं जो कि कलियुग में सब पातकों को नाशनेवाले धर्मारण्य में बसते हैं ॥ ३३ ॥ और ब्रह्महत्यादिक पाप

सर्वरोगात्प्रमुच्येत परं सुखमवाप्नुयात् ॥ तीर्थानि राम सर्वत्र स्नानपानावगाहनैः ॥ २९ ॥ नाशयन्ति मनुष्याणां सर्वपापानि लीलया ॥ तीर्थानां परमं तीर्थं धर्मारण्यं प्रचक्ष्यते ॥ ३० ॥ ब्रह्मविष्णुशिवाद्यैर्यदादौ संस्थापितं पुरा ॥ अरण्यानां च सर्वेषां तीर्थानां च विशेषतः ॥ ३१ ॥ धर्मारण्यात्परं नास्ति भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥ स्वर्गे देवाः प्रशंसन्ति धर्मारण्यनिवासिनः ॥ ३२ ॥ ते पुण्यास्ते पुण्यकृतो ये वसन्ति कलौ नराः ॥ धर्मारण्ये रामदेव सर्वकिल्बिषनाशने ॥ ३३ ॥ ब्रह्महत्यादिपापानि सर्वस्तेयकृतानि च ॥ परदारप्रसङ्गादि अभक्ष्यभक्षणादि वै ॥ ३४ ॥ अगम्यागमनाद्यानि अस्पर्शस्पर्शनादि च ॥ भस्मीभवन्ति लोकानां धर्मारण्यावगाहनात् ॥ ३५ ॥ ब्रह्मघ्नश्च कृतघ्नश्च बालघ्नोऽनृतभाषणः ॥ स्त्रीगोघ्नश्चैव ग्रामघ्नो धर्मारण्ये विमुच्यते ॥ ३६ ॥ नातः परं पावनं हि पापिनां प्राणिनां भुवि ॥ स्वर्ग्यं यशस्यमायुष्यं वाञ्छितार्थप्रदं शुभम् ॥ ३७ ॥ कामिनां कामदं क्षेत्रं यतीनां मुक्तिदायकम् ॥ सिद्धानां सि

व सब चोरियों से किये हुए पाप और पराई स्त्री के प्रसंगादिक व अभक्ष्य वस्तु के खाने से उत्पन्न ॥ ३४ ॥ और न संग करने योग्य स्त्रियों के संगमादिक से उत्पन्न व न छूने योग्य वस्तुओं के स्पर्शादिक से उपजे हुए मनुष्यों के पाप धर्मारण्य के अवगाहन से भस्म होजाते हैं ॥ ३५ ॥ और ब्रह्मघाती, कृतघ्न, बालघाती, असत्यवादी व स्त्री और गऊ को मारनेवाला व ग्रामनाशक मनुष्य धर्मारण्य में मुक्त होता है ॥ ३६ ॥ पृथ्वी में इससे अधिक पापी प्राणियों को पवित्रकारक व स्वर्गदायक, यशदायक तथा आयुर्बलदायक व चाहे हुए प्रयोजन को देनेवाला उत्तम तीर्थ नहीं है ॥ ३७ ॥ और कामियों को धर्मारण्यक्षेत्र कामनादायक व

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संन्यासियों को मुक्तिदायक तथा सिद्धों को प्रत्येक युग में सिद्धिदायक कहा गया है ॥ ३८ ॥ ब्रह्माजी बोले कि वसिष्ठजी का वचन सुन कर धर्मधारियों में श्रेष्ठ श्रीरामजी हृदय को आनन्द करनेवाले बड़े भारी हर्ष को प्राप्त होकर ॥ ३९ ॥ उत्तम नियमोंवाले, प्रफुल्लित हृदय व रोमांचसंयुत श्रीरामजी ने धर्मारण्य में जाने के लिये बुद्धि की ॥ ४० ॥ जिस धर्मारण्य में तीन रात्रि के सेवन से कीट, पतंगादिक, मनुष्य व पशु सब पापों से छूट जाते हैं ॥ ४१ ॥ हे रामजी ! जिस प्रकार द्वारका-पुरी व काशी और त्रिशूलपाणि शिव व भैरवजी मुक्तिदायक हैं वैसेही धर्मारण्य उत्तम है ॥ ४२ ॥ तदनन्तर बड़े भारी धनुषवाले तथा बड़े हर्ष से संयुत श्रीरामजी

द्धिदं प्रोक्तं धर्मारण्यं युगे युगे ॥ ३८ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ वसिष्ठवचनं श्रुत्वा रामो धर्मभृतां वरः ॥ परं हर्षमनुप्राप्य हृदयानन्दकारकम् ॥ ३९ ॥ प्रोत्फुल्लहृदयो रामो रोमाञ्चिततनूरुहः ॥ गमनाय मतिं चक्रे धर्मारण्ये शुभव्रतः ॥४०॥ यस्मिन्कीटपतङ्गादिमानुषाः पशवस्तथा ॥ त्रिरात्रसेवनेनैव मुच्यन्ते सर्वपातकैः ॥ ४१ ॥ कुशस्थली यथा काशी शूलपाणिश्च भैरवः ॥ यथा वै मुक्तिदो राम धर्मारण्यं तथोत्तमम् ॥ ४२ ॥ ततो रामो महेष्वासो मुदा परमया युतः ॥ प्रस्थितस्तीर्थयात्रायां सीतया भ्रातृभिः सह ॥ ४३ ॥ अनुजग्मुस्तदा रामं हनुमांश्च कपीश्वरः ॥ कौशल्या च सुमित्रा च कैकेयी च मुदान्विता ॥ ४४ ॥ लक्ष्मणो लक्षणोपेतो भरतश्च महामतिः ॥ शत्रुघ्नः सैन्यसहितोप्ययोध्यावासिनस्तथा ॥ ४५ ॥ नरव्याघ्र प्रकृतयो धर्मारण्ये विनिर्ययुः ॥ अनुजग्मुस्तदा रामं मुदा परमया युताः ॥ ४६ ॥ तीर्थयात्राविधिं कर्तुं गृहात्प्रचलितो नृपः ॥ वसिष्ठं स्वकुलाचार्यमिदमाह महीपते ॥ ४७ ॥ श्रीराम उवाच ॥ एत

सीता व भाइयों समेत तीर्थयात्रा के लिये चले ॥ ४३ ॥ तब कपिनायक हनुमान्जी और हर्ष से संयुत कौशल्या, सुमित्रा व कैकेयी श्रीरामजी के पीछे चलीं ॥ ४४ ॥ और लक्षणों से संयुत लक्ष्मणजी व महाबुद्धिमान् भरतजी और सेना समेत शत्रुघ्न व अयोध्यानिवासीलोग ॥ ४५ ॥ व हे नरव्याघ्र ! सब प्रजालोग धर्मारण्य को चले और बड़ी प्रसन्नता से संयुत वे उस समय श्रीरामजी के पीछे चले ॥ ४६ ॥ हे महीपते ! तीर्थयात्रा की विधि को करने के लिये घर से चले हुए राजा रामजी ने अपने वंश के आचार्य वसिष्ठजी से यह कहा ॥ ४७ ॥ श्रीरामजी बोले कि हे वसिष्ठजी ! यह बड़ा भारी आश्चर्य है कि पहले क्या द्वारका हुई है और कितने

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समय से यह उत्पन्न है इसको मुझ से कहिये ॥ ४८ ॥ वसिष्ठजी बोले कि हे महाराज ! मैं यह नहीं जानता हूं कि कितने समय से यह क्षेत्र हुआ है लोमश और जाम्बवान्जी इस कारण को जानते हैं ॥ ४६ ॥ और अनेक भांति के जन्मों के मध्य में शरीर में जो पाप किया गया है उन सबों का यह क्षेत्र उत्तम प्रायश्चित्त (पापनाशक कर्म) कहा गया है ॥ ५० ॥ उन वसिष्ठजी के इस वचन को सुन कर ज्ञानियों में श्रेष्ठ श्रीरामजी ने तीर्थ को जाने के लिये बुद्धि करके यात्रा की विधि किया ॥ ५१ ॥ और पुरश्चरण की विधि करके श्रीरामजी वसिष्ठजी को आगे कर महामांडलिक राजाओं के साथ उत्तर दिशा को चले ॥ ५२ ॥ और वसिष्ठजी को

दाश्चर्यमतुलं किमादौ द्वारकाभवत् ॥ कियत्कालसमुत्पन्ना वसिष्ठेदं वदस्व मे ॥ ४८ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ न जानामि महाराज कियत्कालादभूदिदम् ॥ लोमशो जाम्बवांश्चैव जानातीति च कारणम् ॥ ४६ ॥ शरीरे यत्कृतं पापं नाना जन्मान्तरेष्वपि ॥ प्रायश्चित्तं हि सर्वेषामेतत्क्षेत्रं परं स्मृतम् ॥ ५० ॥ श्रुत्वेति वचनं तस्य रामो ज्ञानवतां वरः ॥ गन्तुं कृतमतिस्तीर्थं यात्राविधिमथाचरत् ॥ ५१ ॥ वसिष्ठं चाग्रतः कृत्वा महामाण्डलिकैर्नृपैः ॥ पुरश्चरणविधिं कृत्वा प्रस्थितश्चोत्तरां दिशम् ॥ ५२ ॥ वसिष्ठं चाग्रतः कृत्वा प्रतस्थे पश्चिमां दिशम् ॥ ग्रामाद्ग्राममतिक्रम्य देशाद्देशं व नाद्वनम् ॥ ५३ ॥ विमुच्य निर्ययौ रामः ससैन्यः सपरिच्छदः ॥ गजवाजिसहस्रौघै रथैर्यानैश्च कोटिभिः ॥ ५४ ॥ शिबिकाभिश्चासंख्याभिः प्रययौ राघवस्तदा ॥ गजारूढः प्रपश्यंश्च देशान्विविधसौहृदान् ॥ ५५ ॥ श्वेतातपत्रं वि धृत्य चामरेण शुभेन च ॥ वीजितश्च जनौघेन रामस्तत्र समभ्यगात् ॥ ५६ ॥ वादित्राणां स्वनैर्घोरैर्नृत्यगीतपुरः

आगे कर पश्चिम दिशा को चले और एक ग्राम से दूसरे ग्राम को व देश से देश को और वन से वन को ॥ ५३ ॥ छोड़कर सेना समेत व सामान समेत श्रीरामजी निकले और हज़ारों हाथी घोड़े व करोड़ों रथों व सवारियों से ॥ ५४ ॥ और असंख्य पालकियों समेत उस समय अनेक प्रकार के प्रिय देशों को देखते हुए श्रीरामजी हाथी के ऊपर चढ़कर चले ॥ ५५ ॥ और जनों के गण से उत्तम चँवर से वीजित श्रीरामजी श्वेत छत्र को धारण कर वहां गये ॥ ५६ ॥ और नृत्य, गीतपूर्वक बाजनों

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के घोर शब्दों समेत सूतों से प्रशंसा किये जाते हुए भी हर्षसंयुत श्रीरामजी चले ॥ ५७ ॥ और दशवें दिन अति उत्तम धर्मारण्य मिला तदनन्तर समीप में मांडलिक नगर को देखकर श्रीरामजी ने ॥ ५८ ॥ वहां सेना समेत टिककर रात्रि को उस पुरी में निवास किया और क्षेत्र को उजड़ा हुआ व भयानक तथा मनुष्यों से रहित सुनकर ॥ ५९ ॥ और उस धर्मारण्य को लोगों के मुख से व्याघ्रों तथा सिंहों से पूर्ण तथा यक्षों व राक्षसों से सेवित सुनकर श्रीरामदेवजी ने सबों से यह कहा कि चिन्ता न कीजिये ॥ ६० ॥ व उस समय श्रीरामजी ने अपने उद्योग में प्रवीण तथा शूर व बड़े बलवान् व पराक्रमी और बड़े शरीरवाले वहां टिके हुए

सैः ॥ स्तूयमानोपि सूतैश्च ययौ रामो मुदान्वितः ॥ ५७ ॥ दशमेऽहनि सम्प्राप्तं धर्मारण्यमनुत्तमम् ॥ अदूरे हि ततो रामो दृष्ट्वा माण्डलिकं पुरम् ॥ ५८ ॥ तत्र स्थित्वा ससैन्यस्तु उवास निशि तां पुरीम् ॥ श्रुत्वा तु निर्जनं क्षेत्र मुद्वसं च भयानकम् ॥ ५९ ॥ व्याघ्रसिंहाकुलं तच्च यक्षराक्षससेवितम् ॥ श्रुत्वा जनमुखाद्रामो धर्मारण्यमरण्यकम् ॥ उवाच रामदेवस्तु न चिन्ता क्रियतामिति ॥ ६० ॥ तत्रस्थान्वणिजः शूरान्दक्षान्स्वव्यवसायके ॥ ६१ ॥ समर्थान्हि महाकायान्महाबलपराक्रमान् ॥ समाहूय तदा काले वाक्यमेतदथाब्रवीत् ॥ ६२ ॥ शिबिकां सुसुवर्णां मे शीघ्रं वाहयताचिरम् ॥ यथा क्षणेन चैकेन धर्मारण्यं व्रजाम्यहम् ॥ ६३ ॥ तत्र स्नात्वा च पीत्वा च सर्वपापात्प्रमुच्यते ॥ एवं ते वणिजः सर्वे रामेण प्रेरितास्तदा ॥ ६४ ॥ तथेत्युक्त्वा च ते सर्वे ऊहुस्तच्छिबिकां तदा ॥ क्षेत्रमध्ये यदा रामः प्रविष्टः सहसैनिकः ॥ ६५ ॥ तद्यानस्य गतिर्मन्दा संजाता किल भारत ॥ मन्दशब्दानि वाद्यानि मातङ्ग

समर्थ वैश्यों को बुलाकर यह वचन कहा ॥ ६१।६२ ॥ कि मेरी सोने की पालकी को तुमलोग शीघ्रही ले चलो जिस प्रकार कि एक क्षण में मैं धर्मारण्य को जाऊं ॥ ६३ ॥ क्योंकि उस धर्मारण्य में नहाकर व जल को पीकर मनुष्य पापों से छूट जाता है उस समय श्रीरामजी से इस प्रकार प्रेरित वणिज्लोग ॥ ६४ ॥ बहुत अच्छा यह कह कर वे सब उस समय उन श्रीरामजी की पालकी को ले चले और जब सेना समेत श्रीरामजी क्षेत्र के मध्य में पैठे ॥ ६५ ॥ तब हे भारत ! उस सवारी की गति मंद

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होगई और बाजनों के शब्द मन्द होगये व हाथियों की चाल मंद होगई ॥ ६६ ॥ और घोड़े भी वैसेही होगये तब श्रीरामजी आश्चर्य को प्राप्त हुए और विनय से उन्हों ने मुनिश्रेष्ठ वसिष्ठ गुरु से पूंछा ॥ ६७ ॥ कि हे मुनीश्वर! यह क्या है जो कि ये मंदगति होगये और हृदय में आश्चर्य है त्रिकाल के जाननेवाले मुनि ने कहा कि धर्मक्षेत्र आगया ॥ ६८ ॥ हे राम! इस प्राचीन तीर्थ में पैदल चलिये क्योंकि ऐसा करने पर तदनन्तर पश्चात् सेना को सुख होगा ॥ ६९ ॥ तदनन्तर सेना समेत श्रीरामजी पैदल चलकर बहुतही पवित्र मधुवासनक ग्राम में प्राप्त हुए ॥ ७० ॥ और गुरु से कहे हुए मार्ग से श्रीरामजी ने प्रतिष्ठा की विधिपूर्वक अनेक भांति के

मन्दगामिनः ॥ ६६ ॥ हयाश्च तादृशा जाता रामो विस्मयमागतः ॥ गुरुं पप्रच्छ विनयाद्वसिष्ठं मुनिपुङ्गवम् ॥ ६७ ॥ किमेतन्मन्दगतयश्चित्रं हृदि मुनीश्वर ॥ त्रिकालज्ञो मुनिः प्राह धर्मक्षेत्रमुपागतम् ॥ ६८ ॥ तीर्थे पुरातने राम पादचारेण गम्यताम् ॥ एवं कृते ततः पश्चात्सैन्यसौख्यं भविष्यति ॥ ६९ ॥ पादचारी ततो रामः सैन्येन सह संयुतः ॥ मधुवासनके ग्रामे प्राप्तः परमपावने ॥ ७० ॥ गुरुणा चोक्तमार्गेण मातॄणां पूजनं कृतम् ॥ नानोपहारैर्विविधैः प्रतिष्ठाविधिपूर्वकम् ॥ ७१ ॥ ततो रामो हरिक्षेत्रं सुवर्णादक्षिणे तटे ॥ निरीक्ष्य यज्ञयोग्याश्च भूमीर्वै बहुशस्तथा ॥ ७२ ॥ कृतकृत्यं तदात्मानं मेने रामो रघूद्वहः ॥ धर्मस्थानं निरीक्ष्याथ सुवर्णाक्षोत्तरे तटे ॥ ७३ ॥ सैन्यसङ्घं समुत्तीर्य्य बभ्राम क्षेत्रमध्यतः ॥ तत्र तीर्थेषु सर्वेषु देवतायतनेषु च ॥ ७४ ॥ यथोक्तानि च कर्माणि रामश्चक्रे विधानतः ॥ श्राद्धानि विधिवच्चक्रे श्रद्धया परया युतः ॥ ७५ ॥ स्थापयामास रामेशं तथा कामेश्वरं पुनः ॥ स्थानाद्वायुप्रदेशे तु सु

उपहारों से मातृकाओं का पूजन किया ॥ ७१ ॥ तदनन्तर श्रीरामजी सुवर्णा नदी के दक्षिण किनारे पै हरिक्षेत्र को देखकर व यज्ञ के योग्य बहुतसी भूमियों को देखकर ॥ ७२ ॥ उस समय रघुनायक श्रीरामजी ने अपना को कृतार्थ माना और सुवर्णाक्षा के उत्तर किनारे पै धर्मस्थान को देखकर ॥ ७३ ॥ सेनासमूह को उतार कर श्रीरामजी क्षेत्र के मध्य में घूमनेलगे और वहां सब तीर्थों व देवमन्दिरों में ॥ ७४ ॥ श्रीरामजी ने जैसे कहे हैं वैसेही कर्मों को विधि से किया व बड़ी श्रद्धा से संयुत श्रीरामजी ने विधिपूर्वक श्राद्धों को किया ॥ ७५ ॥ और स्थान से वायव्यकोण में सुवर्णा के दोनों किनारों में रामेश्वर व कामेश्वरजी को स्थापन

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

किया ॥ ७६ ॥ ऐसा करके दशरथ के पुत्र श्रीरामजी कृतार्थ हुए और सब विधि करके स्त्री समेत श्रीरामजी स्थित हुए ॥ ७७ ॥ और वे रघुनाथजी उस रात को नदी के किनारे सो रहे तदनन्तर आधीरात होने पर उस समय धर्मप्रिय व कमललोचन श्रीरामजी अकेले जागते रहे व उस क्षण में श्रीरामजी ने स्त्री का रोना सुना ॥७८।७६॥ रात में दीनवचनों से कुररी की नाईं रोती हुई उस स्त्री को श्रीरामजी ने बड़ी शीघ्रता से गुप्त दूतों से देखा ॥ ८० ॥ तब हे अनघ! करुण शब्दों से रोती हुई बहुत ही विकल स्त्री को देखकर श्रीरामजी के दूतों ने उस दुःखित स्त्री से पूंछा ॥ ८१ ॥ दूत बोले कि हे सुभगे, नारि! तुम कौन हो देवपत्नी हो या दानवी हो और किस

वर्णोभयतस्तटे ॥ ७६ ॥ कृत्वैवं कृतकृत्योऽभूद्रामो दशरथात्मजः ॥ कृत्वा सर्वविधिं चैव सभार्यः समुपाविशत् ॥ ७७ ॥ तां निशां स नदीतीरे सुष्वाप रघुनन्दनः ॥ ततोऽर्द्धरात्रे संजाते रामो राजीवलोचनः ॥ ७८ ॥ जागर्ति स्म तदा काल एकाकी धर्मवत्सलः ॥ अश्रौषीच्च क्षणे तस्मिन् रामो नारीविरोदनम् ॥ ७९ ॥ निशायां करुणैर्वाक्यै रुदन्तीं कुररीमिव ॥ चारैर्विलोकयामास रामस्तामतिसम्भ्रमात् ॥ ८० ॥ दृष्ट्वातिविह्वलां नारीं क्रन्दन्तीं करुणैः स्वरैः ॥ पृष्टा सा दुःखिता नारी रामदूतैस्तदानघ ॥ ८१ ॥ दूता ऊचुः ॥ कासि त्वं सुभगे नारि देवी वा दानवी नु किम् ॥ केन वा त्रासितासि त्वं मुष्टं केन धनं तव ॥ ८२ ॥ विकला दारुणाञ्छब्दानुद्गिरन्ती मुहुर्मुहुः ॥ कथयस्व यथातथ्यं रामो राजाभिपृच्छति ॥ ८३ ॥ तयोक्तं स्वामिनं दूताः प्रेषयध्वं ममान्तिकम् ॥ यथाहं मानसं दुःखं शान्त्यै तस्मै निवेदये ॥ ८४ ॥ तथेत्युक्त्वा ततो दूता राममागत्य चाब्रुवन् ॥ ८५ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणेधर्मारण्यमाहात्म्ये दूतागमनंनामैकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

ने तुम को दुःखित किया है व किस ने तुम्हारा धन चुराया है ॥ ८२ ॥ बार २ कठोर शब्दों को कहती हुई विकल तुम यथार्थ कहो इसको राजा रामजी पूंछते हैं ॥ ८३ ॥ उस ने कहा कि हे दूतो! मेरे समीप स्वामी को पठाइये कि जिस प्रकार मैं मानसी दुःख को उनसे शांति के लिये कहूं ॥ ८४ ॥ बहुत अच्छा यह कहकर तदनन्तर दूतों ने श्रीरामजी के समीप आकर कहा ॥ ८५ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणेधर्मारण्यमाहात्म्येदेवीदयालुमिश्रविरचितायांभाषाटीकायांदूतागमनंनामैकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो०। उजड़े धर्मारण्य को फेरि बसायो राम। बत्तिसवें अध्याय में सोइ चरित अभिराम॥ व्यासजी बोले कि तदनन्तर श्रीरामजी के उन दूतों ने श्रीरामजी को प्रणाम कर कहा कि हे महाबाहो, राम, राम! वह उत्तम मुखवाली स्त्री है॥ १॥ और सुन्दर वस्त्र व भूषणोंवाली तथा कोमलवचनों में परायण उस रोती हुई अकेली स्त्री को देखकर हमलोग विस्मित होगये॥ २॥ और समीप वर्तमान होकर हम लोगों ने उस देवपत्नी से पूंछा कि हे वरारोहे, देवि! तुम कौन हो देवी हो या दानवी हो॥ ३॥ हे देवि! श्रीरामजी तुम को पूंछते हैं तुम सब यथायोग्य कहो उस वचन को सुनकर उस स्त्री ने मधुरवचन को कहा॥ ४॥ कि मेरे दुःख को

व्यास उवाच॥ ततश्च रामदूतास्ते नत्वा राममथाब्रुवन्॥ रामराम महाबाहो वरनारी शुभानना॥ १॥ सुवस्त्र भूषाभरणां मृदुवाक्यपरायणाम्॥ एकाकिनीं क्रन्दमानां दृष्ट्वा तां विस्मिता बयम्॥ २॥ समीपवर्तिनो भूत्वा पृष्टा सा सुरसुन्दरी॥ का त्वं देवि वरारोहे देवी वा दानवी नु किम्॥ ३॥ रामः पृच्छति देवि त्वां ब्रूहि सर्वं यथातथम्॥ तच्छ्रुत्वा वचनं रामा सोवाच मधुरं वचः॥ ४॥ रामं प्रेषयत भद्रं वो मम दुःखापहं परम्॥ ५॥ तदाकर्ण्य ततो रामः सम्भ्रमात्त्वरितो ययौ॥ दृष्ट्वा तां दुःखसन्तप्तां स्वयं दुःखमवाप सः॥ उवाच बचनं रामः कृताञ्जलिपुटस्तदा॥ ६॥ श्रीराम उवाच॥ का त्वं शुभे कस्य परिग्रहो वा केनावधूता विजने निरस्ता॥ मुष्टं धनं केन च तावकीनमाचक्ष्व मातः सकलं ममाग्रे॥ ७॥ इत्युक्त्वा चातिदुःखार्तो रामो मतिमतां वरः॥ प्रणामं दण्डवच्चक्रे चक्रपाणिरिवापरः॥ ८॥ तयाभिनन्दितो रामः प्रणम्य च पुनः पुनः॥ तुष्ट्या परया प्रीत्या स्तुतो मधुरया

नाश करनेवाले श्रेष्ठ श्रीरामजी को पठाइये तुम लोगों का कल्याण होवै॥ ५॥ उस वचन को सुनकर तदनन्तर शीघ्रता समेत श्रीरामजी संभ्रम से गये और दुःख से तची हुई उस स्त्री को देखकर वे श्रीरामजी आप भी दुःख को प्राप्त हुए और उस समय हाथों को जोड़कर श्रीरामजी वचन बोले॥ ६॥ श्रीरामजी बोले कि हे शुभे! तुम कौन हो व किस की स्त्री हो और किसने दुःखित तुम को निर्जन स्थान में निकाल दिया है व हे मातः! किसने तुम्हारा धन चुरा लिया है इस सब को मेरे आगे कहिये॥ ७॥ यह कह कर बुद्धिमानों में श्रेष्ठ बहुतही दुःख से विकल श्रीरामजी ने दूसरे चक्रपाणि की नाईं दंडवत् प्रणाम किया॥ ८॥ और बड़ी प्रीति से

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रसन्न उस स्त्री ने बार २ प्रणाम कर श्रीरामजी की प्रशंसा किया व बार २ स्तुति किया ॥ ९ ॥ कि हे परमात्मन्, परेशान, दुःखहारिन्, सनातन ! जिस लिये तुम्हारा अवतार हुआ है उस कार्य को तुम ने किया ॥ १० ॥ कि रावण, कुम्भकर्ण व इन्द्रजीत (मेघनाद) आदिक खर, दूषण, त्रिशिरा, मारीच व अक्षकुमार ॥ ११ ॥ व असंख्य भयंकर राक्षस युद्ध के आंगन में जीते गये ॥ १२ ॥ हे लोकेश ! इस समय मैं तुम्हारे यश को क्या कहूं कि तुम्हारे अंग से उत्पन्न कमल से उपजे हुए ब्रह्मा ने तुम्हारे उदर में स्थित संसार को देखा जैसे कि बरगद के बीज में बरगद का वृक्ष माना गया है ॥ १३ ॥ हे जगदीश, गोविन्द ! संसार में दशरथ व तुम्हारी

गिरा ॥ ९ ॥ परमात्मन्परेशान दुःखहारिन्सनातन ॥ यदर्थमवतारस्ते तच्च कार्यं त्वया कृतम् ॥ १० ॥ रावणः कुम्भकर्णश्च शक्रजित्प्रमुखास्तथा ॥ खरदूषणत्रिशिरोमारीचाक्षकुमारकाः ॥ ११ ॥ असंख्या निर्जिता रौद्रा राक्षसाः समराङ्गणे ॥ १२ ॥ किं वच्मि लोकेश सुकीर्त्तिमद्य ते वेधास्त्वदीयाङ्गजपद्मसम्भवः ॥ ददर्श विश्वं च तवोदरस्थं वटस्य बीजे हि यथा वटो मतः ॥ १३ ॥ धन्यो दशरथो लोके कौशल्या जननी तव ॥ ययोर्जातोसि गोविन्द जगदीश परः पुमान् ॥ १४ ॥ धन्यं च तत्कुलं राम यत्र त्वमागतः स्वयम् ॥ धन्याऽयोध्यापुरी राम धन्यो लोकस्त्वदाश्रयः ॥ १५ ॥ धन्यः सोऽपि हि वाल्मीकिर्येन रामायणं कृतम् ॥ कविना विप्रमुख्येभ्य आत्मबुद्ध्या ह्यनागतम् ॥ १६ ॥ त्वत्तोऽभवत्कुलं चेदं त्वया देव सुपावितम् ॥ १७ ॥ नरपतिरिति लोकैः स्मर्यते वैष्णवांशः स्वयमसि रमणीयैस्त्वं गुणैर्विष्णुरेव ॥ किमपि भुवनकार्यं यद्विचिन्त्यावतीर्य तदिह घटयतस्ते वत्स निर्विघ्नमस्तु ॥ १८ ॥ स्तुत्वो वाचाथ

माता कौशल्या धन्य हैं कि जिन दोनों के तुम परमपुरुष उत्पन्न हुए हो ॥ १४ ॥ व हे राम ! वह वंश धन्य है कि जिस में तुम आपही आये हो व हे राम ! अयोध्यापुरी धन्य है और तुम्हारे आश्रित मनुष्य धन्य है ॥ १५ ॥ और वे बाल्मीकि भी धन्य हैं कि जिन कवि ने अपनी बुद्धि से मुख्य ब्राह्मणों के लिये भविष्य रामायण को बनाया है ॥ १६ ॥ व हे देव ! तुम से यह वंश भली भांति पवित्र होगया ॥ १७ ॥ हे वत्स ! मनुष्यों से नृपति विष्णुजी का अंश कहा जाता है और तुम सुन्दर गुणों से आपही विष्णु हो व कोई भी लोक का कार्य है कि जिस को विचार कर अवतार लेकर उस को करते हुए तुम को इस संसार में विघ्न न होवै ॥ १८ ॥ इस प्रकार

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्तुतिकर इसके अनन्तर उसने श्रीरामजी से कहा कि इस समय तुम्हारे स्वामी होने पर मैं बहुत दिनों से जिस लिये शून्य वर्तमान हूं उस कारण तुम्हीं को दोष है॥ १६ ॥ मुझ को धर्मारण्य क्षेत्र की अधिदेवता जानो और यहां मुझको बारह वर्ष बीते हैं तब से मैं दुःखित हूं ॥ २० ॥ हे महामते ! आज तुम मेरी शून्यता को हरलो हे रामजी ! लोहासुर के डर से सब ब्राह्मण दशो दिशाओं को चले गये ॥ २१ ॥ व दुःखित होते हुए सब बनिया स्थानों के अनुसार चले गये व हे रामजी ! यहां बड़े भारी मायावी व दुर्धर्ष और दुःख से नाश होने योग्य उस सुरभयंकर दैत्य को ब्रह्मा, विष्णु व शिव देवताओं ने दबाकर मारडाला है परन्तु उसके डर से बहुत ही शंकित

रामं हि त्वयि नाथे नु साम्प्रतम् ॥ शून्यावर्ते चिरं कालं यतो दोषस्तवैव हि ॥ १६ ॥ धर्मारण्यस्य क्षेत्रस्य विद्धि मामधिदेवताम् ॥ वर्षाणि द्वादशैहैव जातानि दुःखितास्म्यहम् ॥ २० ॥ निर्जनत्वं ममाद्य त्वमुद्धरस्व महामते ॥ लोहासुरभयाद्राम विप्राः सर्वे दिशो दश ॥ २१ ॥ गताश्च वणिजः सर्वे यथास्थानं सुदुःखिताः ॥ स दैत्यो घातितो राम देवैः सुरभयङ्करः ॥ २२ ॥ आक्रम्यात्र महामायो दुराधर्षो दुरत्ययः ॥ न ते जनाः समायान्ति तद्भयादतिशङ्किताः ॥ २३ ॥ अद्य वै द्वादश समाः शून्यागारमनाथवत् ॥ यस्यां हि दीर्घिकायां मे स्नानदानोद्यतो जनः ॥२४॥ राम तस्यां दीर्घिकायां निपतन्ति च शूकराः ॥ यत्राङ्गना भर्तृयुता जलक्रीडापरायणाः ॥ २५ ॥ चिक्रीडुस्तत्र महिषा निपतन्ति जलाशये ॥ यत्र स्थाने सुपुष्पाणां प्रकारः प्रचुरोऽभवत् ॥ २६ ॥ तद्रुद्धं कण्टकैर्वृक्षैः सिंहव्याघ्रसमाकुलैः ॥ संचिक्रीडुः कुमाराश्च यस्यां भूमौ निरन्तरम् ॥ २७ ॥ कुमाराश्चित्रकाणां च तत्र क्रीडन्ति हर्षिताः ॥

वे लोग नहीं आते हैं ॥ २२।२३ ॥ आज शून्य मंदिर व अनाथवान् धर्मक्षेत्र को बारह वर्ष हुए और मेरी जिस बावली में मनुष्य स्नान, दान के लिये उद्यत था ॥ २४॥ हे राम ! उस बावली में सुवर गिरते हैं और जिसमें पतियों से संयुत स्त्रियां जलक्रीड़ा करती थीं ॥ २५॥ उस जलाशय में भैंसे गिरते हैं व खेलते हैं और जिस स्थानमें बहुत उत्तम पुष्पों के भेद थे ॥ २६ ॥ वह स्थान सिंहों व व्याघ्रों से संयुत कँटीले वृक्षों से रुँध गया है और जिस भूमि में सदैव कुमार लोग क्रीड़ा करते थे ॥२७॥ वहां

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

प्रसन्न होते हुए चीता बाघों के बच्चे खेलते हैं और जहां सदैव ब्राह्मण लोग वेदगान करते थे॥ २८॥ वहां बड़े भयंकर सियारियोंके फेत्कार शब्द सुनपड़ते हैं और जहां घर घर में अग्निहोत्रों का धुवाँ देख पड़ता था॥ २६॥ वहां बहुतही उग्र व धुवाँ समेत दौरहा देख पड़ते हैं और ब्राह्मणों के आगे जहां प्रसन्न होकर नर्तक लोग नाचते थे॥ ३०॥ वहीं पर मोहित होते हुए भूत, वेताल व प्रेत नाचते हैं व जिस सभा में मंत्रोंको जपते हुए ब्राह्मण लोग बैठते थे॥ ३१॥ उस स्थान में सुरहगाय, ऋक्ष व साही नामक जन्तु बैठते हैं और जहां ब्राह्मणों व वैश्यों के निवासस्थान देख पड़ते थे॥ ३२॥ हे राम! बाँधी हुई भूमिवाले वे स्थान यहां बिल देख पड़ते हैं और यहां

अकुर्वन्वाडवा यत्र वेदगानं निरन्तरम्॥ २८॥ शिवानां तत्र फेत्काराः श्रूयन्तेऽतिभयङ्कराः॥ यत्र धूमोग्निहोत्राणां दृश्यते वै गृहे गृहे॥ २६॥ तत्र दावाः सधूमाश्च दृश्यन्तेऽत्युल्बणा भृशम्॥ नृत्यन्ते नर्त्तका यत्र हर्षिता हि द्विजाग्रतः॥ ३०॥ तत्रैव भूतवेतालाःप्रेता नृत्यन्ति मोहिताः॥ नृपा यत्र सभायां तु न्यषीदन्मन्त्रतत्पराः॥ ३१॥ तस्मिन्स्थाने निषीदन्ति गवया ऋक्षशल्लकाः॥ आवासा यत्र दृश्यन्ते द्विजानां वणिजां तथा॥ ३२॥ कुट्टिमप्रतिमा राम दृश्यन्तेत्र बिलानि वै॥ कोटराणीव वृक्षाणां गवाक्षाणीह सर्वतः॥ ३३॥ चतुष्का यज्ञवेदिर्हि सोच्छ्रायाह्यभवत्पुरा॥ तेऽत्र वल्मीकनिचयैर्दृश्यन्ते परिवेष्टिताः॥ ३४॥ एवंविधं निवासं मे विद्धि राम नृपोत्तम॥ शून्यं तु सर्वतो यस्मान्निवासाय द्विजा गताः॥ ३५॥ तेन मे सुमहद्दुःखं तस्मात्त्राहि नरेश्वर॥ एतच्छ्रुत्वा वचो राम उवाच वदतां वरः॥ ३६॥ श्रीराम उवाच॥ न जाने तावकान्विप्रांश्चतुर्दिक्षु समाश्रितान्॥ न तेषां वेद्म्यहं संख्यां नाम

सब ओर झरोखा वृक्षों के खोड़र से देख पड़ते हैं॥ ३३॥ और पुरातन समय चौकोर यज्ञवेदी जो उँचाई समेत हुई है वे स्थान बँबौरि समूहों से घिरे देखपड़ते हैं॥ ३४॥ हे नृपोत्तम, राम! मेरे इस प्रकार के निवास को सब ओर से शून्य जानिये जिस लिये ब्राह्मण लोग निवास के लिये चले गये॥ ३५॥ हे नरेश्वर! उससे मुझको बड़ा दुःख है उसी कारण रक्षा कीजिये इस वचन को सुनकर कहनेवालों में श्रेष्ठ श्रीरामजी ने वचन को कहा॥ ३६॥ श्रीरामजी बोले कि चारों दिशाओं में टिके हुए

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुम्हारे ब्राह्मणों को मैं नहीं जानता हूं और उन ब्राह्मणों की संख्या व नाम और गोत्र को नहीं जानता हूं ॥ ३७ ॥ जैसा कुटुंब व जैसा गोत्र हो उसको यथार्थ कहिये तो उन सबों को लाकर मैं उन सबों को अपने स्थान में बसाऊं ॥ ३८ ॥ श्रीमाता बोली कि हे नरेश्वर ! ब्रह्मा, विष्णु व शिवजीने जिनको स्थापन किया है वे अठारह हज़ार वेदों के पारगामी ब्राह्मण हैं ॥ ३९ ॥ व हे अमितद्युते ! इस संसार में वे वेदत्रयी की विद्याओं में प्रवीण हैं और चौंसठि गोत्रों के मध्य में जो ब्राह्मण प्रतिष्ठित हैं ॥ ४० ॥ उनको श्रीमाता ने त्रयीविद्या को दिया है और संसार में वे सब द्विजोत्तम हैं व छत्तीस हज़ार धर्म में परायण वैश्य हैं ॥ ४१ ॥ व ब्राह्मणों की सेवा में परायण वे

गोत्रे द्विजन्मनाम् ॥ ३७ ॥ यथा ज्ञातिर्यथा गोत्रं याथातथ्यं निवेदय ॥ तत आनीय तान्सर्वान्स्वस्थाने वासयाम्य हम् ॥ ३८ ॥ श्रीमातोवाच ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशैश्च स्थापिता ये नरेश्वर ॥ अष्टादशसहस्राणि ब्राह्मणा वेदपार गाः ॥ ३९ ॥ त्रयीविद्यासु विख्याता लोकेऽस्मिन्नमितद्युते ॥ चतुष्षष्टिकगोत्राणां वाडवा ये प्रतिष्ठिताः ॥ ४० ॥ श्री मातादात्त्रयीविद्यां लोके सर्वे द्विजोत्तमाः ॥ षट्त्रिंशच्च सहस्राणि वैश्या धर्मपरायणाः ॥ ४१ ॥ आर्यवृत्तास्तु वि ज्ञेया द्विजशुश्रूषणे रताः ॥ बकुलार्को नृपो यत्र संज्ञया सह राजते ॥ ४२ ॥ कुमारावश्विनौ देवौ धनदो व्ययपूरकः ॥ अधिष्ठात्री त्वहं राम नाम्ना भट्टारिका स्मृता ॥ ४३ ॥ श्रीसूत उवाच ॥ स्थानाचाराश्च ये केचित्कुलाचारास्तथैव च ॥ श्रीमात्रा कथितं सर्वं रामस्याग्रे पुरातनम् ॥ ४४ ॥ तस्यास्तु वचनं श्रुत्वा रामो मुदमवाप ह ॥ सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यं हि भाषितं त्वया ॥ ४५ ॥ यस्मात्सत्यं त्वया प्रोक्तं तन्नाम्ना नगरं शुभम् ॥ वासयामि जगन्मातः सत्य

श्रेष्ठ आचरणवाले हैं जहां कि संज्ञा समेत बकुलार्क राजा शोभित हैं ॥ ४२ ॥ वहीं अश्विनीकुमार देव व व्यय (ख़र्च) को पूर्ण करनेवाले कुबेरजी हैं व हे राम ! मैं अ-धिष्ठात्री देवता नाम से भट्टारिका कही गई हूं ॥ ४३ ॥ श्रीसूतजी बोले कि जो कोई स्थान के आचार व कुल के आचार थे श्रीरामजी के आगे उस सब पुराने चरित्र को श्रीमाता ने कहा ॥ ४४ ॥ व उसका वचन सुनकर रामजी हर्ष को प्राप्त हुए और यह बोले कि तुमने सत्य, सत्य व फिर सत्य को कहा है ॥ ४५ ॥ हे जगदम्बिके !

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जिस लिये तुम ने सत्य कहा है उसी कारण उस नाम से सत्यमंदिर नामक उत्तम नगर को बसाऊंगा ॥ ४६ ॥ और उत्तम सत्यमंदिर तीनों लोकों में प्रसिद्धि को प्राप्त होगा ॥ ४७ ॥ यह कहकर तदनन्तर श्रीरामजी ने ब्राह्मणों को लाने के लिये लक्ष संख्यक अपने सेवकों को पठाया ॥ ४८ ॥ व कहा कि जिस देश व प्रदेश और वन में व नदी के किनारे और पर्वत के समीप व जैसे स्थानवाले उस उस ग्राम में ॥ ४९ ॥ जहां धर्मारण्य के निवासी द्विजोत्तम गये हों वहां उन को अर्घ व पाद्यों से पूजकर शीघ्रही लाइये ॥ ५० ॥ जब यहां मैं उन द्विजोत्तमों को देखूंगा तब भोजन करूंगा ॥ ५१ ॥ और जो इन ब्राह्मणों को न मानकर यहां आवैगा

मन्दिरमेव च ॥ ४६ ॥ त्रैलोक्ये ख्यातिमाप्नोतु सत्यमन्दिरमुत्तमम् ॥ ४७ ॥ एतदुक्त्वा ततो रामः सहस्रशतसंख्य या ॥ स्वभृत्यान्प्रेषयामास विप्रानयनहेतवे ॥ ४८ ॥ यस्मिन्देशे प्रदेशे वा वने वा सरितस्तटे ॥ पर्यन्ते वा यथास्था ने ग्रामे वा तत्र तत्र च ॥ ४९ ॥ धर्मारण्यनिवासाश्च याता यत्र द्विजोत्तमाः ॥ अर्घपाद्यैः पूजयित्वा शीघ्रमानयतात्र तान् ॥ ५० ॥ अहमत्र तदा भोक्ष्ये यदा द्रक्ष्ये द्विजोत्तमान् ॥ ५१ ॥ विमान्य च द्विजानेतानागमिष्यति यो नरः ॥ स मे वध्यश्च दण्ड्यश्च निर्वास्यो विषयाद्बहिः ॥ ५२ ॥ तच्छ्रुत्वा दारुणं वाक्यं दुःसहं दुष्प्रधर्षणम् ॥ रामाज्ञाकारि णो दूता गताः सर्वे दिशो दश ॥ ५३ ॥ शोधिता वाडवाः सर्वे लब्ध्वा सर्वे सुहर्षिताः ॥ यथोक्तेन विधानेन अर्घपाद्यै रपूजयन् ॥ ५४ ॥ स्तुतिं चक्रुश्च विधिवद्विनयाचारपूर्वकम् ॥ आमन्त्र्य च द्विजान्सर्वान् रामवाक्यं प्रकाशयन् ॥ ५५ ॥ ततस्ते वाडवाः सर्वे द्विजाः सेवकसंयुताः ॥ गमनायोद्यताः सर्वे वेदशास्त्रपरायणाः ॥ ५६ ॥ आगता रामपार्श्वं च बहु

वह मेरे मारने योग्य तथा दंड देने योग्य व देश से बाहर निकालने योग्य होगा ॥ ५२ ॥ उस दुःसह व दुर्धर्ष और कठोर वचन को सुनकर श्रीरामजी की आज्ञा को करनेवाले सब दूत दशो दिशाओं को चले गये ॥ ५३ ॥ सब ब्राह्मण ढूंढ़े गये और उन को पाकर प्रसन्न होते हुए दूतों ने यथोक्त विधि से अर्घ व पाद्य से पूजन किया ॥ ५४ ॥ और विनय व आचारपूर्वक विधि से स्तुति किया व सब ब्राह्मणों को बुलाकर श्रीरामजी के वचन को प्रकाश किया ॥ ५५ ॥ तब वेदों व शास्त्रों में परायण वे सब ब्राह्मण सेवकों समेत जाने के लिये तैयार हुए ॥ ५६ ॥ और बहुत मानपूर्वक वे श्रीरामजी के समीप आये और आये हुए ब्राह्मणों को देखकर रोमांच

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संयुत ॥ ५७ ॥ दशरथकुमार श्रीराम राजा ने अपना को कृतार्थ सा माना और वे शीघ्रता से उठकर आगे पैदल चले ॥ ५८ ॥ और हाथों को जोड़कर हर्ष से आँसुवों को छोड़ते हुए श्रीरामजी ने घुटुनुवों से पृथ्वी को प्राप्त होकर यह वचन कहा ॥ ५९ ॥ कि ब्राह्मणों की प्रसन्नतासे मैं लक्ष्मीपति हूं व ब्राह्मणों की प्रसन्नता से मैं पृथ्वी को धारण किये हूं और ब्राह्मणों की प्रसन्नता से मैं पृथ्वी का स्वामी हूं व ब्राह्मणों की प्रसन्नता से मेरा राम नाम है ॥ ६० ॥ श्रीरामजी से ऐसा कहे हुए वे ब्राह्मण प्रसन्न हुए व उन्होंने जय के आशीर्वादों से पूजकर दीर्घायु होवो यह कहा ॥ ६१ ॥ और श्रीरामजी ने उनको पाद्य, अर्घ्य व विष्टरादिक दिया व दंडा की नाईं

मानपुरःसराः ॥ समागतान्द्विजान्दृष्ट्वा रोमाञ्चिततनूरुहः ॥ ५७ ॥ कृतकृत्यमिवात्मानं मेने दाशरथिर्नृपः ॥ स सं भ्रमात्समुत्थाय पदातिः प्रययौ पुरः ॥ ५८ ॥ करसम्पुटकं कृत्वा हर्षाश्रु प्रतिमुञ्चयन् ॥ जानुभ्यामवनिं गत्वा इदं व चनमब्रवीत् ॥ ५९ ॥ विप्रप्रसादात्कमलावरोऽहं विप्रप्रसादाद्धरणीधरोऽहम् ॥ विप्रप्रसादाज्जगतीपतिश्च विप्रप्रसा दान्मम रामनाम ॥ ६० ॥ इत्येवमुक्ता रामेण वाडवास्ते प्रहर्षिताः ॥ जयाशीर्भिः प्रपूज्याथ दीर्घायुरिति चाब्रु वन् ॥ ६१ ॥ आवर्जितास्ते रामेण पाद्यार्घ्यविष्टरादिभिः ॥ स्तुतिं चकार विप्राणां दण्डवत्प्रणिपत्य च ॥ ६२ ॥ कृता ञ्जलिपुटः स्थित्वा चक्रे पादाभिवन्दनम् ॥ आसनानि विचित्राणि हैमान्याभरणानि च ॥ ६३ ॥ समर्पयामास ततो रामो दशरथात्मजः ॥ अङ्गुलीयकवासांसि उपवीतानि कर्णकान् ॥ ६४ ॥ प्रददौ विप्रमुख्येभ्यो नानावर्णाश्च धेनवः ॥ एकैकशतसंख्याका घटोध्नीश्च सवत्सकाः ॥ ६५ ॥ सवस्त्रा बद्धघण्टाश्च हेमशृङ्गविभूषिताः ॥ रूप्यखुरास्ताम्र

प्रणाम करके स्तुति किया ॥ ६२ ॥ और हाथों को जोड़कर स्थित होकर चरणों को प्रणाम किया व विचित्र आसन व सुवर्ण के गहनों को दिया ॥ ६३ ॥ तदनन्तर दशरथ के पुत्र श्रीरामजी ने अँगूठी, वसन, यज्ञोपवीत व कर्णाभरणों को दिया ॥ ६४ ॥ व मुख्य ब्राह्मणों के लिये अनेक प्रकार के रंगवाली तथा घड़ा के समान ऐनवाली बछड़ा समेत एक एक सौ गौवों को मुख्य ब्राह्मणों के लिये दिया ॥ ६५ ॥ और बँधेहुए घंटोंवाली तथा सुवर्ण के शृंगों से भूषित व चांदी के खुर और ताँबे की पीठवाली

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कांस्य पात्रों से संयुत वस्त्र समेत गौवों को दिया ॥ ६६ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणेधर्मारण्यमाहात्म्ये देवीदयालुमिश्रविरचितायांभाषाटीकायां ब्रह्मनारदसंवादेसत्यमन्दिरस्थापनवर्णनोनामद्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

दो० । धर्मारण्यक राम किय यथा जीर्ण उद्धार । तेंतिसवें अध्याय में सोई चरित सुखार ॥ श्रीरामजी बोले कि श्रीमाता के वचन से मैं जीर्णोद्धार करूंगा मेरे लिये आज्ञा को दीजिये कि जिस प्रकार मैं तुमलोगों को दान देऊं ॥ १ ॥ हे ब्राह्मणो ! उत्तम यज्ञ करके पात्र में दान देना चाहिये अपात्र में कुछ नहीं दिया जाता है क्योंकि

पृष्ठीः कांस्यपात्रसमन्विताः ॥ ६६ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे धर्मारण्यमाहात्म्येब्रह्मनारदसंवादे सत्यमन्दिरस्थापनवर्णनोनामद्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

राम उवाच ॥ जीर्णोद्धारं करिष्यामि श्रीमातुर्वचनादहम् ॥ आज्ञा प्रदीयतां मह्यं यथादानं ददामि वः ॥ १ ॥ पात्रे दानं प्रदातव्यं कृत्वा यज्ञवरं द्विजाः ॥ नापात्रे दीयते किञ्चिद्दत्तं न तु सुखावहम् ॥ २ ॥ सुपात्रं नौरिव सदा तारयेदुभयोरपि ॥ लोहपिण्डोपमं ज्ञेयं कुपात्रं भञ्जनात्मकम् ॥ ३ ॥ जातिमात्रेण विप्रत्वं जायते न हि भो द्विजाः ॥ क्रिया बलवती लोके क्रियाहीने कुतः फलम् ॥ ४ ॥ पूज्यास्तस्मात्पूज्यतमा ब्राह्मणाः सत्यवादिनः ॥ यज्ञकार्ये समुत्पन्ने कृपां कुर्वन्तु सर्वदा ॥ ५ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ततस्तु मिलिताः सर्वे विमृश्य च परस्परम् ॥ केचिदूचुस्तदा रामं शिलोञ्छजीविका वयम् ॥ ६ ॥ सन्तोषं परमास्थाय स्थिता धर्मपरायणाः ॥ प्रतिग्रहप्रयोगेण न चास्माकं प्रयो

दिया हुआ वह सुखदायक नहीं होता है ॥ २ ॥ और नाव की नाईं सुपात्र सदैव दोनों को भी तारता है व कुपात्र लोहपिंड के समान नाशक जानने योग्य है ॥ ३ ॥ हे ब्राह्मणो ! केवल जातिही से ब्राह्मणता नहीं होती है बरन संसार में कर्म बलवान् होता है और कर्महीन में फल कहां से होगा ॥ ४ ॥ इस कारण सत्यवादी ब्राह्मण पूजने योग्य व अधिक पूजनीय हैं और यज्ञकार्य उत्पन्न होने पर ब्राह्मण सदैव कृपा करैं ॥ ५ ॥ ब्रह्मा बोले कि तदनन्तर सब मिलकर व परस्पर विचार कर उस समय कुछ ब्राह्मणों ने श्रीरामजी से कहा कि हमलोग शिलोञ्छ जीविकावाले हैं ॥ ६ ॥ और बड़े संतोष में स्थित हमलोग धर्म में लगे हुए हैं हमलोगों का दान

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के प्रयोग से प्रयोजन नहीं है ॥ ७ ॥ दश बधस्थानों के समान कुम्हार होता है व दश कुम्हारों के बराबर तेली होता है और दश तेलियों के समान वेश्या होती है व दश वेश्याओं के समान राजा होता है ॥ ८ ॥ व हे रामजी ! राजा का दान भयंकर होता है यह निस्सन्देह सत्य है उसी कारण हमलोग भयदायक दान की इच्छा नहीं करते हैं ॥ ९ ॥ कोई एकाहिक व्रतवाले ब्राह्मण थे व कोई अमृत (अयाचित) जीविकावाले थे और कोई ब्राह्मण कुंभीधान्य व्रतवाले व कोई छः कर्मों में तत्पर थे ॥ १० ॥ और कोई तीन मूर्तियों का स्थापन करनेवाले थे इस प्रकार सब पृथक् भाववाले व पृथक् गुणोंवाले थे और कितेक ब्राह्मणों ने यह कहा कि बिन त्रिमूर्ति

जनम् ॥७॥ दशसूनासमश्चक्री दशचक्रिसमो ध्वजः ॥ दशध्वजसमा वेश्या दशवेश्यासमो नृपः ॥ ८ ॥ राजप्रतिग्रहो घोरो राम सत्यं न संशयः॥ तस्माद्वयं न चेच्छामः प्रतिग्रहं भयावहम् ॥ ९ ॥ एकाहिका द्विजाः केचित्केचित्स्वामृत वृत्तयः ॥ कुम्भीधान्या द्विजाः केचित् केचित्षट्कर्मतत्पराः ॥ १० ॥ त्रिमूर्तिस्थापिताः सर्वे पृथग्भावाः पृथग्गुणाः॥ केचिदेवं वदन्तिस्म त्रिमूर्त्याज्ञां विना वयम् ॥ ११ ॥ प्रतिग्रहस्य स्वीकारं कथं कुर्याम ह द्विजाः ॥ न ताम्बूलं स्वीकृतं नो यावद्देवैर्नभाषितम् ॥ १२ ॥ विमृश्य स तदा रामो वसिष्ठेन महात्मना ॥ ब्रह्मविष्णुशिवादीनां सस्मार गुरुणा सह ॥ १३ ॥ स्मृतमात्रास्ततो देवास्तं देशं समुपागमन् ॥ सूर्यकोटिप्रतीकाशविमानावलिसंवृताः ॥ १४ ॥ रामेण ते यथान्यायं पूजिताः परया मुदा ॥ निवेदितं तु तत्सर्वं रामेणातिसुबुद्धिना ॥ १५ ॥ अधिदेव्या वचनतो जीर्णोद्धारं करोम्यहम् ॥ धर्मारण्ये हरिक्षेत्रे धर्मकूपसमीपतः ॥ १६ ॥ ततस्ते वाडवाः सर्वे त्रिमूर्त्तीः प्रणिपत्य च ॥ महता हर्ष

की आज्ञा से हमलोग ॥ ११ ॥ ब्राह्मण कैसे दान को स्वीकार करैं क्योंकि जबतक देवता नहीं कहते हैं तबतक हमलोग ताम्बूल को नहीं खाते हैं ॥ १२ ॥ तब महात्मा वसिष्ठ गुरु समेत श्रीरामजी ने विचार कर ब्रह्मा, विष्णु व शिवादिक देवताओं को स्मरण किया ॥ १३ ॥ तदनन्तर स्मरण किये हुए वे विमानों की पांतियों से घिरेहुए करोड़ों सूर्यों के समान देवता उस स्थान को आये ॥ १४ ॥ और श्रीरामजी ने उनको बड़े हर्ष से यथायोग्य पूजन किया और उत्तम बुद्धिवाले श्रीरामजी ने उस सब वृत्तान्त को बतलाया ॥ १५ ॥ धर्मारण्य विष्णुक्षेत्र में धर्मकूप के समीप से मैं अधिदेवी के वचन से जीर्णोद्धार करता हूं ॥ १६ ॥ तदनन्तर वे सब बड़े हर्षगण

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

से पूर्ण वे सब ब्राह्मण तीनों मूर्तियों को प्रणाम कर मनोरथ को प्राप्त हुए ॥ १७ ॥ और उन्हों ने अर्घ्य, पाद्यादि की विधि से उन को श्रद्धा से पूजा व क्षण भर विश्राम कर उन ब्रह्मा, विष्णु व शिवादिक देवताओं ने ॥ १८ ॥ विनय से हाथों को जोड़े हुए बड़े शक्तिमान् श्रीरामजी से कहा ॥ १९ ॥ देवता बोले कि हे सूर्यवंशभूषण, श्रीरामजी ! तुम ने देवताओं के शत्रु जिन रावणादिकों को मारा है उस से हम सब प्रसन्न हैं ॥ २० ॥ और बड़े भारी स्थान का जीर्णोद्धार कीजिये तो बड़े भारी यश को प्राप्त होवोगे ॥ २१ ॥ उन देवताओं की आज्ञा को पाकर वे दशरथकुमार श्रीरामजी प्रसन्न हुए व जीर्णोद्धार में अनन्त गुण को चाहते हुए लक्ष्मीपति श्रीरामजी

वृन्देन पूर्णाः प्राप्तमनोरथाः ॥ १७ ॥ अर्घ्यपाद्यादिविधिना श्रद्धया तानपूजयन् ॥ क्षणं विश्रम्य ते देवा ब्रह्मविष्णुशिवादयः ॥ १८ ॥ ऊचू रामं महाशक्तिं विनयात्कृतसम्पुटम् ॥ १९ ॥ देवा ऊचुः ॥ देवद्रुहस्त्वया राम ये हता रावणादयः ॥ तेन तुष्टा वयं सर्वे भानुवंशविभूषण ॥ २० ॥ उद्धरस्व महास्थानं महतीं कीर्तिमाप्नुहि ॥ २१ ॥ लब्ध्वा स तेषामाज्ञां तु प्रीतो दशरथात्मजः ॥ जीर्णोद्धारेऽनन्तगुणं फलमिच्छन्निलापतिः ॥ २२ ॥ देवानां सन्निधौ तेषां कार्यारम्भमथाकरोत् ॥ स्थण्डिलं पूर्वतः कृत्वा महागिरिसमं शुभम् ॥ २३ ॥ तस्योपरि बहिःशाला गृहशाला ह्यनेकशः ॥ ब्रह्मशालाश्च बहुशो निर्ममे शोभनाकृतीः ॥ २४ ॥ निधानैश्च समायुक्ता गृहोपकरणैर्वृताः ॥ सुवर्णकोटिसम्पूर्णा रसवस्त्रादिपूरिताः ॥ २५ ॥ धनधान्यसमृद्धाश्च सर्वधातुयुतास्तथा ॥ एतत्सर्वं कारयित्वा ब्राह्मणेभ्यस्तदा ददौ ॥ २६ ॥ एकैकशो दश दश ददौ धेनूः पयस्विनीः ॥ चत्वारिंशच्छतं प्रादाद् ग्रामाणां चतुराधिकम् ॥ २७ ॥ त्रैविद्यद्विजविप्रेभ्यो

ने ॥ २२ ॥ उन देवताओं के समीप कार्य का प्रारंभ किया पूर्व ओर बड़े पर्वत के समान चौतरा को बनाकर ॥ २३ ॥ उसके ऊपर उत्तम स्वरूपवाली अनेक बहिःशाला व गृहशाला और ब्रह्मशालाओं को बनाया ॥ २४ ॥ जो कि घर की सामग्रियों से संयुत तथा ख़ज़ानों से युक्त और करोड़ों अशर्फ़ियों से पूर्ण व रस और वस्त्रादिकों से पूर्ण थे ॥ २५ ॥ और धन, धान्य से पूर्ण व सब धातुओं से संयुत थे इस सब को बनवाकर तब श्रीरामजी ने ब्राह्मणों के लिये देदिया ॥ २६ ॥ और एक एक ब्राह्मण को दश दश दूधवाली गाइयों को दिया व दशरथ के पुत्र श्रीरामजी ने त्रैविद्य ब्राह्मणों के लिये चार अधिक चार सौ ग्रामों को दिया जिस लिये

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ब्रह्मा, विष्णु व महेश तीनों ने द्विजोत्तमों को स्थापित किया है॥ २७। २८॥ उसी कारण त्रैविद्य ऐसी प्रसिद्धि संसार में हुई ब्राह्मणों के लिये इस प्रकार का बड़ा अद्भुत दान देकर॥ २९॥ उन श्रीरामनरेशजी ने अपना को कृतार्थ माना पहले ब्रह्मा, विष्णु व शिवजी से जो स्थापन किये गये थे॥ ३०॥ वे जीर्णोद्धार करने पर श्रीरामजी से पूजे गये और छत्तीस हज़ार जो गोभुज श्रेष्ठ वैश्य थे वे सेवा के लिये विष्णु व शिवादिक देवताओं से दिये गये और प्रसन्न शिवजी ने उनके लिये नौकरी दिया॥ ३१। ३२॥ और सफ़ेद घोड़े व चँवर दिये गये और निर्मल तलवार दीगई तब ब्राह्मणों की सेवा के लिये वे समझाये गये॥ ३३॥ कि विवाहादिकों में सदैव

रामो दशरथात्मजः॥ काजेशेन त्रयेणैव स्थापिता द्विजसत्तमाः॥ २८॥ तस्मात्त्रयीविद्य इति ख्यातिर्लोके बभूव ह॥ एवंविधं द्विजेभ्यः स दत्त्वा दानं महाद्भुतम्॥ २९॥ आत्मानं चापि मेने स कृतकृत्यं नरेश्वरः॥ ब्रह्मणा स्थापिताः पूर्वं विष्णुना शङ्करेण ये॥ ३०॥ ते पूजिता राघवेण जीर्णोद्धारे कृते सति॥ षट्त्रिंशच्च सहस्राणि गोभुजा ये वणिग्वराः॥ ३१॥ शुश्रूषार्थं प्रदत्ता वै देवैर्हरिहरादिभिः॥ सन्तुष्टेन तु शर्वेण तेभ्यो दत्तं तु वेतनम्॥ ३२॥ श्वेताश्वचामरौ दत्तौ खड्गं दत्तं सुनिर्मलम्॥ तदा प्रबोधितास्ते च द्विजशुश्रूषणाय वै॥ ३३॥ विवाहादौ सदा भाव्यं चामरैर्मङ्गलं वरम्॥ खड्गं शुभं तदा धार्य्यं मम चिह्नं करे स्थितम्॥ ३४॥ गुरुपूजा सदा कार्या कुलदेव्या पुनः पुनः॥ वृद्धयागमेषु प्राप्तेषु वृद्धिदायकदक्षिणा॥ ३५॥ एकादश्यां शनेर्वारे दानं देयं द्विजन्मने॥ प्रदेयं बालवृद्धेभ्यो मम रामस्य शासनात्॥ ३६॥ मण्डलेषु च ये शूद्रा वणिग्वृत्तिरताः पराः॥ सपादलक्षास्ते दत्ता रामशासन

चँवर से उत्तम मंगल होना चाहिये और तब मेरे हाथ में स्थित चिह्न व उत्तम तलवार को धारण करना चाहिये॥३४॥ और सदैव गुरुपूजन व कुलदेवी का पूजन बार २ करना चाहिये व वृद्धि आगमवाले कार्यों के प्राप्त होने पर वृद्धि देनेवाली दक्षिणा चाहिये॥ ३५॥ और शनिवार एकादशी में ब्राह्मण के लिये दान देना चाहिये और मेरी रामजी की आज्ञा से बालकों व वृद्धों के लिये देना चाहिये॥३६॥ और मंडलों में जो उत्तम शूद्र वैश्यों की जीविका में परायण थे श्रीरामजी की आज्ञा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के पालक वे सवालक्ष दिये गये ॥ ३७ ॥ वे मांडलीक राजा मंडलेश्वर जानने योग्य हैं व श्रीरामजी से श्रेष्ठ वैश्यलोग ब्राह्मणों की सेवा में दिये गये ॥ ३८ ॥ और श्रीरामजी ने दो चँवर व तलवार को दिया और प्रतिष्ठा की विधिपूर्वक कुल के स्वामी सूर्य को स्थापित किया ॥ ३९ ॥ और चारों वेदों से संयुत ब्रह्मा को स्थापित किया और श्रीमाता महाशक्ति व शून्य के स्वामी विष्णुजी को स्थापित किया ॥ ४० ॥ व विघ्नों के नाश के लिये दक्षिण द्वार पै टिके हुए गण को स्थापित किया और अन्य देवताओं को स्थापित किया ॥ ४१ ॥ और उन वीर श्रीरामजी ने सात भूमियोंवाले मन्दिरों को बनवाया जो कुछ मंगलरूप उत्तम कार्य को मनुष्य करता है ॥ ४२ ॥

पालकाः ॥ ३७ ॥ माण्डलीकास्तु ते ज्ञेया राजानो मण्डलेश्वराः ॥ द्विजशुश्रूषणे दत्ता रामेण वणिजां वराः ॥ ३८ ॥ चामरद्वितयं रामो दत्तवान्खड्गमेव च ॥ कुलस्य स्वामिनं सूर्यं प्रतिष्ठाविधिपूर्वकम् ॥ ३९ ॥ ब्रह्माणं स्थापयामास चतुर्वेदसमन्वितम् ॥ श्रीमातरं महाशक्तिं शून्यस्वामिहरिं तथा ॥ ४० ॥ विघ्नापध्वंसनार्थाय दक्षिणद्वारसंस्थितम् ॥ गणं संस्थापयामास तथान्याश्चैव देवताः ॥ ४१ ॥ कारितास्तेन वीरेण प्रासादाः सप्तभूमिकाः ॥ यत्किञ्चित्कुरुते कार्यं शुभं माङ्गल्यरूपकम् ॥ ४२ ॥ पुत्रे जाते जातके वान्नाशने मुण्डनेऽपि वा ॥ लक्षहोमे कोटिहोमे तथा यज्ञक्रियासु च ॥ ४३ ॥ वास्तुपूजाग्रहशान्त्योः प्राप्ते चैव महोत्सवे ॥ यत्किञ्चित्कुरुते दानं द्रव्यं वा धान्यमुत्तमम् ॥ ४४ ॥ वस्त्रं वा धेनवो नाथ हेम रूप्यं तथैव च ॥ विप्राणामथशूद्राणां दीनानाथान्धकेषु च ॥ ४५ ॥ प्रथमं बकुलार्कस्य श्रीमातुश्चैव मानवः ॥ भागं दद्याच्च निर्विघ्नकार्यसिद्धयै निरन्तरम् ॥ ४६ ॥ वचनं मे समुल्लंघ्य कुरुते योऽन्यथा नरः ॥

और पुत्र उत्पन्न होने पर जातक कर्म या अन्नप्राशन व मुंडन में भी और यज्ञ कार्यों में लक्ष होम व कोटि होम में ॥ ४३ ॥ और वास्तुपूजन व ग्रह की शांति में महोत्सव प्राप्त होने पर मनुष्य जिस किसी दान व द्रव्य और उत्तम धान्य को देता है ॥ ४४ ॥ व हे नाथ ! वस्त्र व गऊ और सुवर्ण व चांदी को जो ब्राह्मणों व शूद्रों तथा दीन, अनाथ और अन्धों के लिये देवै ॥ ४५ ॥ वह मनुष्य सदैव निर्विघ्न कार्य की सिद्धि के लिये पहले बकुलार्कजी को व श्रीमाताजी को भाग देवै ॥ ४६ ॥ व जो

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मनुष्य मेरे वचन को उल्लंघन करके अन्यथा करता है उसके उस कर्म का विघ्न होगा इसमें सन्देह नहीं है ॥ ४७ ॥ ऐसा कहकर तदनन्तर श्रीरामजी ने प्रसन्न चित्त से देवताओं की बावली व क़िला की सामग्रियों से युक्त उत्तम प्राकारों (छहर दिवाली) को बनाया और बड़े लंबे चौड़े गांव के भीतरी मार्गों को व कुंड और तड़ाग व छोटे तालाबों को बनाया ॥ ४८ । ४९ ॥ और धर्म बावली व देवताओं से रचित अन्य कूपों को बनाया सुन्दर धर्मारण्य में इस सब को विस्तार कर ॥ ५० ॥ फिर श्रीरामजी ने बड़ी श्रद्धा से मुख्य त्रैविद्य ब्राह्मणों के लिये दिया ताँबे के पट्ट (तख़्ते) में स्थित श्रीरामजी की आज्ञा को जो लोप करता है ॥ ५१ ॥ उसके पहले

तस्यतत्कर्मणो विघ्नं भविष्यति न संशयः ॥ ४७ ॥ एवमुक्त्वा ततो रामः प्रहृष्टेनान्तरात्मना ॥ देवानामथ वापीश्च प्राकारांस्तु सुशोभनान् ॥ ४८ ॥ दुर्गोपकरणैर्युक्तान्प्रतोलीश्च सुविस्तृताः ॥ निर्ममे चैव कुण्डानि सरांसि सरसीस्त था ॥ ४९ ॥ धर्मवापीश्च कूपांश्च तथान्यान्देवनिर्मितान् ॥ एतत्सर्वं च विस्तार्य धर्मारण्ये मनोरमे ॥ ५० ॥ ददौ त्रैविद्यमुख्येभ्यः श्रद्धया परया पुनः ॥ ताम्रपट्टस्थितं रामशासनं लोपयेत्तु यः ॥ ५१ ॥ पूर्वजास्तस्य नरके पतन्त्यग्रे न सन्ततिः ॥ वायुपुत्रं समाहूय ततो रामोऽब्रवीद्वचः ॥ ५२ ॥ वायुपुत्र महावीर तव पूजा भविष्यति ॥ अस्य क्षेत्रस्य रक्षार्थे त्वमत्र स्थितिमाचर ॥ ५३ ॥ आञ्जनेयस्तु तद्वाक्यं प्रणम्य शिरसा दधौ ॥ जीर्णोद्धारं तदा कृ त्वा कृतकृत्यो बभूव ह ॥ ५४ ॥ श्रीमातरं तदाभ्यर्च्य प्रसन्नेनान्तरात्मना ॥ श्रीमातरं नमस्कृत्य तीर्थान्यन्यानि राघवः ॥ ५५ ॥ तेऽपि देवाः स्वकं स्थानं ययुर्ब्रह्मपुरोगमाः ॥ ५६ ॥ दत्त्वाशिषं तु रामाय वाञ्छितं ते भविष्यति ॥

पैदा हुए पितर नरक में पड़ते हैं और आगे सन्तान नहीं होती है पवनपुत्र हनुमान्जी को बुलाकर तदनन्तर श्रीरामजी ने यह वचन कहा ॥ ५२ ॥ कि हे महावीर, पवनपुत्र ! तुम्हारी यहां पूजा होगी और इस क्षेत्र की रक्षा के लिये तुम यहां स्थिति को प्राप्त होवो ॥ ५३ ॥ अंजनीकुमार हनुमान्जी ने प्रणामकर उस वचन को मस्तक से धारण किया और उस समय जीर्णोद्धार करके श्रीरामजी कृतार्थ हुए ॥५४॥ व उस समय श्रीरघुनाथजी प्रसन्नचित्त से श्रीमाता को प्रणामकर व पूजकर अन्य तीर्थों को चलेगये ॥ ५५ ॥ और ब्रह्मा आदिक वे देवता भी तुम्हारा मनोरथ होगा श्रीरामजी के लिये इस आशीर्वाद को देकर अपने स्थान को चले गये हे राम ! तुम

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ने ब्राह्मणों का सुन्दर स्थापनादिक कर्म किया ॥ ५६ । ५७ ॥ और तुम पुण्यवान् ने हमलोगों का भी स्नेह किया इस प्रकार स्तुति करते हुए देवता अपने स्थानों को चले गये ॥ ५८ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणेधर्मारण्यमाहात्म्येदेवीदयालुमिश्रविरचितायांभाषाटीकायां श्रीरामचन्द्रस्यपुरप्रत्यागमनवर्णनंनामत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥ ❀ ॥

दो० । धर्मारण्य द्विजन को दिय शासन जिमि राम । चौंतिसवें अध्याय में सोइ चरित अभिराम ॥ व्यासजी बोले कि हे धर्मज्ञ ! पुरातन समय इस प्रकार श्रीरामजी ने ब्राह्मणों के हित के लिये श्रीमाता के वचन से जीर्णोद्धार किया है ॥ १ ॥ युधिष्ठिरजी बोले कि हे ब्रह्मन् ! त्रेता में श्रीरामजी ने सत्यमन्दिर में कैसा शासन (शिक्षा)

रम्यं कृतं त्वया राम विप्राणां स्थापनादिकम् ॥ ५७ ॥ अस्माकमपि वात्सल्यं कृतं पुण्यवता त्वया ॥ इति स्तुवन्तस्ते देवाः स्वानि स्थानानि भेजिरे ॥ ५८ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणेधर्मारण्यमाहात्म्येश्रीरामचन्द्रस्यपुरप्रत्यागमनवर्णनंनामत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

व्यास उवाच ॥ एवं रामेण धर्मज्ञ जीर्णोद्धारः पुरा कृतः ॥ द्विजानां च हितार्थाय श्रीमातुर्वचनेन च ॥ १ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ कीदृशं शासनं ब्रह्मन् रामेण लिखितं पुरा ॥ कथयस्व प्रसादेन त्रेतायां सत्यमन्दिरे ॥ २ ॥ व्यास उवाच ॥ धर्मारण्ये वरे दिव्ये बकुलार्के स्वधिष्ठिते ॥ शून्यस्वामिनि विप्रेन्द्र स्थिते नारायणे प्रभौ ॥ ३ ॥ रक्षणाधिपतौ देवे सर्वज्ञे गणनायके ॥ भवसागरमग्नानां तारिणी यत्र योगिनी ॥ ४ ॥ शासनं तत्र रामस्य राघवस्य च नामतः ॥ शृणु ताम्राश्रयं तत्र लिखितं धर्मशास्त्रतः ॥ ५ ॥ महाश्चर्यकरं तच्च ह्यनेकयुगसंस्थितम् ॥ सर्वो धातुः क्षयं

लिखा है उसको प्रसन्नता से कहिये ॥ २ ॥ व्यासजी बोले कि हे द्विजेन्द्र ! उत्तम व दिव्य धर्मारण्य में बकुलार्कजी के स्थित होनेपर व शून्यस्वामी नारायण प्रभु के स्थित होने पर ॥ ३ ॥ और सर्वज्ञ गणेशदेवजी के रक्षा के स्वामी होने पर संसाररूपी समुद्र में मग्न मनुष्यों के तारने के लिये जहां योगिनीजी हैं ॥ ४ ॥ वहां राघवजी के नाम से श्रीरामजी के शासन को सुनिये कि धर्मशास्त्र से ताम्रपत्र के आश्रय जो शासन लिखा गया है ॥ ५ ॥ अनेकों युगों से स्थित वह बड़ा भारी आश्चर्य

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करनेवाला है सब धातु क्षय होती हैं और सुवर्ण नाश को प्राप्त होता है ॥ ६ ॥ व हे पुत्र ! द्विजशासन प्रत्यक्ष अक्षय देख पड़ता है और वहां ताँबे के नाश न होनेवाला कारण विद्यमान है ॥ ७ ॥ हे भारत ! जिस लिये विष्णुही सब वेदोक्त कहे जाते हैं व पुराणों में और वेदों तथा धर्मशास्त्रों में ॥ ८ ॥ अनेक प्रकार के भावों में आश्रित विष्णुजी सब कहीं गाये जाते हैं और अनेक प्रकार के देशों व धर्मों में अनेक भांति के धर्मों को सेवनेवाले मनुष्यों से ॥ ९ ॥ अनेक प्रकार के भेदों से सर्वत्र जो विष्णुही ध्यान किये जाते हैं वे ही साक्षात् पुराण पुरुषोत्तम विष्णुजी अवतार करते भये हैं ॥ १० ॥ हे पुत्र ! उन्हों ने देवताओं के वैरियों के नाश के लिये व

याति सुवर्णं क्षयमेति च ॥ ६ ॥ प्रत्यक्षं दृश्यते पुत्र द्विजशासनमक्षयम् ॥ अविनाशो हि ताम्रस्य कारणं तत्र विद्यते ॥ ७ ॥ वेदोक्तं सकलं यस्माद्विष्णुरेव हि कथ्यते ॥ पुराणेषु च वेदेषु धर्मशास्त्रेषु भारत ॥ ८ ॥ सर्वत्र गीयते विष्णुर्नानाभावसमाश्रयः ॥ नानादेशेषु धर्मेषु नानाधर्मनिषेविभिः ॥ ९ ॥ नानाभेदैस्तु सर्वत्र विष्णुरेवेति चिन्त्यते ॥ अवतीर्णः स वै साक्षात्पुराणपुरुषोत्तमः ॥ १० ॥ देववैरिविनाशाय धर्मसंरक्षणाय च ॥ तेनेदं शासनं दत्तमविनाशात्मकं सुत ॥ ११ ॥ यस्य प्रतापाद्दृषदस्तारिता जलमध्यतः ॥ वानरैर्वेष्टिता लङ्का हेलया राक्षसा हताः ॥ १२ ॥ मुनिपुत्रं मृतं रामो यमलोकादुपानयत् ॥ दुन्दुभिर्निहतो येन कबन्धोऽभिहतस्तथा ॥ १३ ॥ निहता ताडका चैव सप्तताला विभेदिताः ॥ खरश्च दूषणश्चैव त्रिशिराश्च महासुरः ॥ १४ ॥ चतुर्दशसहस्राणि जवेन निहता रणे ॥ तेनेदं शासनं दत्तमक्षयं न कथं भवेत् ॥ १५ ॥ स्ववंशवर्णनं तत्र लिखित्वा स्वयमेव तु ॥ देशकालादिकं सर्वं लिलेख विधिपूर्व

धर्म की रक्षा के लिये इस अविनाशी शासन को दिया है ॥ ११ ॥ जिन के प्रताप से पत्थर जल के मध्य में ऊपर प्राप्त हुए और वानरों से लंका घेरी गई व हेला से राक्षस मारे गये ॥ १२ ॥ और मरे हुए मुनिपुत्र को श्रीरामजी यमलोक से ले आये और जिन्होंने कबंध को मारा व दुन्दुभि को नाश किया ॥ १३ ॥ और जिन्हों ने ताड़का राक्षसी को मारा व सात ताल वृक्षों को काट डाला और खर, दूषण व त्रिशिरा महादैत्य को जिन्हों ने मारा ॥ १४ ॥ और युद्ध में चौदह हज़ार राक्षस वेग से मारेगये उन्हों ने यह अक्षय शासन दिया है वह कैसे न होवै ॥ १५ ॥ उसमें आपही श्रीरामजी ने अपने वंश का वर्णन लिखकर विधिपूर्वक सब देश काला-

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिक लिखा ॥ १६ ॥ और वहां अपनी छाप से चिह्नित उस लेख को त्रैविद्य ब्राह्मणों के लिये चवालीस वर्ष के दशरथकुमार श्रीरामजी ने दिया ॥ १७ ॥ व हे भारत ! उस समय में बड़ा भारी आश्चर्य दिया गया कि वहां सुवर्ण के समान व चांदी के समान ॥ १८ ॥ देवता, ऋषि व पितरों की तृप्तिदायक जल को श्रीरामजी ने तीर्थ में प्राप्त किया और अपने वंश के स्वामी श्रीरामजी के आगे सूर्य ने उसको किया ॥ १९ ॥ उस बड़े भारी आश्चर्य को देखकर पवित्र श्रीरामजी ने विष्णुजी को पूजकर विद्यामयी त्रयी को देकर ब्रह्म में मन को लगाया व रामजी के विचित्र लेखों से धर्म की आज्ञा लिखी गई ॥ २० ॥ जिसको देखकर जिस लिये सब

कम् ॥ १६ ॥ स्वमुद्राचिह्नितं तत्र त्रैविद्येभ्यस्तथा ददौ ॥ चतुश्चत्वारिंशवर्षो रामो दशरथात्मजः ॥ १७॥ तस्मिन्काले महाश्चर्यं संदत्तं किल भारत ॥ तत्र स्वर्णोपमं चापि रौप्योपममथापि च ॥ १८ ॥ उवाह सलिलं तीर्थे देवर्षिपितृतृप्तिदम् ॥ स्ववंशनायकस्याग्रे सूर्येण कृतमेव तत् ॥ १९ ॥ तद्दृष्ट्वा महदाश्चर्यं रामो विष्णुं प्रपूज्य च ॥ त्रयीं विद्यामयीं दत्त्वा ब्रह्मार्पणमनाः शुचिः ॥ रामलेखविचित्रैस्तु लिखितं धर्मशासनम् ॥ २० ॥ यद्दृष्ट्वाथ द्विजाः सर्वे संसारभयबन्धनम् ॥ कुर्वते नैव यस्माच्च तस्मान्निखिलरक्षकम् ॥ २१ ॥ ये पापिष्ठा दुराचारा मित्रद्रोहरताश्च ये ॥ तेषां प्रबोधनार्थाय प्रसिद्धिमकरोत्पुरा ॥ २२ ॥ रामलेखविचित्रैस्तु विचित्रे ताम्रपट्टके ॥ वाक्यानीमानि श्रूयन्ते शासने किल नारद ॥ २३ ॥ आस्फोटयन्ति पितरः कथयन्ति पितामहाः ॥ भूमिदोऽस्मत्कुले जातः सोऽस्मान्सन्तारयिष्यति ॥ २४ ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः पृथिवी त्वियम् ॥ यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥ २५ ॥ षष्टिवर्ष

ब्राह्मण संसार के भय के बंधन को नहीं करते हैं उसी कारण वह सबों का रक्षक है ॥ २१ ॥ और जो पापी व दुराचारी और जो मित्र के द्रोह में परायण हैं उन के ज्ञान के लिये प्राचीन समय में उन्हों ने प्रसिद्धि किया है ॥ २२ ॥ हे नारद ! रामजी के विचित्र लेखों से विचित्र ताम्रपट्ट में शिक्षा में ये वचन सुन पड़ते हैं ॥ २३ ॥ कि पितर गरजते हैं व पितामह यह कहते हैं कि जो भूमिदायक हमारे वंश में पैदा होगा वह हमलोगों को तारैगा ॥ २४ ॥ बहुत से राजाओं ने द्रव्य को धारनेवाली इस पृथ्वी को भोग किया है जब जिस जिस की पृथ्वी होती है तब उस उस को फल होता है ॥ २५ ॥ और पृथ्वी को देनेवाला मनुष्य साठ हज़ार वर्ष तक

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्वर्ग में बसता है और मना करनेवाला व उसको अनुमोदन करनेवाला उन्हीं साठ हज़ार वर्षों तक नरक को जाता है ॥ २६ ॥ और मुद्गरों से मार कर संगसियों से क्लेशित व फँसरियों से बांधा जाता हुआ वह बड़े भारी शब्द से रोता है ॥ २७ ॥ और दंडों से मस्तक में मारा हुआ व छुरी से काटा जाता हुआ वह अग्नि को लिपट कर बड़े शब्द से रोता है ॥ २८ ॥ और ब्राह्मण की जीविका को हरनेवाले उन पुरुषों को ऐसे बड़े दुष्ट महागण यमदूतलोग पीड़ित करते हैं ॥ २९ ॥ तदनन्तर वह पशु या पक्षी की योनि को पाता है या राक्षसी व कुत्ते की योनि को प्राप्त होता है अथवा बड़े प्राणियों को भी भय करनेवाली सर्प, सियार व पिशाच की योनि

सहस्राणि स्वर्गे वसति भूमिदः ॥ आच्छेत्ता चानुमन्ता च तान्येव नरकं व्रजेत् ॥ २६ ॥ सन्दंशैस्तुद्यमानस्तु मुद्गरैर्विनिहत्य च ॥ पाशैः सुबध्यमानस्तु रोरवीति महास्वरम् ॥ २७ ॥ ताड्यमानः शिरे दण्डैः समालिङ्ग्य विभावसुम् ॥ छिद्यमानः क्षुरिकया रोरवीति महास्वनम् ॥ २८ ॥ यमदूतैर्महाघोरैर्ब्रह्मवृत्तिविलोपकाः ॥ एवंविधैर्महादुष्टैः पीड्यन्ते ते महागणैः ॥ २९ ॥ ततस्तिर्यक्त्वमाप्नोति योनिं वा राक्षसीं शुनीम् ॥ व्यालीं शृगालीं पैशाचीं महाभूतभयङ्करीम् ॥ ३० ॥ भूमेरङ्गुलहर्त्ता हि स कथं पापमाचरेत् ॥ भूमेरङ्गुलदाता च स कथं पुण्यमाचरेत् ॥ ३१ ॥ अश्वमेधसहस्राणां राजसूयशतस्य च ॥ कन्याशतप्रदानस्य फलं प्राप्नोति भूमिदः ॥ ३२ ॥ आयुर्यशः सुखं प्रज्ञा धर्मो धान्यं धनं जयः ॥ सन्तानं वर्द्धते नित्यं भूमिदः सुखमश्नुते ॥ ३३ ॥ भूमेरङ्गुलमेकं तु ये हरन्ति खला नराः ॥ विन्ध्याटवीष्वतोयासु शुष्ककोटरवासिनः ॥ कृष्णसर्पाः प्रजायन्ते दत्तदायापहारकाः ॥ ३४ ॥ तडागानां सहस्रेण

को प्राप्त होता है ॥ ३० ॥ और जो अंगुल भर पृथ्वी को हरता है वह क्यों पाप करता है व अंगुल भर पृथ्वी को जो देता है वह क्यों पुण्य करता है ॥ ३१ ॥ क्यों कि पृथ्वी को देनेवाला मनुष्य हज़ार अश्वमेध व सौ राजसूय और सौ कन्यादान के फल को पाता है ॥ ३२ ॥ और आयुर्बल, यश, सुख, बुद्धि, धर्म, धान्य, धन, जय व सन्तान सदैव बढ़ती है और पृथ्वी को देनेवाला मनुष्य सुख को पाता है ॥ ३३ ॥ और जो दुष्ट मनुष्य पृथ्वी का एक अंगुल हरते हैं वे बिन जलवाले विन्ध्याचल के वनों में व सूखे वृक्षों के खोड़रों में बसते हैं और दिये हुए धन को हरनेवाले मनुष्य काले सांप होते हैं ॥ ३४ ॥ और हज़ार तड़ाग व सौ अश्वमेध

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तथा करोड़ गौवों के देने से पृथ्वी को हरनेवाला मनुष्य पवित्र होता है॥ ३५॥ इस संसार में उदारता से जो धर्म, अर्थ व यश को करनेवाले धन दान दिये गये फिर ब्राह्मण को दिये हुए उनको कौन सज्जन पुरुष ले लेता है ॥ ३६ ॥ सब संसार के सुखवाले और तिनुका के अणु प्रमाण भर छोटे सारांशवाले इस मेघों के समान चलायमान जीवलोक में जो दुष्ट आशावाला पुरुष ब्राह्मणों की जीविका को हरता है वह कठिन नरककुंड के भँवर में गिरने का उत्कंठित होताहै॥ ३७॥ जो राजालोग इस पृथ्वी को पालन करैंगे वे सब पृथ्वी को भोगकर चलेजावैंगे परन्तु किसी के साथ भी पृथ्वी न गई है न जाती है न जावैगी और जो कुछ पृथ्वी में है वह सब

अश्वमेधशतेन वा ॥ गवां कोटिप्रदानेन भूमिहर्त्ता विशुध्यति ॥ ३५ ॥ यानीह दत्तानि पुनर्धनानि दानानि धर्मार्थयशस्कराणि ॥ औदार्यतो विप्रनिवेदितानि को नाम साधुः पुनराददीत ॥ ३६ ॥ इह हि जलदलीलाचञ्चले जीवलोके तृणलवलघुसारे सर्वसंसारसौख्ये ॥ अपहरति दुराशः शासनं ब्राह्मणानां नरकगहनगर्त्तावर्तपातोत्सुकोयः ॥ ३७ ॥ ये पास्यन्ति महीभुजः क्षितिमिमां यास्यन्ति भुक्त्वाखिलां नो याता न तु याति यास्यति न वा केनापि सार्द्धं धरा ॥ यत्किञ्चिद्भुवि तद्विनाशि सकलं कीर्तिः परं स्थायिनी त्वेवं वै वसुधापि यैरुपकृता लोप्या न सत्कीर्तयः ॥ ३८ ॥ एकैव भगिनी लोके सर्वेषामेव भूभुजाम् ॥ न भोज्या न करग्राह्या विप्रदत्ता वसुंधरा ॥ ३९ ॥ दत्त्वा भूमिं भाविनः पार्थिवेशान्भूयो भूयो याचते रामचन्द्रः॥सामान्योऽयं धर्मसेतुर्नृपाणां स्वे स्वे काले पालनीयो भवद्भिः॥४०॥ अस्मिन्वंशे क्षितौ कोपि राजा यदि भविष्यति ॥ तस्याहं करलग्नोस्मि मद्दत्तं यदि पाल्यते ॥ ४१ ॥ लिखित्वा

नाशवान् है परन्तु यश स्थित होनेवाला है ऐसेही जिसने पृथ्वी को दिया है उसके उत्तम यश नाश नहीं होते हैं ॥ ३८ ॥ संसार में सब राजाओं की एकही बहन है याने ब्राह्मण को दीहुई पृथ्वी न भोग करने योग्य है और न हाथ पकड़ने के योग्य है ॥ ३९ ॥ पृथ्वी को देकर होनेवाले राजाओं से रामचन्द्रजी बार २ प्रार्थना करते हैं कि राजाओं का यह साधारण धर्मसेतु आपलोगों से अपने अपने समय में पालन करने योग्य है ॥ ४० ॥ यदि मेरा दिया हुआ पालन किया जाता है तो पृथ्वी में यदि इस वंश में कोई भी राजा होगा तो उसके हाथ में मैं प्राप्त हूंगा ॥ ४१ ॥ इस शासन (शिक्षा) को लिखकर बुद्धिमान् श्रीमान्जी ने वसिष्ठजी के सामने

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चतुर्वेदी द्विजोत्तमों को पूजकर दे दिया ॥ ४२ ॥ और उन ब्राह्मणों ने सुवर्ण के अक्षरों से संयुत व धर्मभूषण उस धर्मसंयुत उत्तम ताँबे के पट्ट को लेकर ॥ ४३ ॥ पूजन के लिये भक्ति की इच्छावाले उन्हों ने उसकी रक्षा किया और दिव्यचंदन व सुगंधित पुष्प से ॥ ४४ ॥ और सोने के पुष्प व चांदी के पुष्प से वे ब्राह्मण प्रतिदिन उत्तम पूजन करनेलगे ॥ ४५ ॥ व हे राजन् ! निर्मल घी से संयुत व सात बत्तियों से युक्त दीपक को उसके आगे ब्राह्मणलोग अर्घ्य करते हैं ॥ ४६ ॥ व भक्तिपूर्वक ब्राह्मण लोग नित्य नैवेद्य करते हैं और राम, राम व राम ऐसा मंत्र कहते हैं ॥ ४७ ॥ और भोजन, शयन, जलपान, गमन व आसन और सुख या दुःख में जो राम-

शासनं रामश्चातुर्वेद्यद्विजोत्तमान् ॥ सम्पूज्य प्रददौ धीमान्वसिष्ठस्य च सन्निधौ ॥ ४२ ॥ ते वाडवा गृहीत्वा तं पट्टं रामाज्ञया शुभम् ॥ ताम्रं हैमाक्षरयुतं धर्म्यं धर्मविभूषणम् ॥ ४३ ॥ पूजार्थं भक्तिकामार्थास्तद्रक्षणमकुर्वत ॥ चन्दनेन च दिव्येन पुष्पेण च सुगन्धिना ॥ ४४ ॥ तथा सुवर्णपुष्पेण रूप्यपुष्पेण वा पुनः ॥ अहन्यहनि पूजां ते कुर्वते वाडवाः शुभाम् ॥ ४५ ॥ तदग्रे दीपकं चैव घृतेन विमलेन हि ॥ सप्तवर्तियुतं राजन्नर्घ्यं प्रकुर्वते द्विजाः ॥ ४६ ॥ नैवेद्यं कुर्वते नित्यं भक्तिपूर्वं द्विजोत्तमाः ॥ रामरामेति रामेति मन्त्रमप्युच्चरन्ति हि ॥ ४७ ॥ अशने शयने पाने गमने चोपवेशने ॥ सुखे वाप्यथवा दुःखे राममन्त्रं समुच्चरेत् ॥ ४८ ॥ न तस्य दुःखदौर्भाग्यं नाधिव्याधिभयं भवेत् ॥ आयुः श्रियं बलं तस्य वर्द्धयन्ति दिने दिने ॥ ४९ ॥ रामेति नाम्ना मुच्येत पापाद्वै दारुणादपि ॥ नरकं नहि गच्छेत गतिं प्राप्नोति शाश्वतीम् ॥ ५० ॥ व्यास उवाच ॥ इति कृत्वा ततो रामः कृतकृत्यममन्यत ॥ प्रदक्षिणीकृत्य तदा प्रणम्य च द्विजान्बहून् ॥ ५१ ॥ दत्त्वा दानं भूरितरं गवाश्वमहिषीरथम् ॥ ततः सर्वान्निजांस्तांश्च वाक्यमे

मन्त्र को कहता है ॥ ४८ ॥ उसको दुःख, दुर्भाग्यता व आधि, व्याधि का डर नहीं होता है व प्रतिदिन उसका आयुर्बल, लक्ष्मी व पराक्रम बढ़ता है ॥ ४९ ॥ और राम ऐसे नाम से मनुष्य कठिन पाप से भी छूटजाता है और नरक को नहीं जाता है व अविनाशिनी गति को पाता है ॥ ५० ॥ ऐसा करके तदनन्तर श्रीरामजी ने कृतार्थ माना और उस समय बहुत से ब्राह्मणों की प्रदक्षिणा कर व प्रणाम करके ॥ ५१ ॥ गऊ, घोड़े, भैंसी व रथ बहुत सा दान देकर तदनन्तर श्रीरामजी ने

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उन सब अपने ब्राह्मणों से यह वचन कहा ॥ ५२ ॥ कि जब तक चन्द्रमा व सूर्य रहैं तबतक तुम सबों को यहां टिकना चाहिये और जबतक पृथ्वी में सुमेरु व सातों समुद्र रहैं ॥ ५३ ॥ तबतक निस्सन्देह आपलोगों को यहीं टिकना चाहिये व हे ब्राह्मणो ! पृथ्वी में जब राजालोग मेरी शिक्षा को न मानैं ॥ ५४ ॥ अथवा गर्व व माया से मोहित वे वणिज् व शूद्रलोग मेरी आज्ञा को न करैं ॥ ५५ ॥ तब हे ब्राह्मणो ! तुमलोग पवनपुत्र हनुमान्जी को स्मरण कीजियेगा क्योंकि स्मरण किये हुए हनुमान्जी आकर मेरे वचन से यकायक उनको भस्म करैंगे यह निस्सन्देह सत्य है और जो राजा मेरी इस सुन्दरी शिक्षा को पालैगा ॥ ५६ । ५७ ॥ पवनपुत्र

तदुवाचह ॥ ५२ ॥ अत्रैव स्थीयतां सर्वैर्यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ यावन्मेरुर्महीपृष्ठे सागराः सप्त एव च ॥ ५३ ॥ तावदत्रैव स्थातव्यं भवद्भिर्हि न संशयः ॥ यदाहि शासनं विप्रा न मन्यन्ते नृपा भुवि ॥ ५४ ॥ अथवा वणिजः शूद्रा मदमायाविमोहिताः ॥ मदाज्ञां न प्रकुर्वन्ति मन्यन्ते वा न ते जनाः ॥ ५५ ॥ तदा वै वायुपुत्रस्य स्मरणं क्रियतां द्विजाः ॥ स्मृतमात्रो हनूमान्वै समागत्य करिष्यति ॥ ५६ ॥ सहसा भस्म तान्सत्यं वचनान्मे न संशयः ॥ य इदं शासनं रम्यं पालयिष्यति भूपतिः ॥ ५७ ॥ वायुपुत्रः सदा तस्य सौख्यमृद्धिं प्रदास्यति ॥ ददाति पुत्रान्पौत्रांश्च साध्वीं पत्नीं यशो जयम् ॥ ५८ ॥ इत्येवं कथयित्वा च हनुमन्तं प्रबोध्य च ॥ निवर्तितो रामदेवः ससैन्यः सपरिच्छदः ॥ ५९ ॥ वादित्राणां स्वनैर्विष्वक्सूच्यमानशुभागमः ॥ श्वेतातपत्रयुक्तोऽसौ चामरैर्वीजितो नरैः ॥ अयोध्यां नगरीं प्राप्य चिरं राज्यं चकार ह ॥ ६० ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे धर्मारण्यमाहात्म्ये ब्रह्मनारदसंवादे श्रीरामेण ब्राह्मणेभ्यः शासनपट्टप्रदानवर्णनं नाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥ * ॥

हनुमान्जी सदैव उसको सुख व ऐश्वर्य देवैंगे और पुत्रों व पौत्रों को तथा पतिव्रता स्त्री और यश व जीत को देवैंगे ॥ ५८ ॥ यह कहकर वे हनुमान्जी को समझाकर सेना समेत व सामान समेत श्रीरामजी लौट आये ॥ ५९ ॥ सब ओर बाजनों के शब्दों से सूचित उत्तम आगमनवाले ये सफ़ेद छत्र से संयुत व मनुष्यों से वीजित श्रीरामजी ने अयोध्या नगरी को प्राप्त होकर बहुत दिनों तक राज्य किया ॥ ६० ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे धर्मारण्यमाहात्म्ये देवीदयालुमिश्रविरचितायां भाषाटीकायां ब्रह्मनारदसंवादे श्रीरामेण ब्राह्मणेभ्यः शासनपट्टप्रदानवर्णनं नाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० । धर्मारण्यक्षेत्र में कियो यज्ञ श्रीराम । पैंतिसवें अध्याय में सोइ चरित अभिराम ॥ नारदजी बोले कि हे सृष्टिसंहारकारक, देवदेवेश, भगवन् ! गुणों से रहित व गुणों से युक्त तथा मुक्तियों के उत्तम साधनरूप ॥ १ ॥ रघुनाथजी विधिपूर्वक सत्यमंदिर में द्विजोत्तमों को थापकर फिर जब अयोध्यापुरी में गये तब उन्हों ने क्या किया है ॥ २ ॥ और वहां अपने स्थान में ब्राह्मणों ने किन कर्मों को किया है ब्रह्माजी बोले कि इष्टापूर्तकर्मों में लगे हुए वे शांत ब्राह्मण दान से विमुख हुए ॥ ३ ॥ और द्विजोत्तम वसिष्ठ पुरोहित ने इस वन की राज्य किया और श्रीरामजी के आगे उत्तम तीर्थ का माहात्म्य कहा ॥ ४ ॥ और प्रयाग का माहात्म्य व त्रिवेणी का उत्तम

नारद उवाच ॥ भगवन्देवदेवेश सृष्टिसंहारकारक ॥ गुणातीतो गुणैर्युक्तो मुक्तीनां साधनं परम् ॥ १ ॥ संस्थाप्य वेदभवनं विधिवद् द्विजसत्तमान् ॥ किं चक्रे रघुनाथस्तु भूयोऽयोध्यां गतस्तदा ॥ २ ॥ स्वस्थाने ब्राह्मणास्तत्र कानि कर्माणि चक्रिरे ॥ ब्रह्मोवाच ॥ इष्टापूर्तरताः शान्ताः प्रतिग्रहपराङ्मुखाः ॥ ३ ॥ राज्यं चक्रुर्वनस्यास्य पुरोधा द्विजसत्तमः ॥ उवाच रामपुरतस्तीर्थमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ ४ ॥ प्रयागस्य च माहात्म्यं त्रिवेणीफलमुत्तमम् ॥ प्रयागतीर्थमहिमा शुक्लतीर्थस्य चैव हि ॥ ५ ॥ सिद्धक्षेत्रस्य काश्याश्च गङ्गाया महिमा तथा ॥ वसिष्ठः कथयामास तीर्थान्यन्यानि नारद ॥ ६ ॥ धर्मारण्ये सुवर्णाया हरिक्षेत्रस्य तस्य च ॥ स्नानदानादिकं सर्वं वाराणस्या यवाधिकम् ॥ ७ ॥ एतच्छ्रुत्वा रामदेवः स चमत्कृतमानसः ॥ धर्मारण्ये पुनर्यात्रां कर्त्तुकामः समभ्यगात् ॥ ८ ॥ सीतया सह धर्मज्ञो गुरुसैन्यपुरःसरः ॥ लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा भरतेन सहायवान् ॥ ९ ॥ शत्रुघ्नेन परिवृतो गतो मोहरके पुरे ॥ तत्र गत्वा

फल कहा और प्रयागतीर्थ की महिमा व शुक्लतीर्थ की महिमा को उन्हों ने कहा ॥ ५ ॥ व हे नारद ! सिद्ध क्षेत्र की महिमा व काशी और गंगा की महिमा और अन्य तीर्थों को वसिष्ठजी ने कहा ॥ ६ ॥ और धर्मारण्य में सुवर्णा नदी व उस हरिक्षेत्र के सब स्नान दानादिक को कहा और काशी से यव भर अधिक धर्मारण्य को कहा ॥ ७ ॥ इस वचन को सुनकर चमत्कृत मनवाले वे श्रीरामजी फिर धर्मारण्य में तीर्थयात्रा करने के लिये गये ॥ ८ ॥ और सीता समेत बड़ी भारी सेना अग्रगामीवाले धर्मज्ञ व भरत सहायवाले श्रीरामजी लक्ष्मण भाई समेत ॥ ९ ॥ शत्रुघ्न से घिरकर मोहेरक पुर में गये और वहां जाकर ये उदार मनवाले श्रीरामजी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वसिष्ठजी से पूछने लगे ॥ १० ॥ श्रीरामजी बोले कि हे द्विजोत्तम ! धर्मारण्य महाक्षेत्र में क्या दान, नियम, स्नान व उत्तम तप करना चाहिये ॥ ११ ॥ और ध्यान, यज्ञ, होम व उत्तम जप, दान, नियम, स्नान व कौन उत्तम तप करना चाहिये ॥ १२ ॥ हे द्विजोत्तम ! इस तीर्थ में जिसके करने से मनुष्य ब्रह्महत्यादिक पापों से छूट जाता है उसको मुझ से कहिये ॥ १३ ॥ वसिष्ठजी बोले कि हे महाभाग ! तुम प्रतिदिन कोटि गुने उत्तम यज्ञ को सौ बरस तक कीजिये ॥ १४ ॥ गुरु से उसको सुनकर उन श्रीरामजी ने यज्ञ का प्रारंभ किया और उस समय में श्रीरामजी से सीताजी ने हर्ष से कहा ॥ १५ ॥ कि हे स्वामिन् ! तुम ने पहले

वसिष्ठं तु पृच्छतेऽसौ महामनाः ॥ १० ॥ राम उवाच ॥ धर्मारण्ये महाक्षेत्रे किं कर्त्तव्यं द्विजोत्तम ॥ दानं वा नियमो वाथ स्नानं वा तप उत्तमम् ॥ ११ ॥ ध्यानं वाथ क्रतुं वाथ होमं वा जपमुत्तमम् ॥ दानं वा नियमं वाथ स्नानं वा तप उत्तमम् ॥ १२ ॥ येन वै क्रियमाणेन तीर्थेऽस्मिन्द्विजसत्तम ॥ ब्रह्महत्यादिपापेभ्यो मुच्यते तद्ब्रवीहि मे ॥ १३ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ यज्ञं कुरु महाभाग धर्मारण्ये त्वमुत्तमम् ॥ दिनेदिने कोटिगुणं यावद्वर्षशतं भवेत् ॥ १४ ॥ तच्छ्रुत्वा चैव गुरुतो यज्ञारम्भं चकार सः ॥ तस्मिन्नवसरे सीता रामं व्यज्ञापयन्मुदा ॥ १५ ॥ स्वामिन्पूर्वं त्वया विप्रा वृता ये वेदपारगाः ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशेन निर्मिता ये पुरा द्विजाः ॥ १६ ॥ कृते त्रेतायुगे चैव धर्मारण्यनिवासिनः ॥ विप्रांस्तान्वै वृणुष्व त्वं तैरेव सार्थकोऽध्वरः ॥ १७ ॥ तच्छ्रुत्वा रामदेवेन आहूता ब्राह्मणास्तदा ॥ स्थापिताश्च यथापूर्वमस्मिन्मोहेरके पुरे ॥ १८ ॥ तैस्त्वष्टादशसंख्याकैस्त्रैविद्यैर्मोंहिवाडवैः ॥ यज्ञं चकार विधिवत्तैरेवायतबुद्धिभिः ॥ १९ ॥

जिन वेदों के पारगामी ब्राह्मणों को वरण किया था और जो ब्राह्मण पुरातन समय ब्रह्मा, विष्णु व शिवजी से बनाये गये हैं ॥ १६ ॥ सतयुग व त्रेतायुग में धर्मारण्य में बसनेवाले उन ब्राह्मणों को तुम वरण करो क्योंकि उन्हीं से यज्ञ सार्थक होगा ॥ १७ ॥ उसको सुनकर श्रीरामदेवजी ने उस समय ब्राह्मणों को बुलाया और इस मोहेरक पुर में पहले की नाईं स्थापित किया ॥ १८ ॥ और विशाल बुद्धिवाले उन अठारह संख्यक त्रैविध मोहेरकपुर निवासी ब्राह्मणों से उन्होंने यज्ञ किया ॥ १९ ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुशिक, कौशिक, वत्स, उपमन्यु, काश्यप, कृष्णात्रेय, भरद्वाज, धारिण व श्रेष्ठ शौनकजी ॥ २० ॥ और मांडव्य, भार्गव, पैंग्य, वात्स्य, लौगाक्ष, गांगायन, गांगेय, शुनक व शौनकजी ने यज्ञ कराया ॥ २१ ॥ ब्रह्माजी बोले कि इन ब्राह्मणों से राजा श्रीरामजी ने विधिपूर्वक यज्ञ को समाप्तकर ब्राह्मणों को भक्ति से पूजकर अवभृथ (यज्ञान्त स्नान) किया ॥ २२ ॥ और यज्ञ के अन्तमें बहुतही नम्र सीताजी ने श्रीरामजी से विनय किया कि हे सुव्रत ! इस यज्ञ की सिद्धि में दक्षिणाको दीजिये ॥ २३ ॥ और मेरे नाम से वहां शीघ्रही नगर को स्थापन कीजिये सीताजी का वचन सुनकर श्रीरामजी ने वैसाही किया ॥ २४ ॥ और सीताजी की प्रसन्नता के लिये श्रीरामराजा ने

कुशिकः कौशिको वत्स उपमन्युश्च काश्यपः ॥ कृष्णात्रेयो भरद्वाजो धारिणः शौनको वरः ॥ २० ॥ माण्डव्यो भार्गवः पैङ्ग्यो वात्स्यो लौगाक्ष एव च ॥ गाङ्गायनोथ गाङ्गेयः शुनकः शौनकस्तथा ॥ २१ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ एभिर्विप्रैः क्रतुं रामः समाप्य विधिवन्नृपः ॥ चकारावभृथं रामो विप्रान्सम्पूज्य भक्तितः ॥ २२ ॥ यज्ञान्ते सीतया रामो विज्ञप्तः सुविनीतया ॥ अस्याध्वरस्य सम्पत्तौ दक्षिणां देहि सुव्रत ॥ २३ ॥ मन्नाम्ना च पुरं तत्र स्थाप्यतां शीघ्रमेव च ॥ सीताया वचनं श्रुत्वा तथा चक्रे नृपोत्तमः ॥ २४ ॥ तेषां च ब्राह्मणानां च स्थानमेकं सुनिर्भयम् ॥ दत्तं रामेण सीतायाः सन्तोषाय महीभृता ॥ २५ ॥ सीतापुरमिति ख्यातं नाम चक्रे तदा किल ॥ तस्याधिदेव्यौ वर्त्तेते शान्ता चैव सुमङ्गला ॥ २६ ॥ मोहेरकस्य पुरतो ग्रामद्वादशकं पुरः ॥ ददौ विप्राय विदुषे समुत्थाय प्रहर्षितः ॥ २७ ॥ तीर्थान्तरं जगामाशु काश्यपीसरितस्तटे ॥ वाडवाः केऽपि नीतास्ते रामेण सह धर्मवित् ॥ २८ ॥ धर्मालये गतः सद्यो यत्र मूलार्क

उन ब्राह्मणों को एक निडर स्थान दिया ॥ २५ ॥ व तब उन्हों ने उसका सीतापुर ऐसा प्रसिद्ध नाम किया और उस नगर की शांता व मंगला ये दो अधिदेवियां वर्तमान हैं ॥ २६ ॥ और मोहेरक नगर के आगे बारह ग्रामों को प्रसन्न होतेहुए श्रीरामजी ने उठकर विद्वान् ब्राह्मण के लिये दिया ॥ २७ ॥ व हे धर्मवित् ! श्रीरामजी काश्यपी नदी के किनारे शीघ्रही अन्य तीर्थ को गये और श्रीरामजी साथही कितेक ब्राह्मणों को भी ले आये ॥ २८ ॥ और शीघ्रही धर्मालय में गये जहां कि मूलार्क

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जीका मण्डप है व हे मुने ! जहां पहले धर्मराज ने बड़ाभारी तप किया है ॥ २९ ॥ तबसे लगाकर वह धर्मालय ऐसा प्रसिद्ध स्थान विख्यात हुआ और वहां दशरथ-कुमार श्रीरामजी ने सोलह महादानों को दिया ॥ ३० ॥ और उस समय सीतापुर समेत जो सत्यमन्दिर तक पचास ग्राम थे उनको रघुनाथजी ने ॥ ३१ ॥ सीताजी के वचन से व गुरु के वचन से अपने वंश की वृद्धि के लिये व सब प्रयोजनों की सिद्धि के लिये दिया ॥ ३२ ॥ वहां अठारह हज़ार ब्राह्मणों का वंश हुआ है वात्स्यायन, उपमन्यु, जातूकर्ण्य व पिंगल ॥ ३३ ॥ व भारद्वाज, वत्स, कौशिक, कुश, शाण्डिल्य, कश्यप, गौतम व छांधन ॥ ३४ ॥ कृष्णात्रेय, वत्स, वसिष्ठ, धारण,

मण्डपः ॥ पुरा धर्मेण सुमहत्कृतं यत्र तपो मुने ॥ २९ ॥ तदारभ्य सुविख्यातं धर्मालयमिति श्रुतम् ॥ ददौ दाशरथिस्तत्र महादानानि षोडश ॥ ३० ॥ ये पञ्चाशत्तदा ग्रामाः सीतापुरसमन्विताः ॥ सत्यमन्दिरपर्यन्ता रघुनाथेन वै तदा ॥ ३१ ॥ सीताया वचनात्तत्र गुरुवाक्येन चैव हि ॥ आत्मनो वंशवृद्ध्यर्थं दत्तास्सर्वार्थसिद्धये ॥ ३२ ॥ अष्टादश सहस्राणां द्विजानामभवत्कुलम् ॥ वात्स्यायन उपमन्युर्जातूकर्ण्योऽथ पिङ्गलः ॥ ३३ ॥ भारद्वाजस्तथा वत्सः कौशिकः कुश एव च ॥ शाण्डिल्यः कश्यपश्चैव गौतमश्छान्धनस्तथा ॥ ३४ ॥ कृष्णात्रेयस्तथा वत्सो वसिष्ठो धारणस्तथा ॥ भाण्डिलश्चैव विज्ञेयो यौवनाश्वस्ततः परम् ॥ ३५ ॥ कृष्णायनोपमन्यू च गार्ग्यमुद्गलमौखकाः ॥ पुशिः पराशरश्चैव कौण्डिन्यश्च ततः परम् ॥ ३६ ॥ पञ्चपञ्चाशद्ग्रामाणां नामान्येवं यथाक्रमम् ॥ सीतापुरं श्रीक्षेत्रं च मुशली मुद्गली तथा ॥ ३७ ॥ ज्येष्ठला श्रेयस्थानं च दन्ताली वटपत्रका ॥ राज्ञः पुरं कृष्णवाटं देहं लोहं चनस्थनम् ॥ ३८ ॥ कोहेचं चन्दनक्षेत्रं थलं च हस्तिनापुरम् ॥ कर्पटं कंनजह्ववी वनोडफनफावली ॥ ३९ ॥ मोहोधं शमो

भांडिल व तदनन्तर यौवनाश्व जानने योग्य हैं ॥ ३५ ॥ और कृष्णायन, उपमन्यु, गार्ग्य, मुद्गल व मौखक, पुशि, पराशर तदनन्तर कौण्डिन्य हैं ॥ ३६ ॥ व ऐसेही पचपन ग्रामों के नाम क्रम से हैं सीतापुर, श्रीक्षेत्र, मुशली, मुद्गली ॥ ३७ ॥ ज्येष्ठला, श्रेयस्थान, दन्ताली, वटपत्रका, राजापुर, कृष्णवाट, देह, लोह व चनस्थन ॥ ३८ ॥ और कोहेच, चन्दनक्षेत्र, थल व हस्तिनापुर, कर्पट, कंनजह्ववी, वनोडफ व नफावली ॥ ३९ ॥ और मोहोध, शमोहोरली, गोविन्दण, थलत्यज, चारण

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सिद्ध, सोद्गीत्राभाज्यज व वटमालिका ॥ ४० ॥ और गोधर, मारणज, मात्रमध्य व मातर, बलवती, गन्धवती, ईश्राम्ली व राज्यज ॥ ४१ ॥ और रूपावली, बहुधन, छत्रीट व वंशज और जायासंरण, गोतिकी व चित्रलेख ॥ ४२ ॥ दुग्धावली, हंसावली, वैहोल, चैल्लज, नालावली, आसावली और इसके उपरान्त सुहालीका है ॥ ४३ ॥ श्रीरामजी ने पचपन ग्रामों को आपही बनाकर बसने के लिये उन ब्राह्मणों के लिये दे दिया ॥ ४४ ॥ और श्रीरामजी ने उनकी सेवा के लिये छत्तीस हज़ार वैश्यों को दिया व उनसे चौगुने शूद्रों को दिया ॥ ४५ ॥ व उनके लिये बड़े हर्ष से गऊ, घोड़े, वस्त्र, सुवर्ण, चांदी व ताँबा इन दानों को बड़ी भक्ति से

होरली गोविन्दणं थलत्यजम् ॥ चारणसिद्धं सोद्गीत्राभाज्यजं वटमालिका ॥ ४० ॥ गोधरं मारणजं चैव मात्र मध्यं च मातरम् ॥ बलवती गन्धवती ईश्राम्ली च राज्यजम् ॥ ४१ ॥ रूपावली बहुधनं छत्रीटं वंशजं तथा ॥ जा यासंरणं गोतिकी च चित्रलेखं तथैव च ॥ ४२ ॥ दुग्धावली हंसावली च वैहोलं चैल्लजं तथा ॥ नालावली आसावली सुहालीकामतः परम् ॥ ४३ ॥ रामेण पञ्चपञ्चाशद्ग्रामाणि वसनाय च ॥ स्वयं निर्माय दत्तानि द्विजेभ्यस्तेभ्य एव च ॥ ४४ ॥ तेषां शुश्रूषणार्थाय वैश्यान्रामो न्यवेदयत् ॥ षट्त्रिंशच्च सहस्राणि शूद्रांस्तेभ्यश्चतुर्गुणान् ॥ ४५ ॥ तेभ्यो दत्तानि दानानि गवाश्ववसनानि च ॥ हिरण्यं रजतं ताम्रं श्रद्धया परया मुदा ॥ ४६ ॥ नारद उवाच ॥ अष्टा दशसहस्रास्ते ब्राह्मणा वेदपारगाः ॥ कथं ते व्यभजन्ग्रामान् ग्रामोत्पन्नं तथा वसु ॥ वस्त्राद्यं भूषणाद्यं च तन्मे कथय सुव्रत ॥ ४७ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ यज्ञान्ते दक्षिणा यावत्सर्त्विग्भिः स्वीकृता सुत ॥ महादानादिकं सर्वं तेभ्य एव समर्पित म् ॥ ४८ ॥ ग्रामाः साधारणा दत्ता महास्थानानि वै तदा ॥ ये वसन्ति च यत्रैव तानि तेषां भवन्त्विति ॥ ४९ ॥

दिया ॥ ४६ ॥ नारदजी बोले कि हे सुव्रत ! उन अठारह हज़ार वेदोंके पारगामी ब्राह्मणों ने ग्रामों को व ग्रामों में उत्पन्न धन को कैसे बाँटा और वस्त्रादिक व भूषणादिक को कैसे बाँटा है उसको मुझ से कहिये ॥ ४७ ॥ ब्रह्माजी बोले कि हे पुत्र ! ऋत्विजों समेत जितने ब्राह्मणों ने यज्ञ के अन्त में जितनी दक्षिणा को पाया है उन्हीं के लिये सब महादानादिक दिया गया है ॥ ४८ ॥ और उस समय साधारण ग्राम व महास्थान दिये गये जो जिसमें बसैं उनके वे ग्राम होवैं ॥ ४९ ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इस वसिष्ठजी के वचन से वहां वे ग्राम ब्राह्मणों के अधीन किये गये और जिस प्रकार ब्राह्मण न उजड़ें वैसेही बुद्धिमान् रघुनायकजी ने ॥ ५० ॥ उन ब्राह्मणों को बहुत साधन व धान्य दिया तदनन्तर हाथों को जोड़कर श्रीरामजी ने ब्राह्मणों से यह कहा ॥ ५१ ॥ कि हे ब्राह्मणो ! जैसे सतयुग व जैसे त्रेतायुग में तुम लोग वर्तमान थे वैसेही इससमय भी मेरे राज्यमें निस्सन्देह वर्तमान होना चाहिये ॥ ५२ ॥ और जो कुछ धन, धान्य, वाहन व वसन, मणि, सुवर्णादिक और धन ॥ ५३ ॥ और ताँबा आदिक व चांदी आदिक मुझ से इससमय मांगिये और इस समय व भविष्य समय में यथायोग्य प्रार्थना करनेयोग्य ॥ ५४ ॥ वाचिक हे द्विजोत्तमो ! मैं सदैव पठाऊंगा

वसिष्ठवचनात्तत्र ग्रामास्ते विप्रसात्कृताः ॥ रघूद्वहेन धीरेण नोद्वसन्ति यथा द्विजाः ॥ ५० ॥ धान्यं तेषां प्रदत्तं हि विप्राणां चामितं वसु ॥ कृताञ्जलिस्ततो रामो ब्राह्मणानिदमब्रवित् ॥ ५१ ॥ यथा कृतयुगे विप्रास्त्रेतायां च यथा पुरा ॥ तथा चाद्यैव वर्त्तव्यं मम राज्ये न संशयः ॥ ५२ ॥ यत्किञ्चिद्धनधान्यं वा यानं वा वसनानि वा ॥ मणयः काञ्चनादींश्च हेमादींश्च तथा वसु ॥ ५३ ॥ ताम्राद्यं रजतादींश्च प्रार्थयध्वं ममाधुना ॥ अधुना वा भविष्ये वाभ्यर्थनीयं यथोचितम् ॥ ५४ ॥ प्रेषणीयं वाचिकं मे सर्वदा द्विजसत्तमाः ॥ यं यं कामं प्रार्थयध्वं तं तं दास्याम्यहं सदा ॥ ५५ ॥ ततो रामः सेवकादीनादरात्प्रत्यभाषत ॥ विप्राज्ञा नोल्लङ्घनीया सेवनीया प्रयत्नतः ॥ ५६ ॥ यं यं कामं प्रार्थयन्ते कारयध्वं ततस्ततः ॥ एवं नत्वा च विप्राणां सेवनं कुरुते तु यः ॥ ५७ ॥ स शूद्रः स्वर्गमाप्नोति धनवान्पुत्रवान्भवेत् ॥ अन्यथा निर्धनत्वं हि लभते नात्र संशयः ॥ ५८ ॥ यवनोम्लेच्छजातीयो दैत्यो वा राक्षसोपि वा ॥ योत्र विघ्नं करो

व जिस जिस कामनाकी प्रार्थना करियेगा उस उसको मैं सदैव दूंगा ॥ ५५ ॥ तदनन्तर श्रीरामजी ने आदर से सेवकादिकों से कहा कि ब्राह्मणों की आज्ञा उल्लंघन करने योग्य नहीं है बरन बड़े यत्न से सेवने योग्य है ॥ ५६ ॥ और जिस जिस काम की वे प्रार्थना करें उस उसको तुम लोग करो इस प्रकार प्रणाम कर जो ब्राह्मणों की सेवा करता है ॥ ५७ ॥ वह शूद्र सुख को पाता है और धनवान् व पुत्रवान् होताहै नहीं तो दरिद्रता को पाता है इसमें सन्देह नहीं है ॥ ५८ ॥ और यवन व म्लेच्छ

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जातिवाला मनुष्य तथा दैत्य व राक्षस जो यहां विघ्न करताहै वह उसी क्षण भस्म होजाता है ॥ ५९ ॥ ब्रह्माजी बोले कि तदनन्तर बड़े प्रसन्न श्रीरामजी ब्राह्मणों की प्रदक्षिणा करके ब्राह्मणों से आशीर्वादों को पाकर यात्राके सामने हुए ॥ ६० ॥ और हद्दतक पीछे जाकर स्नेहसे विकल लोचनोंवाले सब मोहित ब्राह्मण धर्मारण्य में लौट आये ॥ ६१ ॥ ऐसा करके तदनन्तर श्रीरामजी अपनी पुरी को चले और दृढ़ व्रतवाले काश्यप व गर्ग गोत्रवाले ब्राह्मण कृतार्थ हुए ॥ ६२ ॥ और उस समय बड़ी सेना से संयुत स्त्री सभेत व मित्र पुत्रों समेत श्रीरामजी गुणों से संयुत अयोध्यापुरी को प्राप्त हुए ॥ ६३ ॥ और श्रीरघुनाथजी को देखकर सब मनुष्य प्रसन्न हुए

त्येव भस्मीभवति तत्क्षणात् ॥ ५९ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ततः प्रदक्षिणीकृत्य द्विजान्रामोऽतिहर्षितः ॥ प्रस्थानाभिमुखो विप्रैराशीर्भिरभिनन्दितः ॥ ६० ॥ आसीमान्तमनुव्रज्य स्नेहव्याकुललोचनाः ॥ द्विजाः सर्वे विनिर्वृत्ता धर्मारण्ये विमोहिताः ॥ ६१ ॥ एवं कृत्वा ततो रामः प्रतस्थे स्वां पुरीं प्रति ॥ काश्यपाश्चैव गर्गाश्च कृतकृत्या दृढव्रताः ॥ ६२ ॥ गुरुसेनासमाविष्टः सभार्यः ससुहृत्सुतः ॥ राजधानीं तदा प्राप रामोऽयोध्यां गुणान्विताम् ॥ ६३ ॥ दृष्ट्वा प्रमुदिताः सर्वे लोकाः श्रीरघुनन्दनम् ॥ ततो रामः स धर्मात्मा प्रजापालनतत्परः ॥ ६४ ॥ सीतया सह धर्मात्मा राज्यं कुर्वंस्त दा सुधीः ॥ जानक्यां गर्भमाधत्त रविवंशोद्भवाय च ॥ ६५ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणेधर्मारण्यमाहात्म्येश्रीरामचन्द्रकृत धर्मारण्यतीर्थक्षेत्रजीर्णोद्धारवर्णनंनामपञ्चत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

तदनन्तर वे धर्मात्मा श्रीरामजी प्रजाओं के पालन में तत्पर हुए ॥ ६४ ॥ तब बुद्धिमान् श्रीरामजी ने सीता समेत राज्य करते हुए सूर्यवंश की उत्पत्ति के लिये जानकी जी में गर्भ को धारण किया ॥ ६५ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणेधर्मारण्यमाहात्म्येदेवीदयालुमिश्रविरचितायांभाषाटीकायांश्रीरामचन्द्रकृतधर्मारण्यतीर्थक्षेत्रजीर्णोद्धारवर्णनंनाम पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० । धर्मारण्य द्विजन जिमि सेतुबंध गम कीन । छत्तिसवें अध्याय में सोई चरित नवीन ॥ नारदजी बोले कि हे सुव्रत ! इसके उपरान्त क्या हुआ है उसको मुझ से कहिये हे कहनेवालों में श्रेष्ठ ! पहले उसको मुझ से संपूर्णता से कहिये ॥ १ ॥ और कितने समयतक वह स्थान स्थिर हुआ व हे प्रभो ! किससे वह रक्षित हुआ व किसकी आज्ञा वर्तमान हुई इसको मुझ से कहिये ॥ २ ॥ ब्रह्माजी बोले कि त्रेता से द्वापर के अन्त तक जबतक कलियुग का आगम हुआ तबतक एक पवनपुत्र हनुमान् जी भलीभांति रक्षा करने में ॥ ३ ॥ समर्थ हैं व हे पुत्र ! विना हनुमान्जी के अन्यथा कोई भी समर्थ नहीं है जिन्होंने लंका को विध्वंस किया व प्रबल राक्षसों को मार

नारद उवाच ॥ अतः परं किमभवत्तन्मे कथय सुव्रत ॥ पूर्वं च तदशेषेण शंस मे वदतां वर ॥ १ ॥ स्थिरीभूतं च तत्स्थानं कियत्कालं वदस्व मे ॥ केन वै रक्ष्यमाणं च कस्याज्ञा वर्तते प्रभो ॥ २ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ त्रेतातो द्वापरान्तं च यावत्कलिसमागमः ॥ तावत्संरक्षणे चैको हनूमान्पवनात्मजः ॥ ३ ॥ समर्थो नान्यथा कोपि विना हनुमता सुत ॥ लङ्का विध्वंसिता येन राक्षसाः प्रबला हताः ॥ ४ ॥ स एव रक्षते तत्र रामादेशेन पुत्रक ॥ द्विजस्याज्ञा प्रवर्तेत श्रीमातायास्तथैव च ॥ ५ ॥ दिनेदिने प्रहर्षोभूज्जनानां तत्र वासिनः ॥ पठन्ति स्म द्विजास्तत्र ऋग्यजुःसामलक्षणान् ॥ ६ ॥ अथर्वणं चापि तत्र पठन्ति स्म दिवानिशम् ॥ वेदनिर्घोषजः शब्दस्त्रैलोक्ये सचराचरे ॥ ७ ॥ उत्सवास्तत्र जायन्ते ग्रामे ग्रामे पुरे पुरे ॥ नाना यज्ञाः प्रवर्तन्ते नानाधर्मसमाश्रिताः ॥ ८ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ कदापि तस्य स्थानस्य भङ्गो जातोथ वा नवा ॥ दैत्यैर्जितं कदा स्थानमथवा दुष्टराक्षसैः ॥ ९ ॥ व्यास उवाच ॥ साधु पृष्टं त्वया राजन्ध

डाला ॥ ४ ॥ हे पुत्र ! वही हनुमान्जी श्रीरामजी की आज्ञा से रक्षा करते हैं और ब्राह्मण वसिष्ठजी की व श्रीमाताजी की आज्ञा वर्तमान है ॥ ५ ॥ और प्रतिदिन वहां के लोगों को बड़ा हर्ष हुआ व वहां के बसनेवाले ब्राह्मण ऋक्, यजुः व साम लक्षणोंवाले वेदों को पढ़ते थे ॥ ६ ॥ और दिन रात अथर्वण वेद को भी पढ़ते थे व चराचर समेत त्रिलोक में वेदों से उपजा हुआ शब्द होता था ॥ ७ ॥ और वहां गांव गांव व नगर नगर में उत्साह होते थे और अनेक प्रकार के धर्मों में आश्रित अनेक भांति के यज्ञ होते थे ॥ ८ ॥ युधिष्ठिरजी बोले कि कभी उस स्थान का भंग हुआ या नहीं हुआ है व कभी दैत्यों ने व दुष्ट राक्षसों ने उस स्थान को जीत लिया है ॥ ९ ॥ व्यासजी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बोले कि हे राजन् ! तुम ने बहुत अच्छा पूंछा व तुम सदैव पवित्र व धर्मज्ञ हो पहले कलियुग प्राप्त होने पर जो वृत्तान्त हुआ है उसको सुनिये ॥ १० ॥ हे राजन् ! लोकों के हित के लिये व मनोरथ और सुख के लिये मैं जो कहूंगा उस सब को सुनिये ॥ ११ ॥ कि इससमय कलियुग प्राप्त होने पर नाम से आम नामक कान्यकुब्ज देश का स्वामी श्रीमान्, धर्मज्ञ व नीति में परायण हुआ है ॥ १२ ॥ हे नृपश्रेष्ठ ! जोकि शांत, दांत, सुशील व सत्यधर्म में तत्पर था द्वापर के अन्त में कलियुग न आने पर ॥ १३ ॥ कलियुग के विशेष भय से व अधर्म के भयादिकों से सब देवता पृथ्वी को छोड़कर नैमिषारण्यमें टिके ॥ १४ ॥

र्मज्ञस्त्वं सदा शुचिः ॥ आदौ कलियुगे प्राप्ते यद्वृत्तं तच्छृणुष्व भोः ॥ १० ॥ लोकानां च हितार्थाय कामाय च सुखाय च ॥ यदहं कथयिष्यामि तत्सर्वं शृणु भूपते ॥ ११ ॥ इदानीं च कलौ प्राप्त आमो नाम्ना बभूव ह ॥ कान्यकुब्जाधिपः श्रीमान्धर्मज्ञो नीतितत्परः ॥ १२ ॥ शान्तो दान्तः सुशीलश्च सत्यधर्मपरायणः ॥ द्वापरान्ते नृपश्रेष्ठ अनागते कलौयुगे ॥ १३ ॥ भयात्कलिविशेषेण अधर्मस्य भयादिभिः ॥ सर्वे देवाः क्षितिं त्यक्त्वा नैमिषारण्यमाश्रिताः॥ १४॥ रामोपिं सेतुबन्धं हि ससहायो गतो नृप ॥ १५ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ कीदृशं हि कलौ प्राप्ते भयं लोके सुदुस्तरम् ॥ यस्मिन्सुरैः परित्यक्ता रत्नगर्भा वसुन्धरा ॥ १६ ॥ व्यास उवाच ॥ शृणुष्व कलिधर्मांस्त्वं भविष्यन्ति यथा नृप ॥ असत्यवादिनो लोकाः साधुनिन्दापरायणाः ॥ १७ ॥ दस्युकर्मरताः सर्वे पितृभक्तिविवर्जिताः ॥ स्वगोत्रदाराभिरता लौल्यध्यानपरायणाः॥ १८॥ ब्रह्मविद्वेषिणः सर्वे परस्परविरोधिनः ॥ शरणागतहन्तारो भविष्यन्ति कलौयुगे॥१९॥

व हे राजन् ! सहायकों समेत श्रीरामजी सेतुबंध तीर्थ को गये ॥ १५ ॥ युधिष्ठिरजी बोले कि कलियुग प्राप्त होने पर संसार में कैसा बहुत कठिन डर है कि जिसमें देवताओं ने रत्नगर्भवाली पृथ्वी को छोड़ दिया ॥ १६ ॥ व्यासजी बोले कि हे नृप ! तुम कलियुग के धर्मों को सुनो कि जिस प्रकार झूंठ कहनेवाले लोग सज्जनों की निन्दा में परायण होंगे ॥ १७ ॥ और सब चोर के कर्म में परायण होते हैं व पितरों की भक्ति से रहित तथा अपने वंश की स्त्रियों में अनुरागी और चंचलता के ध्यान में परायण होते हैं ॥ १८ ॥ और ब्राह्मणों से वैर करनेवाले सब आपस में विरोधी व शरणमें आये हुए लोगोंको मारनेवाले मनुष्य कलियुगमें होवैंगे ॥ १९ ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain, UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और कलियुग प्राप्त होनेपर ब्राह्मण वैश्यों के आचार में तत्पर तथा वेदों से भ्रष्ट व अहंकारी होवैंगे और ब्राह्मण संध्या को लोप करनेवाले होवैंगे ॥ २० ॥ व शांति में शूर तथा भय में दीन व श्राद्ध और तर्पण से रहित होवैंगे व दैत्यों के आचार में परायण और विष्णुजी की भक्ति से रहित होवैंगे ॥ २१ ॥ और पराये धन की इच्छा करनेवाले व घूस लेने में परायण होवैंगे और ब्राह्मण बिन नहाये भोजन करैंगे व क्षत्रिय युद्ध से रहित होवैंगे ॥ २२ ॥ और कलियुग प्राप्त होनेपर सब ब्राह्मण दुष्ट जीविका करनेवाले तथा मलिन व मदिरा पीने में परायण व यज्ञ न कराने योग्य पुरुषों को यज्ञ करानेवाले होवैंगे ॥ २३ ॥ और स्त्रियां पतियों से वैर करनेवाली व

वैश्याचाररता विप्रा वेदभ्रष्टाश्च मानिनः ॥ भविष्यन्ति कलौ प्राप्ते सन्ध्यालोपकरा द्विजाः ॥ २० ॥ शान्तौ शूरा भये दीनाः श्राद्धतर्पणवर्जिताः ॥ असुराचारनिरता विष्णुभक्तिविवर्जिताः ॥ २१ ॥ परवित्ताभिलाषाश्च उत्कोचग्रहणे रताः ॥ अस्नातभोजिनो विप्राः क्षत्रिया रणवर्ज्जिताः ॥ २२ ॥ भविष्यन्ति कलौ प्राप्ते मलिना दुष्टवृत्तयः ॥ मद्यपानरताः सर्वेप्ययाज्यानां हि याजकाः ॥ २३ ॥ भर्तृद्वेषकरा रामाः पितृद्वेषकराः सुताः ॥ भ्रातृद्वेषकराः क्षुद्रा भविष्यन्ति कलौ युगे ॥ २४ ॥ गव्यविक्रयिणस्ते वै ब्राह्मणा वित्ततत्पराः ॥ गावो दुग्धं न दुह्यन्ते सम्प्राप्ते हि कलौ युगे ॥ २५ ॥ फलन्ते नैव वृक्षाश्च कदाचिदपि भारत ॥ कन्याविक्रयकर्त्तारो गोजाविक्रयकारकाः ॥ २६ ॥ विषविक्रयकर्त्तारो रसविक्रयकारकाः ॥ वेदविक्रयकर्त्तारो भविष्यन्ति कलौ युगे ॥ २७ ॥ नारी गर्भं समाधत्ते हायनैकादशेन हि ॥ एकादश्युपवासस्य विरताः सर्वतो जनाः ॥ २८ ॥ न तीर्थसेवनरता भविष्यन्ति च

पुत्र पिता से वैर करनेवाले होवैंगे व कलियुग प्राप्त होनेपर नीच पुरुष भाइयों से वैर करनेवाले होवैंगे ॥ २४ ॥ और धन में तत्पर वे ब्राह्मण कलियुग प्राप्त होनेपर गऊ का दूध, दही व घी आदिकके बेंचनेवाले होवैंगे व गाइयां दूध न देवैंगी ॥ २५ ॥ व हे भारत! कभी वृक्ष नहीं फलतेहैं और कन्याको बेंचनेवाले तथा गऊ व छगड़ी को बेंचनेवाले होवैंगे ॥ २६ ॥ और कलियुग प्राप्त होनेपर ब्राह्मण विष को बेंचनेवाले तथा रस को बेंचनेवाले और वेदों को बेंचनेवाले होवैंगे ॥ २७ ॥ और स्त्री गेरहवर्षसे गर्भको धारण करैगी और सबलोग एकादशी व्रत से रहित होवैंगे ॥ २८ ॥ और ब्राह्मणलोग तीर्थसेवा में परायण न होवैंगे और बहुत भोजन करनेवाले तथा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बहुत निद्रा से व्याकुल होवैंगे ॥ २६ ॥ और सब कुटिल जीविका करनेवाले तथा वेदों की निन्दामें परायण व संन्यासियों की निन्दा करनेवाले व आपसमें छल करने वाले होंगे ॥ ३० ॥ और कलियुग में स्पर्श के दोष का भय न होगा व क्षत्रिय राज्य से हीन होवैंगे और म्लेच्छ राजा होगा ॥ ३१ ॥ व सब विश्वासघाती तथा गुरुवों के द्रोह में परायण होंगे व हे राजन् ! मित्रों के द्रोह में तत्पर तथा लिंग व उदर में परायण होवैंगे ॥ ३२ ॥ व हे महाराज ! कलियुग प्राप्त होनेपर चारों वर्ण एकही वर्ण होजावेंगे मेरा वचन अन्यथा नहीं है ॥ ३३ ॥ गुरु से यह सुनकर कान्यकुब्ज देश का स्वामी आम नामक उस पृथ्वी में राज्य करने लगा ॥ ३४ ॥ और

वाडवाः॥ बह्वाहारा भविष्यन्ति बहुनिद्रासमाकुलाः ॥ २६॥ जिह्मवृत्तिपराः सर्वे वेदनिन्दापरायणाः ॥ यतिनिन्दापराश्चैवच्छद्मकाराः परस्परम् ॥ ३० ॥ स्पर्शदोषभयं नैव भविष्यति कलौ युगे ॥ क्षत्रिया राज्यहीनाश्च म्लेच्छो राजा भविष्यति ॥ ३१ ॥ विश्वासघातिनः सर्वे गुरुद्रोहरतास्तथा ॥ मित्रद्रोहरता राजञ्छिश्नोदरपरायणाः ॥ ३२ ॥ एकवर्णा भविष्यन्ति वर्णाश्चत्वार एव च ॥ कलौ प्राप्ते महाराज नान्यथा वचनं मम ॥ ३३ ॥ एतच्छ्रुत्वा गुरोरेव कान्यकुब्जाधिपो बली ॥ राज्यं प्रकुरुते तत्र आमो नाम्ना हि भूतले ॥ ३४ ॥ सार्वभौमत्वमापन्नः प्रजापालनतत्परः ॥ प्रजानां कलिना तत्र पापे बुद्धिरजायत ॥ ३५ ॥ वैष्णवं धर्ममुत्सृज्य बौद्धधर्ममुपागताः ॥ प्रजास्तमनुवर्तिन्यः क्षपणैः प्रतिबोधिताः ॥ ३६ ॥ तस्य राज्ञो महादेवी मामानाम्न्यतिविश्रुता ॥ गर्भं दधार सा राज्ञो सर्वलक्षणसंयुता ॥ ३७ ॥ सम्पूर्णे दशमे मासि जाता तस्याः सुरूपिणी ॥ दुहिता समये राज्ञ्याः पूर्णचन्द्रनिभानना ॥ ३८ ॥ रत्नगङ्गे

प्रजाओं के पालन में तत्पर वह चक्रवर्तित्व को प्राप्तहुआ और कलियुगसे उस समय प्रजाओं की बुद्धि पाप में होगई ॥ ३५ ॥ व वैष्णवधर्म को छोड़कर प्रजा बौद्धधर्म को प्राप्त हुए और उनके अनुगामी प्रजालोग बौद्धधर्मानुगामी लोगों से प्रबोधित होगये ॥ ३६ ॥ और बहुतही प्रसिद्ध जो मामा नामक उस राजा की महादेवी थी सब लक्षणों से संयुत उसने राजा से गर्भ को धारण किया ॥ ३७ ॥ और दशम महीना पूर्ण होनेपर समय में उस रानी के पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखवाली स्वरूपवती कन्या उत्पन्न हुई ॥ ३८ ॥ मणि व माणिक्य से भूषित वह नाम से रत्नगंगा ऐसी प्रसिद्ध हुई एक समय इन्द्रसूरि नामक राजा दैवयोगसे इस कान्यकुब्ज देश

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में अन्य देश से आया और सोलह वर्ष की वह राजकुमारी कन्या नहीं ब्याही गई थी ॥ ३९ । ४० ॥ और दासी के विना वह मिली व हे भारत ! जीविक इन्द्रसूरिजी शाबरी मंत्रविद्या को कहा ॥ ४१ ॥ और शूली के कर्म से मोहित वह एकचित्त हुई तदनन्तर उस उस वाक्य में परायण वह मोह को प्राप्तहुई ॥ ४२ ॥ व हे वत्स ! जैनधर्म में परायण वह बौद्धमतानुगामी लोगों से समझाई गई और उस बड़े बलवान् राजा ने रत्नगंगा महादेवी को ब्रह्मावर्त के स्वामी बुद्धिमान् कुंभीपाल राजा के लिये दिया व दैव से मोहित उसने विवाह में उसके लिये मोहेरक को दिया ॥ ४३ । ४४ ॥ तब धर्मारण्य को आकर राजधानी की गई और उसने जैन-

ति नाम्ना सा मणिमाणिक्यभूषिता ॥ एकदा दैवयोगेन देशान्तरादुपागतः ॥ ३९ ॥ नाम्ना चैवेन्द्रसूरिर्वै देशेस्मिन्कान्यकुब्जके ॥ षोडशाब्दा च सा कन्या नोपनीता नृपात्मजा ॥ ४० ॥ दास्यान्तरेण मिलिता इन्द्रसूरिश्च जीविकः ॥ शाबरीं मन्त्रविद्यां च कथयामास भारत ॥ ४१ ॥ एकचित्ताभवत्सा तु शूलिकर्मविमोहिता ॥ ततः सा मोहमापन्ना तत्तद्वाक्यपरायणा ॥ ४२ ॥ क्षपणैर्बोधिता वत्स जैनधर्मपरायणा ॥ ब्रह्मावर्ताधिपतये कुम्भीपालाय धीमते ॥ ४३ ॥ रत्नगङ्गां महादेवीं ददौ तामतिविक्रमी ॥ मोहेरेकं ददौ तस्मै विवाहे दैवमोहितः ॥ ४४ ॥ धर्मारण्यं समागत्य राजधानी कृता तदा ॥ देवांश्च स्थापयामास जैनधर्मप्रणीतकान् ॥ ४५ ॥ सर्वे वर्णास्तथाभूता जैनधर्मसमाश्रिताः ॥ ब्राह्मणा नैव पूज्यन्ते न च शान्तिकपौष्टिकम् ॥ ४६ ॥ न ददाति कदा दानमेवं कालः प्रवर्तते ॥ लब्धशासनका विप्रा लुप्तस्वाम्या अहर्निशम् ॥ ४७ ॥ समाकुलितचित्तास्ते नृपमामं समाययुः ॥ कान्यकुब्जास्थितं शूरं पाखण्डैः परिवेष्टितम् ॥ ४८ ॥ कान्यकुब्जपुरं प्राप्य कतिभिर्वासरैर्नृप ॥ गङ्गोपकण्ठे न्यवसञ्छ्रांतास्ते मोढ

धर्म प्रतिपादन करनेवाले देवताओं को स्थापित किया ॥ ४५ ॥ और जैनधर्म में आश्रित सब वर्ण वैसेही होगये और ब्राह्मण नहीं पूजे जाते हैं व शांतिक, पौष्टिक कर्म नहीं होता है ॥ ४६ ॥ व कभी कोई दान नहीं देताहै ऐसा समय वर्तमान है और शासन को पाये हुए लुप्त स्वामितावाले ब्राह्मण दिनरात ॥ ४७ ॥ विकल चित्तवाले वे पाखण्डों से घिरे हुए व कान्यकुब्ज देश में स्थित शूर आम राजा के समीप आये ॥ ४८ ॥ व हे राजन् ! कुछ दिनों से कान्यकुब्ज नगर को प्राप्त होकर थके

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुए वे मूढ़ ब्राह्मण गंगाजी के समीप बसे ॥ ४६ ॥ और गुप्त दूतोंने राजा के आगे उन आये हुए ब्राह्मणों को कहा व प्रातःकाल बुलाये हुए वे ब्राह्मण राजा की सभा में आये ॥ ५० ॥ तदनन्तर राजा ने आदर समेत प्रत्युत्थान व प्रणामादिक नहीं किया और यह राजा खड़ेहुए सब ब्राह्मणों से पूंछने लगा ॥ ५१ ॥ कि हे ब्राह्मणो! तुम लोग किस लिये आये हो और क्या कार्य है उसको कहिये ॥ ५२ ॥ ब्राह्मण बोले कि हे नराधिप! हम लोग धर्मारण्य से यहां तुम्हारे समीप आये हैं क्योंकि हे राजन्! तुम्हारी कन्या का पति जो कुमारपालक है ॥ ५३ ॥ इन्द्रसूरि से प्रेरित व जैनधर्म से वर्तमान उसने बड़े अद्भुत ब्राह्मणों के शासन (आज्ञा) को लुप्तकर

वाडवाः ॥ ४६ ॥ चारैश्च कथितास्ते च नृपस्याग्रे समागताः ॥ प्रातराकारिता विप्रा आगता नृपसंसदि ॥ ५० ॥ प्रत्युत्थानाभिवादादीन्न चक्रे सादरं नृपः ॥ तिष्ठतो ब्राह्मणान्सर्वान्पर्यपृच्छदसौ ततः ॥ ५१ ॥ किमर्थमागता विप्राः किंस्वित्कार्यं ब्रुवन्तु तत् ॥ ५२ ॥ विप्रा ऊचुः ॥ धर्मारण्यादिहायातास्त्वत्समीपं नराधिप ॥ राजंस्तव सुतायास्तु भर्ता कुमारपालकः ॥ ५३ ॥ तेन प्रलुप्तं विप्राणां शासनं महदद्भुतम् ॥ वर्तता जैनधर्मेण प्रेरितेनेन्द्रसूरिणा ॥ ५४ ॥ राजोवाच ॥ केन वै स्थापिता यूयमस्मिन्मोहेरकेपुरे ॥ एतद्धि वाडवाः सर्वं ब्रूत वृत्तं यथातथम् ॥ ५५ ॥ विप्रा ऊचुः ॥ काजेशैः स्थापिताः पूर्वं धर्मराजेन धीमता ॥ कृता चात्र शुभे स्थाने रामेण च ततः पुरी ॥ ५६ ॥ शासनं रामचन्द्रस्य दृष्ट्वाऽन्यैश्चैव राजभिः ॥ पालितं धर्मतो ह्यत्र शासनं नृपसत्तम ॥ ५७ ॥ इदानीं तव जामाता विप्रान्पालयते न हि ॥ तच्छ्रुत्वा विप्रवाक्यं तु राजा विप्रानथाब्रवीत् ॥ ५८ ॥ यान्तु शीघ्रं हि भो विप्राः कथयन्तु मम

दिया है ॥ ५४ ॥ राजा बोले कि हे ब्राह्मणो! इस मोहेरक पुरमें तुम लोगों को किसने स्थापित किया है इस सब वृत्तान्तको तुमलोग यथार्थ कहो ॥ ५५ ॥ ब्राह्मण बोले कि पुरातन समय में ब्रह्मा, विष्णु व शिवजीने स्थापित किया तदनन्तर बुद्धिमान् धर्मराज ने व श्रीरामजी ने इस उत्तम स्थान में पुरी को बनाया है ॥ ५६ ॥ व हे नृपोत्तम! रामचन्द्र के शासन को देखकर अन्य राजाओं ने यहां धर्म से उस शासन को पालन किया ॥ ५७ ॥ इससमय तुम्हारा दामाद ब्राह्मणों को पालन नहीं करता है उस ब्राह्मणों के वचन को सुनकर राजा ने ब्राह्मणों से कहा ॥ ५८ ॥ कि हे ब्राह्मणो! शीघ्रही जाओ व मेरी आज्ञा से कुमारपाल राजा से कहो कि तुम ब्राह्मणों

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

के स्थान को दे दीजिये ॥ ५९ ॥ इस वचन को सुनकर तदनन्तर ब्राह्मण बड़े हर्षको प्राप्त हुए उसके बाद बड़े प्रसन्न होकर चले गये और वहां वचन को कहा ॥ ६० ॥ श्वसुर का वचन सुनकर राजा ने वचन कहा कुमारपाल बोले कि हे ब्राह्मणो ! श्रीरामजी के शासन को मैं पालन न करूंगा ॥ ६१ ॥ व हे ब्राह्मणो ! यज्ञ में पशु की हिंसा में लगे हुए ब्राह्मणों को मैं छोड़ता हूं उस कारण हिंसा करनेवालों की मेरे भक्ति न होगी ॥ ६२ ॥ ब्राह्मण बोले कि पाखंड के धर्म से कैसे आप शासन के लोपकर्त्ता होगे हे नृपश्रेष्ठ ! उसको पालन कीजिये पापमें मन न कीजिये ॥ ६३ ॥ राजा बोले कि अहिंसा बड़ा भारी धर्म है व हिंसा न करना उत्तम तप है और अ-

ज्ञया ॥ राज्ञे कुमारपालाय देहि त्वं ब्राह्मणालयम् ॥ ५९ ॥ श्रुत्वा वाक्यं ततो विप्राः परं हर्षमुपागताः ॥ जग्मुस्ततोऽतिमुदिता वाक्यं तत्र निवेदितम् ॥ ६० ॥ श्वशुरस्य वचः श्रुत्वा राजा वचनमब्रवीत् ॥ कुमारपाल उवाच ॥ रामस्य शासनं विप्राः पालयिष्याम्यहं नहि ॥ ६१ ॥ त्यजामि ब्राह्मणान्यज्ञे पशुहिंसापरायणान् ॥ तस्माद्धि हिंसकानां तु न मे भक्तिर्भवेद्द्विजाः ॥ ६२ ॥ ब्राह्मणा ऊचुः ॥ कथं पाखण्डधर्मेण लुप्तशासनको भवान् ॥ पालयस्व नृपश्रेष्ठ मा स्म पापे मनः कृथाः ॥ ६३ ॥ राजोवाच ॥ अहिंसा परमो धर्मो अहिंसा च परन्तपः ॥ अहिंसा परमं ज्ञानम हिंसा परमं फलम् ॥ ६४ ॥ तृणेषु चैव वृक्षेषु पतङ्गेषु नरेषु च ॥ कीटेषु मत्कुणाद्येषु अजाश्वेषु गजेषु च ॥ ६५ ॥ लूतासु चैव सर्पेषु महिष्यादिषु वै तथा ॥ जन्तवः सदृशा विप्राः सूक्ष्मेषु च महत्सु च ॥ ६६ ॥ कथं यूयं प्रवर्तध्वे विप्रा हिंसापरायणाः ॥ तच्छ्रुत्वा वज्रतुल्यं हि वचनं च द्विजोत्तमाः ॥ ६७ ॥ प्रत्यूचुर्वाडवाः सर्वे क्रोधरक्तेक्षणास्तदा ॥ ६८ ॥ ब्राह्मणा ऊचुः ॥ अहिंसा परमो धर्मः सत्यमेतत्त्वयोदितम् ॥ परं तथापि धर्मोऽस्ति शृणुष्वैकाग्रमा

हिंसा परम ज्ञान है व अहिंसा बड़ाभारी फल है ॥ ६४ ॥ तृणों में और वृक्ष, पतंग, मनुष्य, कीट, खटमलादिक और छाग, घोड़ा व हाथियों में ॥ ६५ ॥ और मकड़ी व सर्प तथा भैंसी आदिकों में हे ब्राह्मणो ! छोटे व बड़े प्राणियों में सब जंतु बराबर हैं ॥ ६६ ॥ और हिंसा में परायण तुम लोग ब्राह्मण कैसे वर्तमान हो वज्र के समान उस वचनको सुनकर उस समय क्रोधसे लाल लोचनोंवाले सब द्विजोत्तम ब्राह्मणों ने प्रत्युत्तर दिया ॥ ६७ । ६८ ॥ ब्राह्मण बोले कि तुमने यह सत्य कहा कि अहिंसा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

बड़ा उत्तम धर्म है परन्तु तौ भी धर्म है उसको एकाग्र मन होकर सुनिये ॥ ६६ ॥ कि जो हिंसा वेद में कही गई है वह हिंसा नहीं है ऐसा निर्णय है क्योंकि जो शस्त्र से मारा जाता है और प्राणियों में जो पीड़ा होती है ॥ ७० ॥ हे धर्मज्ञों में श्रेष्ठ ! संसार में वही अधर्म है और विना शस्त्रके जो प्राणी वेदमंत्रों से मारेजाते हैं ॥ ७१ ॥ वह हिंसा प्राणियों को पीड़ा करनेवाली नहीं होती है बरन सुखदायिनी होती है और पराया उपकार पुण्य के लिये है व पराई पीड़ा पाप के लिये है ॥ ७२ ॥ और वेदों में कही हुई हिंसा को करके भी मनुष्य पाप से युक्त नहीं होता है ब्राह्मणों का वचन सुनकर राजाने फिर वचन कहा ॥ ७३ ॥ राजा बोले कि अति उत्तम धर्मारण्य

नसः ॥ ६९ ॥ या वेदविहिता हिंसा सा न हिंसेति निर्णयः ॥ शस्त्रेणाहन्यते यत्र पीडा जन्तुषु जायते ॥ ७० ॥ स एवा धर्म एवास्ति लोके धर्मविदां वर ॥ वेदमन्त्रैर्विहन्यन्ते विना शस्त्रेण जन्तवः ॥ ७१ ॥ जन्तुपीडाकरा नैव सा हिंसा सुखदायिनी ॥ परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥ ७२ ॥ वेदोदितां विधायापि हिंसां पापैर्न लिप्यते ॥ विप्राणां वचनं श्रुत्वा पुनर्वचनमब्रवीत् ॥ ७३ ॥ राजोवाच ॥ ब्रह्मादीनां परं क्षेत्रं धर्मारण्यमनुत्तमम् ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशाद्या नेदानीमत्र सन्ति ते ॥ ७४ ॥ न धर्मो विद्यते वात्र उक्तो रामः स मानुषः ॥ क्व वापि लम्बपुच्छोऽसौ यो मुक्तो रक्षणाय वः ॥ ७५ ॥ शासनं चेन्न दृष्टं वो नैव तत्पालयाम्यहम् ॥ द्विजाः कोपसमाविष्टा ददुः प्रत्युत्तरं तदा ॥ ७६ ॥ द्विजा ऊचुः ॥ रे मूढ त्वं कथं वेत्थं भाषसे मदलोलुपः ॥ स दैत्यानां विनाशाय धर्मसंरक्षणाय च ॥ ७७ ॥ रामश्चतुर्भुजः साक्षान्मानुषत्वं गतो भुवि ॥ अगतीनां च गतिदः स वै धर्मपरायणः ॥ दयालुश्च कृपालुश्च जन्तूनां

ब्रह्मादिक देवताओं का उत्तम क्षेत्र है और इससमय ब्रह्मा, विष्णु व शिवादिक वे देवता नहीं हैं ॥ ७४ ॥ और यहां धर्म नहीं है तथा वे श्रीरामजी मनुष्य कहे गयेहैं और जो तुमलोगों की रक्षा के लिये छोड़े गये थे वे लम्बी पूंछवाले हनुमान्जी कहां हैं ॥ ७५ ॥ यदि शासन न देखा जायगा तो मैं तुमलोगों को पालन न करूंगा तब क्रोध से संयुत ब्राह्मणों ने प्रत्युत्तर दिया ॥ ७६ ॥ ब्राह्मण बोले कि रेमूढ़ ! मद से लोभी तुम कैसे ऐसा कहते हो क्योंकि दैत्यों के नाश के लिये व धर्म की रक्षा के लिये वे ॥ ७७ ॥ चतुर्भुज साक्षात् रामजी पृथ्वी में मनुजता को प्राप्तहुए हैं और अगतिवालों को गति देनेवाले श्रीरामजी धर्म में परायण हैं और दयालु, कृपालु

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व जंतुवों के पालक हैं ॥ ७८ ॥ राजा बोले कि आज श्रीरामजी कहां वर्तमान हैं व पवनपुत्र कहां हैं वे सब फूटेहुए बादल की नाईं होगये क्योंकि श्रीराम व हनुमान् जी कहां हैं ॥ ७९ ॥ परन्तु यदि श्रीराम व हनुमान्जी सर्वत्र वर्तमान हैं तो इस समय ब्राह्मणों की सहायता में आवैंगे ऐसी मेरी बुद्धि है ॥ ८० ॥ हे ब्राह्मणो ! हनुमान् व श्रीराम और लक्ष्मणजी को दिखलाइये यदि कोई विश्वास है तो वह हमलोगों को दिखलाइये ॥ ८१ ॥ उन्होंने कहा कि हे राजन् ! हनुमान्जी को दूत करके श्रीरामजी ने एक सौ चवालीस ग्रामों को दिया है ॥ ८२ ॥ फिर इस स्थान में आकर तेरह ग्रामों को दिया और काश्यपी व श्रीगंगाजी के समीप सोलह महादानों

परिपालकः ॥ ७८ ॥ राजोवाच ॥ कुतोऽद्य वर्त्तते रामः कुतो वै वायुनन्दनः ॥ भ्रष्टाभ्रमिव ते सर्वे क रामो हनुमानिति ॥ ७९ ॥ परन्तु रामो हनुमान्यदि वर्त्तेत सर्वतः ॥ इदानीं विप्रसाहाय्य आगमिष्यति मे मतिः ॥ ८० ॥ दर्शयध्वं हनूमन्तं रामं वा लक्ष्मणं तथा ॥ यद्यस्ति प्रत्ययः कश्चित्स नो विप्राः प्रदर्श्यताम् ॥ ८१ ॥ उक्तं तै रामदेवेन दूतं कृत्वाञ्जनीसुतम् ॥ चतुश्चत्वारिंशदधिकं दत्तं ग्रामशतंनृप ॥८२॥ पुनरागत्य स्थानेऽस्मिन्दत्ता ग्रामास्त्रयोदश ॥ काश्यप्यां चैव गङ्गायां महादानानि षोडश ॥ ८३ ॥ दत्तानि विप्रमुख्येभ्यो दत्ता ग्रामाः सुशोभनाः ॥ पुनः सङ्कल्पिता वीर षट्पञ्चाशकसंख्यया ॥ ८४ ॥ षट्त्रिंशच्चसहस्राणि गोभुजा जज्ञिरे वराः ॥ सपादलक्षा वणिजो दत्ता माण्डलिकाभिधाः ॥ ८५ ॥ तेनोक्तं वाडवाः सर्वे दर्शयध्वं हि मारुतिम् ॥ यस्याभिज्ञानमात्रेण स्थितिं पूर्वां ददाम्यहम् ॥ ८६ ॥ विप्रवाक्यं करिष्यामि प्रत्ययो दर्श्यते यदि ॥ ततः सर्वे भविष्यन्ति वेदधर्मपरायणाः ॥ ८७ ॥ अन्यथा

को ॥ ८३ ॥ मुख्य ब्राह्मणों के लिये दिया और बहुतही उत्तम ग्रामों को दिया और फिर छप्पन संख्यक ग्रामों को संकल्प किया ॥ ८४ ॥ और छत्तिस हज़ार श्रेष्ठ गोभुज वैश्य उत्पन्न हुए व मांडलिक नामक सवालाख वैश्य दिये गये ॥ ८५ ॥ उस राजा ने सब ब्राह्मणों से कहा कि हनुमान्जी को दिखलाइये कि जिनके जाननेही से मैं पहली मर्यादा को दूंगा ॥ ८६ ॥ और यदि विश्वास देख पड़ैगा तो मैं ब्राह्मणों का वचन करूंगा और तदनन्तर सब वेदधर्म में तत्पर होवैंगे ॥ ८७ ॥ नहीं तो तुम

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सब जैनधर्म से वर्तमान होवो राजा का वचन सुनकर वे ब्राह्मण अपने २ स्थान को आये ॥ ८८ ॥ और क्रोध से अन्ध किये व दुःखित मनवाले वे ब्राह्मण पृथ्वी में श्वासों को छोड़ते हुए हाहा ऐसा कहने लगे ॥ ८९ ॥ और दांतोंको घिसते व हाथों से हाथों को पीसते हुए वे परस्पर कहनेलगे कि हम लोग इससे क्या करैं ॥ ९० ॥ और उन सब ब्राह्मणों ने मिलकर उत्तम सम्मति किया व हृदय में श्रीराम व हनुमान्जी को ध्यान कर ॥ ९१ ॥ बालक व वृद्ध भी ब्राह्मणों ने मेल किया तब उनके मध्य में बहुतही वृद्ध ब्राह्मण ने उत्तम वचन कहा ॥ ९२ ॥ कि चौंसठि गोत्रोंवाले हम लोगों के मध्य में जो बहत्तरि अपने अपने गोत्र के अवटंकवाले तथा एक ग्राम

जिनधर्मेण वर्त्तयध्वं हि सर्वशः ॥ नृपवाक्यं तु ते श्रुत्वा स्वेस्वे स्थाने समागताः ॥ ८८ ॥ वाडवाः खिन्नमनसः क्रोधेनान्धीकृता भुवि ॥ निश्वासान्मुञ्चमानास्ते हाहेति प्रवदन्ति च ॥ ८९ ॥ दन्तान्प्राघर्षयन्सर्वान्न्यपीडंश्च करैः करान् ॥ परस्परं भाषमाणाः कथं कुर्मो वयं त्वितः ॥ ९० ॥ मिलित्वा वाडवाः सर्वे चक्रुस्ते मन्त्रमुत्तमम् ॥ रामवाक्यं हृदि ध्यात्वा ध्यात्वा चैवाञ्जनीसुतम् ॥ ९१ ॥ द्विजा मेलापकं चक्रुर्बाला वृद्धतमा अपि ॥ तेषां वृद्धतमो विप्रो वाक्यमूचे शुभं तदा ॥ ९२ ॥ चतुःषष्टिश्च गोत्राणामस्माकं ये द्विसप्ततिः ॥ स्वस्वगोत्रस्यावटङ्का एकग्रामाभिलाषिणः ॥ ९३ ॥ प्रयातु स्वस्ववर्गस्य एको ह्येको द्विजः सुधीः ॥ रामेश्वरं सेतुबन्धं हनूमांस्तत्र विद्यते ॥ ९४ ॥ सर्वे प्रयान्तु तत्रैव रामपार्श्वे निरामयाः ॥ निराहारा जितक्रोधा मायया वर्जिताः पुनः ॥ ९५ ॥ एकाग्रमानसाः सर्वे स्तुत्वा ध्यात्वा जपन्तु तम् ॥ ततो दाशरथी रामो दयां कृत्वा द्विजन्मसु ॥ ९६ ॥ शासनं च प्रदास्यति अचलं च

के अभिलाषी हैं ॥ ९३ ॥ उनमें से अपने अपने वर्ग का एक एक विद्वान् ब्राह्मण रामेश्वर व सेतुबंध तीर्थ को जावे वहां हनुमान्जी विद्यमान हैं ॥ ९४ ॥ और व्याधि रहित सबलोग वहीं श्रीरामजी के समीप चलैं और निराहार व क्रोधको जीतनेवाले व फिर माया से रहित ॥ ९५ ॥ सावधान मनवाले सब उन की स्तुति कर व ध्यान कर जप करैं तदनन्तर दशरथकुमार श्रीरामजी ब्राह्मणों के ऊपर दयाकर ॥ ९६ ॥ युग युग में अचल शासन को देवैंगे और बड़े तप से प्रसन्न होकर वे मनोरथ को

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देवैंगे ॥ ९७ ॥ और जिस वर्ग का जो ब्राह्मण वहां न जावैगा वह वर्ग से व स्थान के धर्मसे परित्याग करने योग्य है इसमें सन्देह नहीं है ॥ ९८ ॥ और वह वणिग्वृत्त वाले सम्बंध तथा विवाह व ग्रामवृत्त में सम्बंध न होगा और सब स्थान में वे बाहर किये जावैंगे ॥ ९९ ॥ सभा के उस वचन को सुनकर उनके मध्य में उत्तम वचन व उत्तम शब्दवाला पवित्र तथा प्रवीण ब्राह्मण तीन शब्दों से ब्राह्मणों को सुनाता ॥ १०० ॥ व खड़ा होता हुआ दिये हुए तालवाले इस प्रत्युत्तर को कहा कि असत्यवादियों को और पराई निन्दा करनेवाले में जो पाप होता है और पराई स्त्री के समीप जाने में व पराये द्रोह में परायण पुरुष में जो पाप होताहै ॥ १ ॥ और मदिरा

युगेयुगे ॥ महता तपसा तुष्टः प्रदास्यति समीहितम्॥९७॥ यस्य वर्गस्य यो विप्रो न प्रयास्यति तत्र वै॥ स च वर्गात्परित्याज्यः स्थानधर्मान्न संशयः ॥ ९८ ॥ वणिग्वृत्ते न सम्बन्धे न विवाहे कदाचन ॥ ग्रामवृत्ते न सम्बन्धः सर्वस्थाने बहिष्कृताः ॥ ९९ ॥ सभावाक्यं च तच्छ्रुत्वा तन्मध्ये वाडवः शुचिः ॥ वाग्मी दक्षः सुशब्दश्च त्रिरवैः श्रावयन्द्विजान् ॥ १०० ॥ प्रतिवाक्यं दत्ततालं तिष्ठन्नेतद्वचोऽब्रवीत् ॥ असत्यवादिनां यच्च पातकं परनिन्दके ॥ परदाराभिगमने परद्रोहरते नरे ॥ १ ॥ मद्यपेषु च यत्पापं यत्पापं हेमहारिषु ॥ तत्पापं च भवेत्तस्य गमने यः पराङ्मुखः ॥ अथ किं बहुनोक्तेन यान्तु सत्यं द्विजोत्तमाः ॥ २॥ तच्छ्रुत्वा दारुणं वाक्यं गमनाय मनोदधे ॥ गच्छतस्तान्द्विजाञ्छ्रुत्वा कुमारपालको नृपः ॥ ३ ॥ समाहूय कृषेः कर्म भिक्षाटनमथापि वा ॥ नानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः प्रापयिष्ये न संशयः ॥ ४ ॥ तच्छ्रुत्वा व्यथिताः सर्वे किं भविष्यत्यतः परम् ॥ तथा त्रीणि सहस्राणि प्रबन्धं चक्रिरे

पीनेवालों में व सोना चुरानेवालों में जो पाप होताहै वह पाप उसको होवै जोकि वहां जाने में विमुख होवै अथवा बहुत कहनेसे क्याहै सत्यही द्विजोत्तम लोग जावैं ॥ २ ॥ उस कठिन वचन को सुनकर उसने जानेके लिये मन धारण किया और उन जाते हुए ब्राह्मणों को सुनकर कुमारपालक राजा ने कहा ॥ ३ ॥ कि उन सबों को बुलाकर कृषी कर्म या भिक्षाटन को अनेक गोत्रोंवाले ब्राह्मणों के लिये प्राप्त कराऊंगा इसमें सन्देह नहीं है ॥ ४ ॥ उसको सुनकर सब दुःखित हुए कि इसके उपरान्त

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

क्या होगा तब तीन हज़ार ब्राह्मणों ने यह प्रबंध किया ॥ ५ ॥ कि हम सब श्रीरामजी के समीप जावैंगे इसमें सन्देह नहीं है और आपस में ब्राह्मणों ने हस्ताक्षर दान किया ॥ ६ ॥ व हाथों को जोड़कर ब्राह्मणों ने इस वचन को कहा कि यहां त्रयीविद्या नाश होजावैगी और त्रयीमूर्त्ति याने ब्रह्मा, विष्णु व शिवजी क्रोधित होवैंगे ॥ ७ ॥ इस कारण अठारह हज़ार ब्राह्मणों को वहीं जाना चाहिये तदनन्तर उस श्रेष्ठ राजा ने सब श्रेष्ठ गोभुज वणिजों को बुलाकर यह वचन कहा कि ब्राह्मणों को मना कीजिये ॥ ८ । ९ ॥ व्यासजी बोले कि जो उत्तम वणिज् जैनधर्म में लिप्त नहीं थे उन्होंने वहां जीविका नाश होने के डर से मौन धारण

तदा ॥ ५ ॥ गमिष्यामो वयं सर्वे रामं प्रति न संशयः ॥ हस्ताक्षरप्रदानं वै अन्योन्यं तु कृतं द्विजैः ॥ ६ ॥ कृताञ्जलिपुटा विप्रा वाक्यमेतदथाब्रुवन् ॥ नश्यतेऽत्र त्रयी विद्या त्रयीमूर्तिः प्रकुप्यति ॥ ७ ॥ तस्मात्तत्रैव गन्तव्यमष्टादशसहस्रकैः ॥ ततः स वणिजः सर्वान्समाहूय च गोभुजान् ॥ ८ ॥ वाक्यमूचे नृपश्रेष्ठो वारयध्वं द्विजानिति ॥ ९ ॥ व्यास उवाच ॥ न जैनधर्मे ये लिप्ता गोभुजा वणिगुत्तमाः ॥ वृत्तिभङ्गभयात्तत्र मौनमेव समाचरन् ॥ १० ॥ वारयाम कथं विप्रान्वह्निरूपान्दहन्ति ते ॥ शापाग्निना नरपते द्विजा मृत्युपरायणाः ॥ ११ ॥ अडालयेषु ये जाताः शूद्रा आहूय तान्नृपः ॥ निवार्यन्तामिति प्राह वाडवा गमनोद्यताः ॥ १२ ॥ तेषां मध्ये कतिपया जैनधर्मसमाश्रिताः ॥ गता वाडवपुञ्जेषु राजादेशान्निवारणे ॥ १३ ॥ केचिच्छूद्रा ऊचुः ॥ क रामो लक्ष्मणोपेतः क च वायुसुतो बली ॥ वर्तमानेन कालेन वक्तव्यं द्विजसत्तमाः ॥ १४ ॥ व्याघ्रसिंहाकुले दुर्गे वने वनगजाश्रिते ॥ परित्यज्य प्रियान्प्राणान्पुत्रान्दारान्निकेत

किया ॥ १० ॥ कि अग्निरूपी ब्राह्मणों को मैं कैसे मना करूं क्योंकि हे राजन् ! मृत्यु में परायण ब्राह्मण शापरूपी अग्नि से जलावैंगे ॥ ११ ॥ तब जो अडालय में शूद्र पैदाहुए थे उनको बुलाकर राजा ने कहा कि जाने के लिये तैयार ब्राह्मणों को मना कीजिये ॥ १२ ॥ उनके मध्य में जैनधर्म में आश्रित कुछ शूद्र राजा की आज्ञा से ब्राह्मणों के गणों में मना करने के लिये गये ॥ १३ ॥ कितेक शूद्र बोले कि लक्ष्मण से संयुत श्रीरामजी कहां हैं व पवनकुमार बलवान् हनुमान् जी कहां हैं हे द्विजोत्तमो ! वर्तमान समय से यह कहना चाहिये ॥ १४ ॥ व्याघ्रों व सिंहों से पूर्ण तथा वनके हाथियों से संयुत कठिन वन में प्यारे प्राणों को व पुत्रों, स्त्रियों और मन्दिरों

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को छोड़कर ॥ १५ ॥ हे ब्राह्मणो ! दुष्ट शासनवाले राज्य में क्यों जाते हो उस वचन को सुनकर कितेक ब्राह्मणों ने वचन व मन से स्मरण किया ॥ १६ ॥ और पंद्रह हज़ार उन ब्राह्मणों ने श्रेष्ठ राजा के सकाश से भय, लोभ व दान के कारण यह कहा कि वह सब होगा ॥ १७ ॥ और हम लोग जीविका की कल्पना कभी न करेंगे या कृषीकर्म करेंगे अथवा भिक्षाटन करेंगे ॥ १८ ॥ तदनन्तर उन पंद्रहहज़ार द्विजोत्तमों ने उनसे यह कठिन वचन कहा कि अन्य ब्राह्मण यथायोग्य चले जावैं ॥ १९ ॥ और आपलोगों को श्रीरामजी से दिया हुआ शासन होवै और त्रयी विद्यावाले सब प्रसिद्ध द्विजोत्तम ॥ २० ॥ तीनहज़ार निश्चयकर त्रैविद्य हुए ॥ २१ ॥

नान् ॥ १५ ॥ किमर्थं गम्यते विप्रा राज्ये वै दुष्टशासने ॥ तच्छ्रुत्वा वाडवाः केचिद्वाक्येन मनसाऽस्मरन् ॥ १६ ॥ पञ्चदशसहस्रास्ते वाडवा नृपसत्तमात् ॥ भयाल्लोभाच्च दानाच्च तत्सर्वं भवतामिति ॥ १७ ॥ वृत्त्योपकल्पनं नैव करिष्यामः कदाचन ॥ कृषिकर्म करिष्यामो भिक्षाटनमथापि वा ॥ १८ ॥ ततश्च ते पञ्चदशसहस्रा द्विजसत्तमाः ॥ दारुणं वाक्यमूचुस्तान्यान्तु चान्ये यथोचितम् ॥ १९ ॥ शासनं भवतामस्तु रामदत्तं न संशयः ॥ त्रयीविद्यास्तु विख्याताः सर्वे वाडवपुङ्गवाः ॥ २० ॥ सहस्राणि च त्रीण्येव त्रैविद्या अभवन्ध्रुवम् ॥ २१ ॥ राजोवाच ॥ चतुर्थांशेन राज्यं च किञ्चिद्दत्ता वसुन्धरा ॥ तस्माच्चतुर्विधेत्येवं ज्ञातिबन्धमतः परम् ॥ २२ ॥ च्यवनो दास्यते कन्यां यूयं कन्यामवाप्स्युत ॥ न वृत्तिर्न च सम्बन्धो भवतां स्यात्कदापि वा ॥ २३ ॥ इति तस्य वचः श्रुत्वा त्रयीविद्याश्च वाडवाः ॥ स्वे स्वे स्थाने गताः सर्वे सङ्केतादनिवृत्त्य च ॥ २४ ॥ पञ्चदशसहस्राणि ततस्तु द्विजपुङ्गवाः ॥ यथागतं गताः सर्वे चातुर्विद्या द्विजोत्तमाः ॥ २५ ॥ तद्दिनं ह्यतिवाह्याथ चिन्ताविष्टेन चेतसा ॥ वार्यमाणाः स्वपुत्रैस्ते दारैश्च विन

राजा बोले कि चौथाई अंश से कुछ राज्य व पृथ्वी दीगई उस कारण इसके उपरान्त चारही प्रकार का ज्ञातिप्रबन्ध होगा ॥ २२ ॥ और च्यवनजी कन्या को देवैंगे व तुमलोग कन्या को पावोगे और आपलोगों की कभी जीविका व सम्बन्ध न होगा ॥ २३ ॥ उस राजा के इस वचन को सुनकर त्रयी विद्यावाले सब ब्राह्मण संकेत से न लौटकर अपने स्थान में चले गये ॥ २४ ॥ तदनन्तर पंद्रह हज़ार सब चातुर्विध द्विजोत्तमलोग जिसप्रकार आये थे वैसेही चले गये ॥ २५ ॥ और चिन्ता से संयुत

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

चित्त करके उस दिन को व्यतीत कर विनय से संयुत पुत्रों व स्त्रियों से वे ब्राह्मण मना किये गये ॥ २६ ॥ व सावधान मनवाले सब ब्राह्मण निद्रा को न प्राप्त हुए और ब्राह्ममुहूर्त में उठकर संसार की माया को छोड़कर ॥ २७ ॥ और स्थान समेत प्यारे पुत्रों व स्त्रियों को छोड़कर ग्राम के समीप सब श्रेष्ठ ब्राह्मण मिले ॥ २८ ॥ तब नित्य के दिनवाले कर्मों को करके तीन हज़ार ब्राह्मणों ने ब्राह्मणों के लिये दक्षिणा को देकर व कुलमाता को पूजकर ॥ २९ ॥ विघ्नसमूहों के नाश के लिये दक्षिण द्वारपै स्थित गणेशजी को सिंदूर व पुष्प की मालाओंसे पूजन किया ॥ ३० ॥ व सब प्रयोजनों को सिद्ध करनेवाले बकुलस्वामी सूर्यनारायण को पूजा और आदर से

यान्वितैः ॥ २६ ॥ एकाग्रमानसाः सर्वे न निद्रामुपलेभिरे ॥ ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय मायां त्यक्त्वा हि लौकिकीम् ॥ २७ ॥ परित्यज्य प्रियान्पुत्रान्दारान्सनिलयानपि ॥ ग्रामोपान्तेषु मिलिताः सर्वे वाडवपुङ्गवाः ॥ २८ ॥ सहस्राणि तदा त्रीणि कृतनित्याह्निकक्रियाः ॥ विप्रेभ्यो दक्षिणां दत्त्वा सम्पूज्य कुलमातरम् ॥ २९ ॥ विघ्नसङ्घविनाशाय दक्षिणद्वारसंस्थितः ॥ सिन्दूरपुष्पमालाभिः पूजितो गणनायकः ॥ ३० ॥ पूजितो बकुलस्वामी सूर्यः सर्वार्थसाधकः ॥ आदराच्च महाशक्तिः श्रीमाता पूजिता तथा ॥ ३१ ॥ शान्तां चैव नमस्कृत्य ज्ञानजां गोत्रमातरम् ॥ गमने नोद्यमानास्ते परं हर्षमुपाययुः ॥ ३२ ॥ चातुर्विद्या द्विजाश्चैव पुनरामन्त्र्य तान्प्रति ॥ पप्रच्छुश्च मुहुः सर्वे समागमनकारणम् ॥ ३३ ॥ विप्रा ऊचुः ॥ न गन्तव्यं भवद्भिर्वै गत्वा वाऽऽयान्तु सत्वराः ॥ ३४ ॥ यथा रामप्रदत्तं हि उपकल्पयसेऽचिरात् ॥ श्रुत्वा पुनरथोचुस्ते चातुर्विद्या द्विजोत्तमाः ॥ ३५ ॥ न स्थानेन द्विजैर्वापि न च वृत्त्या कथंचन ॥ वयं

श्रीमाता महाशक्ति को पूजन किया ॥ ३१ ॥ और शान्ता व ज्ञानजा गोत्रमाता को प्रणामकर गमन के लिये प्रेरित वे बड़े हर्ष को प्राप्त हुए ॥ ३२ ॥ फिर चातुर्विद्य ब्राह्मणों ने उनको बुलाकर सब आनेके कारण को पूंछा ॥ ३३ ॥ ब्राह्मण लोग बोले कि आप लोगों को जाना न चाहिये या जाकर शीघ्रही आइयेगा ॥ ३४ ॥ और रामजीने जैसी आज्ञा दियाहै वैसाही शीघ्रही कीजियेगा यह सुनकर फिर उन चातुर्विद्य ब्राह्मणों ने कहा ॥ ३५ ॥ कि स्थान से व ब्राह्मणों से और जीविका से किसी प्रकार

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हम लोग न आवैंगे और फिर न कहना चाहिये ॥ ३६ ॥ हे द्विजोत्तमो ! रघुनायकजीने हम सबों को जो जीविका दिया है उस जीविका को हम लोग जप, होम व पूजनादिकों से प्राप्त होवैंगे ॥ ३७ ॥ फिर उन पंद्रह हज़ार ब्राह्मणोंने उनसे आदर से कहा कि अग्निकी सेवा में तत्पर हम सबों को यहां टिकना चाहिये ॥ ३८ ॥ सबोंके कार्य की सिद्धि के लिये तुम लोगों को वहां जाना चाहिये और आपस में सब सहायवाले हम लोग जीविका को प्राप्त होवैंगे इसमें सन्देह नहीं है ॥ ३९ ॥ और अपने वचनको छोड़नेवाले तुम लोग जीविका से रहित होवोगे तदनन्तर उनके मध्य में किसी चातुर्विद्य ब्राह्मण ने कहा ॥ ४० ॥ चातुर्विद्य बोला कि हे ब्राह्मणो ! श्रीरामजी

नैवागमिष्यामः कथनीयं न वै पुनः ॥ ३६ ॥ रघूद्वहेन दत्ता वै वृत्तिर्नो द्विजसत्तमाः ॥ तां वृत्तिं प्रति यास्यामो जप होमार्चनादिभिः ॥ ३७ ॥ ते पञ्चदशसाहस्राः पुनस्तानूचुरादरात् ॥ अस्माभिरत्र स्थातव्यमग्निसेवार्थतत्परैः ॥ ३८ ॥ युष्माभिस्तत्र गन्तव्यं सर्वेषां कार्यसिद्धये ॥ अन्योन्यं सर्वसाहाया वृत्तिं याम न संशयः ॥ ३९ ॥ त्यक्तस्वकीयवचना वृत्तिहीना भविष्यथ ॥ ततस्तन्मध्यतः कश्चिच्चातुर्विद्य उवाच ह ॥ ४० ॥ चातुर्विद्य उवाच ॥ पूर्वं हि वृत्तिमस्माकं रामो वै दत्तवान्द्विजाः ॥ चातुर्विद्या महासत्त्वाः स्वधर्मप्रतिपालकाः ॥ ४१ ॥ याजनाध्ययनायुक्ताः काजेशेन विनिर्मिताः ॥ दानं दत्त्वा तु रामेण उक्तं हि भवतां पुनः ॥ ४२ ॥ स्थानं त्यक्त्वा न गन्तव्यमित्थं हि नियमः कृतः ॥ आपत्काले तु स्मर्तव्यो वायुपुत्रो महाबलः ॥ ४३ ॥ इति रामेण पूर्वं हि स्वे स्थाने स्थापितास्तदा ॥ अन्यथा रामवाक्यं तत्कृत्वा गच्छेत्कथं पुनः ॥ ४४ ॥ तस्माद्युष्मान्वयं ब्रूमो गच्छतः कार्यसिद्धये ॥ भवतां कार्यसिद्ध्यर्थं वयं

ने पहले हमलोगों को जीविका दिया है व अपने धर्म के पालक बड़े सत्त्ववाले चातुर्विद्य ब्राह्मण ॥ ४१ ॥ यज्ञ कराने व वेद पाठसे संयुत ब्रह्मा, विष्णु व शिवजी से बनाये गये और श्रीरामजीने आप लोगों को दान देकर फिर कहा ॥ ४२ ॥ कि स्थान को छोड़कर जाना न चाहिये ऐसा नियम किया गया और विपत्ति समय में बड़े बलवान् पवनकुमार को स्मरण करना चाहिये ॥ ४३ ॥ उस समय इस प्रकार श्रीरामजी ने पहले अपने स्थान में स्थापित किया और उस रामजी के वचन को अन्यथा करके फिर कैसे जावैं ॥ ४४ ॥ उसी कारण हमलोग कार्य की सिद्धि के लिये जाते हुए तुमलोगों से कहते हैं कि आपलोगों की कार्यसिद्धि के लिये हमलोग होम व पूजना-

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दिकोंसे प्राप्त हैं ॥ ४५ ॥ और शीघ्रही कार्य की सिद्धि है यह सत्य सत्य है इसमें सन्देह नहीं है इस वचनको सुनकर तदनन्तर उन ब्राह्मणों ने गमनके लिये ॥ ४६ ॥ पहले प्रस्थान करके जानेके लिये मनको धारण किया तब तीनहज़ार उत्तम ब्राह्मण वहां से गये ॥ ४७ ॥ और देशसे अन्य देश व वन से अन्य वन को जाकर पूर्वजों को तृप्त करके उन्होंने प्रत्येक तीर्थ में श्राद्ध किया ॥ ४८ ॥ व राम राम और हनुमंत ऐसा ध्यान करते हुए उत्तम आचार व एक बार भोजन करनेवाले वे ब्राह्मण धीरे धीरे गये ॥ ४९ ॥ और सत्य के व्रत में परायण व प्रतिग्रह (दान लेना) छोड़े हुए वे हनुमानजी के दर्शन की इच्छावाले ब्राह्मण दूर मार्गको चलेगये ॥ ५० ॥ और

होमार्चनादिभिः ॥ ४५ ॥ झटिति कार्यसिद्धिः स्यात्सत्यं सत्यं न संशयः ॥ इति वाक्यं ततः श्रुत्वा ते द्विजा गमनं प्रति ॥ ४६ ॥ प्रस्थानं च विधायादौ गमनाय मनो दधुः ॥ त्रिसाहस्रास्तदा तस्मात्प्रस्थिता द्विजसत्तमाः ॥ ४७ ॥ देशाद्देशान्तरं गत्वा वनाच्चैव वनान्तरम् ॥ तीर्थेतीर्थे कृतश्राद्धाः सुसन्तर्पितपूर्वजाः ॥ ४८ ॥ ध्यायन्तो रामरामेति हनुमन्तेति वै पुनः ॥ एकाशनाः सदाचारा द्विजा जग्मुः शनैःशनैः ॥ ४९ ॥ त्यक्तप्रतिग्रहाः शान्ताः सत्यव्रतपरायणाः ॥ ते गता दूरमध्वानं हनुमद्दर्शनार्थिनः ॥ ५० ॥ सन्ध्यामुपासते नित्यं त्रिकालं चैकमानसाः ॥ एवं तु गच्छतां तेषां शकुना अभवञ्छुभाः ॥ ५१ ॥ एवं तु गच्छतां तेषां पाथेयं त्रुटितं तदा ॥ श्रान्ता ग्लानिं गताः सर्वे पदं परममास्थिताः ॥ ५२ ॥ क्रमित्वा कियतीं भूमिं पदं गन्तुं न तु क्षमाः ॥ मनसा निश्चयं कृत्वा दृढीकृत्य स्वमानसम् ॥ ५३ ॥ हनूमन्तमदृष्ट्वैव न यास्यामो वयं गृहान् ॥ त्रैविद्यास्तु गतास्तत्र यत्र रामेश्वरो हरिः ॥ ५४ ॥

सावधान मनवाले वे नित्य त्रिकाल संध्योपासन करते थे इस प्रकार जाते हुए उन को उत्तम शकुन हुए ॥ ५१ ॥ और इस प्रकार जाते हुए उनका मार्गव्यय चुक गया तब बड़े स्थान में प्राप्त वे सब थकगये और बड़े उदासीन होगये ॥ ५२ ॥ और कितनी पृथ्वी को नाँघकर पगभर चलने के लिये न समर्थ हुए तब मनसे निश्चय कर व अपने मन को दृढ़ करके ॥ ५३ ॥ कि हनुमानजी को न देखकर हम लोग घरको न जावेंगे और वे त्रैविद्य ब्राह्मण वहां गये जहां कि रामेश्वर हरि थे ॥ ५४ ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और दृढ़व्रत व सत्य में परायण तथा कन्द, मूल व फलों को खानेवाले वे राम राम व हनूमंत ऐसा ध्यान करते हुए ॥ ५५ ॥ वे नियम को ग्रहणकर और अन्न व जल को छोड़कर प्यास से विकल व क्षुधा से व्याकुल व्रतमें परायण वे गये ॥ ५६ ॥ इस प्रकार दुःखित ब्राह्मणों के भक्तिपात्र श्रीरामजी उचाट मन होकर हनुमान्जी से बोले ॥ ५७ ॥ कि हे पवनकुमार ! धर्म को जाननेवाले तुम ब्राह्मणों के लिये शीघ्रही जावो क्योंकि धर्मारण्य में बसनेवाले सब ब्राह्मण दुःखित होतेहैं ॥ ५८ ॥ और मेरा मन जलता है अन्यथा मेरी शांति न होगी व ब्राह्मणों को दुःख करनेवाला दण्ड देने योग्य है इसमें सन्देह नहीं है ॥ ५९ ॥ हे कपे ! जिससे ब्राह्मण दुःखित

दृढव्रताः सत्यपराः कन्दमूलफलाशनाः ॥ ध्यायन्तो रामरामेति हनूमन्तेति वै पुनः ॥ ५५ ॥ गृहीत्वा नियमं तेऽपि त्यक्त्वा चान्नं तथोदकम् ॥ तृषार्त्ताश्च क्षुधार्त्ताश्च ययुर्व्रतपरायणाः ॥ ५६ ॥ एवं तु क्लिश्यमानानां द्विजानां भक्तिभाजनः ॥ उद्विग्नमानसो रामो हनूमन्तमथाब्रवीत् ॥ ५७ ॥ शीघ्रं गच्छ द्विजार्थे त्वं पवनात्मज धर्मवित् ॥ क्लिश्यन्ते वाडवाः सर्वे धर्मारण्यनिवासिनः ॥ ५८ ॥ दह्यते मानसं मेऽद्य नान्यथा शान्तिरस्ति मे ॥ विप्राणां दुःखकर्त्ता च शास्तव्यो नात्र संशयः ॥ ५९ ॥ येन वै दुःखिता विप्रास्तेनाहं दुःखितः कपे ॥ याहि शीघ्रं हि मां त्यक्त्वा विप्राणां परिपालने ॥ ६० ॥ रामस्य वचनं श्रुत्वा नमस्कृत्य च राघवम् ॥ कृपया परयाविष्टः प्रादुरासीद्धरीश्वरः ॥ ६१ ॥ वृद्धब्राह्मणरूपेण परीक्षार्थं द्विजन्मनाम् ॥ उवाच परया भक्त्या ब्राह्मणाञ्छ्रमदुर्बलान् ॥ ६२ ॥ कृताञ्जलिपुटो भूत्वा करान्मुक्त्वा कमण्डलुम् ॥ सर्वान्प्रत्यभिवाद्याथ वचनं चेदमब्रवीत् ॥ ६३ ॥ कुतः स्थानादिह प्राप्ता गन्तु

हैं उसी से मैं दुःखित हूं तुम मुझ को छोड़कर शीघ्रही ब्राह्मणों के पालन के लिये जाइये ॥ ६० ॥ श्रीरामजी का वचन सुनकर व श्रीरघुनाथजी को प्रणामकर बड़ी दया से संयुत कपीश्वर हनुमान्जी ब्राह्मणों की परीक्षा के लिये बूढ़े ब्राह्मण के रूप से प्रकटहुए और परिश्रम से दुर्बल ब्राह्मणों से बड़ी भक्ति से बोले ॥ ६१ । ६२ ॥ हाथ से कमंडलु को छोड़कर व हाथों को जोड़कर हनुमान्जी सबों को प्रणामकर इसके उपरान्त यह वचन बोले ॥ ६३ ॥ कि आप लोग किस स्थान से यहां प्राप्त

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुए हो और कहां को जाने की इच्छा करतेहो व किस लिये आप लोग भयंकर वन में जातेहो ॥ ६४ ॥ ब्राह्मण बोले कि हम लोग ब्राह्मण अपना दुःख कहने के लिये धर्मारण्य से आये हैं और हमलोग श्रीरामजी के दर्शन के लिये सब कामनाओं को देनेवाले सेतुबंध महातीर्थ को जानेकी इच्छा करते हैं और नियममें स्थित व दुर्बल शरीरवाले हमलोग श्रीरामजी को देखने के लिये उत्कंठित हैं ॥ ६५ । ६६ ॥ जहां कि रामेश्वरदेव व साक्षात् पवनकुमार वानर (हनुमान्जी) हैं उसको सुनकर उस ब्राह्मण ने कहा कि श्रीरामजी कहां हैं व हनुमान्जी कहां हैं ॥ ६७ ॥ व हे ब्राह्मणो ! दूर से भी अधिक दूर सेतुबंध रामेशजी कहां हैं और व्याघ्रों व सिंहों

कामाश्च वै कुतः ॥ किमर्थं वै भवद्भिश्च गम्यते दारुणं वनम् ॥ ६४ ॥ विप्रा ऊचुः ॥ धर्मारण्यात्समायाता निजदुःखं निवेदितुम् ॥ रामस्य दर्शनार्थं हि गन्तुकामा वयं द्विजाः ॥ ६५ ॥ सेतुबन्धं महातीर्थं सर्वकामप्रदायकम् ॥ नियमस्थाः क्षीणदेहा रामं द्रष्टुं समुत्सुकाः ॥ ६६ ॥ यत्र रामेश्वरो देवः साक्षाद्वायुसुतः कपिः ॥ तच्छ्रुत्वा स द्विजः प्राह क रामः क च वायुजः ॥ ६७ ॥ क सेतुबन्धरामेशो दूराद्दूरतरो द्विजाः ॥ व्याघ्रसिंहाकुलं चोग्रं वनं घोरतरं महत् ॥ ६८ ॥ गत्वा यस्मान्न वर्तन्ते तदुग्रमनुजीविनः ॥ निवर्तध्वं महाभागा यदि कार्यं हि मद्वचः ॥ ६९ ॥ अथवा गम्यतां विप्राश्चिरं जीव सुखी भव ॥ वृद्धस्य वाक्यं तच्छ्रुत्वा वाडवाश्चैकमानसाः ॥ ७० ॥ विप्र गच्छामहे सर्वे रामपार्श्वमसंशयः ॥ म्रियेत यदि मार्गेऽस्मिन् रामलोकमवाप्नुयात् ॥ ७१ ॥ जीवन्मुक्तिमवाप्नोति रामादेव न संशयः ॥ अन्यथा शरणं नास्ति अस्माकं राघवं विना ॥ ७२ ॥ इत्युक्त्वा निर्गताः सर्वे रामदर्शनतत्पराः ॥ दिनान्तमतिवाह्याथ प्रभाते

से संयुत उग्र वन बड़ा भारी व बहुत भयंकर है ॥ ६८ ॥ व जिस में जाकर जीविकावाले प्राणी नहीं वर्तमान होते हैं वह उग्र वन है हे महाभागो ! यदि मेरा वचन करनाहै तो लौटिये ॥ ६९ ॥ अथवा हे ब्राह्मणो ! जाइये और बहुत दिनोंतक जियो व सुखी होवो वृद्धके उस वचनको सुनकर सावधान मनवाले ब्राह्मणोंने कहा ॥ ७० ॥ कि हे विप्रजी ! हम सब श्रीरामजी के समीप जावेंगे इसमें सन्देह नहीं है यदि इस मार्ग में कोई मरजाता है तो वह श्रीरामजी के लोकको पाता है ॥ ७१ ॥ और जीता हुआ वह श्रीरामहीसे जीविका को प्राप्त होता है इसमें सन्देह नहीं है अन्यथा हमलोगों की श्रीरामजी के विना शरण नहीं है ॥ ७२ ॥ यह कहकर श्रीरामजी के

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दर्शन में तत्पर सब लोग चले और दिनके अन्त को व्यतीत कर फिर निर्मल प्रातःकाल होने पर ॥ ७३ ॥ पहले के गुणों से संयुत वे ब्राह्मणरूपी वृद्ध बुद्धिमान् हनुमान्जी ने कमंडलु को धारण कर प्रणाम किया ॥ ७४ ॥ व कहा कि किस स्थान से तुम सब ब्राह्मणलोग यहां प्राप्त हुए हो कहीं बड़ा लाभ है या बड़ा भारी उत्सव है ॥ ७५ ॥ उसके इस वचन को सुनकर ब्राह्मणलोग विस्मय को प्राप्त हुए और प्रणामपूर्वक उन्हों ने आदर समेत विनय कहा ॥ ७६ ॥ कि हे भूमिदेव ! बड़े आश्चर्यकारक हमलोगों के पहले के वृत्तान्त को सुनिये क्योंकि तुम दयालु देख पड़ते हो ॥ ७७ ॥ पहले सृष्टि के प्रारंभ में हमलोगों को विष्णु, शिव व ब्रह्माजी

विमले पुनः ॥ ७३ ॥ हनुमान्ब्रह्मरूपी स वृद्धः पूर्वगुणान्वितः ॥ कमण्डलुधरो धीमानभिवादनतत्परः ॥ ७४ ॥ कुत्र स्थानादिह प्राप्ताः सर्वे यूयं हि वाडवाः ॥ कुत्रास्ति वा महालाभो विवाहोत्सव एव वा ॥ ७५ ॥ इति तस्य वचः श्रुत्वा वाडवा विस्मयं गताः ॥ प्रणामपूर्वां विज्ञप्तिं कथयामासुरादृताः ॥ ७६ ॥ अस्माकं तु पुरा वृत्तं महदाश्चर्यकारकम् ॥ भूमिदेव शृणुष्व त्वं दयालुर्दृश्यसे यतः ॥ ७७ ॥ आदौ सृष्टिसमारम्भे स्थापिताः केशवेन च ॥ शिवेन ब्रह्मणा चैव त्रिमूर्तिस्थापिता वयम् ॥ ७८ ॥ श्रीरामेण ततः पश्चाज्जीर्णोद्धारेण स्थापिताः ॥ ग्रामाणां वेतनं दत्तं हरिराजेन चादरात् ॥७९॥ चतुश्चत्वारिंशदधिकचतुःशतमितात्मनाम् ॥ ग्रामास्त्रयोदशार्चार्थे सीतापुरसमन्विताः ॥८०॥ षट्त्रिंशच्च सहस्राणि वणिजो द्विजपालने ॥ गोभूजसंज्ञास्ते शूद्रास्तेभ्यः सपादलक्षकाः ॥ ८१ ॥ ते च जातास्त्रिधा तात गोभूजाडालजास्तथा ॥ माण्डलीयास्तथा चैते त्रिविधाश्च मनोरमाः ॥ ८२ ॥ वृत्त्यर्थं तेन दत्ता वै ह्यनर्घ्या

ने स्थापन किया है इससे हमलोग तीनों मूर्तियों से स्थापित हैं ॥ ७८ ॥ तदनन्तर पश्चात् श्रीरामजी ने जीर्णोद्धार से स्थापित किया है और हनुमान्जी ने आदर से ग्रामों को वेतन (नौकरी) दिया है ॥ ७९ ॥ और पूजन के लिये सीतापुर समेत चार सौ चवालीस व तेरह ग्रामों को दिया ॥ ८० ॥ और ब्राह्मणों के पालन में छत्तीस हज़ार वैश्य दिये गये और उनके लिये सवालाख गोभुजसंज्ञक वे शूद्र दिये गये ॥ ८१ ॥ हे तात ! वे तीन प्रकार के हुए याने गोभुज, अडालज, मांडलीय ये तीनों प्रकार के मनोहर हैं ॥ ८२ ॥ और जीविका के लिये उन्हों ने अमूल्य करोड़ों रत्नों को दिया है तब वे मोढ, गोभूज, मांडलीय और अडालज संज्ञक

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुए ॥ ८३ ॥ हे द्विजश्रेष्ठ ! इस समय दुर्बुद्धि आम नामक राजा श्रीरामचन्द्रजी की आज्ञा को नहीं मानताहै ॥ ८४ ॥ व उसका दामाद कुमारपालक नामक सदैव पाखंडों से व्याप्त व कलियुग के धर्म से संमत है ॥ ८५ ॥ और बौद्धधर्मवाले इन्द्रसूत्र जैनी ने उसकी प्रेरणा किया व उसने श्रीरामजी के दिये हुए शासन को लुप्त किया है इसमें सन्देह नहीं है ॥ ८६ ॥ और कितेक वैसेही वणिज्लोग उसी मनवाले होगये वे श्रीराम व बड़े बुद्धिमान् हनुमान्जी को मना करते हैं ॥ ८७ ॥ कि हे ब्राह्मणो ! विना विश्वास के मैं निश्चयकर न दूंगा उसको जानकर ये ब्राह्मण श्रीरामजी की शरण में आये ॥ ८८ ॥ व श्रीरामजी की आज्ञा को पालन करनेवाले

रत्नकोटयः ॥ तदा ते मोढ १८००० गोभूजा १८००० माण्डलीया १२५००० अडालजाः १८००० ॥ ८३ ॥ अधुना वाडवश्रेष्ठ आमोनाम महीपतिः ॥ शासनं रामचन्द्रस्य न मानयति दुर्मतिः ॥ ८४ ॥ जामाता तस्य दुष्टो वै नाम्ना कुमारपालकः ॥ पाखण्डैर्वेष्टितो नित्यं कलिधर्मेणसंमतः ॥ ८५ ॥ इन्द्रसूत्रेण जैनेन प्रेरितो बौद्धधर्मिणा ॥ शासनं तेन लुप्तं हि रामदत्तं न संशयः ॥ ८६ ॥ वणिजस्तादृशाः केऽपि तन्मनस्का बभूविरे ॥ निषेधयन्ति रामं ते हनुमन्तं महामतिम् ॥ ८७ ॥ प्रत्ययं तु विना विप्रा न दास्यामीति निश्चितम् ॥ तं ज्ञात्वा तु इमे विप्रा रामं शरणमाययुः ॥ ८८ ॥ हनुमन्तं महावीरं रामशासनपालकम् ॥ तस्माद्गच्छामहे सर्वे रामं प्रति महामते ॥ ८९ ॥ आञ्जनेयो यदस्माकं न दास्यति समीहितम् ॥ अनाहारव्रतेनैव प्राणांस्त्यक्ष्यामहे वयम् ॥ ९० ॥ अस्माभिस्ते विशेषेण कथितं परिपृच्छितम् ॥ स्नेहभावं विचिन्त्याशु निजवृत्तिं प्रकाशय ॥ ९१ ॥ हनुमानुवाच ॥ प्राप्ते कलियुगे

महावीर हनुमान्जी की शरण में आये उसी कारण हे महामते ! हम सब श्रीरामजी के समीप जाते हैं ॥ ८९ ॥ और यदि हनुमान्जी हमलोगों को मनोरथ न देवैंगे तो हम सब निराहार व्रत से प्राणों को छोड़देवैंगे ॥ ९० ॥ हमलोगों ने तुम से विशेष कर पूंछे हुए वृत्तान्त को कहा तुम स्नेह के भाव को विचारकर शीघ्रही अपनी वृत्ति को प्रकाशित करो ॥ ९१ ॥ हनुमान्जी बोले कि हे ब्राह्मणो ! कलियुग प्राप्त होने पर कहां देवदर्शन होगा हे द्विजेन्द्रो ! यदि बहुत सुख चाहते हो तो

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

लौट जाइये ॥ ६२ ॥ क्योंकि व्याघ्रों व सिंहों से पूर्ण तथा वन के हाथियों से आश्रित व बहुत से वनाग्नियों से संयुत शून्य वन में प्रवेश नहीं किया जा सक्ता है ॥ ६३ ॥ ब्राह्मण बोले कि हे विप्र ! दिन बीतने पर आपने इस एक वृत्तान्त को कहा और तुम आजही आकर तुम ऐसा कहते हो ॥ ६४ ॥ विप्र के रूप से तुम कौन हो श्रीराम हो व हनुमान्जी हो हे महाद्विज ! दया करके हमलोगों से सत्य कहिये ॥ ६५ ॥ हनुमान्जी ने जो गुप्त था उसको ब्राह्मणों के आगे कहा कि हे ब्राह्मणो ! मैं हनुमान्जी हूं ऐसा निश्चयकर तुमलोग मुझ को जानो ॥ ६६ ॥ और स्वरूप को प्रकटकर बड़े भारी लांगूल (पुच्छ) को दिखाते हुए ॥ ६७ ॥ हनुमान्जी बोले

विप्राः क्व देवदर्शनं भवेत् ॥ निवर्त्तध्वं हि विप्रेन्द्रा यदीच्छथ सुखं महत् ॥ ६२ ॥ व्याघ्रसिंहाकुले शून्ये वने वनगजाश्रिते ॥ बहुदावसमाविष्टे प्रवेष्टुं नैव शक्यते ॥ ६३ ॥ विप्रा ऊचुः ॥ अतीते दिवसे विप्र एकं कथितवानिदम् ॥ अद्यैव त्वं समागम्य एवमेव प्रभाषसे ॥ ६४ ॥ कस्त्वं वाडवरूपेण रामो वाप्यथ वायुजः ॥ सत्यं कथय न स्वास्मिन्दयां कृत्वा महाद्विज ॥ ६५ ॥ हनुमान्कथयामास गोपितं यद्द्विजाग्रतः ॥ हनुमानित्यहं विप्रा बुध्यध्वं निश्चिता हि माम् ॥ ६६ ॥ स्वरूपं प्रकटीकृत्य लाङ्गूलं दर्शयन्महत् ॥ ६७ ॥ हनुमानुवाच ॥ अयमम्भोनिधिः साक्षात्सेतुबन्धो मनोरमः ॥ अयं रामेश्वरो देवो गर्भवासविनाशकृत् ॥ ६८ ॥ इयं तु नगरी श्रेष्ठा लङ्कानामेति विश्रुता ॥ यत्र सीता मया प्राप्ता रामशोकापहारिणी ॥ ६९ ॥ तर्जन्यग्रे द्विजश्रेष्ठा अगम्या मां विना परैः ॥ सा सुवर्णमयी भाति यस्यां राज्ये विभीषणः ॥ २०० ॥ स्थापितो रामदेवेन सेयं लङ्का महापुरी ॥ नियमस्थैः साधुवृन्दैस्तीर्थयात्राप्रसङ्गतः ॥ १ ॥ आनीय

कि यह साक्षात् समुद्र है व सुन्दर सेतुबंध है और गर्भवास को विनाशनेवाले ये रामेश्वर देवजी हैं ॥ ६८ ॥ और लंका नाम ऐसी प्रसिद्ध यह उत्तम नगरी है जहां कि श्रीरामजी के शोक को हरनेवाली सीताजी को मैंने पाया था ॥ ६९ ॥ हे द्विजोत्तमो ! तर्जनी अंगुली के आगे यह पुरी मुझ को छोड़कर अन्यलोगों से जाने योग्य नहीं है और वह लंकापुरी सुवर्णमयी शोभित है व जिसमें राज्य पै विभीषणजी को ॥ २०० ॥ श्रीराम देवजी ने स्थापित किया है वही यह लंका महापुरी है और नियम में स्थित साधुगणों से तीर्थयात्रा के प्रसंग से ॥ १ ॥ श्रीगंगाजी का जल मंगाकर रामेश्वरजी को अभिषेक करके ये बड़े भाग्यवान् समुद्र के मध्य में डाले

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुए देख पड़ते हैं ॥ २ ॥ उस से वे दृढ नियमोंवाले साधुलोग पापरहित होगये पुण्य के उदय में निश्चय कर वृद्धि होती है व पाप में न्यूनता होती है ॥ ३ ॥ पहले चातुर्विद्य ब्राह्मणलोग स्थान से भ्रष्ट किये गये फिर श्रीरामजी से जीर्णोद्धार से स्थापित किये गये हे ब्राह्मणो ! पूर्व जन्म में मैंने विष्णुजी का पूजन किया है ॥ ४ ॥ व इस समय आपलोगों के निश्चल भक्ति देखपड़ती है उस पुण्य के प्रभाव से प्रसन्न होकर मैं तुमलोगों को वर दूंगा ॥ ५ ॥ और पृथ्वी में मैं धन्य हूं व कृतार्थ हूं और उत्तम भाग्यवान् हूं व आज मेरा जन्म सफल होगया व जीवन भलीभांति जीवित हुआ ॥ ६ ॥ जो कि मैंने ब्राह्मणों के चरणों के समीप को

गङ्गासलिलं रामेशमभिषिच्य च ॥ क्षिप्ता एते महाभागा दृश्यन्ते सागरान्तरे ॥ २ ॥ निष्पापास्तेन संजाताः साधवस्ते दृढव्रताः ॥ नूनं पुण्योदये वृद्धिः पापे हानिश्च जायते ॥ ३ ॥ स्थानभ्रष्टाः कृताः पूर्वं चातुर्विद्या द्विजातयः ॥ जीर्णोद्धारेण रामेण स्थापिताः पुनरेव हि ॥ पूर्वजन्मनि भो विप्रा हरिपूजा कृता मया ॥ ४ ॥ साम्प्रतं निश्चला भक्तिर्भवत्स्वेव हि दृश्यते ॥ तेन पुण्यप्रभावेण तुष्टो दास्यामि वो वरम् ॥ ५ ॥ धन्योहं कृतकृत्योहं सुभाग्योहं धरातले ॥ अद्य मे सफलं जन्म जीवितं च सुजीवितम् ॥ ६ ॥ यदहं ब्राह्मणानां च प्राप्तवांश्चरणान्तिकम् ॥ ७ ॥ व्यास उवाच ॥ दृष्ट्वैव हनुमन्तं ते पुलकाङ्कितविग्रहाः ॥ सगद्गदमथोचुस्ते वाक्यं वाक्यविशारदाः ॥ २०८ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणेधर्मारण्यमाहात्म्येहनुमत्समागमोनामषट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥ * ॥ * ॥

व्यास उवाच ॥ ततस्ते ब्राह्मणाः सर्वे प्रत्यूचुः पवनात्मजम् ॥ अधुना सफलं जन्म जीवितं च सुजीवितम् ॥ १ ॥ अद्य नो

पाया ॥ ७ ॥ व्यासजी बोले कि इस प्रकार हनुमान्जी को देखकर रोमांचित शरीरवाले उन वाक्य में चतुर ब्राह्मणों ने गद्गद समेत वचन को कहा ॥ २०८ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणेधर्मारण्यमाहात्म्येदेवीदयालुमिश्रविरचितायांभाषाटीकायांहनुमत्समागमोनामषट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दो० । धर्मारण्य क्षेत्र को पुनि आये जिमि विप्र । सैंतिसवें अध्याय में सोई सुभग चरित्र ॥ व्यासजी बोले कि तदनन्तर उन सब ब्राह्मणों ने हनुमान्जी से कहा कि इस समय हम सबों का जन्म सफल होगया व जीवित सुजीवित हुआ ॥ १ ॥ और आज हम सब मोढलोगों का धर्म व घर धन्य हैं और सब पृथ्वी धन्य है

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जहां कि अनेक प्रकार के धर्म हैं ॥ २ ॥ श्रीरामजी के भक्त और अक्षकुमार को नाशनेवाले के लिये प्रणाम है और राक्षसों की पुरी को जलानेवाले तथा वज्र को धारनेवाले के लिये प्रणाम है ॥ ३ ॥ और जानकीजी के हृदय की रक्षा करनेवाले दयात्मक के लिये तथा सीताजी के विरह से संतप्त श्रीरामजी के प्यारे हनुमान्जी के लिये प्रणाम है ॥ ४ ॥ हे महावीर ! तुम्हारे लिये प्रणाम है पृथ्वी में डूबते हुए हमलोगों की रक्षा कीजिये व ब्राह्मण देवजी के लिये प्रणाम है और पवन के पुत्र आप के लिये प्रणाम है ॥ ५ ॥ व श्रीरामजी के भक्त तथा गऊ व ब्राह्मणों का हित करनेवाले के लिये प्रणाम है और रुद्ररूपी व कृष्णमुखवाले आप के लिये प्रणाम

मोदलोकानां धन्यो धर्मश्च वै गृहाः ॥ धन्या च सकला पृथ्वी यत्र धर्मा ह्यनेकशः ॥ २ ॥ नमः श्रीरामभक्ताय अक्षविध्वंसनाय च ॥ नमो रक्षःपुरीदाहकारिणे वज्रधारिणे ॥ ३ ॥ जानकीहृदयत्राणकारिणे करुणात्मने ॥ सीताविरहतप्तस्य श्रीरामस्य प्रियाय च ॥ ४ ॥ नमोऽस्तु ते महावीर रक्षास्मान्मज्जतः क्षितौ ॥ नमो ब्राह्मणदेवाय वायुपुत्राय ते नमः ॥ ५ ॥ नमोऽस्तु रामभक्ताय गोब्राह्मणहिताय च ॥ नमोस्तु रुद्ररूपाय कृष्णवक्त्राय ते नमः ॥ ६ ॥ अञ्जनीसूनवे नित्यं सर्वव्याधिहराय च ॥ नागयज्ञोपवीताय प्रबलाय नमोऽस्तु ते ॥ ७ ॥ स्वयं समुद्रतीर्णाय सेतुबन्धनकारिणे ॥ ८ ॥ व्यास उवाच ॥ स्तोत्रेणैवामुना तुष्टो वायुपुत्रोऽब्रवीद्वचः ॥ वृणुध्वं हि वरं विप्रा यद्वोमनसि रोचते ॥ ९ ॥ विप्रा ऊचुः ॥ यदि तुष्टोऽसि देवेश रामाज्ञापालक प्रभो ॥ स्वरूपं दर्शयस्वाद्य लङ्कायां यत्कृतं हरे ॥ १० ॥ तथा विध्वंसयाद्य त्वं राजानं पापकारिणम् ॥ दुष्टं कुमारपालं हि आमं चैव न सं

है ॥ ६ ॥ व अंजनीकुमार के लिये तथा सदैव सब रोगों को हरनेवाले के लिये प्रणाम है व सर्पों का जनेऊ पहने और प्रबल आप के लिये प्रणाम है ॥ ७ ॥ और आपही समुद्र को नाँघनेवाले व सेतु को बाँधनेवाले के लिये प्रणाम है ॥ ८ ॥ व्यासजी बोले कि इस स्तोत्र से प्रसन्न पवनकुमार ने यह वचन कहा कि हे ब्राह्मणो ! तुमलोगों के मन में जो रुचता हो उस वर को मांगिये ॥ ९ ॥ ब्राह्मणलोग बोले कि हे श्रीरामजी की आज्ञा को पालन करनेवाले, देवेश, प्रभो, हरे ! यदि तुम प्रसन्न हो तो तुमने लंका में बिध्वंस करने के लिये जिस रूप को दिखाया था उसको वैसेही आज तुम पापकारी व दुष्ट कुमारपाल और आम राजा को निस्सन्देह दिखलाइये

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व उसको इस समय नाश कीजिये ॥ १० । ११ ॥ और जिस प्रकार वह जीविका के लोप के फल को इसी क्षण पावै तुम वैसाही करो व हे महाबाहो ! विश्वास के लिये हमलोगों को कुछ चिह्न दीजिये ॥ १२ ॥ कि जिस चिह्न के देने से वह राजा पुण्यभागी होवै और विश्वास दिखलाने पर वह शासन को पालैगा ॥ १३ ॥ और वेदत्रयी का धर्म विस्तार को प्राप्त करावैगा हे धर्मधीर, महावीर ! हमलोगों को स्वरूप को दिखलाइये ॥ १४ ॥ हनुमान्जी बोले कि हे ब्राह्मणो ! बड़े शरीरवाला व तेजपुंजमय मेरा दिव्यस्वरूप कलियुग में नेत्रों के सामने प्राप्त होने योग्य नहीं है आपलोग ऐसा जानिये ॥ १५ ॥ तथापि मैं बड़ी भक्ति व स्तोत्रादिकों से प्रसन्न

शयः ॥ ११ ॥ वृत्तिलोपफलं सद्यः प्राप्नुयात्त्वं तथा कुरु ॥ प्रतीत्यर्थं महाबाहो किञ्चिच्चिह्नं ददस्व नः ॥ १२ ॥ येन चिह्ने न दत्तेन स राजा पुण्यभाग्भवेत् ॥ प्रत्यये दर्शिते वीर शासनं पालयिष्यति ॥ १३ ॥ त्रयीधर्म्मः पृथिव्यां तु विस्तारं प्रापयिष्यति ॥ धर्मधीर महावीर स्वरूपं दर्शयस्व नः ॥ १४ ॥ हनुमानुवाच ॥ मत्स्वरूपं महाकायं न चक्षुर्विषयं कलौ ॥ तेजोराशिमयं दिव्यमिति जानन्तु वाडवाः ॥ १५ ॥ तथापि परया भक्त्या प्रसन्नोऽहं स्तवादिभिः ॥ वसनान्तरितं रूपं दर्शयिष्यामि पश्यत ॥ १६ ॥ एवमुक्तास्तदा विप्राः सर्वकार्यसमुत्सुकाः ॥ महारूपं महाकायं महापुच्छसमाकुलम् ॥ १७ ॥ दृष्ट्वा दिव्यस्वरूपं तं हनुमन्तं जहर्षिरे ॥ कथंचिद्धैर्यमालम्ब्य विप्राः प्रोचुः शनैः शनैः ॥ १८ ॥ यथोक्तं तु पुराणेषु तत्तथैव हि दृश्यते ॥ उवाच स हि तान्सर्वांश्चक्षुः प्रच्छाद्य संस्थितान् ॥ १९ ॥ फलानीमानि गृह्णीध्वं भक्षणार्थमृषीश्वराः ॥ एभिस्तु भक्षितैर्विप्रा ह्यतितृप्तिर्भविष्यति ॥ २० ॥ धर्मारण्यं विना चाद्य क्षुधा वः शाम्यति ध्रुवम् ॥ २१ ॥

हूं इस से वस्त्र से आच्छादितरूप को दिखलाता हूं देखिये ॥ १६ ॥ तब ऐसा कहे हुए सब कार्यों में उत्कंठित ब्राह्मण बड़ी भारी पूंछ से संयुत और बड़े शरीरवाले महारूप ॥ १७ ॥ व दिव्य स्वरूपवाले उन हनुमान्जी को देखकर प्रसन्नहुए और किसी प्रकार धीरज धरकर ब्राह्मणलोग धीरे धीरे बोले ॥ १८ ॥ कि पुराणों में जैसा कहा है वह वैसाही देख पड़ता है उन हनुमान्जी ने नेत्रों को मूंदकर स्थित उन सब ब्राह्मणों से कहा ॥ १९ ॥ कि हे ऋषीश्वरो ! खाने के लिये इन फलों को लीजिये हे ब्राह्मणो ! इन के खाने से बड़ी तृप्ति होगी ॥ २० ॥ और बिन धर्मारण्य के आज तुमलोगों की क्षुधा निश्चयकर शांत होजावैगी ॥ २१ ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व्यासजी बोले कि उस समय क्षुधा से संयुत ब्राह्मणोंने फलों का भक्षण किया और अमृत भोजनके समान उनकी तृप्ति हुई ॥ २२ ॥ हे राजन् ! न प्यास और न क्षुधा रही बरन यकायक वे ब्राह्मण प्रसन्न मन व विस्मय से संयुत चित्तवाले हुए ॥ २३ ॥ तदनन्तर हनुमान्जी बोले कि हे ब्राह्मणो ! कलियुग प्राप्त होने पर मैं रामेश्वर शिवजी को छोड़कर वहां न आऊंगा ॥ २४ ॥ मुझ से दिये हुए चिह्न को लेकर तुम वहां जावो तो उस राजा को यह सत्य प्रतीत होगा इसमें सन्देह नहीं है ॥ २५ ॥ यह कहकर भुजा को उठाकर दोनों भुजाओं के अलग अलग रोमों को लेकर दो पोटली किया ॥ २६ ॥ और भूर्जपत्र से लपेटकर उन दोनों को ब्राह्मण की बगल

व्यास उवाच ॥ क्षुधाक्रान्तैस्तदा विप्रैः कृतं वै फलभक्षणम् ॥ अमृतप्राशनमिव तृप्तिस्तेषामजायत ॥ २२ ॥
न तृषा नैव क्षुच्चैव विप्राः संहृष्टमानसाः ॥ अभवन्सहसा राजन्विस्मयाविष्टचेतसः ॥ २३ ॥ ततः प्राहाञ्जनीपुत्रः
सम्प्राप्ते हि कलौ द्विजाः ॥ नागमिष्याम्यहं तत्र मुक्त्वा रामेश्वरं शिवम् ॥ २४ ॥ अभिज्ञानं मया दत्तं गृही
त्वा तत्र गच्छत ॥ तथ्यमेतत्प्रतीयेत तस्य राज्ञो न संशयः ॥ २५ ॥ इत्युक्त्वा बाहुमुद्धृत्य भुजयोरुभयोरपि ॥
पृथग्रोमाणि संगृह्य चकार पुटिकाद्वयम् ॥ २६ ॥ भूर्जपत्रेण संवेष्ट्य ते अदाद्विप्रकक्षयोः ॥ वामे तु वामकक्षोत्थां
दक्षिणोत्थां तु दक्षिणे ॥ २७ ॥ कामदां रामभक्तस्य अन्येषां क्षयकारिणीम् ॥ उवाच च यदा राजा ब्रूते चिह्नं प्रदीय
ताम् ॥ २८ ॥ तदा प्रदीयतां शीघ्रं वामकक्षोद्भवा पुटी ॥ अथवा तस्य राज्ञस्तु द्वारे तु पुटिकां क्षिप ॥ २९ ॥ ज्वालय
ति च तत्सैन्यं गृहं कोशं तथैव च ॥ महिष्यः पुत्रकाः सर्वं ज्वलमानं भविष्यति ॥ ३० ॥ यदा तु वृत्तिं ग्रामांश्च वणि

में देदिया याने बायें बगल से रचित पोटली को बाईं बगल में व दाहिने बगल से उत्पन्न पोटली को दाहिनी बगल में दिया ॥ २७ ॥ जो कि श्रीरामजी के भक्त को मनोरथ को देनेवाली व अन्यलोगों का नाश करनेवाली थी और यह कहा कि जब राजा कहै कि चिह्न को दीजिये ॥ २८ ॥ तब शीघ्रही बायें बगल में उपजी हुई पोटली को दीजियेगा अथवा उस राजा के द्वार पै पोटली को फेंक दीजियेगा ॥ २९ ॥ तो वह उसकी सेना, घर व कोश (ख़ज़ाना) को जलावैगी और स्त्रियां व पुत्र सब जल जावैगा ॥ ३० ॥ हे ब्राह्मणो ! जब जीविका, ग्राम व वणिजों की बलि और जो कुछ पहले स्थित था उस उस वस्तु को

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देवैगा ॥ ३१ ॥ याने लिखकर व निश्चयकर वह राजा जब पहले की नाईं देदेवै और हाथों को जोड़कर प्रणाम करै ॥ ३२ ॥ हे द्विजोत्तमो ! तब श्रीरामजी से पहले दीहुई जीविका को पाकर तदनन्तर दाहिनी बगल में स्थित बालों की इस पोटली को ॥ ३३ ॥ फेंक दीजियेगा तब पहले की नाईं सेना होजावैगी और घर, ख़ज़ाना व पुत्र, पौत्रादिक ॥ ३४ ॥ अग्नि से छोड़े हुए वे उसी क्षण देख पड़ेंगे हनुमान्जी से कहे हुए अमृत के समान उत्तम वचन को सुनकर ॥ ३५ ॥ ब्राह्मणों ने हर्ष को पाया और नृत्य किया व बहुत गरजनेलगे और कोई जय कहनेलगे व परस्पर हँसनेलगे ॥ ३६ ॥ व सब शरीर में रोमांच संयुत वे बार २ स्तुति करनेलगे और कितेक

जां च बलिं तथा ॥ पूर्वं स्थितं तु यत्किञ्चित्तत्तद्दास्यति वाडवाः ॥ ३१ ॥ लिखित्वा निश्चयं कृत्वाप्यथ दद्यात्स पूर्व वत् ॥ करसम्पुटकं कृत्वा प्रणमेच्च यदा नृपः ॥ ३२ ॥ सम्प्राप्य च पुरावृत्तिं रामदत्तां द्विजोत्तमाः ॥ ततो दक्षिणकक्षा स्थकेशानां पुटिका त्वियम् ॥ ३३ ॥ प्रक्षिप्यतां तदा सैन्यं पुरावच्च भविष्यति ॥ गृहाणि च तथा कोशः पुत्रपौत्रादय स्तथा ॥ ३४ ॥ वह्निना मुच्यमानास्ते दृश्यन्ते तत्क्षणादिति ॥ श्रुत्वाऽमृतमयं वाक्यं वायुजेनोदितं परम् ॥ ३५ ॥ अलभन्त मुदं विप्रा ननृतुः प्रजगुर्भृशम् ॥ जयं चोदेरयन्केऽपि प्रहसन्ति परस्परम् ॥ ३६ ॥ पुलकाङ्कितसर्वाङ्गाः स्तुवन्ति च मुहुर्मुहुः ॥ पुच्छं तस्य च संगृह्य चुचुम्बुः केचिदुत्सुकाः ॥ ३७ ॥ ब्रूतेऽन्यो मम यत्नेन कार्यं नियतमेव हि ॥ अन्यो ब्रूते महाभाग मयेदं कृतमित्युत ॥ ३८ ॥ ततः प्रोवाच हनुमांस्त्रिरात्रं स्थीयतामिह ॥ रामतीर्थस्य च फलं यथा प्राप्स्यथ वाडवाः ॥ ३९ ॥ तथेत्युक्त्वाथ ते विप्रा ब्रह्मयज्ञं प्रचक्रिरे ॥ ब्रह्मघोषेण महता तद्वनं बधिरं कृतम् ॥ ४० ॥

हर्षित ब्राह्मणलोग उन हनुमान्जी की पूंछ को पकड़कर चूमनेलगे ॥ ३७ ॥ व अन्य कोई कहनेलगा कि मेरे उपाय से कार्य निश्चयकर होगया और कोई अन्य कहता था कि हे महाभाग ! मैंने इसको किया है ॥ ३८ ॥ तदनन्तर हनुमान्जी ने कहा कि हे ब्राह्मणो ! आपलोग यहां तीन रात्रि तक टिकिये कि जिस प्रकार श्रीरामतीर्थ का फल पाइयेगा ॥ ३९ ॥ बहुत अच्छा यह कहकर उन ब्राह्मणों ने ब्रह्मयज्ञ किया और बड़ी भारी वेदध्वनि से वह वन बहरा करदिया गया ॥ ४० ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तीन रात्रि तक टिककर जाने की बुद्धि करके उन ब्राह्मणों ने रात्रि में हनुमान्‌जी के आगे उत्तम भक्ति से यह कहा ॥ ४१ ॥ ब्राह्मण बोले कि हे तात ! हमलोग प्रातःकाल बहुतही निर्मल धर्मारण्य को जावेंगे और हमको भूलना न चाहिये व क्षमा कीजिये क्षमा कीजियेगा ॥ ४२ ॥ तदनन्तर हे राजन् ! पवनकुमार ने पर्वत से दश योजन चौड़ी और चार शालाओंवाली बड़ी भारी शिलाको ॥ ४३ ॥ बिछाकर उन ब्राह्मणों से कहा कि हे द्विजोत्तमो, द्विजो ! मुझसे रक्षा किये हुए तुमलोग शोक रहित होकर शिला पै शयन करो ॥ ४४ ॥ यह सुनकर तदनन्तर सब ब्राह्मण सुखदायिनी निद्रा को प्राप्त हुए इस प्रकार वे कृतार्थ होकर संध्यासमय में सो गये ॥ ४५ ॥

स्थित्वा त्रिरात्रं ते विप्रा गमने कृतबुद्धयः ॥ रात्रौ हनुमतोऽग्रे त इदमूचुः सुभक्तितः ॥ ४१ ॥ ब्राह्मणा ऊचुः ॥ वयं प्रातर्गमिष्यामो धर्मारण्यं सुनिर्मलम् ॥ न विस्मार्या वयं तात क्षम्यतां क्षम्यतामिति ॥ ४२ ॥ ततो वायुसुतो राजन्पर्वतान्महतीं शिलाम् ॥ बृहतीं च चतुःशालां दशयोजनमायतीम् ॥ ४३ ॥ आस्तीर्य प्राह तान्विप्राञ्छिलायां द्विजसत्तमाः ॥ रक्ष्यमाणा मया विप्राः शयीध्वं विगतज्वराः ॥ ४४ ॥ इति श्रुत्वा ततः सर्वे निद्रामापुः सुखप्रदाम् ॥ एवं ते कृतकृत्यास्तु भूत्वा सुप्ता निशामुखे ॥ ४५ ॥ कृपालुः स च रुद्रात्मा रामशासनपालकः ॥ रक्षणार्थं हि विप्राणामतिष्ठच्च धरातले ॥ ४६ ॥ व्यास उवाच ॥ अर्द्धरात्रे तु सम्प्राप्ते सर्वे निद्रामुपागताः ॥ तातं सम्प्रार्थयामास कृतानुग्रहको भवान् ॥ ४७ ॥ समीरण द्विजानेतान्स्थानं स्वं प्रापयस्व भोः ॥ ततो निद्राभिभूतांस्तान्वायुः पुत्रप्रणोदितः ॥ ४८ ॥ समुद्धृत्य शिलां तां तु पिता पुत्रेण भारत ॥ निशीथे यापयामास स्वस्थानं द्विजसत्त

और श्रीरामजी का शासन पालन करनेवाले वे रुद्रात्मक दयालु हनुमान्‌जी ब्राह्मणों की रक्षा के लिये पृथ्वी में स्थित हुए ॥ ४६ ॥ व्यासजी बोले कि आधी रात प्राप्त होने पर जब सब निद्रा को प्राप्त हुए तब हनुमान्‌जी ने पिता (पवन) जी से प्रार्थना किया कि आप दया करनेवाले हो ॥ ४७ ॥ हे पवन ! इन ब्राह्मणों को अपने स्थान में प्राप्त कीजिये तदनन्तर हे भारत ! पुत्र से प्रेरित पवन पिता ने शिला को उठाकर निद्रा से तिरस्कृत उन द्विजोत्तमों ब्राह्मणों को आधी रात में अपने स्थान

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

को प्राप्त किया ॥ ४८ । ४६ ॥ जिस मार्ग को ब्राह्मणलोग छा महीने में नाँघे थे उसको द्विजोत्तमलोग तीन मुहूर्त में प्राप्त हुए ॥ ५० ॥ और घूमती हुई शिला को जानकर वात्स्यगोत्र में उत्पन्न एक ब्राह्मण ने ब्राह्मणों के आगे लोगों से मधुर व अप्रकट गान किया ॥ ५१ ॥ और गायक से गाये हुए गीतों को सुनकर ब्राह्मण लोग विस्मय को प्राप्त हुए और प्रातःकाल होने पर वे उठपड़े और आपस में ॥ ५२ ॥ विस्मय को प्राप्त उन सब ब्राह्मणों ने कहा कि यह स्वप्न है व भ्रम है और शीघ्रता समेत उन ब्राह्मणों ने उठकर सत्यमंदिर को देखा ॥ ५३ ॥ और भीतर की बुद्धि से हनुमान्जी के प्रभाव को देखकर व वेदध्वनि को सुनकर ब्राह्मणलोग बड़े हर्ष

मान् ॥४९॥ षड्भिर्मासैश्च यः पन्था अतिक्रान्तो द्विजातिभिः ॥ त्रिभिरेव मुहूर्त्तैस्तु तं च प्रापुर्द्विजर्षभाः ॥५०॥ भ्रम माणां शिलां ज्ञात्वा विप्र एको द्विजाग्रतः ॥ वात्स्यगोत्रसमुत्पन्नो लोकान्सङ्गीतवान्कलम् ॥ ५१ ॥ गीतानि गाय नोक्तानि श्रुत्वा विस्मयमाययुः ॥ प्रभाते सुप्रसन्ने तु उदतिष्ठन्परस्परम् ॥ ५२ ॥ ऊचुस्ते विस्मिताः सर्वे स्वप्नोऽयं वाथ विभ्रमः ॥ ससम्भ्रमाः समुत्थाय ददृशुः सत्यमन्दिरम् ॥ ५३ ॥ अन्तर्बुद्ध्या समालोक्य प्रभावं वायुजस्य च ॥ श्रुत्वा वेदध्वनिं विप्राः परं हर्षमुपागताः ॥ ५४ ॥ ग्रामीणाश्च ततो लोका दृष्ट्वा तु महतीं शिलाम् ॥ अद्भुतं मेनिरे सर्वे किमिदं किमिदं त्विति ॥ ५५ ॥ गृहे गृहे हि ते लोकाः प्रवदन्ति तथाद्भुतम् ॥ ब्राह्मणैः पूर्यमाणा सा शिला च महती शुभा ॥ ५६ ॥ अशुभा वा शुभा वापि न जानीमो वयं किल ॥ संवदन्ते ततो लोकाः परस्परमिदं वचः ॥५७॥ व्यास उवाच ॥ ततो द्विजानां ते पुत्राः पौत्राश्चैव समागताः ॥ ऊचुश्च दिष्ट्या भो विप्रा आगताः पथिका द्विजाः ॥५८॥

को प्राप्त हुए ॥ ५४ ॥ तदनन्तर सब ग्रामीणलोगों ने बड़ी भारी शिला को देखकर अद्भुत माना कि यह क्या है यह क्या है ॥ ५५ ॥ और घर घर में वे लोग वैसे आश्चर्य को कहते थे कि ब्राह्मणों से पूर्ण वह बड़ी भारी शिला ॥ ५६ ॥ अशुभ है या शुभ है इसको हमलोग नहीं जानते हैं उसी कारण लोग परस्पर यह वचन कहते थे ॥ ५७ ॥ व्यासजी बोले कि तदनन्तर ब्राह्मणों के वे पुत्र व पौत्र आये व बोले कि हे ब्राह्मणो ! आपलोग पथिक ब्राह्मण आगये यह आनन्द है ॥ ५८ ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और वे ब्राह्मण प्रसन्न मन से हर्ष से प्रत्युत्थान व प्रणाम से गये और मिलकर ॥ ५९ ॥ व सूंघकर और यथायोग्य पूजकर विस्तार करके सब अपने आगमन को शीघ्रही कहा ॥ ६० ॥ तदनन्तर चन्दन, ताम्बूल व कुंकुम से उन सबों को पूजकर शांतिपाठ को पढ़ते हुए वे प्रसन्न होकर अपने घरों को गये ॥ ६१ ॥ और प्रातःकाल उठ कर उत्कंठा समेत व हर्ष से पूर्ण उन पथिकलोगों ने आनंदा के महास्थान में बड़े भारी स्थान को देखा ॥ ६२ ॥ और वे बड़े आश्चर्य को प्राप्त हुए कि यह कौन उत्तम स्थान है और यहां दक्षिण द्वार पै शांतिपाठ पढ़ा जाता है ॥ ६३ ॥ और इन्द्र के घर के समान सुन्दर घर देख पड़ते हैं व अग्नि के समान सुन्दर कुलमातृ-

ते तु सन्तुष्टमनसा सन्मुखाः प्रययुर्मुदा ॥ प्रत्युत्थानाभिवादाभ्यां परिरम्भणकं तथा ॥ ५९ ॥ आघ्राणकादींश्च कृत्वा यथायोग्यं प्रपूज्य च ॥ सर्वं विस्तार्य कथितं शीघ्रमागममात्मनः ॥ ६० ॥ ततः सम्पूज्य तान्सर्वान्गन्ध ताम्बूलकुङ्कुमैः ॥ शान्तिपाठं पठन्तस्ते हृष्टा निजगृहान्ययुः ॥ ६१ ॥ आनन्दाया महापीठे प्रातः पान्थाः समुत्थिताः ॥ ददृशुस्ते महास्थानं सोत्कण्ठा हर्षपूरिताः ॥ ६२ ॥ आश्चर्यं परमं प्रापुः किमेतत्स्थानमुत्तमम् ॥ अयं तु दक्षिणद्वारे शान्तिपाठोऽत्र पठ्यते ॥ ६३ ॥ गृहा रम्याः प्रदृश्यन्ते शचीपतिगृहोपमाः ॥ प्रासादाः कुलमातृ णां दृश्यन्ते चाग्निशोभनाः ॥ ६४ ॥ एवं ब्रुवत्सु विप्रेषु महाशक्तिप्रपूजने ॥ आगतो ब्राह्मणोऽपश्यत्तत्र विप्रक दम्बकम् ॥ ६५ ॥ हर्षितो धावितस्तत्र यत्र विप्राः सभासदः ॥ उवाच दिष्ट्या भो विप्रा ह्यागताः पथिका द्वि जाः ॥ ६६ ॥ प्रत्युत्तस्थुस्ततो विप्राः पूजां गृह्य समागताः ॥ प्रत्युत्थानाभिवादौ चाकुर्वस्ते च परस्परम् ॥ ६७ ॥ तेते

काओं के घर देख पड़ते हैं ॥ ६४ ॥ ब्राह्मणों के ऐसा कहने पर महाशक्ति के पूजन में वहां आये हुए ब्राह्मण ने ब्राह्मणों के समूह को देखा ॥ ६५ ॥ और वहां ब्राह्मण प्रसन्न होकर गया जहां कि ब्राह्मण थे व सभासद ब्राह्मण ने कहा कि हे ब्राह्मणो ! आनन्द है जो कि आपलोग पथिक ब्राह्मण आगये ॥ ६६ ॥ तदनन्तर आये हुए ब्राह्मण पूजन को लेकर उठे और उन्हों ने परस्पर प्रत्युत्थान व प्रणाम किया ॥ ६७ ॥ और उन्हों ने यथायोग्य विधिपूर्वक पूजकर जो हनुमान्जी का वृत्तान्त था उसको

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ब्राह्मण के आगे प्रकाशित किया ॥ ६८॥ पथिकों का वचन सुनकर द्विजोत्तमलोग हर्ष से पूर्ण हुए व शांतिपाठ को पढ़ते हुए वे प्रसन्न होकर अपने घरों को चले गये ॥ ६९ ॥ व प्रातःकाल प्रतिष्ठित ब्राह्मणलोग विचारकर ज्योतिषियों से मिले और ब्राह्मय मुहूर्त में उठकर ब्राह्मणलोग कान्यकुब्जदेश को गये ॥ ७० ॥ कितेक दोलाओं के ऊपर सवार हुए व कितेक ब्राह्मण घोड़ों व रथों के ऊपर सवार हुए और कितेक पालकियों के ऊपर सवार हुए और वे ब्राह्मण अनेक प्रकार की सवारियों पै प्राप्त हुए ॥ ७१ ॥ और उस नगर को जाकर श्रीगंगाजी के उत्तम किनारे बुद्धिमान् ब्राह्मणों ने निवास किया व स्नान और दानादिक कर्म किया ॥ ७२ ॥ और

सम्पूज्य वेगात्तु यथायोग्यं यथाविधि ॥ हरीश्वरस्य यद्वृत्तं विप्राग्रे सम्प्रकाशितम् ॥ ६८ ॥ पथिकानां वचः श्रुत्वा हर्षपूर्णा द्विजोत्तमाः ॥ शान्तिपाठं पठन्तस्ते हृष्टा निजगृहान्ययुः ॥ ६९ ॥ विमृश्य मिलिताः प्रातर्ज्योतिर्विद्भिः प्रतिष्ठिताः ॥ ब्राह्मे मुहूर्त्ते चोत्थाय कान्यकुब्जं गता द्विजाः ॥ ७० ॥ दोलाभिर्वाहिताः केचित्केचिदश्वै रथैस्तथा ॥ केचित्तु शिबिकारूढा नानावाहनगाश्च ते ॥ ७१ ॥ तत्पुरं तु समासाद्य गङ्गायाः शोभने तटे ॥ अकुर्वन्वसतिं धीराः स्नानदानादिकर्म्म च ॥ ७२ ॥ चरेण केनचिद्दृष्टाः कथिता नृपसन्निधौ ॥ अश्वाश्च बहुशो दोला रथाश्च बहुशो वृषाः ॥ ७३ ॥ विप्राणामिह दृश्यन्ते धर्मारण्यनिवासिनाम् ॥ नूनं ते च समायाता नृपेणोक्तं ममाग्रतः ॥ ७४ ॥ अभिज्ञानाय मे पूर्वं प्रेषिताः कपिसन्निधौ ॥ ७५ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणेधर्मारण्यमाहात्म्ये ब्राह्मणानांप्रत्यागमनवर्णनं नामसप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

किसी गुप्त दूत ने देखा व राजा के समीप कहा कि बहुत से घोड़ा, दोला, रथ और बहुत से बैल ॥ ७३ ॥ यहां धर्मारण्यनिवासी ब्राह्मणों के देख पड़ते हैं राजा ने कहा कि वे निश्चयकर मेरे आगे आवैंगे ॥ ७४ ॥ क्योंकि पहले मैंने उनको चिह्न के लिये हनुमान्जी के समीप पठाया था ॥ ७५ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणेधर्मारण्यमाहात्म्येदेवीदयालुमिश्रविरचितायांभाषाटीकायांब्राह्मणानांप्रत्यागमनवर्णनंनामसप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दो० । दियो वृत्ति जिमि द्विजन पुनि रामपाल भूपाल । अर्तिसवें अध्याय में सोइ चरित्र रसाल ॥ व्यासजी बोले कि तदनन्तर निर्मल प्रातःकाल होने पर दिन के पूर्वभाग का कार्य करके उत्तम वस्त्रों को पहने हुए उन ब्राह्मणों ने पृथक् २ फलों को हाथ में लिया ॥ १ ॥ और रत्न के बजुल्ला को भुजदंडों में पहने तथा अँगूठियों से भूषित और कर्णो के आभूषणों से संयुत वे ब्राह्मण प्रसन्न होकर आये ॥ २ ॥ और राजद्वार को प्राप्त होकर वे ब्रह्मवादी ब्राह्मण स्थित हुए व उनको देखकर बलवान् राजपुत्र ने कुछ हास्य किया ॥ ३ ॥ व कहा कि हे सब मंत्रियो ! सुनिये कि श्रीराम व हनुमान्जी के समीप जाकर व देखकर आये हैं उन द्विजोत्तमों को

व्यास उवाच ॥ ततः प्रभाते विमले कृतपूर्वाह्णिकक्रियाः ॥ शुभवस्त्रपरीधानाः फलहस्ताः पृथक्पृथक् ॥ १ ॥ रत्नाङ्गदाढ्यदोर्दण्डा अङ्गुलीयकभूषिताः ॥ कर्णाभरणसंयुक्ताः समाजग्मुः प्रहर्षिताः ॥ २ ॥ राजद्वारं तु सम्प्राप्य सन्तस्थुर्ब्रह्मवादिनः ॥ तान्दृष्ट्वा राजपुत्रस्तु ईषत्प्रहसितो बली ॥ ३ ॥ रामं च हनुमन्तं च गत्वा विप्राः समागताः ॥ श्रूयतां मन्त्रिणः सर्वे पश्यत द्विज सत्तमान् ॥ ४ ॥ एतदुक्त्वा तु वचनं तूष्णीं भूत्वा स्थितो नृपः ॥ ततो द्वित्रा द्विजाः सर्वे उपविष्टाः क्रमात्ततः ॥ ५ ॥ क्षेमं पप्रच्छुर्नृपतिं हस्तिरथपदातिषु ॥ ततः प्रोवाच नृपतिर्विप्रान्प्रति महामनाः ॥ ६ ॥ अर्हन्देवप्रसादेन सर्वत्र कुशलं मम ॥ सा जिह्वा या जिनं स्तौति तौ करौ यौ जिनार्चनौ ॥ ७ ॥ सा दृष्टिर्या जिने लीना तन्मनो यज्जिने रतम् ॥ दया सर्वत्र कर्तव्या जीवात्मा पूज्यते सदा ॥ ८ ॥ योगशाला हि गन्त

देखिये ॥ ४ ॥ यह वचन कहकर राजा चुप होकर स्थित हुआ तदनन्तर दो तीन व सब ब्राह्मण क्रम से बैठे ॥ ५ ॥ व उन्हों ने राजा से हाथी, रथ और पैदलों में कुशल पूंछा तदनन्तर उदार मनवाले राजा ने ब्राह्मणों से कहा ॥ ६ ॥ कि अर्हन्देव की प्रसन्नता से मेरे सब कहीं कुशल है और वह जिह्वा है कि जो जिन देवता की स्तुति करती है और वे हाथ हैं कि जो जिन देवता के पूजक हैं ॥ ७ ॥ और वह दृष्टि है जो कि जिन में लीन है व मन वही है जो कि जिन में अनुरागी है और सब में दया करना चाहिये व जीवात्मा सदैव पूजा जाता है ॥ ८ ॥ और योगशाला में जाना चाहिये व गुरु का प्रणाम करना चाहिये और नचकार मंत्र दिन

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

रात जपना चाहिये ॥ ९ ॥ व पंचूषण करना चाहिये और सदैव श्रमण देना चाहिये उसका वचन सुनकर तदनन्तर ब्राह्मणलोग दांतों को पीसनेलगे ॥ १० ॥ और बड़े श्वास को छोड़कर उन्हों ने राजा से कहा कि हे राजन् ! श्रीराम व हनुमान्जी ने कहा है ॥ ११ ॥ कि ब्राह्मणों की जीविका को देदीजिये क्योंकि पृथ्वी में तुम धर्मिष्ठ हो और तुम्हारी दीहुई जानी जाती है मुझ से नहीं दीगई है ॥ १२ ॥ श्रीरामजी के वचन की तुम रक्षा करो कि जिसको करके तुम सुखी होवो ॥ १३ ॥ राजा बोले कि हे ब्राह्मणो ! जहां श्रीराम व हनुमान्जी हैं वहां आप सब जावो श्रीरामजी सर्बस देवैंगे यहां तुमलोग क्यों प्राप्त हुए हो ॥ १४ ॥

व्या कर्त्तव्यं गुरुवन्दनम् ॥ नचकारं महामन्त्रं जपितव्यमहर्निशम् ॥ ९ ॥ पञ्चूषणं हि कर्त्तव्यं दातव्यं श्रमणं सदा ॥ श्रुत्वा वाक्यं ततो विप्रास्तस्य दन्तानपीडयन् ॥ १० ॥ विमुच्य दीर्घनिश्वासमूचुस्ते नृपतिं प्रति ॥ रामेण कथितं राजन्धीमता च हनूमता ॥ ११ ॥ दीयतां विप्रवृत्तिं च धर्मिष्ठोऽसि धरातले ॥ ज्ञायते तव दत्ता स्यान्मद्दत्ता नैव नैव च ॥ १२ ॥ रक्षस्व रामवाक्यं त्वं यत्कृत्वा त्वं सुखी भव ॥ १३ ॥ राजोवाच ॥ यत्र रामहनूमन्तौ यान्तु सर्वेऽपि तत्र वै ॥ रामो दास्यति सर्वस्वं किं प्राप्ता इह वै द्विजाः ॥ १४ ॥ न दास्यामि न दास्यामि एकां चैव वराटिकाम् ॥ न ग्रामं नैव वृत्तिं च गच्छध्वं यत्र रोचते ॥ १५ ॥ तच्छ्रुत्वा दारुणं वाक्यं द्विजाः कोपाकुलास्तदा ॥ सहस्व रामकोपं हि साम्प्रतश्च हनूमतः ॥ १६ ॥ इत्युक्त्वा हनुमद्दत्ता वामकक्षोद्भवा पुटी ॥ प्रक्षिप्ता चास्य निलये व्यावृत्ता द्विजसत्तमाः ॥ १७ ॥ गते तदा विप्रसङ्घे ज्वालामालाकुलं त्वभूत् ॥ अग्निज्वालाकुलं सर्वं सञ्जातं चैव तत्र

मैं एक कौड़ी को न दूंगा न दूंगा और ग्राम व जीविका को नहीं दूंगा जहां रुचि होवै वहां जाइये ॥ १५ ॥ उस कठिन वचन को सुनकर उस समय क्रोध से विकल ब्राह्मणों ने कहा कि इस समय श्रीराम व हनुमान्जी के कोप को सहिये ॥ १६ ॥ यह कहकर हनुमान्जी से दीहुई बाईं बगल से उपजी पोटली को इसके स्थान में उन्हों ने फेंक दिया व द्विजोत्तम लोग लौटपड़े ॥ १७ ॥ तब द्विजगण चले जाने पर सब स्थान ज्वालाओं की माला से व्याप्त होगया और सब स्थान वहां अग्नि

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri, Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

की ज्वालाओं से युक्त हुआ ॥ १८ ॥ और राजा की वस्तुवें छत्र और चँवर जलने लगे व ख़ज़ाने के सब घर व शस्त्रों के घर जलनेलगे ॥ १९ ॥ और स्त्रियां, राजपुत्र, हाथी व अनेक घोड़े, विमान और सवारी जलनेलगीं ॥ २० ॥ और विचित्र पालकी व हज़ारों रथ जलनेलगे और सब कहीं जलती हुई वस्तु को देखकर राजा भी दुःखी हुआ ॥ २१ ॥ और उसका कोई भी रक्षक न हुआ व मनुष्य भय से विकल हुए और वह अग्नि मंत्रों व यंत्रों और जड़ों से शान्त न हुई ॥ २२ ॥ जहां करोड़ों कुटिलताओं को नाशनेवाले श्रीरामजी क्रोधित होते हैं वहां सब नाश होजाते हैं तो कुमारपालक को क्या कहना है ॥ २३ ॥ तब उस जलतीहुई सब वस्तु को देख

हि ॥ १८ ॥ दह्यन्ते राजवस्तूनिच्छत्राणि चामराणि च ॥ कोशागाराणि सर्वाणि आयुधागारमेव च ॥ १९ ॥ महिष्यो राजपुत्राश्च गजा अश्वा ह्यनेकशः ॥ विमानानि च दह्यन्ते दह्यन्ते वाहनानि च ॥ २० ॥ शिबिकाश्च विचित्रा वै रथाश्चैव सहस्रशः ॥ सर्वत्र दह्यमानं च दृष्ट्वा राजापि विव्यथे ॥ २१ ॥ न कोपि त्राता तस्यास्ति मानवा भयविक्लवाः ॥ न मन्त्रयन्त्रैर्वह्निः स साध्यते न च मूलिकैः ॥ २२ ॥ कौटिल्यकोटिनाशी च यत्र रामः प्रकुप्यते ॥ तत्र सर्वे प्रणश्यन्ति किं तत्कुमारपालकः ॥ २३ ॥ सर्वं तज्ज्वलितं दृष्ट्वा नग्नक्षपणकास्तदा ॥ धृत्वा करेण पात्राणि नीत्वा दण्डाञ्छुभानपि ॥ २४ ॥ रक्तकम्बलिका गृह्य वेपमाना मुहुर्मुहुः ॥ अनुपानहिकाश्चैव नष्टाः सर्वे दिशो दश ॥ २५ ॥ कोलाहलं प्रकुर्वाणाः पलायध्वमिति ब्रुवन् ॥ दाहिता विप्रमुख्यैश्च वयं सर्वे न संशयः ॥ २६ ॥ केचिच्च भग्नपात्रास्ते भग्नदण्डास्तथापरे ॥ प्रणष्टाश्च विवस्रास्ते वीतरागमितिब्रुवन् ॥ २७ ॥ अर्हन्तमेव केचिच्च पलायनपरायणाः ॥

कर बौद्धलोग हाथ से पात्रों को धारणकर व उत्तम दंडों को भी लेकर ॥ २४ ॥ और लाली कम्बलियों को लेकर बार २ काँपने लगे और बिन पनहियों को पहने हुए वे सब दशो दिशाओं को भगगये ॥ २५ ॥ कोलाहल करतेहुए उन्होंने ऐसा कहा कि भागिये क्योंकि मुख्य ब्राह्मणों ने हम सबों को जला दिया इसमें सन्देह नहीं है ॥ २६ ॥ कितेक लोगों के पात्र फूट गये व अन्य मनुष्यों के दंड टूट गये और भागने में तत्पर कितेक नग्न वे जैनी उन अर्हन्जी को स्नेहरहित ऐसा कहते हुए

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

भग गये तदनन्तर अग्नि को बढ़ाता हुआ सा पवन उत्पन्न हुआ ॥ २७ । २८ ॥ जिसको ब्राह्मणों की प्रिय कामना से हनुमान्जी ने पठाया था पश्चात् उस समय इधर उधर दौड़ता हुआ वह राजा ॥ २६ ॥ पैदल अकेला रोता व यह कहता हुआ भगा कि ब्राह्मण कहां हैं तदनन्तर लोगों से सुनकर वह राजा वहां गया जहां कि ब्राह्मण थे ॥ ३० ॥ व हे राजन् ! उस समय जाकर वह राजा यकायक ब्राह्मणों के पैरों को पकड़कर तब मूर्च्छित होकर पृथ्वी में गिरपड़ा ॥ ३१ ॥ व हे राम राम ! ऐसा बारबार दशरथकुमार श्रीरामजी को जपते हुए व विनय में तत्पर राजा ने ब्राह्मणों से यह कहा ॥ ३२ ॥ कि उन श्रीरामजी के दास का भी मैं दास हूं व

ततो वायुः समभवद्वह्निमान्दोलयन्निव ॥ २८ ॥ प्रेषितो वै हनुमता विप्राणां प्रियकाम्यया ॥ धावन्स नृपतिः पश्चादितश्चेतश्च वै तदा ॥ २९ ॥ पदातिरेकः प्ररुदन्क विप्रा इति जल्पकः ॥ लोकाच्छ्रुत्वा ततो राजा गतस्तत्र यतो द्विजाः ॥ ३० ॥ गत्वा तु सहसा राजन्गृहीत्वा चरणौ तदा ॥ विप्राणां नृपतिर्भूमौ मूर्च्छितो न्यपतत्तदा ॥ ३१ ॥ उवाच वचनं राजा विप्रान्विनयतत्परः ॥ जपन्दाशरथिं रामं रामरामेति वै पुनः ॥ ३२ ॥ तस्य दासस्य दासोहं रामस्य च द्विजस्य च ॥ अज्ञानतिमिरान्धेन जातोस्म्यन्धो हि सम्प्रति ॥ ३३ ॥ अञ्जनं च मया लब्धं रामनाममहौषधम् ॥ रामं मुक्त्वा हि ये मर्त्या ह्यन्यं देवमुपासते ॥ दह्यन्ते तेऽग्निना स्वामिन्यथाहं मूढचेतनः ॥ ३४ ॥ हरिर्भागीरथी विप्रा विप्रा भागीरथी हरिः ॥ भागीरथी हरिर्विप्राः सारमेकं जगत्त्रये ॥ ३५ ॥ स्वर्गस्य चैव सोपानं विप्रा भागीरथी हरिः ॥ रामनाममहारज्ज्वा वैकुण्ठे येन नीयते ॥ ३६ ॥ इत्येवं प्रणमन् राजा प्राञ्जलिर्वाक्यमब्रवीत् ॥ वह्निः प्रशा

ब्राह्मण का सेवक हूं इस समय अज्ञानरूपी बड़े भारी अन्धकार से मैं अन्ध होगया ॥ ३३ ॥ और रामनामरूपी बड़ीभारी औषध को मैंने पाया जो मनुष्य श्रीरामजी को छोड़कर अन्य देवता की उपासना करते हैं हे स्वामिन् ! वे मुझ मूर्ख की नाईं अग्नि से जलाये जाते हैं ॥ ३४ ॥ विष्णु व गंगाजी ब्राह्मण हैं और ब्राह्मण गंगा व विष्णुजी हैं त्रिलोक में गंगा, विष्णु व ब्राह्मण केवल सारांश हैं ॥ ३५ ॥ और ब्राह्मण, गंगा व विष्णु स्वर्ग की सीढ़ी हैं कि जिस रामनामरूपी बड़ी भारी रस्सी से मनुष्य वैकुण्ठ में प्राप्त किया जाता है ॥ ३६ ॥ इस प्रकार प्रणाम करते हुए राजा ने हाथों को जोड़कर यह वचन कहा कि हे ब्राह्मणो ! अग्नि को शान्त कीजिये मैं

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तुमलोगों को जीविका दूंगा ॥ ३७ ॥ हे ब्राह्मणो ! मैं इस समय दास हूं और मेरा वचन अन्यथा नहीं होताहै पराई स्त्री से भोग करनेवाले मनुष्योंको व ब्रह्महत्या का जो पाप होता है ॥ ३८ ॥ और सुवर्ण चुरानेवाले व मदिरा पीनेवालों को जो पाप होताहै और गुरुको मारनेवालों को जो पाप होता है वही पाप मुझको होवै ॥ ३९ ॥ और जो जिस जिस मनोरथ की इच्छा करैगा उसको मैं उस उस अभिलाष को दूंगा और सदैव ब्राह्मणों की भक्ति व श्रीरामजी की भक्ति करना चाहिये ॥ ४० ॥ हे द्विजोत्तमो ! अन्यथा मैं कभी न करूंगा ॥ ४१ ॥ व्यासजी बोले कि हे भूप ! उस समय ब्राह्मणलोग दयालु होगये और जो दूसरी पोटली थी उसको शाप की शान्ति के लिये

म्यतां विप्राः शासनं वो ददाम्यहम् ॥ ३७ ॥ दासोऽस्मि साम्प्रतं विप्रा न मे वागन्यथा भवेत् ॥ यत्पापं ब्रह्महत्यायाः परदाराभिगामिनाम् ॥ ३८ ॥ यत्पापं मद्यपानां च सुवर्णस्तेयिनां तथा ॥ यत्पापं गुरुघातानां तत्पापं वा भवेन्मम ॥ ३९ ॥ यं यं चिन्तयते कामं तं तं दास्याम्यहं पुनः ॥ विप्रभक्तिः सदा कार्या रामभक्तिस्तथैव च ॥ ४० ॥ अन्यथा करणीयं मे न कदाचिद् द्विजोत्तमाः ॥ ४१ ॥ व्यास उवाच ॥ तस्मिन्नवसरे विप्रा जाता भूप दयालवः ॥ अन्या या पुटिका चासीत्सा दत्ता शापशान्तये ॥ ४२ ॥ जीवितं चैव तत्सैन्यं जातं क्षिप्तेषु रोमसु ॥ दिशः प्रसन्नाः सञ्जाताः शान्ता दिग्जनितस्वनाः ॥ ४३ ॥ प्रजा स्वस्थाऽभवत्तत्र हर्षनिर्भरमानसा ॥ अवतस्थे यथापूर्वं पुत्रपौत्रादिकं तथा ॥ ४४ ॥ विप्राज्ञाकारिणो लोकाः सञ्जाताश्च यथा पुरा ॥ विष्णुधर्मं परित्यज्य नान्यं जानन्ति ते वृषम् ॥ ४५ ॥ नवीनं शासनं कृत्वा पूर्ववद्विधिपूर्वकम् ॥ निष्कासितास्तु पाखण्डाः कृतशास्त्रप्रयोजकाः ॥ ४६ ॥

देदिया ॥ ४२ ॥ और रोमों के फेंकने पर वह सेना जीउठी और दिशाएं निर्मल होगई व दिशाओं में उपजे हुए शब्द शांत होगये ॥ ४३ ॥ और वहां हर्ष से पूर्ण मनवाले प्रजालोग स्वस्थ होगये व पुत्र, पौत्रादिक पहले की नाईं स्थित हुआ ॥ ४४ ॥ और पहले की नाईं मनुष्य ब्राह्मणों की आज्ञा को करनेवाले हुए व विष्णुजी के धर्म को छोड़कर वे अन्य धर्म को न जाननेलगे ॥ ४५ ॥ और शासन को नवीन करके पहले की नाईं विधिपूर्वक शास्त्रों के प्रयोगकर्त्ता हुए और पाखण्ड निकाल दियेगये ॥ ४६ ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और वेदसे बाहर कियेहुए वे उत्तम, मध्यम व नीच नष्ट होगये और पहले जो छत्तीस हज़ार गोभुज हुए थे ॥ ४७ ॥ उनके मध्यसे अढबीज वणिज् लोग उत्पन्न हुए और राजा ने उन सबों को ब्राह्मणों की सेवाके लिये निरूपण किया ॥ ४८ ॥ और पाखण्ड के मार्ग को छोड़कर वे उत्तम आचारवाले तथा अत्यन्त निपुण व देवताओं और ब्राह्मणों के पूजक वे विष्णुजी की भक्ति में परायण हुए ॥ ४९ ॥ राजाने गंगाजी के किनारे जाकर त्रैविद्य ब्राह्मणों के लिये जीविका को दिया जब उनको भक्तिपूर्वक शासन (वृत्ति) दिया गया ॥ ५० ॥ तब स्थान के धर्म से चले हुए वे ब्राह्मण आये और क्लेश करनेवाले उन ब्राह्मणों ने राजा से यह कहा ॥ ५१ ॥

वेदबाह्याः प्रणष्टास्ते उत्तमाधममध्यमाः ॥ षट्त्रिंशच्च सहस्राणि येऽभूवन्गोभुजाः पुरा ॥ ४७ ॥ तेषां मध्यात्तु स ञ्जाता अढबीजा वणिग्जनाः ॥ शुश्रूषार्थं ब्राह्मणानां राज्ञा सर्वे निरूपिताः ॥ ४८ ॥ सदाचाराः सुनिपुणा देवब्राह्मणपूज काः ॥ त्यक्त्वा पाखण्डमार्गं तु विष्णुभक्तिपरास्तु ते ॥ ४९ ॥ जाह्नवीतीरमासाद्य त्रैविद्येभ्यो ददौ नृपः ॥ शासनं तु यदा दत्तं तेषां वै भक्तिपूर्वकम् ॥ ५० ॥ स्थानधर्मात्प्रचलिता वाडवास्ते समागताः ॥ नृपो विज्ञापितो विप्रैस्तैरेवं क्लेश कारिभिः ॥ ५१ ॥ ये त्यक्तवाचो विप्रेन्द्रास्तान्निःसारय भूपते ॥ परस्परं विवादास्तु सञ्जाता दत्तवृत्तये ॥ ५२ ॥ न्याय प्रदर्शनार्थं च कारितास्तु सभासदः ॥ हस्ताक्षरेषु दृष्टेषु पृथक्पृथक् प्रपादितम् ॥ ५३ ॥ एतच्छ्रुत्वा ततो राजा तुला दानं चकार ह ॥ दीयमाने तदा दाने चातुर्विद्या बभाषिरे ॥ ५४ ॥ अस्माभिर्हारिता जातिः कथं कुर्मः प्रतिग्रहम् ॥ निवारितास्तु ते सर्वे स्थानान्मोहेरका द्विजाः ॥ ५५ ॥ दशपञ्च सहस्राणि वेदवेदाङ्गपारगाः ॥ ततस्तेन तदा राजन्

कि हे भूपते ! जिन्हों ने तुम्हारे वचनको छोड़दिया उनको निकाल दीजिये परस्पर दीहुई जीविका के लिये विवाद हुए ॥ ५२ ॥ और योग्य दिखलाने के लिये सभासद् कियेगये व हस्ताक्षरों के देखनेपर अलग २ सिद्ध कियागया ॥ ५३ ॥ इस वचन को सुनकर तदनन्तर राजा ने तुलादान किया तब दान देनेपर चातुर्विद्य ब्राह्मण बोले ॥ ५४ ॥ कि हम सबों से जाति हारगई तो हमलोग कैसे दान को लेवैंगे और वे सब मोहेरक ब्राह्मण स्थान से मना किये गये ॥ ५५ ॥ जो कि पंद्रह

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हज़ार ब्राह्मण वेदों व वेदांगों के पारगामी थे तदनन्तर हे राजन्! उस समय श्रीरामजी के आज्ञानुवर्ती उस राजा ने ॥ ५६ ॥ उन ब्राह्मणों को बुलाकर ज्ञाति का भेद किया कि जो त्रयीविद्य ब्राह्मण सेतुबंध स्वामी को ॥ ५७ ॥ गये थे वे जीविका के भागी हुए और अन्य जीविका के भागी न हुए और जो वहां नहीं गये वे चातुर्वेद्यता को प्राप्तहुए ॥ ५८ ॥ व उनके साथ वणिजों से संबन्ध व विवाह नहीं हुआ और ज्ञातिभेद करने पर ग्राम की जीविका में संबन्ध न हुआ ॥ ५९ ॥ और ब्राह्मणों की भक्ति में परायण जो शूद्र पाखण्डों से लोपित न हुए जैन धर्म से निवृत्त वे गोभुज उत्तम हुए ॥ ६० ॥ और पाखण्ड में तत्पर जो श्रीरामजी के शासन को लोप

राज्ञा रामानुवर्तिना ॥ ५६ ॥ आहूय वाडवांस्तांस्तु ज्ञातिभेदं चकार सः ॥ त्रयीविद्या वाडवा ये सेतुबन्धं प्रति प्रभुम् ॥ ५७ ॥ गतास्ते वृत्तिभाजः स्युर्नान्ये वृत्त्यभिभागिनः ॥ तत्र नैव गता ये वै चातुर्विद्यत्वमागताः ॥ ५८ ॥ वणिग्भिर्न च सम्बन्धो न विवाहश्च तैः सह ॥ ग्रामवृत्तौ न सम्बन्धो ज्ञातिभेदे कृते सति ॥ ५९ ॥ द्विजभक्तिपराः शूद्रा ये पाखण्डैर्न लोपिताः ॥ जैनधर्मात्परावृत्तास्ते गोभूजास्तथोत्तमाः ॥ ६० ॥ ये च पाखण्डनिरता रामशासनलोपकाः ॥ सर्वे विप्रास्तथा शूद्राः प्रतिबन्धेन योजिताः ॥ ६१ ॥ सत्यप्रतिज्ञां कुर्वाणास्तत्रस्थाः सुखिनोऽभवन् ॥ चातुर्विद्या बहिर्ग्रामे राज्ञा तेन निवासिताः ॥ ६२ ॥ यथा रामो न कुप्येत तथा कार्यं मया ध्रुवम् ॥ पराङ्मुखा ये रामस्य सन्मुखा न गताः किल ॥ ६३ ॥ चातुर्विद्यास्ते विज्ञेया वृत्तिबाह्याः कृतास्तदा ॥ कृतकृत्यस्तदा जातो राजा कुमारपालकः ॥६४॥ विप्राणां पुरतः प्राह प्रश्रयेण वचस्तदा ॥ ग्रामवृत्तिर्न मे लुप्ता एतद्दै देवनिर्मितम् ॥ ६५ ॥ स्वयं

करनेवाले हुए वे सब ब्राह्मण व शूद्र प्रतिबन्धसे युक्त हुए ॥ ६१ ॥ और सत्यप्रतिज्ञा को करते हुए वहां स्थित ब्राह्मण सुखी हुए और चातुर्विद्य ब्राह्मणों को उस राजा ने गाँव के बाहर बसाया ॥ ६२ ॥ जिस प्रकार श्रीरामजी क्रोध न करैं मुझको निश्चयकर वैसाही करना चाहिये व श्रीरामजी से जो विमुख हैं और सामने नहीं प्राप्त हुए हैं ॥६३॥ वे चातुर्विद्य उस समय जीविका से बाहर कियें गये जानने योग्य हैं तब कुमारपालक राजा कृतार्थ होगया ॥ ६४ ॥ और उसने उस समय नम्रता से ब्राह्मणोंके आगे यह वचन कहा कि मैंने ग्राम की वृत्ति को लुप्त नहीं किया बरन यह देवता से किया गया है ॥ ६५ ॥ व आपही किये हुए अपराधों का दोष किसीको नहीं दिया

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जाताहै जैसे वनमें काष्ठ के घिसने से अग्नि दैवयोगसे उत्पन्न होजाती है ॥ ६६ ॥ आपलोगों ने श्रीरामजी का शासन करके हनुमान्जी के लिये चिह्न के कारण पण (वादद्यूत याने बाजी लगाना) किया था ॥ ६७ ॥ और तुमलोग ब्राह्मण लौट आये तो वह दोष किसको दिया जाताहै अन्तमें विष्णुजी को स्मरणकर बड़े पातकों से संयुत भी पुरुष ॥ ६८ ॥ शीघ्रही विष्णुलोक को जाता है तो कैसे सन्देह होवै और बड़े भारी पुण्य के उदय में मनुष्यों की बुद्धि कल्याण में होतीहै ॥ ६९ ॥ और पाप के उदय समय में वह बुद्धि उलटी होजाती है धर्म से जो इस त्रिलोक को एकही साथ पालन करता है ॥ ७० ॥ व जो प्राणियों का जीवात्मा है उसमें संशय

कृतापराधानां दोषो कस्य न दीयते ॥ यथा वने काष्ठघर्षाद्वह्निः स्याद्दैवयोगतः ॥ ६६ ॥ भवद्भिस्तु पणः प्रोक्तोह्य भिज्ञानस्य हेतवे ॥ रामस्य शासनं कृत्वा वायुपुत्रस्य हेतवे ॥ ६७ ॥ व्यावृत्ता वाडवा यूयं स दोषः कस्य दीयते ॥ अवसाने हरिं स्मृत्वा महापापयुतोऽपि वा ॥ ६८ ॥ विष्णुलोकं व्रजत्याशु संशयस्तु कथं भवेत् ॥ महत्पुण्योदये नृणां बुद्धिः श्रेयसि जायते ॥ ६९ ॥ पापस्योदयकाले च विपरीता हि सा भवेत् ॥ सकृत्पालयते यस्तु धर्मेणैतज्जग त्रयम् ॥ ७० ॥ योन्तरात्मा च भूतानां संशयस्तत्र नो हितः ॥ इन्द्रादयोऽमराः सर्वे सनकाद्यास्तपोधनाः ॥ ७१ ॥ मुक्त्यर्थमर्चयन्तीह संशयस्तत्र नो हितः ॥ सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनामेति गीयते ॥ ७२ ॥ तस्मिन्ननिश्चयं कृत्वा कथं सिद्धिर्भवेदिह ॥ मम जन्मकृतात्पुण्यादभिज्ञानं ददौ हरिः ॥ ७३ ॥ पाखण्डाद्यत्कृतं पापं मृष्टं तद्वः प्रणामतः ॥ प्रसीदन्तु भवन्तश्च त्यक्त्वा क्रोधं ममाधुना ॥ ७४ ॥ ब्राह्मणा ऊचुः ॥ राजन्धर्मो विलुप्तस्ते प्रापितश्च तथा

हित नहीं होता है और इन्द्रादिक सब देवता व सनकादिक तपस्वी लोग ॥ ७१ ॥ जिसको मुक्ति के लिये पूजते हैं उसमें सन्देह हित नहीं होताहै और वह राम नाम सहस्रनाम के तुल्य कहा जाता है ॥ ७२ ॥ उसमें निश्चय न करके इस संसार में कैसे सिद्धि होतीहै मेरे जन्म में कियेहुए पुण्य से विष्णुजी ने चिह्नको दिया ॥ ७३ ॥ और पाखण्ड से मैंने जो पाप किया था वह तुमलोगों के प्रणाम से शुद्ध होगया आप लोग इस समय क्रोध को छोड़कर मेरे ऊपर प्रसन्न होवो ॥ ७४ ॥ ब्राह्मण बोले

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कि हे राजन् ! तुमने धर्म को लुप्त किया व फिर प्राप्त किया और अवश्य होनेवाले कार्य बड़े लोगों के भी होते हैं ॥ ७५ ॥ शिवजी का नग्न होना व विष्णुजी का शेषजी पै सोना यह सब दैव से किया गया है जोकि सुख व दुःख के स्वामी हैं ॥ ७६ ॥ सत्यप्रतिज्ञावाले त्रैविद्य ब्राह्मण श्रीरामजी के शासन को करैं और हम लोगों को उत्तम स्थान दीजिये जहां कि बसैं ॥ ७७ ॥ उन ब्राह्मणों का वचन सुनकर ब्राह्मणों के सुख को चाहनेवाले राजा ने उन ब्राह्मणों को सुखवास नामक स्थान को दिया ॥ ७८ ॥ व हे राजन् ! सुवर्ण व रत्न, वसन और कामदुघा गऊ तथा सुवर्ण का भूषण और सब अनेक प्रकारके वस्तुसमूह को ॥ ७९ ॥ बड़ी श्रद्धा से

पुनः ॥ अवश्यं भाविनो भावा भवन्ति महतामपि ॥ ७५ ॥ नग्नत्वं नीलकण्ठस्य महाहिशयनं हरेः ॥ एतद्दैवकृतं सर्वं प्रभुर्यः सुखदुःखयोः ॥ ७६ ॥ सत्यप्रतिज्ञास्त्रैविद्या भजन्तु रामशासनम् ॥ अस्माकं तु परं देहि स्थानं यत्र वसामहे ॥ ७७ ॥ तेषां तु वचनं श्रुत्वा सुखमिच्छुर्द्विजन्मनाम् ॥ तेषां स्थानं च प्रददौ सुखवासं तु नामतः ॥ ७८ ॥ हिरण्यं रत्नवासांसि गावः कामदुघा नृप ॥ स्वर्णालङ्करणं सर्वं नानावस्तुचयं तथा ॥ ७९ ॥ श्रद्धया परया दत्त्वा मुदं लेभे नराधिपः ॥ त्रयीविद्यास्तु ते ज्ञेयाः स्थापिता ये त्रिमूर्तिभिः ॥ ८० ॥ चतुर्थेनैव भूपेन स्थापिताः सुखवासने ॥ ते बभूवुर्द्विजश्रेष्ठाश्चातुर्विद्याः कलौ युगे ॥ ८१ ॥ चातुर्विद्याश्च ते सर्वे धर्मारण्ये प्रतिष्ठिताः ॥ वेदोक्ता आशिषो दत्त्वा तस्मै राज्ञे महात्मने ॥ ८२ ॥ रथैरश्वैरुह्यमानाः कृतकृत्या द्विजातयः ॥ महत्प्रमोदयुक्तास्ते प्रापुर्मोहेरकं महत् ॥ ८३ ॥ पौषशुक्लत्रयोदश्यां लब्धं शासनकं द्विजैः ॥ बलिप्रदानं तु कृतमुद्दिश्य कुलदेवताम् ॥ ८४ ॥ वर्षे वर्षे

देकर राजा ने आनन्द को पाया और जो तीन मूर्तियों से स्थापित किये गये वे त्रयीविद्य जानने योग्य हैं ॥ ८० ॥ और चौथे भूप से जो सुखवासन नामक स्थान में स्थापित किये गये वे द्विजोत्तम कलियुग में चातुर्विद्य हुए ॥ ८१ ॥ और वे सब चातुर्विद्य ब्राह्मण धर्मारण्य में स्थित हुए और उस महात्मा राजा के लिये वेदोक्त आशीर्वादों को देकर ॥ ८२ ॥ रथों व घोड़ों पै चढ़कर ब्राह्मण लोग कृतार्थ हुए और बड़े आनन्द से संयुत वे बड़े भारी मोहेरक स्थान को प्राप्त हुए ॥ ८३ ॥ पौष शुक्ल तेरसि में ब्राह्मणों ने शासन को पाया और कुलदेवता को उद्देशाकर बलिप्रदान किया ॥ ८४ ॥ महात्मा पुरुष को प्रत्येक वर्ष में विधिपूर्वक बलिदान व मंगल स्नान

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

करना चाहिये ॥ ८५ ॥ और उस दिन अवश्यकर गीत, नृत्य व बाजन करै व जिसप्रकार जीविकाका नाश न होवै उसप्रकार उस महीने व उस दिनमें करै ॥ ८६ ॥ और जब दैवयोग से व्यतीत समय में वृद्धि प्राप्त होवै तब पहले उसको करके पश्चात् वृद्धि कीजाती है ॥ ८७ ॥ और मोढवंश में उत्पन्न जो त्रैविद्य व चातुर्विद्य अन्य तिथि में प्राप्त होते हैं ॥ ८८ ॥ वे वर्ष के मध्यमें व विष्णुजी के शयनमें बलिप्रदान करते हैं और पौष महीने में जो बलि को न करके श्रौत, स्मार्त कर्म को करता है ॥ ८९ ॥ उसको क्रोधसे संयुत कुलदेवता नाश करती हैं और विवाह व उत्सव के समयमें तथा यज्ञोपवीतादिक कर्म में और सब वृद्धिके समयों में विद्वान्

प्रकर्त्तव्यं बलिदानं यथाविधि ॥ कार्यं च मङ्गलस्नानं पुरुषेण महात्मना ॥ ८५ ॥ गीतं नृत्यं तथा वाद्यं कुर्वीत तद्दिने ध्रुवम् ॥ तन्मासे तद्दिने नैव वृत्तिनाशो भवेद्यथा ॥ ८६ ॥ दैवादतीतकाले चेद् वृद्धिरापद्यते यदा ॥ तदा प्रथमतः कृत्वा पश्चाद्वृद्धिर्विधीयते ॥ ८७ ॥ ये च भिन्नतिथौ प्राप्तास्त्रैविद्या मोढवंशजाः ॥ तथा चातुर्वेदिनश्च कुर्वन्ति गोत्रपूजनम् ॥ ८८ ॥ वर्षमध्ये प्रकुर्वन्ति तथा सुप्ते जनार्द्दने ॥ पौषे बलिमकृत्वा च श्रौतं स्मार्त्तं करोति यः ॥ ८९ ॥ तन्तु क्रोधसमाविष्टा निघ्नन्ति कुलदेवताः ॥ विवाहोत्सवकाले च मौञ्जीबन्धादिकर्मणि ॥ सर्वेषु वृद्धिकालेषु मातङ्गीं पूजयेद्बुधः ॥ ९० ॥ पूजनं गणनाथस्य ततः प्रभृति शोभनम् ॥ ९१ ॥ मोहेरकस्य भङ्गो हि फाल्गुन्याश्च दिने कृतः ॥ मलस्नानं तदा वर्ज्यं त्रिविधैर्मोढवाडवैः ॥ ९२ ॥ अत्राश्चर्यमभूदेकं तच्छृणुष्व महामते ॥ आसीत्कश्चित्पुरारक्षो रुद्राल्लब्धवरो मुने ॥ ९३ ॥ मोहेरकादुत्तरतो वटवृक्षसमाश्रयः ॥ पाणिग्रहणकाले स जहार वरकन्यके ॥ ९४ ॥

मातंगीजी को पूजै ॥ ९० ॥ और तब से लगाकर गणेशजी का उत्तम पूजन करै ॥ ९१ ॥ और फाल्गुनी पौर्णमासी के दिन मोहेरक का भंग किया गया है तब त्रिविध मोढब्राह्मणों को मलस्नान न करना चाहिये ॥ ९२ ॥ हे महामते ! इस विषय में जो एक आश्चर्य हुआ है उसको सुनिये कि हे मुने ! पुरातन समय शिवजी से वरको पाये हुए कोई राक्षस हुआ है ॥ ९३ ॥ मोहेरक से उत्तर में बरगद के वृक्ष के समीप स्थित वह विवाह के समय में वर व कन्या को हरलेता था ॥ ९४ ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

इस प्रकार उस दुष्ट आशयवाले राक्षसने बहुत से वरों व कन्याओं को हरलिया तदनन्तर कुछ समय के बाद उस समय ब्राह्मणों ने बहुत पूजनपूर्वक भट्टारिका देवी से कहा तदनन्तर प्रसन्न होतीहुई उस भट्टारिका देवीने ब्राह्मणों से कहा ॥ ९५।९६ ॥ भट्टारिका बोली कि दुःखित मनवाले तुम लोग किस लिये यहां आये हो व आप लोगों का क्या कार्य है इसको शीघ्रही कहिये ॥ ९७ ॥ ब्राह्मण बोले कि हे मातः ! हमारे स्त्री पुरुष विवाह के योग से हरे जाते हैं उसको हम नहीं जानते हैं तुम उस से रक्षा करने के योग्य हो ॥ ९८ ॥ बहुत अच्छा यह कहकर उस समय वह देवी वहां अन्तर्द्धान होगई व फिर विवाह प्राप्त होने पर वह राक्षस उस समय वेदी पै

एवं बहून्वरान्कन्या जहार स दुराशयः ॥ ततः कालेन कियता देवीं भट्टारिकांतदा ॥ ९५ ॥ द्विजा विज्ञापयामा सुर्बहुपूजापुरःसरम् ॥ ततस्तुष्टा तु सा देवी द्विजान्भट्टारिकाब्रवीत् ॥ ९६ ॥ भट्टारिकोवाच ॥ उद्विग्नमनसो यूयं किमर्थमिहचागताः ॥ किञ्च कार्यं हि भवतां कथ्यतामविलम्बितम् ॥ ९७ ॥ द्विजा ऊचुः ॥ अस्माकं दम्पती मातः पाणिग्रहणयोगतः ॥ ह्रियेते तु न जानीमस्तद्रक्षां कर्तुमर्हसि ॥ ९८ ॥ तथेत्युक्त्वा तदा देवी तत्रैवान्तरधीयत ॥ पुनर्विवाहे सम्प्राप्ते तद्रक्षो दम्पतीं तदा ॥ आवेदिकां गतो हृत्वा तत्रैवान्तरधीयत ॥ ९९ ॥ ततः सुदुःखिता विप्राः पुनर्देवीमुपस्थिताः ॥ आवेदयन् स्ववृत्तान्तं दम्पतीहरणादिकम् ॥ १०० ॥ ततः क्रोधसमाविष्टा देवी शूलं समाददे ॥ युयुधे रक्षसा तेन दिनानि सुबहून्यपि ॥ १ ॥ ततो भट्टारिका श्रान्ता चिरं युद्धसमाकुला ॥ निद्रां प्राप्ता तथा ग्लाना सु ष्वाप वटसन्निधौ ॥ २ ॥ तदातद्देहसम्भूता मातङ्गी रक्तलोचना ॥ मदाघूर्णितलोलाक्षी रक्तपुष्पाम्बरावृता ॥ ३ ॥ तद्रक्षः

प्राप्त होकर स्त्री पुरुष को हरकर वहीं अन्तर्द्धान होगया ॥ ९९ ॥ तदनन्तर बहुत दुःखित ब्राह्मण फिर देवीजी के समीप प्राप्त हुए और उन्होंने स्त्री पुरुष का हरण आदिक अपने वृत्तान्तको कहा ॥ १०० ॥ तदनन्तर क्रोधसे संयुत देवीजीने त्रिशूल को लिया और बहुत दिनों तक उस राक्षस से युद्ध किया ॥ १ ॥ तदनन्तर बहुत दिनों तक युद्ध से विकल भट्टारिका देवी थकगई व थककर नींद को प्राप्त हुई व बरगद के समीप सो गई ॥ २ ॥ तब लाल लोचनोंवाली मातंगी उसके शरीर से उत्पन्न हुई और मद से घूर्णित नेत्रोंवाली तथा लाल पुष्पों व बसनोंको धारण करनेवाली मातंगी ने ॥ ३ ॥ हे मुने ! बड़ी सेना से उस राक्षस को पीड़ित किया और

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उस राक्षस को शीघ्रही मारकर वह मातंगी बरगद के वृक्ष के नीचे बैठ गई ॥ ४ ॥ तदनन्तर निद्रा को छोड़कर वह आदियोगिनी शीघ्रही जाग पड़ी और राक्षस को मरे हुए देखकर भट्टारिका देवी हर्षसंयुत हुई ॥ ५ ॥ और उसने विचार किया कि किसने बल से गर्वित राक्षस को मारा है ध्यान के प्रभाव से भट्टारिका देवीने मातंगी से मारे हुए राक्षस को जानकर ॥ ६ ॥ ब्राह्मणों से कहा कि तुमलोगों का कल्याण होवै राक्षस का नाश होगया हे द्विजेन्द्रो ! आज से लगाकर आपलोग अपने घरों में ॥ ७ ॥ विवाह व उत्सव के समयों में तथा यज्ञोपवीत व मुंडनादिक कर्मों में और सब महोत्सवों में हे द्विजो ! मातंगी को पूजियेगा ॥ ८ ॥ श्वेत वस्त्रको पहने

पीडयामास बलेन महता मुने ॥ सा तद्रक्षो निहत्याशु वटवृक्षमुपाश्रिता ॥ ४ ॥ ततो निद्रां विहायाशु प्रबुद्धा आदियोगिनी ॥ देवी भट्टारिका दृष्ट्वा हतं रक्षो मुदान्विता ॥ ५ ॥ अचिन्तयत् केन हतो राक्षसो बलगर्वितः ॥ मातङ्ग्या निहतं ज्ञात्वा देवी ध्यानप्रभावतः ॥ ६ ॥ उवाच विप्रान् भद्रं वो जातं रक्षोविनाशनम् ॥ अद्यप्रभृति विप्रेन्द्रा भवद्भिस्स्वगृहेषु च ॥ ७ ॥ विवाहोत्सवकालेषु मौञ्जीचूडादिकर्मसु ॥ महोत्सवेषु सर्वेषु मातङ्गी पूज्यतां द्विजाः ॥ ८ ॥ श्वेतवस्त्रपरीधाना पानपात्रधरा वरा ॥ योत्रं कलशसूर्पादिशिरसा बिभ्रती शुभा ॥ ९ ॥ अष्टादशभुजा देवी सारमेयकरा तथा ॥ पूजनीया द्विजवरा मातङ्गी मदविह्वला ॥ १० ॥ इत्युक्त्वा सा तदा देवी तत्रैवान्तरधीयत ॥ अतः पूज्या द्विजैर्देवी मातङ्गी वटसन्निधौ ॥ ११ ॥ विवाहादिषु कालेषु कुलरक्षणकारिणी ॥ मातङ्गीं मदघूर्णाक्षीं सूर्पयोत्रादिधारिणीम् ॥ १२ ॥ यो नैव पूजयेद्वृद्धौ तत्कुलं याति संक्षयम् ॥ अतएव सदा पूज्या मातङ्गी वृद्धि

व मद्यपान के पात्र को धारण किये और जोत नामक रस्सी व कलश तथा सूपादि को शिर से धारण करनेवाली व श्रेष्ठ ॥ ९ ॥ और कुत्ता को हाथ में लिये वह अठारह भुजाओंवाली मद से विह्वल मातंगी देवी हे द्विजोत्तमो ! तुमलोगों से पूजने योग्य हैं ॥ १० ॥ यह कहकर उस समय वह भट्टारिका देवी वहीं अन्तर्धान होगई इस कारण बरगद के समीप मातंगीजी ब्राह्मणों से पूजने योग्य हैं ॥ ११ ॥ व विवाहादिक समयों में कुल की रक्षा करनेवाली मातंगी पूजने योग्य है व मद से भ्रमित नेत्रोंवाली तथा सूप व जोत आदि को धारनेवाली मातंगी को ॥ १२ ॥ जो वृद्धि में नहीं पूजता है उसका वंश नाश होजाता है इसी कारण वृद्धि के लिये

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

मातंगी सदैव पूजने योग्य है ॥ १३ ॥ अनेक प्रकार के बलिप्रदानों से मोढों की कुलदेवता को पूजना चाहिये तदनन्तर ब्राह्मणलोग गान व बाजन के शब्दों से मोढों की कुलदेवता उस मातंगी को वेदध्वनिपूर्वक पूजकर मनोरथ को पाये हुए उन प्रसन्न ब्राह्मणों ने धर्मारण्य में प्रवेश किया ॥ १४ । १५ ॥ और आमराजा ने अपनी आज्ञा से जिन ब्राह्मणों को निकाल दिया वे पंद्रहहज़ार ब्राह्मण सुखवासक नामक स्थान को चले गये ॥ १६ ॥ श्रीरामजी ने पहले आपही पचपन ग्रामों को दिया है और वहां टिके हुए वणिजों ने उनकी जीविका को कल्पित किया ॥ १७॥ और वे अडालज, माण्डलीय व पवित्र गोभुज ब्राह्मणों की जीविका के दायक हुए व ब्राह्मणों

हेतवे ॥ १३ ॥ नानाबलिप्रदानेन मोढानां कुलदेवता ॥ ततो द्विजास्तां सम्पूज्य मोढानां कुलदेवताम् ॥ १४ ॥ गीतवादित्रनिर्घोषैर्वेदध्वनिपुरःसरम् ॥ धर्मारण्यं प्रविविशुर्हृष्टाः प्राप्तमनोरथाः ॥ १५ ॥ निर्वासितास्तु ये विप्रा आमराज्ञा स्वशासनात् ॥ पञ्चदशसहस्राणि ययुस्ते सुखवासकम् ॥ १६ ॥ पञ्चपञ्चाशतो ग्रामान्ददौ रामः पुरा स्वयम् ॥ तत्रस्था वणिजश्चैव तेषां वृत्तिमकल्पयन् ॥ १७ ॥ अडालजा माण्डलीया गोभुजाश्च पवित्रकाः ॥ ब्राह्मणानां वृत्तिदास्ते ब्रह्मसेवासु तत्पराः ॥ ११८ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणेधर्मारण्यमाहात्म्ये ब्राह्मणानांशासनवृत्तिप्राप्तिवर्णनंनामाष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

ब्रह्मोवाच ॥ शृणु पुत्र प्रवक्ष्यामि रहस्यं परमं मतम् ॥ एते ब्रह्मविदः प्रोक्ताश्चातुर्विद्या महाद्विजाः ॥ १ ॥ स्वाध्यायाश्च वषट्काराः स्वधाकाराश्च नित्यशः ॥ रामाज्ञापालकाश्चैव हनुमद्भक्तितत्पराः ॥ २ ॥ एकदा तु ततो देवा

की सेवा में तत्पर हुए ॥ ११८ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणेधर्मारण्यमाहात्म्येदेवीदयालुमिश्रविरचितायांभाषाटीकायांब्राह्मणानांशासनवृत्तिप्राप्तिवर्णनंनामाष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥

दो० । धर्मारण्य द्विजन के जिमि कह भेद अनेक ॥ उन्तालिसवें में सोई कह्यो चरित्र सुनेक ॥ ब्रह्माजी बोले कि हे पुत्र ! सुनिये मैं उत्तम रहस्य को कहता हूं कि ये चातुर्विद्य ब्राह्मण लोग ब्रह्मज्ञानी कहे गये हैं ॥ १ ॥ और नित्य स्वाध्याय व वषट्कार तथा स्वधाकार करनेवाले वे श्रीरामजी की आज्ञा को पालनेवाले व हनुमान् जी की भक्ति में तत्पर थे ॥ २ ॥ तदनन्तर एक समय देवता ब्रह्माजी के समीप गये व ब्राह्मणों को देखने की इच्छावाले वे ब्रह्मा व विष्णु आदिक देवता वहां

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

गये ॥ ३ ॥ व उन आये हुए देवताओं को देखकर वे ब्राह्मण अर्घ, पाद्य व मधुपर्क को आगे कर अपने स्थान से चले ॥ ४ ॥ तदनन्तर ब्रह्मा आदिक देवताओं को पूजकर वे ब्राह्मण ब्रह्मा के आगे बैठकर वेदों को उच्चारण करने लगे ॥ ५ ॥ और संहिता, पद, क्रम व घन और ऋचाओं को व ऋग्वेद की संहिता को उच्चस्वर से कहने लगे ॥ ६ ॥ और सामको गानेवाले वे अनेकप्रकार के स्तोत्रों को करनेलगे व याज्य लोग शास्त्रों को और पुरोनुवाक्यों को पढ़ने लगे ॥ ७ ॥ और चतुरक्षर व परम-चतुरक्षर, द्व्यक्षर, पंचाक्षर व द्व्यक्षर इस यज्ञस्वरूप को जो ज्ञानपूर्वक जपता है ॥ ८ ॥ उसको अन्त में ब्रह्मपद की प्राप्ति होती है यह मैं सत्य सत्य कहता हूं सब सावधान

ब्रह्माणं समुपागताः ॥ ब्राह्मणान्द्रष्टुकामास्ते ब्रह्मविष्णुपुरोगमाः ॥ ३ ॥ तान्देवानागतान्दृष्ट्वा स्वस्थानाच्चलितास्तु ते ॥ अर्घपाद्यं पुरस्कृत्य मधुपर्कं तथैव च ॥ ४ ॥ पूजयित्वा ततो विप्रा देवान्ब्रह्मपुरोगमान् ॥ ब्रह्माग्र उपविष्टास्ते वेदानुच्चारयन्ति हि ॥ ५ ॥ संहितां च पदं चैव क्रमं घनं तथैव च ॥ उच्चैः स्वरेण कुर्वीत ऋचामृग्वेदसंहिताम् ॥ ६ ॥ सामगाश्च प्रकुर्वन्ति स्तोत्राणि विविधानि च ॥ शास्त्राणि च तथा याज्याःपुरोनुवाक्यांस्तथा ॥ ७ ॥ चतुरक्षरं परं चैव चतुरक्षरमेव च ॥ द्व्यक्षरं च तथा पञ्चाक्षरं द्व्यक्षरमेव च ॥ एतद्यज्ञस्वरूपं च यो जपेज्ज्ञानपूर्वकम् ॥ ८ ॥ अन्ते ब्रह्मपदप्राप्तिः सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ एकाग्रमानसाः सर्वे वेदपाठरता द्विजाः ॥ ९ ॥ तेषामङ्गणदेशेषु कण्डूयन्ते कचान्मृगाः ॥ ब्राह्मणा वेदमातां च जपन्ति विधिपूर्वकम् ॥ १० ॥ हस्ते धृतांश्च तैर्दर्भान्भक्षन्ते मृगपोतकाः ॥ निर्वैरं तं तदा दृष्ट्वा आश्रमं गृहमेधिनाम् ॥ ११ ॥ तुतुषुः परमं देवा ऊचुस्ते च परस्परम् ॥ त्रेतायुगमिदानीं च सर्वे धर्मप

मनवाले ब्राह्मण वेदपाठ में परायण थे ॥ ९ ॥ और उनके आंगन के स्थानों में मृग बालों को खुजलाते थे और ब्राह्मणलोग विधिपूर्वक वेदमाता (गायत्री) को जपते थे ॥ १० ॥ व उनसे हाथ में धरे हुए अक्षतों को मृगों के बच्चे खाते थे उस समय गृहस्थों के आश्रम को वैररहित देखकर ॥ ११ ॥ देवतालोग बहुत प्रसन्न हुए और

१ यजामहे २ अस्तु श्रौषट् ३ यजे ४ ये यजामहे ५ वौषट् ये पांच यज्ञसमय में अध्वर्यु आदिकों से कहने योग्य वचन हैं ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उन्होंने परस्पर कहा कि इस समय त्रेतायुग है और सब धर्म में परायण हैं ॥ १२ ॥ व कलियुग दुष्ट कहागया है तो वह पापी दुष्ट क्या करैगा चातुर्विद्य ब्राह्मणों को बुला-
कर उन तीनों ने कहा ॥ १३ ॥ कि आप लोगों के व त्रैविद्य ब्राह्मणों की जीविका के लिये हम तुमलोगों को विभाग देवैंगे उसको यथायोग्य पालन कीजिये ॥ १४ ॥
पहले जो छत्तीस हज़ार वणिज् कहे गये हैं वे और तीन हज़ार त्रैविद्य तथा पंद्रह हज़ार ॥ १५ ॥ चातुर्विद्य परस्पर वृत्ति में आश्रित हुए कि त्रिभाग समेत त्रैविद्य व
चौथाई भागवाले चातुर्विद्य लोग ॥ १६ ॥ नित्य वणिजोंके घरको जाकर पुरोहिती के भाग को बाँटकर ब्रह्मा, विष्णु व शिवजी से बनाये हुए ब्राह्मणलोग उस को

रायणाः ॥ १२ ॥ कलिर्दुष्टस्तथा प्रोक्तः किं करिष्यति पापकः ॥ चातुर्विद्यान्समाहूय ऊचुस्ते त्रय एव च ॥ १३ ॥
वृत्त्यर्थं भवतां चैव त्रैविद्यानां तथैव च ॥ विभागं वः प्रदास्यामो यथावत्प्रतिपाल्यताम् ॥ १४ ॥ ये वणिजः पुरा
प्रोक्ताः षट्त्रिंशच्च सहस्रकाः ॥ त्रिसहस्रास्तु त्रैविद्या दशपञ्चसहस्रकाः ॥ १५ ॥ चातुर्विद्यास्तथा प्रोक्ता अन्योन्यं
वृत्तिमाश्रिताः ॥ सत्रिभागास्तु त्रैविद्याश्चतुर्भागास्तु चात्रिणः ॥ १६ ॥ वणिजां गृहमागत्य पौरोहित्यस्य नित्यशः ॥
भागं विभज्य सम्प्रापुः काजेशेन विनिर्मिताः ॥ १७ ॥ परस्परं न विवाहश्चातुर्विद्यत्रिविद्ययोः ॥ चातुर्विद्या मया
प्रोक्तास्त्रिविद्यास्तु तथैव च ॥ १८ ॥ त्रैविभागेन त्रैविद्याश्चतुर्भागेन चात्रिणः ॥ एवं ज्ञातिविभागस्तु काजेशेन विनि
र्मितः ॥ १९ ॥ कृतकृत्यास्तु ते विप्राः प्रणेमुस्तान्सुरोत्तमान् ॥ वृत्तिं दत्त्वा ततो देवाः स्वस्थानं च प्रतस्थिरे ॥ २० ॥
पञ्चपञ्चाशद्ग्रामाणां ते द्विजाश्च निवासिनः ॥ चतुर्विद्यास्तु ते प्रोक्तास्तदादि तु त्रिविद्यकाः ॥ २१ ॥ चातुर्विद्यस्य

प्राप्त हुए ॥ १७ ॥ और चातुर्विद्य व त्रिविद्यलोगों का परस्पर विवाह नहीं होता है मैंने चातुर्विद्य व त्रिविद्य ब्राह्मणोंको कहा ॥ १८ ॥ और तिहाई भाग से त्रैविद्य व चौथाई
भागसे चातुर्विद्य ब्राह्मण हुए ब्रह्मा, विष्णु व शिवजीसे इस प्रकार जाति का विभाग हुआ ॥ १९ ॥ व उन कृतार्थ ब्राह्मणों ने उन सुरोत्तमों को प्रणाम किया और जीविका
को देकर तदनन्तर देवता अपने स्थान को चलेगये ॥ २० ॥ और वे ब्राह्मण पचपन ग्रामों में निवासी हुए और तब से लगाकर वे चातुर्विद्य और त्रिविद्य कहेगये ॥ २१ ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और चातुर्विद्य के पंद्रह गोत्र हैं भारद्वाज, वत्स, कौशिक व कुश ॥ २२ ॥ और शांडिल्य, कश्यप, गौतम, छादन, जातूकर्ण्य, कुंत, वशिष्ठ व धारण ॥ २३ ॥ और आत्रेय, मांडिल व उसके उपरान्त लौगाक्ष है और स्वस्थानों के नामों को मैं क्रम से कहता हूं ॥ २४ ॥ कि सीतापुर, श्रीक्षेत्र, मगोड़ी, ज्येष्ठलोज व उसके उपरान्त शेरथा कहा गया है ॥ २५ ॥ और छेदे, ताली, वनोडी व गोव्यंदली, कंटाचोषली, कोहेच व चंदन ॥ २६ ॥ और थलग्राम, सोह, हाथंज व कपडवाणक,

गोत्राणि दशपञ्च तथैव च ॥ भारद्वाजस्तथा वत्सः कौशिकः ८ कुश एव च ॥ २२ ॥ शाण्डिल्यः ५ कश्यपश्चैव गौतमश्छादनस्तथा ८ ॥ जातूकर्ण्यस्तथा कुन्तो वशिष्ठो ११ धारणस्तथा ॥ २३ ॥ आत्रेयोर्माण्डिलश्चैव १४ लौगाक्षश्च १५ ततः परम् ॥ स्वस्थानानां च नामानि प्रवक्ष्याम्यनुपूर्वशः ॥ २४ ॥ सीतापुरं च श्रीक्षेत्रं २ मगोडी च ३ तथा स्मृता ॥ ज्येष्ठलोजस्तथा चैव शेरथा च ततः परम् ॥ २५ ॥ छेदे ताली वनोडी च गोव्यन्दली तथैव च ॥ कण्टाचोषली चैव कोहेचं चन्दनस्तथा ॥ २६ ॥ थलग्रामश्च सोहं च हाथजं कपडवाणकम् ॥ व्रजन्होरी च वनोडी च फीणां वगोलं दृणस्तथा ॥ २७ ॥ थलजा चारणं सिद्धा भालजाश्च ततः परम् ॥ महोवी आईया मलीआ गोधरीग्राम तः परम् ॥ २८ ॥ वाठसुहाली तथा चैव माणजा सानदीयास्तथा ॥ आनन्दीया पाटडीग्रटीकोलीया ततः परम् ॥ २९ ॥ गम्भी धणीआ मात्रा च नातमोरास्तथैव च ॥ वलोला रान्त्यजाश्चैव रूपोला बोधणी च वै ॥ ३० ॥ छत्रोटा अलुएवा च वासतडीग्रामतः परम् ॥ जाषासणा गोतीया च चरणीया दुधीयास्तथा ॥ ३१ ॥ हालोला वै

व्रजन्होरी, वनोड़ी, फीणा, वगोल व दृण ॥ २७ ॥ और थलजा, चारण, सिद्धा तदनन्तर भालजा, महोवी, आईया, मलीआ व इसके उपरान्त गोधरीग्राम् ॥ २८ ॥ और वाठसुहाली, माणजा, सानदीया, आनन्दीया, पाटडीग्र तदनन्तर टीकोलीआ ॥ २९ ॥ और गंभी, धणीआ, मात्रा व नातमोरा, वलोला, रांत्यजा, रूपोला व बोधणी ॥ ३० ॥ और छत्रोटा, अलुएवा, वासतडीग्राम् व इसके उपरान्त जाषासणा, गोतीया, चरणीया और दुधीया ॥ ३१ ॥ हालोला, वैहोला, असाला, नालाडा,

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

देहोलो, सौहासीया और संहालीया ॥ ३२ ॥ व स्वस्थान इन पचपन ग्रामों को क्रम से श्रीरामजी ने विधिपूर्वक करके ब्राह्मणों के लिये दिया है ॥३३॥ इसके उपरान्त स्व-स्थान के गोत्र में उपजे हुए ब्राह्मणों को व प्रवरों को यथायोग्य विधिपूर्वक कहता हूं ॥ ३४ ॥ क्योंकि गोत्रदेवी व प्रवर को जानकर स्वस्थान होता है और ब्राह्मण अपने स्थान में बसते हैं ॥ ३५ ॥ नारदजी बोले कि गोत्र कैसे जाना जाता है व कुल कैसे जाना जाता है ? और देवी कैसे जानी जाती है ? उसको यथार्थ कहिये ॥३६॥ ब्रह्माजी

होला च असाला नालाडास्तथा ॥ देहोलोसौहासीया च संहालीयास्तथैव च ॥ ३२ ॥ स्वस्थानं पञ्चपञ्चाशद्ग्रामा एते ह्यनुक्रमात् ॥ दत्ता रामेण विधिवत्कृत्वा विप्रेभ्य एव च ॥ ३३ ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि स्वस्थानस्य च गोत्रजान् ॥ तथा हि प्रवरांश्चैव यथावद्विधिपूर्वकम् ॥ ३४ ॥ ज्ञात्वा तु गोत्रदेवीं च तथा प्रवरमेव च ॥ स्वस्थानं जायते चैव द्विजाः स्वस्थानवासिनः ॥ ३५ ॥ नारद उवाच ॥ कथं च ज्ञायते गोत्रं कथं तु ज्ञायते कुलम् ॥ कथं वा ज्ञायते देवी तद्वदस्व यथार्थतः ॥ ३६ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ सीतापुरं तु प्रथमं प्रवरद्वयमेव च ॥ कुशवत्सौ तथा चात्र मया ते परिकीर्त्तितौ ॥ ३७ ॥ १ द्वितीयं चैव श्रीक्षेत्रं गोत्राणां त्रयमेव च ॥ छान्दनसस्तथा वत्सस्तृतीयं कुशमेव च ॥ ३८ ॥ तृतीयं मुद्गलं चैव कुशभारद्वाजमेव च ३ ॥ शोहोली च चतुर्थं वै कुशप्रवरमेव च ॥ ३९ ॥ ज्येष्ठला पञ्चमश्चैव कुशवत्सौ प्रकीर्त्तितौ ५ ॥ श्रेयस्थानं हि षष्ठं वै भारद्वाजः कुशस्तथा ६ ॥ ४० ॥ दन्ताली सप्तमं चैव भारद्वाजः कुशस्तथा ७ ॥ वटस्थानमष्टमं च निबोध सुतसत्तम ॥ ४१ ॥ तत्र गोत्रं कुशं कुत्सं भारद्वाजं तथैव च ॥ राज्ञः पुरं नवमं च भारद्वाज

बोले कि पहला सीतापुर और कुश व वत्स दो प्रवरों को मैंने यहां तुमसे कहा है ॥ ३७ ॥ और दूसरा श्रीक्षेत्र है व तीन गोत्र हैं छांदनस, वत्स व तीसरा कुश है ॥ ३८ ॥ और तीसरा मुद्गल है व कुश और भारद्वाज प्रवर हैं और चौथा शोहोली ग्राम है व कुशप्रवर है ॥ ३९ ॥ और पांचवां ज्येष्ठला ग्रामहै व वत्स और कुशप्रवर कहे गये हैं ॥५॥ और छठां श्रेयस्थान है व भारद्वाज और कुश प्रवर हैं ॥ ४० ॥ और सातवां दंताली ग्राम है व भारद्वाज और कुश प्रवर हैं व हे उत्तम सुत ! आठवां वटस्थान जानिये ॥४१॥ वहां

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कुश, कुत्स व भारद्वाजगोत्र है और नवां राजापुर है व भारद्वाज प्रवर है ॥ ४२ ॥ और दशवां कृष्णवाट नगर है व कुश प्रवर है और गेरहवां दहलोटपुर है व वत्स प्रवर है ॥ ४३ ॥ और बारहवां चेखलीपुर है व पौककुश प्रवर है ॥ ४४ ॥ और चांचोदखे, देहोलोडी, आत्रय, वत्स व कुत्सक प्रवर हैं और भारद्वाजी, कोणायाग्राम हैं व भारद्वाज, गोलंद्दणा और शकु प्रवर हैं ॥ ४५ ॥ और थलत्यजाद्दय ग्राम में कुश व धारण प्रवर हैं और नारणसिद्धा स्वस्थान है व कुत्सगोत्र कहागया है ॥४६॥ और भालजाग्राम में कुत्स व वत्स प्रवर हैं और मोहोवी व आकुश हैं तथा ईयाश्लीआ, शांडिल और गोधरीपात्र हैं ॥ ४७ ॥ व आनंदीयाग्राम है और

प्रवरमेव च ९ ॥ ४२ ॥ कृष्णवाटं दशमं चैव कुशप्रवरमेव च ॥ दहलोडमेकादशं वत्सप्रवरमेव हि ॥ ४३ ॥ चेखली द्वादशं पौककुशप्रवरमेव च ॥ ४४ ॥ चाञ्चोदखे देहोलोडी आत्रयश्च वत्सकुत्सकश्चैव ॥ भारद्वाजीकोणाया च भारद्वाजगोलंद्दणाशकुस्तथा ॥ ४५ ॥ थलत्यजाद्दये चैव कुशधारणमेव च ॥ नारणसिद्धा च स्वस्थानं कुत्सं गोत्रं प्रकीर्तितम् ॥ ४६ ॥ भालजां कुत्सवत्सौ च मोहोवी आकुशस्तथा ॥ ईयाश्लीआ शाण्डिलश्च गोधरीपात्रमेव च ॥४७॥ आनन्दीया द्वे चैव भारद्वाजशाण्डिलश्चैवपाटडीआ कुशमेव च ॥ ४८ ॥ वांसडीआश्चैव जास्वा कौत्समणा वत्स आत्रेयौ गीता आकुशगोतमौ ॥ ४९ ॥ चरणीआ भारद्वाजः दुधी आधारणसा हि अहोसोन्ना शाण्डिल्यस्तथा ॥ ५० ॥ वैलोला हुशश्चैवा असाला कुशश्चैव धारणा च द्वितीयकम् ॥ ५१ ॥ नालोला वत्सधारणीया च देलोला कुत्समेव च ॥ सोहासीया भारद्वाजकुशवत्समेव च ॥ ५२ ॥ सुहालीआ वत्सं वै प्रोक्तं गोत्राणि यथाक्रमम् ॥

उसमें दो गोत्र हैं भारद्वाज व शांडिल और पाटडीआ ग्राम है व कुश गोत्र है ॥ ४८ ॥ और बाँसडीआ, जास्वा, कौतसमणा ग्राम हैं व इनमें वत्स और आत्रेय गोत्र है व गीता ग्राम है और आकुश व गौतम प्रवर हैं ॥ ४९ ॥ और चरणीआ ग्राम है व भारद्वाज गोत्र है और दुधीआ धारणसा, अहोसोन्ना ग्राम है व शांडिल्यगोत्र है ॥ ५० ॥ व वैलोला, हुशश्चैवा, असाला ग्राम हैं और कुश व दूसरा धारणागोत्र है ॥ ५१ ॥ और नालोला ग्राम है व वत्स और धारणीय गोत्र हैं व देलोला ग्राम है और कुत्स गोत्र है और सोहासीया ग्राम है उसमें भारद्वाज, कुश व वत्स गोत्र हैं ॥ ५२ ॥ और जो सुहालीआ ग्राम है उसमें वत्स गोत्र है मैंने यहां क्रम से गोत्रों व स्वस्थानों को

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहा ॥ ५३ ॥ और शीतवाडिया ग्राम है उसमें जो गोत्र कहे गये वे ये हैं कि कुश, वत्स और विश्वामित्र, देवरात और तीसरा दल गोत्र है ॥५४॥ और भार्गव, च्यवन, आप्नवान्, और्व व जमदग्नि ये गोत्र हैं और वचा, अर्द्धशेषा व बुटला ये गोत्रदेवियां कही गई हैं ॥ ५५॥ यह प्रथम गोत्र समाप्त हुआ ॥१॥ दूसरा श्रीक्षेत्र कहा गया है और दो गोत्र हैं छान्दनस व वत्स और दो देवियां हैं ॥ ५६ ॥ और आंगिरस, अम्बरीष, यौवनाश्व, भृगु, च्यवन, आप्नवान्, और्व व जमदग्नि ये प्रवर हैं ॥ ५७ ॥ व हे मुनिसत्तम ! एक भट्टारिका व दूसरी शेपलादेवी कही गई है और जो इस वंश में उत्पन्न हैं उनको सुनिये ॥ ५८ ॥ कि वे क्रोधसमेत व उत्तम आचारवाले

मया प्रोक्तानि चैवात्र स्वस्थानानि यथाक्रमम् ॥ ५३ ॥ शीतवाडिया ये प्रोक्ताः कुशो वत्सस्तथैव च॥ विश्वामित्रो देवरातस्तृतीयो दलमेव च॥ ५४ ॥ भार्गवच्यावनाप्नवानौर्वजमदग्निरेव हि ॥ वचार्द्धशेषाबुटला गोत्रदेव्यः प्रकीर्तिताः॥ ५५ ॥ इति प्रथमं गोत्रम् ॥ १ ॥ श्रीक्षेत्रं द्वितीयं प्रोक्तं गोत्रद्वितयमेव च ॥ छान्दनसस्तथा वत्सं देवी द्वितयमेव च ॥ ५६ ॥ आङ्गिरसाम्बरीषश्च यौवनाश्वस्तथैव च ॥ भृगुच्यवनआप्नवानौर्वजमदग्निमेव च ॥ ५७ ॥ देवी भट्टारिका प्रोक्ता द्वितीया शेपला तथा॥ एतद्वंशोद्भवा ये च शृणु तान्मुनिसत्तम ॥ ५८ ॥ सक्रोधनाः सदाचाराः श्रौतस्मार्तक्रियापराः ॥ पञ्चयज्ञरता नित्यं स्वसम्बन्धसमाश्रिताः ॥ कृतज्ञाः क्रतुजाश्चैव ते सर्वे द्विजसत्तमाः ॥ ५९ ॥ इति द्वितीयगोत्रम् ॥ २॥ तृतीयं मगोडोआ वै गोत्रद्वितयमेव च ॥ भारद्वाजस्तथा कुत्सं देवीद्वितयमेव च ॥ ६० ॥ आङ्गिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजस्तथैव च ॥ विश्वामित्रदेवरातौ प्रवरत्रयमेव च ॥ ६१ ॥ शेषला बुधला प्रोक्ताधारशान्तिस्तथैव च ॥ अस्मिन्ग्रामे च ये जाता ब्राह्मणाः सत्यवादिनः ॥ ६२ ॥ द्विजपूजाक्रियायुक्ता नानायज्ञक्रिया

और श्रौत, स्मार्त कर्मों में परायण हैं व नित्य पञ्चयज्ञों में परायण तथा अपने संबन्ध में आश्रित हैं और वे सब नृपोत्तम कृतज्ञ व यज्ञ से उत्पन्न हैं॥ ५९ ॥ यह दूसरा गोत्र समाप्त हुआ ॥ २ ॥ और तीसरा मगोडोआ नगर है व दो गोत्र हैं भारद्वाज व कुत्स और दो देवी हैं ॥ ६० ॥ आंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज, विश्वामित्र व देवरात ये तीन प्रवरहैं ॥ ६१ ॥ और शेषला, बुधला व धारशान्ति कहीगई है और इस ग्राम में जो उत्पन्न हैं वे ब्राह्मण सत्यवादी हैं ॥ ६२ ॥ और ब्राह्मणों की पूजा व कर्म में

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

युक्त हैं तथा अनेक प्रकार के यज्ञकर्मों में परायण हैं व इस गोत्र में उत्पन्न सब ब्राह्मण मुनीश्वर हैं ॥ ६३ ॥ यह तीसरा गोत्र समाप्त हुआ ॥३॥ चौथा शीहोलिया ग्राम है और दो गोत्र हैं विश्वामित्र, देवरात व तीसरा दल है ॥ ६४ ॥ और उनकी चचाई देवी गोत्रदेवी कही गई है व इस गोत्र में जो उत्पन्न हैं वे दुर्बल व उदासीनमन हैं ॥ ६५ ॥ व हे नृपोत्तम ! वे ब्राह्मण असत्यवादी व लोभी हैं व हे ब्रह्मसत्तम ! वे ब्राह्मण सब विद्याओं में प्रवीण हैं ॥ ६६ ॥ यह चौथा स्थान समाप्त हुआ ॥ ४ ॥ और ज्येष्ठलोजा पांचवां स्वस्थान है व वत्सशीया और कुत्सशीया ये दो प्रवर कहेगये हैं ॥६७॥ और आवरिवृवाप्र, यौवनाश्व, भृगु, च्यवन, आप्न, और्व, जमदग्नि ये गोत्र

पराः ॥ अस्मिन्गोत्रे समुत्पन्ना द्विजाः सर्वे मुनीश्वराः ॥ ६३ ॥ इति तृतीयगोत्रम् ॥ ३ ॥ चतुर्थं शीहोलियाग्रामं गोत्रद्वितयमेव च ॥ विश्वामित्रदेवरातस्तृतीयो दलमेव च ॥ ६४ ॥ देवी चचाई वै तेषां गोत्रदेवी प्रकीर्तिता ॥ अस्मिन्गोत्रे तु ये जाता दुर्बला दीनमानसाः ॥ ६५ ॥ असत्यभाषिणो विप्रा लोभिनो नृपसत्तम ॥ सर्व्वविद्याप्रवीणाश्च ब्राह्मणा ब्रह्मसत्तम ॥ ६६ ॥ इति चतुर्थं स्थानम् ॥ ४ ॥ ज्येष्ठलोजा पञ्चमं च स्वस्थानं परिकीर्तितम् ॥ वत्सशीया कुत्सशीया प्रवरद्वितयं स्मृतम् ॥ ६७ ॥ आवरिवृवाप्रःयौवनाश्वभृगुच्यवनआप्नौर्वजमदग्निस्तथैव हि ॥ ६८ ॥ चचाई वत्सगोत्रस्य शान्ता च कुत्सगोत्रजा ॥ एतैस्त्रिभिः पञ्चभिश्च द्विजा ब्रह्मस्वरूपिणः ॥ ६९ ॥ शान्ता दान्ताः सुशीलाश्च धनपुत्रैश्च संयुताः ॥ वेदाध्ययनहीनाश्च कुशलाः सर्वकर्मसु ॥ ७० ॥ सुरूपाश्च सदाचाराः सर्वधर्मेषु निष्ठिताः ॥ दानधर्म्मरताः सर्वे अत्रजा जलदा द्विजाः ॥ ७१ ॥ इति पञ्चमं स्थानम् ॥ ५ ॥ शेरथाग्रामेषु वै जाताः प्रवर

हैं ॥ ६८ ॥ और वत्स गोत्र की चचाई देवी है व कुत्सगोत्र में उत्पन्न शांता देवी है और इन तीनों व पांचों से ब्राह्मण ब्रह्मस्वरूपी होते हैं ॥ ६९ ॥ और वे शान्त, दान्त, सुशील व धन और पुत्रों से संयुत होते हैं व वेदपाठ से संयुत और सब कर्मों में प्रवीण होते हैं ॥७०॥ और उत्तम रूपवान् तथा अच्छे आचरणवाले व सब धर्मों में परायण होते हैं और इसमें पैदा हुए सब ब्राह्मण दान धर्म में परायण व जलदायक होते हैं ॥ ७१ ॥ यह पांचवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ५ ॥ और शेरथा ग्रामों में जो

CC-0. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उत्पन्न हैं वे दो प्रवरों से संयुत हैं कुश व भारद्वाज और दो देवी हैं ॥ ७२ ॥ विश्वामित्र, देवरात व तीसरा दल है और आंगिरस, बार्हस्पत्य व भारद्वाज ये गोत्र हैं ॥७३॥ और कमला महालक्ष्मी व दूसरी यक्षिणी है और इस गोत्र में जो उत्पन्न हैं वे श्रौत स्मार्त कर्मों में परायण व विद्वान् होते हैं ॥ ७४ ॥ और वेदपाठ करनेवाले व तपस्वी तथा शत्रुमर्दक होते हैं और क्रोधी, लोभी, दुष्ट व यज्ञ करने और यज्ञ कराने में परायण हैं और सब वेदकर्म में तत्पर होते हैं वे ब्राह्मण मुझसे कहेगये ॥ ७५ ॥ यह छठां स्थान समाप्त हुआ ॥ ६ ॥ और दन्तालीया ग्राम में भारद्वाज, कुत्स व शाय, आंगिरस, बार्हस्पत्य व भारद्वाज गोत्र हैं ॥ ७६ ॥ और यक्षिणी व दूसरी कर्मलादेवी

द्वयसंयुताः ॥ कुशभारद्वाजाश्चैव देवीद्वयं तथैव च ॥ ७२ ॥ विश्वामित्रो देवरातस्तृतीयो दल एव च ॥ आङ्गिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजास्तथैव च ॥ ७३ ॥ कमला च महालक्ष्मीर्द्वितीया यक्षिणी तथा ॥ अस्मिन्गोत्रे च ये जाताः श्रौतस्मार्त्तरता बुधाः ॥ ७४ ॥ वेदाध्ययनशीलाश्च तापसाश्चारिमर्द्दनाः ॥ रोषिणो लोभिनो दुष्टा यजने याजने रताः ॥ ब्रह्मक्रियापराः सर्वे ब्राह्मणास्ते मयोदिताः ॥ ७५ ॥ इति षष्ठं स्थानम् ॥ ६ ॥ दन्तालीया भारद्वाजकुत्सशायास्तथैव च ॥ आङ्गिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजास्तथैव च ॥ ७६ ॥ देवी च यक्षिणी प्रोक्ता द्वितीया कर्मला तथा ॥ अस्मिन्गोत्रे च ये जाता वाडवा धनिनः शुभाः ॥ ७७ ॥ वस्त्रालङ्करणोपेता द्विजभक्तिपरायणाः ॥ ब्रह्मभोज्यपराः सर्वे सर्वे धर्मपरायणाः ॥ ७८ ॥ इति सप्तमं स्थानम् ॥ ७ ॥ वडोद्रीयान्वये जाताश्चत्वारः प्रवराः स्मृताः ॥ कुशः कुत्सश्च वत्सश्च भारद्वाजस्तथैव च ॥ ७९ ॥ तत्प्रवराण्यहं वक्ष्ये तथा गोत्राण्यनुक्रमात् ॥ विश्वामित्रो देवरातस्तृतीयोदल एव च ॥ ८० ॥ आङ्गिरसाम्बरीषश्च यौवनाश्व

कही गई है और इस गोत्र में जो ब्राह्मण उत्पन्न हैं वे धनी व शुभ होते हैं ॥७७॥ और वस्त्रों व भूषणों से संयुत तथा ब्राह्मणों की भक्ति में परायण हैं और सब ब्रह्मभोज में परायण व सब धर्म में परायण हैं ॥७८॥ यह सातवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ७ ॥ और जो वडोद्रीय के वंश में उत्पन्न हैं उनके चार प्रवर कहे गये हैं कुश, कुत्स, वत्स व भारद्वाज हैं ॥ ७९ ॥ और उनके प्रवरों व गोत्रों को मैं क्रम से कहता हूं कि विश्वामित्र, देवरात व तीसरा दल है ॥ ८० ॥ और आङ्गिरस, अम्बरीष व तीसरे यौवनाश्व

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हैं और भार्गव, च्यावन, आप्नवान्, और्व व जमदग्नि हैं ॥ ८१ ॥ और आंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज ये गोत्र हैं और कर्मला, क्षेमला और धारभट्टारिका ॥ ८२ ॥ और चौथी क्षेमला कही गई है ये क्रम से गोत्रमाता हैं व इस गोत्र में जो उत्पन्न हैं वे सदैव पञ्चयज्ञ में परायण हैं ॥ ८३ ॥ और लोभी, क्रोधी व बहुत प्रजाओंवाले और स्नान, दानादि में परायण व सदैव इन्द्रियों को जीतनेवाले होते हैं ॥ ८४ ॥ और हज़ारों बावली, कुँवा व तड़ागों के बनानेवाले होते हैं और व्रत करनेवाले व गुणज्ञ तथा मूर्ख व वेदों से रहित होते हैं ॥ ८५ ॥ यह आठवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ८ ॥ और उस गोदणीय नामक ग्राम में दो गोत्र टिके हैं पहला वत्स गोत्र है दूसरा

स्तृतीयकः ॥ भार्गवश्च्यावनाप्नवानौर्वजमदग्निस्तथैव च ॥ ८१ ॥ आङ्गिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजास्तथैव च ॥ कर्मला क्षेमलाचैव धारभट्टारिका तथा ॥ ८२ ॥ चतुर्थी क्षेमला प्रोक्ता गोत्रमाता अनुक्रमात् ॥ अस्मिन्गोत्रे तु ये जाताः पञ्चयज्ञरताः सदा ॥ ८३ ॥ लोभिनः क्रोधिनश्चैव प्रजायन्ते बहुप्रजाः ॥ स्नानदानादि निरताः सदा वै निर्जितेन्द्रियाः ॥ ८४ ॥ वापीकूपतडागानां कर्त्तारश्च सहस्रशः ॥ व्रतशीला गुणज्ञाश्च मूर्खा वेदविवर्जिताः ॥ ८५ ॥ इत्यष्टमं स्थानम् ॥ ८ ॥ गोदणीयाभिधे ग्रामे गोत्रौ द्वौ तत्र संस्थितौ ॥ वत्सगोत्रं प्रथमकं भारद्वाजं द्वितीयकम् ॥ ८६ ॥ भृगुच्यवनाप्नवानौर्वपुरोधसमेव च ॥ शीहरी प्रथमा ज्ञेया द्वितीया यक्षिणी तथा ॥ ८७ ॥ अस्मिन्गोत्रोद्भवा विप्रा धनधान्यसमन्विताः ॥ सामर्षा लौल्यहीनाश्च द्वेषिणः कुटिलास्तथा ॥ ८८ ॥ हिंसिनो धनलुब्धाश्च मया प्रोक्तास्तु भूपते ॥ ८९ ॥ इति नवमं स्थानम् ॥ ९ ॥ कएटवाडीआ ग्रामे विप्राः कुशगोत्र समुद्भवाः ॥ प्रवरं तस्य वक्ष्यामि शृणु त्वं च नृपो

भारद्वाज है ॥ ८६ ॥ और भृगु, च्यवन, आप्नवान्, और्व व पुरोधस ये प्रवर हैं और प्रथम देवी शीहरी व दूसरी यक्षिणी जानने योग्य है ॥ ८७ ॥ और इस गोत्र में उत्पन्न ब्राह्मण धन, धान्य से संयुत होते हैं और क्रोध समेत व चंचलता रहित तथा द्वेषी व कुटिल होते हैं ॥ ८८ ॥ व हे भूपते ! मुझसे वे हिंसक व धन के लोभी कहे गये ॥ ८९ ॥ यह नवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ९ ॥ व हे नृपोत्तम ! कराटवाडीआ ग्राम में ब्राह्मण कुश गोत्र में उत्पन्न हैं उसका प्रवर मैं कहता हूं तुम

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

सुनो ॥९० ॥ कि विश्वामित्र, देवरात व उदल ये तीन प्रवर कहेगये हैं व हे नृपोत्तम ! वह चचाई देवी कहां गई तुम सुनो ॥ ९१ ॥ और वहां प्रसन्न चित्त व सावधान मनवाले वे यज्ञों से पूजते हैं और वे ब्राह्मण सब विद्याओं में प्रवीण तथा सत्यवादी होते हैं ॥ ९२ ॥ यह दशवां स्थान समाप्त हुआ ॥ १० ॥ और मैंने जो वेखलोया ग्राम कहा है उसमें कुशवंश में उपजेहुए ब्राह्मण बसते हैं व हे नृपोत्तम ! वे तीन प्रवरों से संयुत होते हैं उनको सुनो ॥ ९३ ॥ कि विश्वामित्र, देवराज और औदल ये तीन प्रवर कहे गये हैं और उनके कुल की रक्षा करनेवाली चचाई देवी कहीगई है ॥ ९४ ॥ और ब्राह्मण महात्मा, सत्त्ववान् व गुण से संयुत होते हैं और तपस्वी,

त्तम ॥ ९० ॥ विश्वामित्रो देवरात उदलश्च त्रयः स्मृताः ॥ चचाई देवी सा प्रोक्ता शृणु त्वं नृप सत्तम ॥ ९१ ॥ यजन्ते क्रतुभिस्तत्र हृष्टचित्तैकमानसाः ॥ सर्वविद्यासु कुशला ब्राह्मणाः सत्यवादिनः ॥९२॥ इति दशमं स्थानम् ॥ १० ॥ वेखलोया मया प्रोक्ता कुत्सवंशे समुद्भवाः ॥ प्रवरत्रयसंयुक्ताः शृणु त्वं च नृपोत्तम ॥ ९३ ॥ विश्वामित्रो देवराजौदलश्चेति त्रयः स्मृताः ॥ चचाई देवी तेषां वै कुलरक्षाकरी स्मृता ॥ ९४ ॥ ब्राह्मणाश्च महात्मानः सत्त्ववन्तो गुणान्विताः ॥ तपस्वियोगिनश्चैव वेदवेदाङ्गपारगाः ॥ ९५ ॥ साधवश्च सदाचारा विष्णुभक्तिपरायणाः ॥ स्नानसन्ध्यापरा नित्यं ब्रह्मभोज्यपरायणाः ॥ ९६ ॥ अस्मिन्वंशे मया प्रोक्ताः शृणु त्वं च अतः परम् ॥ ९७॥ इत्येकादशं स्थानम् ॥११॥ देहलोडीआ ये प्रोक्ताः कुत्सप्रवरसंयुताः ॥ आङ्गिरस आम्बरीषो युवनाश्वस्तृतीयकः ॥ ९८ ॥ गोत्रदेवी मया प्रोक्ता श्रीशेषदुर्बलेति च ॥ कुत्सवंशे च ये जाताः सद्वृत्ताः सत्यभाषिणः ॥ ९९ ॥ वेदाध्ययनशीलाश्च परच्छिद्रैकद

योगी व वेदों और वेदांगोंके पारगामी होते हैं ॥ ९५ ॥ और साधु व उत्तम आचार वाले तथा विष्णुजी की भक्ति में परायण होते हैं और स्नान व संध्या में तत्पर तथा नित्य ब्रह्मभोज में परायण होते हैं ॥ ९६ ॥ इस वंश में जो उत्पन्न हैं वे मुझसे कहे गये व इसके उपरान्त तुम सुनो ॥ ९७ ॥ यह गेरहवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ११ ॥ और देहलोडीआ ग्राम में जो ब्राह्मण कहेगये हैं वे कुत्स प्रवर से संयुत हैं और आंगिरस, आम्बरीष व तीसरा युवनाश्व प्रवर है ॥ ९८ ॥ व मैंने श्रीशेष दुर्बला ऐसी गोत्रदेवी कहा है और जो कुत्सवंश में उत्पन्न हैं वे उत्तम चरित्रवाले व सत्यवादी होते हैं ॥ ९९ ॥ और वेदपाठ से रहित व पराये छिद्र को देखनेवाले तथा क्रोधसहित

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व चंचलता से रहित और द्वेषी व कुटिल होते हैं ॥ १०० ॥ व जो कुत्सवंश में उत्पन्न हैं वे हिंसक और धन के लोभी होते हैं ॥ १ ॥ यह बारहवां स्थान समाप्त हुआ ॥ १२ ॥ और कोह ग्राम में तीन गोत्रों से संयुत ब्राह्मण कहेगये हैं भारद्वाज, वत्स व तीसरा कुश है ॥ २ ॥ और गोत्र के क्रम से मैं प्रवरों को कहता हूं कि भार्गव,च्यवन,आप्नवान्, और्व व जमदग्नि हैं ॥ ३ ॥ और तीसरा कुश प्रवर है व उसमें तीन प्रवर हैं विश्वामित्र, देवरात व तीसरा दल है ॥ ४ ॥ और पहली यक्षिणी व दूसरी शीहुरी देवी कहीगई है और क्रमपूर्वक गोत्र में उत्पन्न तीसरी चचाईदेवी है ॥ ५ ॥ व इस गोत्र में उत्पन्न ब्राह्मण श्रौतस्मार्त कर्मों में परायण व विद्वान् होते हैं और

शिनः ॥ सामर्षा लौल्यतो हीना द्वेषिणः कुटिलास्तथा ॥ १०० ॥ हिंसिनो धनलुब्धाश्च ये च कुत्ससमुद्भवाः ॥ १ ॥ इति द्वादशं स्थानम् ॥ १२ ॥ कोहे च ब्राह्मणाः प्रोक्ता गोत्र त्रितयसंयुताः ॥ भारद्वाजस्तथा वत्सस्तृतीयः कुश एव च ॥ २ ॥ प्रवराण्यहं तथा वक्ष्ये यथा गोत्रक्रमेण हि ॥ भार्गवच्यवनाप्नवानौर्वजमदग्निस्तथैव च ॥ ३ ॥ कुशप्रवरं तृतीयं तु प्रवरत्रयमेव च ॥ विश्वामित्रो देवरातस्तृतीयो दलमेव च ॥ ४ ॥ यक्षिणी प्रथमा प्रोक्ता द्वितीया शीहुरी तथा ॥ तृतीया चचाई प्रोक्ता यथानुक्रमगोत्रजा ॥ ५ ॥ अस्मिन्गोत्रे भवा विप्राः श्रौतस्मार्त्तरता बुधाः ॥ वेदाध्ययनशीलाश्च तापसाश्चारिमर्द्दनाः ॥ ६ ॥ रोषिणो लोभिनो दुष्टा यजने याजने रताः ॥ ब्रह्मकर्मपराः सर्वे मया प्रोक्ता द्विजोत्तमाः ॥ ७ ॥ इति त्रयोदशं स्थानम् ॥ १३ ॥ चान्दणखेडे ये जाता भारद्वाजसमुद्भवाः ॥ आङ्गिरसो बार्हस्पत्यस्तृतीयो भारद्वाजस्तथा ॥ ८ ॥ यक्षिणी चास्य वै देवी प्रोक्ता व्यासेन धीमता ॥ भारद्वाजास्तु ये जाता द्विजा ब्रह्मस्वरूपिणः ॥ ९ ॥ शान्ता दान्ताः सुशीलाश्च धनपुत्रसमन्विताः ॥ धर्मारण्ये द्विजाः श्रेष्ठाः क्रतुकर्माणि को

वेदपाठ करनेवाले व तपस्वी और शत्रुमर्दक होते हैं ॥ ६ ॥ और क्रोधी, लोभी,दुष्ट व यज्ञ करने और यज्ञ करानेमें परायण हैं व मैंने सब द्विजोत्तमों को ब्रह्मकर्म में परायण कहा है ॥ ७ ॥ यह तेरहवां स्थान समाप्त हुआ ॥ १३ ॥ और चांदड़खेड़ में जो उत्पन्न हैं वे भारद्वाज से उत्पन्न हैं और आंगिरस,बार्हस्पत्य व तीसरा भारद्वाज प्रवर है ॥ ८ ॥ और बुद्धिमान् व्यासजी ने इस गोत्र की यक्षिणी देवी कहा है और भारद्वाज गोत्र में जो उत्पन्न हैं वे ब्राह्मण ब्रह्मस्वरूपी हैं ॥ ९ ॥ और शांत, दांत, सुशील व धन

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

 और पुत्रों से संयुत होते हैं और धर्मारण्य में श्रेष्ठ ब्राह्मण यज्ञ कर्म में परायण हैं ॥ १० ॥ और गुरुवों की भक्ति में परायण सब अपने कुलको प्रकाशित करते हैं ॥ ११ ॥ यह चौदहवां स्थान समाप्त हुआ ॥ १४ ॥ और थल ग्राम में जो उत्पन्न हैं वे भारद्वाज से उत्पन्न हैं और आंगिरस, बार्हस्पत्य व तीसरा भारद्वाज प्रवर हैं ॥ १२ ॥ और इस गोत्र में जो उत्पन्न हैं वे ब्राह्मण उत्तम व धनी होते हैं और वस्त्रों व भूषणों से संयुत तथा ब्राह्मणों की भक्ति में परायण होते हैं॥ १३ ॥ और सब ब्रह्म भोज में परायण व सब धर्म में तत्पर होते हैं और गोत्र की देवी यक्षिणी नामक रक्षा करनेवाली मुझसे कहीगई ॥ १४ ॥ यह पंद्रहवां स्थान समाप्त हुआ ॥ १५ ॥

विदाः॥ १०॥ गुरुभक्तिरताः सर्वे भासयन्ति स्वकं कुलम् ॥ ११ ॥ इति चतुर्द्दशं स्थानम् ॥ १४॥ थलग्रामे च ये जाता भारद्वाजसमुद्भवाः ॥ आङ्गिरसो बार्हस्पत्यो भारद्वाजस्तृतीयकः ॥ १२ ॥ अस्मिन् गोत्रे च ये जाता वाडवा धनिनः शुभाः॥ वस्त्रालङ्करणोपेता द्विजभक्तिपरायणाः॥१३॥ ब्रह्मभोज्यपराः सर्वे सर्वे धर्मपरायणाः ॥ गोत्रदेवी मया ख्याता यक्षिणी नाम रक्षिणी ॥ १४॥ इति पञ्चदशं स्थानम्॥१५॥मोऊत्रीयाश्च ये जाता द्वौ गोत्रौ तत्र कीर्तितौ ॥ भारद्वाजः कश्यपश्च देवीद्वितयमेव च ॥ १५ ॥ चामुण्डा यक्षिणीचैव देवी चात्र प्रकीर्त्तिता ॥ कश्यपाऽवत्सारश्चैव नैध्रुवश्च तृतीयकः ॥ १६ ॥ आङ्गिरसो बार्हस्पत्यो भारद्वाजस्तृतीयकः ॥ प्रियवाक्या महादक्षा गुरुभक्ति रताः सदा ॥ १७॥ सदा प्रतिष्ठावन्तश्च सर्वभूतहिते रताः ॥ यजन्ति ते महायज्ञान्काश्यपा ये द्विजातयः ॥ १८ ॥ सर्वेषां याजनकरा याज्ञिकाः परमाः स्मृताः॥१९॥इति षोडशं स्थानम् ॥१६॥ हाथीजणे च ये जाता वात्सा भारद्वाजास्तथा॥ज्ञानजा यक्षि

और जो मोऊत्रीया ग्राममें उत्पन्न हैं उनमें दो गोत्र कहे गये हैं भारद्वाज व कश्यप और दो देवी हैं ॥ १५ ॥ चामुण्डा और यक्षिणी ये दो देवी इसमें कहीगई हैं और कश्यप अवत्सार व तीसरा नैध्रुव प्रवर हैं ॥ १६ ॥ और आंगिरस, बार्हस्पत्य व तीसरा भारद्वाज है और वे सब प्रियवचनवाले व बड़े प्रवीण तथा सदैव गुरुवों की भक्ति में परायण होते हैं ॥ १७ ॥ और सदैव प्रतिष्ठावाले व सब प्राणियों के हित में परायण होते हैं और जो कश्यपगोत्रवाले ब्राह्मण हैं वे महायज्ञों को करते हैं ॥ १८ ॥ और वे सबों को यज्ञ करानेवाले व उत्तम यज्ञकर्ता कहे गये हैं ॥ १९ ॥ यह सोलहवां स्थान समाप्त हुआ ॥ १६ ॥ और जो हाथी जड़ ग्राम में उत्पन्न हैं वे वात्स व भार

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

द्वाजगोत्रवाले हैं और ज्ञानजा व यक्षिणी गोत्र देवी कही गई हैं॥ २०॥ और जो इस गोत्र में उत्पन्न हैं वे सदैव पञ्चयज्ञों में परायण होते हैं व लोभी, क्रोधी और पुत्रवान् व बहुत शास्त्रों को पढ़नेवाले होतेहैं॥ २१॥ और स्नान, दानादि में तत्पर व विष्णुजी की भक्ति में परायण होते हैं और व्रत करनेवाले तथा गुण व ज्ञान से मूर्ख और वेदों से रहित होते हैं॥ २२॥ यह सत्रहवां स्थान समाप्त हुआ॥ १७॥ और कपड्वाण ग्राम में उत्पन्न ब्राह्मण भारद्वाज व कुशगोत्रवाले हैं और यक्षिणी व दूसरी चचाईदेवी कही गई है॥ २३॥ और आंगिरस, बार्हस्पत्य व तीसरा भारद्वाज गोत्र है और विश्वामित्र, देवरात व तीसरा दल प्रवर है॥ २४॥ और इस

णी चैव गोत्रदेव्यौ प्रकीर्तिते॥ २०॥ अस्मिन्गोत्रे च ये जाताः पञ्चयज्ञरताः सदा॥ लोभिनः क्रोधिनश्चैव प्रजावन्तो बहुश्रुताः॥ २१॥ स्नानदानादिनिरता विष्णुभक्तिपरायणाः॥ व्रतशीला गुणज्ञानमूर्खा वेदविवर्जिताः॥ २२॥ इति सप्तदशं स्थानम्॥ १७॥ कपड्वाणजा ब्राह्मणास्तु भारद्वाजाः कुशास्तथा॥ देवी च यक्षिणी प्रोक्ता द्वितीया चचाई तथा॥ २३॥ आङ्गिरसबार्हस्पत्यौ भारद्वाजस्तृतीयकः॥ विश्वामित्रो देवरातस्तृतीयो दल एव च॥२४॥ अस्मिन्गोत्रे च ये जाताः सत्यवादिजितव्रताः॥ जितेन्द्रियाः सुरूपाश्च अल्पाहाराः शुभाननाः॥ २५॥ सदोद्यताः पुराणज्ञा महादानपरायणाः॥ निर्द्वेषिणो लोभयुता वेदाध्ययनतत्पराः॥ २६॥ दीर्घदर्शिनो महातेजा महामाया विमोहिताः॥२७॥ इत्यष्टादशं स्थानम्॥ १८॥ जन्होरीवाडवाः प्रोक्ताः कुशप्रवरसंयुताः॥ विश्वामित्रो देवरातस्तृतीयोदल एव च॥ २८॥ तारणी च महामाया गोत्रदेवी प्रकीर्त्तिता॥ अस्मिन्वंशे समुत्पन्ना वाडवा दुःसहा नृप॥ २९॥ महो

गोत्र में जो उत्पन्न हैं वे सत्यवादी व व्रतों को जीतनेवाले तथा जितेन्द्रिय व स्वरूप वान् और थोड़ा भोजन करनेवाले व उत्तम मुखवाले होते हैं॥ २५॥ और सदैव उद्यत व पुराणों को जाननेवाले तथा महादानों में परायण और वैररहित, लोभ संयुत व वेदपाठ में परायण रहते हैं॥ २६॥ और बड़े तेजस्वी व महामाया से मोहित होते हैं॥ २७॥ यह अट्ठारहवां स्थान समाप्त हुआ॥ १८॥ और जन्होरी ग्राम के ब्राह्मण कुश के प्रवर से संयुत होते हैं और विश्वामित्र, देवरात व तीसरा औदल प्रवर है॥ २८॥ और तारणी महादेवी गोत्रदेवी कही गई है व हे राजन्! इस बंश में उपजे हुए ब्राह्मण दुस्सह होते हैं॥ २९॥ और बड़े उग्र व बड़े शरीर

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वाले तथा लम्बे व बड़े गर्वित होते हैं और क्लेशरूप व काले रंग वाले तथा सब शास्त्रों में चतुर होते हैं ॥ ३० ॥ और बहुत भोजन करनेवाले तथा प्रवीण व वैर और पाप से रहित व उत्तम वस्त्र और भूषण व रूपवाले व ब्रह्मवादी ब्राह्मण होते हैं ॥ ३१ ॥ यह उन्नीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ १९ ॥ और वनोडीया ग्राम में जो ब्राह्मण उत्पन्न हैं उनके तीन गोत्र हैं कुश व कुत्सप्रवर और तीसरा भारद्वाज है ॥ ३२ ॥ और विश्वामित्र,देवरात व तीसरा औदल है और आंगिरस, आम्बरीष व तीसरा युवनाश्वहै ॥ ३३ ॥ और आंगिरस, बार्हस्पत्य व भारद्वाज हैं और पहली देवी शेषला व दूसरी शांता कही गई है ॥ ३४ ॥ और तीसरी धारशांति है ये क्रम से गोत्रदेवियां

त्कटा महाकायाः प्रलम्बाश्च महोद्धताः ॥ क्लेशरूपाः कृष्णवर्णाः सर्वशास्त्रविशारदाः ॥ ३० ॥ बहुभुग्धनिनो दक्षा द्वेषपापविवर्जिताः ॥ सुवस्त्रभूषा वै रूपा ब्राह्मणा ब्रह्मवादिनः ॥ ३१ ॥ इत्येकोनविंशतितमं स्थानम् ॥ १९ ॥ वनोडीयाश्च ये जाता गोत्राणां त्रयमेव च ॥ कुशकुत्सौ च प्रवरौ तृतीयो भारद्वाजस्तथा ॥ ३२ ॥ विश्वामित्रो देवरातस्तृतीयोदल एव च ॥ आङ्गिरस आम्बरीषो युवनाश्वस्तृतीयकः ॥ ३३ ॥ आङ्गिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजास्तथैव च ॥ शेषला प्रथमा प्रोक्ता तथा शान्ता द्वितीयका ॥ ३४ ॥ तृतीया धारशान्तिश्च गोत्रदेव्यो ह्यनुक्रमात् ॥ अस्मिन्गोत्रे तु ये जाता दुर्बला दीनमानसाः ॥ ३५ ॥ असत्यभाषिणो विप्रा लोभिनो नृपसत्तम ॥ सर्वविद्याकुशलिनो ब्राह्मणा ब्रह्मवित्तमाः ॥ ३६ ॥ इति विंशतितमं स्थानम् ॥ २० ॥ कीणावाचनकं स्थानं यदेकाधिकविंशतिः ॥ भारद्वाजाश्च विप्रेन्द्राः कथिता ब्राह्मणाः शुभाः ॥ ३७ ॥ आङ्गिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजास्तथैव च ॥ यक्षिणी च तथा देवी गोत्रदेवी प्रकीर्तिता ॥ ३८ ॥ अस्मिन्गोत्रे च ये जाता वाडवा धनिनः शुभाः ॥ वस्त्रालंकरणोपेता द्विजभक्ति

हैं व इस गोत्र में जो उत्पन्न हैं वे दुर्बल व दीनमनवाले होते हैं ॥ ३५ ॥ व हे नृपोत्तम ! वे ब्राह्मण असत्यवादी व लोभी होते हैं और वे ब्राह्मण सब विद्याओं में प्रवीण व ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ होते हैं ॥ ३६ ॥ यह बीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ २० ॥ और कीणावाचनक नामक जो इक्कीसवां स्थान है उसमें भारद्वाज गोत्रवाले उत्तम द्विजेन्द्र द्विज कहे गये हैं ॥ ३७ ॥ और आंगिरस, बार्हस्पत्य व भारद्वाज प्रवर हैं व यक्षिणीदेवी गोत्रदेवी कहीगई है ॥ ३८ ॥ व इस गोत्रमें जो ब्राह्मण उत्पन्न हैं

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वे धनी व उत्तम होते हैं और वस्त्रों व भूषणों से संयुत तथा ब्राह्मणों की भक्ति में परायण होते हैं ॥ ३६ ॥ और सब ब्रह्मभोज में परायण व सब धर्म में परायण होते हैं ॥ ४० ॥ यह इक्कीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ २१ ॥ और गोविंदणा स्वस्थान में जो उत्पन्न हैं वे श्रेष्ठ ब्राह्मण हैं और कुश गोत्र कहागया है व तीन प्रवर हैं ॥ ४१ ॥ विश्वामित्र, देवरात व औदल प्रवर है और चचाई महादेवी गोत्रदेवी कही गई है ॥ ४२ ॥ और इस गोत्र में जो उत्पन्न हैं वे ब्राह्मण ब्रह्मज्ञानी होते हैं और वहां प्रसन्न चित्त व सावधान मनवाले वे यज्ञों से पूजते हैं ॥ ४३ ॥ और वे ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ व ब्रह्मण्य ब्राह्मण सब विद्याओं में चतुर होतेहैं ॥ ४४ ॥ यह बाईसवां स्थान

परायणाः ॥ ३६ ॥ ब्रह्मभोज्यपराः सर्वे सर्वे धर्म्मपरायणाः ॥ ४० ॥ इत्येकविंशतितमं स्थानम् ॥ २१ ॥ गोविन्दणा च स्वस्थाने ये जाता ब्रह्मसत्तमाः ॥ कुशगोत्रं च वै प्रोक्तं प्रवरत्रयमेव च ॥ ४१ ॥ विश्वामित्रो देवरातौदलप्रवरमेव च ॥ चचाई च महादेवी गोत्रदेवी प्रकीर्तिता ॥ ४२ ॥ अस्मिन्गोत्रे च ये जाता ब्राह्मणा ब्रह्मवेदिनः ॥ यजन्ते क्रतुभिस्तत्र हृष्टचित्तैकमानसाः ॥४३॥ सर्वविद्यासु कुशला ब्रह्मण्या ब्रह्मवित्तमाः ॥४४॥ इति द्वाविंशतितमं स्थानम् ॥२२॥ थलत्यजा हि विप्रेन्द्रा द्वौ गोत्रौ चाप्यधिष्ठितौ ॥ धारणं संकुशं चैव गोत्रद्वितयमेव च ॥ ४५ ॥ अगस्त्यो दार्ढ्यच्युतश्च रथ्यवाहनमेव च ॥ विश्वामित्रो देवरातस्तृतीयौदल एव च ॥ ४६ ॥ देवी च छत्रजा प्रोक्ता द्वितीया थलजा तथा ॥ धारणसगोत्रे ये जाता ब्रह्मण्या ब्रह्मवित्तमाः ॥ ४७ ॥ त्रिप्रवराश्चैव विख्याता सत्त्ववन्तो गुणान्विताः ॥ तदन्वये च ये जाता धर्मकर्म्मसमाश्रिताः ॥ ४८ ॥ धनिनो ज्ञाननिष्ठाश्च तपोयज्ञक्रियादिषु ॥ त्रयोविंशं प्रोक्तमेतत्स्थानं

समाप्त हुआ ॥ २२ ॥ और थलत्यजा ग्राम में जो द्विजेन्द्र हैं उनमें दो गोत्र स्थित हैं धारण और संकुश ये दो गोत्रहैं ॥ ४५ ॥ और अगस्त्य, दार्ढ्यच्युत व रथ्यवाहन और विश्वामित्र, देवरात व तीसरा औदल प्रवर है ॥ ४६ ॥ और छत्रजा देवी व दूसरी थलजा देवी है और जो धारणस गोत्र में उत्पन्न हैं वे ब्रह्मण्य व ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ हैं ॥ ४७ ॥ और तीन प्रवरवाले वे सत्त्ववान् व गुणों से संयुत होते हैं और उसके वंश में जो उत्पन्न हैं वे धर्म व कर्म में आश्रित होतेहैं ॥ ४८ ॥ और धनी व

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

ज्ञान में तत्पर तथा तपस्या व यज्ञ कार्यादिकों में परायण होतेहैं मोढ जातिवालों का यह तेईसवां स्थान है ॥ ४६ ॥ यह तेईसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ २३ ॥ और ज्ञानियों में श्रेष्ठ जो वारण सिद्ध ब्राह्मण कहे गये हैं व इस गोत्र में जो ब्राह्मण हैं वे सत्यवादी व व्रतों को जीतनेवाले हैं ॥ ५० ॥ और जितेन्द्रिय व स्वरूपवान् तथा थोड़े भोजन व उत्तम मुखवाले हैं और सदैव उद्यत व पुराणोंको जाननेवाले तथा महादानों में परायण हैं ॥ ५१ ॥ और निश्शत्रु व बिनलोभसे संयुत तथा वेदपाठ में तत्पर होते हैं और विद्वान् व बड़े तेजस्वी तथा महामायासे मोहित होतेहैं ॥ ५२ ॥ यह चौबीसवां स्वस्थान कहागया जोकि श्रेष्ठ माना गया है ॥ ५३ ॥ यह चौबीसवां

मोढकजातिनाम् ॥ ४६ ॥ इति त्रयोविंशतितमं स्थानम् ॥ २३ ॥ वारणसिद्धाश्च ये प्रोक्ता ब्राह्मणा ज्ञानवित्तमाः ॥ अस्मिन्गोत्रे च ये विप्राः सत्यवादिजितव्रताः ॥ ५० ॥ जितेन्द्रियाः सुरूपाश्च अल्पाहाराः शुभाननाः ॥ सदोद्यताः पुराणज्ञा महादानपरायणाः ॥ ५१ ॥ निर्द्वेषिणोऽलोभयुता वेदाध्ययनतत्पराः ॥ दीर्घदर्शिनो महातेजा महामायाविमोहिताः ॥ ५२ ॥ चतुर्विंशतितमं प्रोक्तं स्वस्थानं परमं मतम् ॥ ५३ ॥ इति चतुर्विंशतितमं स्थानम् ॥ २४ ॥ भालजाश्चात्र वै प्रोक्ता ब्राह्मणाः सत्यवादिनः ॥ ५४ ॥ वत्सगोत्रं कुशं चैव गोत्रद्वितयमेव च ॥ तेषां प्रवराण्यहं वक्ष्ये पञ्चत्रितयमेव च ॥ भृगुश्च्यवनाप्नवानौर्वजमदग्निस्तथैव च ॥ ५५ ॥ आङ्गिरसोम्बरीषश्च यौवनाश्वस्तृतीयकः ॥ शान्ता च शेषला चात्र देवीद्वितयमेव च ॥ ५६ ॥ अस्मिन्वंशे समुत्पन्ना सद्वृत्ताः सत्यभाषिणः ॥ शान्ताश्च भिन्नवर्णाश्च निर्धनाश्च कुचैलिनः ॥ ५७ ॥ सगर्वा लौल्य युक्ताश्च वेदशास्त्रेषु निश्चलाः ॥ पञ्चविंशतिमं प्रोक्तं

स्थान समाप्त हुआ ॥ २४ ॥ और यहां भालज व सत्यवादी ब्राह्मण कहेगयेहैं ॥ ५४ ॥ और वत्स गोत्र व कुश ये दो गोत्र कहे गये हैं उनके पांच व तीन प्रवरों को मैं कहता हूं कि भृगु, च्यवन, आप्नवान, और्व व जमदग्नि ॥ ५५ ॥ और आंगिरस, अम्बरीष व तीसरा युवनाश्व है और इसमें शांता व शेषला दो देवी हैं ॥ ५६ ॥ और इस वंश में उपजे हुए ब्राह्मण उत्तमचरित्रवाले व सत्यवादी होते हैं और शांत व भिन्न रंगवाले तथा निर्धनी व मलिनवस्त्रोंवाले होते हैं ॥ ५७ ॥ और अहंकार

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri, Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समेत व चंचलतायुक्त तथा वेद व शास्त्रों में निश्चल होते हैं यह मोढ जातिवालों का पचीसवां स्वस्थान कहागयाहै ॥ ५८ ॥ यह पचीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ २५ ॥ और महोवीआ ग्राम में जो ब्राह्मण हैं वे ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ होते हैं और कुश संज्ञक एकही पवित्रगोत्र है ॥ ५९ ॥ और विश्वामित्र, देवरात व तीसरा औदल प्रवर है और इसमें रक्षारूप चचाई देवी स्थित है ॥ ६० ॥ व इस गोत्र में जो उत्पन्न हैं वे सत्यवादी व जितेन्द्रिय होते हैं और सत्यव्रत, स्वरूपवान् व थोड़े भोजन तथा उत्तम मुख वाले होते हैं ॥ ६१ ॥ और दयालु, सुशील व सब प्राणियों के हित में परायण होते हैं यह ब्रह्मवादियों का छब्बीसवां स्वस्थान कहा गया ॥ ६२ ॥ जोकि छोटे

स्वस्थानं मोढज्ञातिनाम्॥५८॥ इति पञ्चविंशतितमं स्थानम्॥ २५॥ महोवीआश्च ये सन्ति ब्राह्मणा ब्रह्मवित्तमाः॥ एकमेव च वै गोत्रं कुशसंज्ञं पवित्रकम्॥ ५९ ॥ विश्वामित्रो देवरातस्तृतीयोदल एव च ॥ देवी चचाई चैवात्र रक्षा रूपा व्यवस्थिता ॥ ६० ॥ अस्मिन्गोत्रे च ये जाताः सत्यवादिजितेन्द्रियाः ॥ सत्यव्रताः सुरूपाश्च अल्पाहाराः शुभाननाः॥६१॥ दयालवः सुशीलाश्च सर्वभूतहिते रताः॥ षड्विंशतितमं प्रोक्तं स्वस्थानं ब्रह्मवादिनाम्॥६२॥ रामेण संस्तुताश्चैव सानुजेन तथैव च॥ ६३॥ इति षड्विंशतितमं स्थानम्॥ २६ ॥ तियाश्रीयामथो वक्ष्ये स्वस्थानं सप्तविंशकम्॥ अस्मिन्स्थाने च ये जाता ब्राह्मणा वेदपारगाः ॥ ६४॥ शाण्डिल्यगोत्रं चैवात्र कथितं वेदसत्तमैः॥ पञ्चप्रवरमथो प्रोक्तं ज्ञानजा चात्र देवता ॥ ६५ ॥ काश्यपावत्सारश्चैव शाण्डिलोसित एव च ॥ पञ्चमो देवलश्चैव प्रवराणि तथा क्रमात्॥ज्ञानजा च तथा देवी कथिता स्थानदेवता॥६६॥ अस्मिन्वंशे च ये जातास्ते द्विजाः सूर्यवर्चसः॥

भाई लक्ष्मण समेत श्रीरामजी से स्तुति किये गये हैं ॥ ६३ ॥ यह छब्बीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ २६ ॥ इसके उपरान्त तियाश्री में सत्ताईसवें स्वस्थान को कहता हूं कि इस स्थान में जो उत्पन्न हैं वे ब्राह्मण वेदों के पारगामी होतेहैं ॥ ६४ ॥ और इस में श्रेष्ठ ज्ञानियों ने शांडिल्य गोत्र कहा है और इसमें पांच प्रवर व ज्ञानजा देवता कहा गया है ॥ ६५ ॥ काश्यप, अवत्सार, शांडिल, असित व पांचवां देवल ये क्रमसे प्रवर कहे गये हैं और ज्ञानजा देवी स्थानदेवता कही गई है ॥ ६६ ॥ व इस वंशमें

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

जो उत्पन्न हुए हैं वे ब्राह्मण सूर्य के समान तेजस्वी हैं और धर्मारण्य में टिके हुए वे सब चन्द्रमा के समान शीतल हैं ॥ ६७ ॥ व हे महाराज ! उत्तम आचारवाले तथा वेदों व शास्त्रों में परायण हैं और यज्ञ करनेवाले तथा उत्तम आचार व सत्य तथा शुद्धता में परायण हैं ॥ ६८ ॥ और धर्मज्ञ व दान करनेवाले तथा निर्मल व गर्व से उत्कंठित हैं और तपस्या व निज वेद पाठ में परायण और न्याय धर्म में लगे हुए हैं उत्तम ब्रह्मज्ञानियों ने यह सत्ताईसवां स्थान कहा है ॥ ६९ ॥ यह सत्ताईसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ २७ ॥ और गोधरीय ग्राम में जो उत्पन्न हैं वे ब्राह्मण ज्ञान में श्रेष्ठ होते हैं इसके उपरान्त क्रम से मैं तीन गोत्रों को कहता हूं ॥ ७० ॥ पहला धारणस

चन्द्रवच्छीतलाः सर्वे धर्मारण्ये व्यवस्थिताः ॥ ६७ ॥ सदाचारा महाराज वेदशास्त्रपरायणाः ॥ याज्ञिकाश्च शुभाचाराः सत्यशौचपरायणाः ॥ ६८ ॥ धर्मज्ञा दानशीलाश्च निर्मला हि मदोत्सुकाः ॥ तपःस्वाध्यायनिरता न्यायधर्मपरायणाः ॥ सप्तविंशतिमं स्थानं कथितं ब्रह्मवित्तमैः ॥ ६९ ॥ इति सप्तविंशं स्थानम् ॥ २७ ॥ गोधरीयाश्च ये जाता ब्राह्मणा ज्ञानसत्तमाः ॥ गोत्रत्रयमथोवक्ष्ये यथा चैवाप्यनुक्रमात् ॥ ७० ॥ प्रथमं धारणसं चैव जातूकर्णं द्वितीयकम् ॥ तृतीयं कौशिकं चैव यथा चैवाप्यनुक्रमात् ॥ ७१ ॥ धारणसगोत्रे ये जाताः प्रवरैस्त्रिभिरन्विताः ॥ अगस्तिश्च दार्ढच्युत इध्मवाहनसंज्ञकः ॥ ७२ ॥ वसिष्ठश्च तथात्रेयो जातूकर्णस्तृतीयकः ॥ विश्वामित्रो मधुच्छन्दसस्तृतीयो ह्यघमर्षणः ॥ ७३ ॥ महाबला च मालेया द्वितीया चैव यक्षिणी ॥ तृतीया च महायोगी गोत्रदेव्यः प्रकीर्तिताः ॥ ७४ ॥ अस्मिन्वंशे च ये जाता ब्राह्मणाः सत्यवादिनः ॥ अलौल्याश्च महायज्ञा वेदाज्ञाप्रतिपालकाः ॥ ७५ ॥ इत्यष्टाविंशं

और जो धारणस गोत्र में उत्पन्न हैं वे तीन प्रवरों से संयुत होते हैं अगस्ति, दार्ढच्युत व इध्मवाहन दूसरा जातूकर्ण तीसरा कौशिक ये क्रम से हैं ॥ ७१ ॥ संज्ञक ॥ ७२ ॥ और वसिष्ठ, आत्रेय व तीसरा जातूकर्ण है और विश्वामित्र, मधुच्छंदस व तीसरा अघमर्षण है ॥ ७३ ॥ और बड़ी बलवती मालेया व दूसरी यक्षिणी और तीसरी महायोगी ये गोत्रदेवियां कही गई हैं ॥ ७४ ॥ व इस वंश में जो ब्राह्मण उत्पन्न हैं व सत्यवादी होते हैं और चंचलताहीन व महायज्ञों को करनेवाले तथा वेदों की आज्ञा के पालक होते हैं ॥ ७५ ॥ यह अट्ठाईसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ २८ ॥ और जो वाटस्थ हाल में उत्पन्न हैं उनके तीन गोत्र हैं पहला धारण व दूसरा वत्स

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संज्ञक जानने योग्य है ॥ ७६ ॥ और तीसरा कुत्ससंज्ञक है ये गोत्रदेवियां कही हैं और गोत्र देवियां हैं व पहला धारणस गोत्र व तीन प्रवर हैं ॥ ७७ ॥ व अगस्ति, दार्ढच्युत व इध्मवाहन और दूसरा वत्ससंज्ञक व पांच प्रवर हैं ॥ ७८ ॥ भृगु, च्यवन, आप्नवान्, और्व व जमदग्नि हैं और तीसरा कुत्ससंज्ञक व तीन प्रवर हैं ॥ ७९ ॥ आंगिरस, अम्बरीष व तीसरा यौवनाश्व है और देवी छत्रजा व दूसरी शेषला है ॥ ८० ॥ और तीसरी ज्ञानजा देवी हैं ये क्रम से गोत्र की देवियां हैं और इस गोत्र में जो ब्राह्मण हैं वे सत्यवादी व जितेन्द्रिय होते हैं ॥ ८१ ॥ और स्वरूपवान् व थोड़े भोजन वाले तथा महादानों में परायण होते हैं और बिन द्वेषी व लोभ से संयुत तथा वेद

स्थानम् ॥ २८ ॥ वाटस्रहाले ये जाता गोत्रत्रितयमेव च ॥ धारणं प्रथमं ज्ञेयं वत्ससंज्ञं द्वितीयकम् ॥ ७६ ॥ तृतीयं कुत्ससंज्ञं च गोत्रदेव्यस्तथैव च ॥ प्रथमं धारणसगोत्रं प्रवरत्रयमेव च ॥ ७७ ॥ अगस्तिदार्ढच्युतश्चैव इध्मवाहन एव च ॥ द्वितीयं वत्ससंज्ञं हि प्रवराणि च पञ्च वै ॥ ७८ ॥ भृगुच्यवनाप्नवानौर्वजमदग्निस्तथैव च ॥ तृतीयं कुत्ससंज्ञं हि प्रवरत्रयमेव च ॥ ७९ ॥ आङ्गिरसाम्बरीषौ च यौवनाश्वस्तृतीयकः ॥ देवी चच्छत्रजा चैव द्वितीया शेषला तथा ॥ ८० ॥ ज्ञानजा चैव देवी च गोत्रदेव्यो ह्यनुक्रमात् ॥ अस्मिन्गोत्रे च ये विप्राः सत्यवादिजितेन्द्रियाः ॥ ८१ ॥ सुरूपाश्चाल्पाहाराश्च महादानपरायणः ॥ निर्द्वेषिणो लोभयुता वेदाध्ययनतत्पराः ॥ ८२ ॥ दीर्घदर्शिनो महातेजा महोत्काः सत्यवादिनः ॥ ८३ ॥ इत्येकोनत्रिंशं स्थानम् ॥ २९ ॥ माणजा च महास्थानं गोत्रद्वितयमेव च ॥ शाण्डिल्यश्च कुशश्चैव गोत्रद्वयमितीरितम् ॥ ८४ ॥ काश्यपोऽवत्सारश्च शाण्डिल्योऽसित एव च ॥ पञ्चमो देवलश्चैव एकगोत्रं प्रकीर्तितम् ॥ ८५ ॥ ज्ञानजा च तथा देवी कथिता चात्र सैव च ॥ द्वितीयं च कुशं गोत्रं प्रवरत्रयमेव च ॥ ८६ ॥ विश्वामित्रो

पाठ में तत्पर होते हैं ॥ ८२ ॥ और विद्वान् व बड़े तेजस्वी तथा बड़े उत्कंठित व सत्यवादी होते हैं ॥ ८३ ॥ यह उन्तीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ २९ ॥ और माणजा महास्थान में दो गोत्र हैं शांडिल्य व कुश ये दो गोत्र कहे गये हैं ॥ ८४ ॥ और काश्यप, अवत्सार, शांडिल्य, असित व पांचवां देवल है और एक गोत्र कहा गया है ॥ ८५ ॥ और यहां वह ज्ञानजा देवी कही है व दूसरा कुश गोत्र है और तीन प्रवर हैं ॥ ८६ ॥ विश्वामित्र, देवराज व तीसरा औदल है और यहां ज्ञानदा देवी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कही गई है ॥ ८७ ॥ व इस गोत्र में जो उत्पन्न हैं वे दुर्बल तथा दीन मनवाले होते हैं व हे नृपसत्तम ! वे ब्राह्मण असत्यवादी व लोभी होते हैं ॥ ८८ ॥ और वे श्रेष्ठ ब्राह्मण सब विद्याओं में चतुर होते हैं ॥ ८९ ॥ यह तीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ३० ॥ और साणदा नामक उत्तम स्थान बहुत पवित्र मानागया है और वहां टिके हुए ब्राह्मण पवित्रकारक कहे गये हैं ॥ ९० ॥ और विश्वामित्र, देवरात व तीसरा दल कहा गया है और ज्ञानदा महादेवी गोत्र देवी कही गई है ॥ ९१ ॥ व इस गोत्र में जो उत्पन्न हैं वे दुर्बल व दीनमनवाले होते हैं व हे नृपश्रेष्ठ ! वे ब्राह्मण असत्यवादी व लोभी होते हैं ॥ ९२ ॥ और सब विद्या में प्रवीण वे ब्राह्मण ब्रह्मज्ञा-

देवराजस्तृतीयोदलमेव च ॥ ज्ञानदा चात्र वै देवी द्वितीया संप्रकीर्तिता ॥ ८७ ॥ अस्मिन्गोत्रे तु ये जाता दुर्बला दीनमानसाः ॥ असत्यभाषिणो विप्रा लोभिनो नृपसत्तम ॥ ८८ ॥ सर्वविद्याकुशलिनो ब्राह्मणा ब्रह्मसत्तमाः ॥ ८९ ॥ इति त्रिंशं स्थानम् ॥ ३० ॥ साणदा च परं स्थानं पवित्रं परमं मतम् ॥ कुशप्रवरजा विप्रास्तत्रस्थाः पावनाः स्मृताः ॥ ९० ॥ विश्वामित्रो देवरातस्तृतीयो दल एव च ॥ ज्ञानदा च महादेवी गोत्रदेवी प्रकीर्तिता ॥ ९१ ॥ अस्मिन्गोत्रे तु ये जाता दुर्बला दीनमानसाः ॥ असत्यभाषिणो विप्रा लोभिनो नृपसत्तम ॥ ९२ ॥ सर्वविद्याकुशलिनो ब्राह्मणा ब्रह्मवित्तमाः ॥ ९३ ॥ इत्येकत्रिंशं स्थानम् ॥ ३१ ॥ आनन्दीया च संस्थानं गोत्रद्वितयमेव च ॥ भारद्वाजं नाम चैकं शाण्डिल्यं च द्वितीयकम् ॥ ९४ ॥ आङ्गिरसो बार्हस्पत्यो भारद्वाजस्तृतीयकः ॥ चचाई चात्र या देवी गोत्रदेवी प्रकीर्तिता ॥ ९५ ॥ काश्यपावत्सारश्च शाण्डिल्योऽसित एव च ॥ पञ्चमो देवलश्चैव प्रवराणि यथाक्रमम् ॥ ९६ ॥ ज्ञानजा च तथा देवी कथिता गोत्रदेवता ॥ अस्मिन्गोत्रे च ये जाता निर्लोभाः शुद्धमानसाः ॥ ९७ ॥ यदृच्छालाभसंतुष्टा ब्राह्मणा

नियों में श्रेष्ठ होते हैं ॥ ९३ ॥ यह इकतीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ३१ ॥ और आनन्दीया संस्थान में दो गोत्र हैं एक भारद्वाज नामक व दूसरा शांडिल्य है ॥ ९४ ॥ और आंगिरस, बार्हस्पत्य व तीसरा भारद्वाज है और यहां जो गोत्रदेवी है वह चचाई कही गई है ॥ ९५ ॥ और काश्यप, अवत्सार, शांडिल्य, असित व पांचवां देवल है ये प्रवर क्रम से कहे गये हैं ॥ ९६ ॥ और ज्ञानजा देवी गोत्रदेवता कही गई है व इस गोत्र में जो उत्पन्न हैं वे निर्लोभ व शुद्धमनवाले होते हैं ॥ ९७ ॥ और

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

स्वच्छंद लाभ से संतोषवाले ब्राह्मण बड़े ब्रह्मज्ञानी होते हैं ॥९८॥ यह बत्तीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ३२ ॥ और पाटडीआ नामक उत्तम पवित्र स्थान कहा गया है इस में तीन प्रवरों से संयुत कुश गोत्र है ॥ ९९ ॥ विश्वामित्र, देवरात व तीसरा औदल है और इस गोत्र में जो उत्पन्न हैं वे वेद शास्त्रों में परायण होते हैं ॥ २०० ॥ और वे ब्राह्मण गर्व से उद्धत व न्यायमार्ग में प्रवृत्त होते हैं ॥ १ ॥ यह तेंतीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ३३ ॥ और टीकोलिया नामक उत्तमस्थान है उसमें कुशगोत्र है विश्वामित्र, देवरात व तीसरा औदल है ॥ २ ॥ व इसमें चचाई देवी गोत्रदेवी कही गई है और इस गोत्र में उपजेहुए ब्राह्मण श्रुतियों व स्मृतियों में परायण हैं ॥ ३ ॥ और रोगी,

ब्रह्मवित्तमाः ॥ ९८ ॥ इति द्वात्रिंशं स्थानम् ॥ ३२ ॥ पाटडीया परं स्थानं पवित्रं परिकीर्तितम् ॥ कुशगोत्रं भवेदत्र प्रवरत्रयसंयुतम् ॥९९॥ विश्वामित्रो देवरातस्तृतीयौदलमेव हि ॥ अस्मिन्गोत्रे च ये जाता वेदशास्त्रपरायणाः ॥२००॥ मदोद्धुराश्च ते विप्रा न्यायमार्गप्रवर्तकाः ॥ १ ॥ इति त्रयस्त्रिंशं स्थानम् ॥ ३३ ॥ टीकोलिया परं स्थानं कुशगोत्रं तथैव च ॥ विश्वामित्रो देवरातस्तृतीयौदलमेव च ॥ २ ॥ चचाई चात्र वै देवी गोत्रदेवी प्रकीर्तिता ॥ अस्मिन्गोत्रे भवा विप्राः श्रुतिस्मृतिपरायणाः ॥ ३ ॥ रोगिणो लोभिनो दुष्टा यजने याजने रताः ॥ ब्रह्मक्रियापराः सर्वे मोढाः प्रोक्ता मयात्र वै ॥ ४ ॥ इति चतुस्त्रिंशं स्थानम् ॥ ३४ ॥ गमीधाणीयं परमं स्थानं प्रोक्तं वै पञ्चत्रिंशकम् ॥ गोत्रं धारणसं चैव देवी चात्र महाबला ॥ ५ ॥ अगस्तिदार्ढच्युतइध्मवाहनसंज्ञकाः ॥ अस्मिन्वंशे च ये जाता ब्राह्मणा ब्रह्मतत्पराः ॥६॥ अलौल्याश्च महाप्राज्ञा वेदाज्ञाप्रतिपालकाः ॥७॥ इति पञ्चत्रिंशं स्थानम् ॥३५॥ मात्रा च परमं स्थानं पवित्रं

लोभी, दुष्ट व यज्ञ करने और यज्ञ कराने में तत्पर होते हैं मैंने यहां वेद कर्म में परायण सब मोढा ब्राह्मणों को कहा ॥ ४ ॥ यह चौतीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ३४ ॥ पैंतीसवां गमीधाणीय नामक उत्तम स्थान कहा गया है इसमें धारणसगोत्र व महाबला गोत्रदेवी है ॥ ५ ॥ और अगस्ति दार्ढच्युत व इध्मवाहन संज्ञक प्रवर हैं और इस वंश में जो ब्राह्मण उत्पन्न हैं वे ब्रह्म में तत्पर होते हैं ॥ ६ ॥ और अचंचल व बड़े बुद्धिमान् तथा वेद की आज्ञा के प्रतिपालक होते हैं ॥ ७ ॥ यह पैंतीसवां स्थान

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समाप्त हुआ ॥ ३५ ॥ और मात्रा नामक पवित्र व उत्तम सब देहधारियों का स्थान है इसमें पवित्र कुश गोत्र स्थित है ॥ ८॥ व विश्वामित्र, देवरात और तीसरा दल प्रवर है व इसमें ज्ञानदा महादेवी सब लोकों की एक रक्षा करनेवाली है ॥९॥ और इस वंश में उपजेहुए ब्राह्मण देवताओं में तत्पर होते हैं और वेद पठन व वषट्कारों समेत तथा वेदों व शास्त्रों के प्रवर्तक होते हैं ॥ १० ॥ यह छत्तीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ३६ ॥ और नातमोरा नामक उत्तम तथा पवित्र व शुभ स्थान मानागया है उसमें तीन प्रवरों से संयुत कुश गोत्र है ॥ ११ ॥ विश्वामित्र, देवरात व तीसरा औदल प्रवर है और इसमें ज्ञानजादेवी गोत्रदेवी कहीगई है ॥ १२ ॥ और इस वंश में जो उत्पन्न हैं वे

सर्वदेहिनाम् ॥ कुशगोत्रं पवित्रं तु परमं चात्र धिष्ठितम् ॥ ८ ॥ विश्वामित्रो देवरातो दलश्चैव तृतीयकः ॥ ज्ञान दा च महादेवी सर्वलोकैकरक्षिणी ॥ ९ ॥ अस्मिन्वंशे समुद्भूता ब्राह्मणा देवतत्पराः ॥ सस्वाधायवषट्कारा वेदशास्त्र प्रवर्तकाः ॥१०॥ इति षट्त्रिंशं स्थानम् ॥ ३६ ॥ नातमोरापरं स्थानं पवित्रं परमं शुभम् ॥ कुशगोत्रं च तत्रास्ति प्रव रत्रयसंयुतम् ॥ ११ ॥ विश्वामित्रो देवरातस्तृतीयौदलमेव च ॥ ज्ञानजा चात्र वै देवी गोत्रदेवी प्रकीर्तिता ॥ १२ ॥ अ स्मिन्वंशे भवा ये च ब्राह्मणा ब्रह्मवित्तमाः ॥ धर्मज्ञाः सत्यवक्तारो व्रतदानपरायणाः ॥ १३ ॥ इति सप्तत्रिंशं स्था नम् ॥३७॥ बलोला च महास्थानं पवित्रं परमाद्भुतम् ॥ कुशगोत्रं समाख्यातं प्रवरत्रयमेव च ॥१४॥ पूर्वोक्तंप्रवरं चैव देवी चैवात्र मानदा ॥ वंशेस्मिन्परमाः प्रोक्ताः काजेशेन विनिर्मिताः ॥ १५ ॥ असत्यभाषिणो विप्रा लोभिनो नृप सत्तम ॥ सर्वविद्याकुशलिनो ब्राह्मणा ब्रह्मसत्तमाः ॥१६॥ इत्यष्टत्रिंशं स्थानम् ॥ ३८ ॥ राज्यजा च महास्थानं लोगा

ब्राह्मण बड़े ब्रह्मज्ञानी होते हैं और धर्मज्ञ व सत्यवादी तथा व्रत व दानों में परायण होते हैं ॥१३॥ यह सैंतीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥३७॥ और बलोला नामक महास्थान बड़ा अद्भुत व पवित्रहै और कुशगोत्र व तीन प्रवर कहेगये हैं ॥ १४ ॥ इसमें पहले कहा हुआ प्रवर व मानदादेवी हैं और इस वंश में ब्रह्मा, विष्णु व महेशजी से बनाये हुए ब्राह्मण श्रेष्ठ कहेगये हैं ॥ १५ ॥ व हे नृपोत्तम ! वे ब्राह्मण असत्यवादी व लोभी होते हैं और सब विद्याओं में चतुर व श्रेष्ठ ब्रह्मज्ञानी होते हैं ॥१६॥ यह अर्तीसवां स्थान

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

समाप्त हुआ ॥३८॥ और राज्यजा महास्थान में लौगाक्षा प्रवर है और काश्यप, अवत्सार, वाशिष्ठ ये तीन प्रवर हैं ॥ १७ ॥ और भद्रायोगिनी गोत्रदेवी कहीगई है व इस वंश में उपजेहुए ब्राह्मण वेदों में तत्पर होते हैं ॥ १८ ॥ और नित्य स्नान, नित्य होम व नित्य दान में परायण होते हैं और नित्य धर्म में तत्पर तथा नित्य नैमित्त कर्मों में परायण होते हैं ॥ १९ ॥ यह उन्तालीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ३९ ॥ और रूपोला नामक उत्तम स्थान पवित्र व बड़ा पुण्यदायक है और इन तीनों गोत्रों में तीन देवियाँ हैं ॥ २० ॥ पहला कुत्स व वत्स नामक और तीसरा भारद्वाज है और आंगिरस, अम्बरीष व तीसरा यौवनाश्व है ॥ २१ ॥ भृगु, च्यवन, आप्नवान्, और्व व जम-

क्षाप्रवरं तथा ॥ काश्यपावत्सारवाशिष्ठं प्रवरत्रयमेव च ॥ १७ ॥ भद्रा च योगिनी चैव गोत्रदेवी प्रकीर्तिता ॥ अस्मिन्वंशे समुद्भूता ब्राह्मणा वेदतत्पराः ॥ १८ ॥ नित्यस्नाननित्यहोमनित्यदानपरायणाः ॥ नित्यधर्मरताश्चैव नित्यनैमित्त तत्पराः ॥ १९ ॥ इत्येकोनचत्वारिंशं स्थानम् ॥ ३९ ॥ रूपोला परमं स्थानं पवित्रमतिपुण्यदम् ॥ अस्मिन्गोत्रत्रये चैव देवीत्रितयमेव च ॥ २० ॥ प्रथमं कुत्सवत्साख्यौ भारद्वाजस्तृतीयकः ॥ आङ्गिरसोम्बरीषश्च यौवनाश्वस्तृतीयकः ॥ २१ ॥ भृगुच्यवनाप्नवानौर्वजमदग्निस्तथैव च ॥ आङ्गिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजस्तथैव च ॥ २२ ॥ क्षेमला चैव वै देवी धारभट्टारिका तथा ॥ तृतीया क्षेमला प्रोक्ता गोत्रमाता ह्यनुक्रमात् ॥ २३ ॥ अस्मिन्गोत्रे च ये जाता पञ्चयज्ञरताः सदा ॥ लोभिनः क्रोधिनश्चैव प्रजायन्ते बहुप्रजाः ॥ २४ ॥ स्नानदानादिनिरताः सदा च विजितेन्द्रियाः ॥ वापीकूपतडागानां कर्त्तारश्च सहस्रशः ॥ २५ ॥ इति चत्वारिंशं स्थानम् ॥ ४० ॥ बोधणी परमं स्थानं

दग्नि हैं और आंगिरस, बार्हस्पत्य व भारद्वाज हैं ॥ २२ ॥ और क्षेमला व धारभट्टारिकादेवी हैं और तीसरी क्षेमला है ये क्रम से गोत्रमाता हैं ॥ २३ ॥ व इस गोत्र में जो उत्पन्न हैं वे सदैव पञ्चयज्ञ में परायण होते हैं और लोभी, क्रोधी व बहुत पुत्रोंवाले होते हैं ॥ २४ ॥ व स्नान दानादिकों में परायण तथा सदैव जितेन्द्रिय होते हैं और हज़ारों बावली, कूप व तड़ागों के निर्माणकर्ता होते हैं ॥ २५ ॥ यह चालीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ४० ॥ और बोधणीनामक उत्तम स्थान पवित्र व पापनाशक

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

कहा गया है और कुश व कौशिक दो गोत्र कहेगये हैं ॥ २६ ॥ और पहला विश्वामित्र व दूसरा देवरात और तीसरा दल है व विश्वामित्र, अघमर्षण तथा कौशिक ऐसा प्रवर है ॥ २७ ॥ और पहली यक्षिणीदेवी व दूसरी तारणी है और इस गोत्र में जो उत्पन्न हैं वे दुर्बल व दीन मनवाले होते हैं ॥ २८ ॥ व हे नृपोत्तम ! वे ब्राह्मण असत्यवादी व लोभी होते हैं और सब विद्याओं में प्रवीण वे ब्राह्मणश्रेष्ठ ब्रह्मज्ञानी होते हैं ॥ २९ ॥ यह इकतालीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ४१ ॥ और छत्रोटा नामक उत्तम स्थान सब लोकों में एकही पूजित है और कुशगोत्र कहागया है व तीन प्रवर हैं ॥ ३० ॥ विश्वामित्र, देवरात व तीसरा दल है और इसमें चचाईदेवी गोत्रदेवी

पवित्रं पापनाशनम् ॥ कुशं च कौशिकं चैव गोत्रद्वितयमेव च ॥ २६ ॥ विश्वामित्रश्च प्रथमो देवरातो दलेति च ॥ विश्वामित्राघमर्षणकौशिकेति तथैव च ॥ २७ ॥ यक्षिणी प्रथमा चैव द्वितीया तारणी तथा ॥ अस्मिन्गोत्रे तु ये जाता दुर्बला दीनमानसाः ॥ २८ ॥ असत्यभाषिणो विप्रा लोभिनो नृपसत्तम ॥ सर्वविद्याकुशलिनो ब्राह्मणा ब्रह्मसत्तमाः ॥ २९ ॥ इत्येकचत्वारिंशं स्थानम् ॥ ४१ ॥ छत्रोटा च परं स्थानं सर्वलोकैकपूजितम् ॥ कुशगोत्रं समाख्यातं प्रवरत्रयमेव हि ॥ ३० ॥ विश्वामित्रो देवरातस्तृतीयो दलमेव वै ॥ चचाई चात्र वै देवी गोत्रदेवी प्रकीर्तिता ॥ ३१ ॥ अस्मिन्वंशे भवाश्चैव वेदशास्त्रपरायणाः ॥ महोदयाश्च ते विप्रा न्यायमार्गप्रवर्तकाः ॥ ३२ ॥ इति द्विचत्वारिंशं स्थानम् ॥ ४२ ॥ खल एवात्र संस्थानं त्रयश्चत्वारिंशमेव हि ॥ वत्सगोत्रोद्भवा विप्राः कृषिकर्मप्रवर्तकाः ॥ ३३ ॥ गोत्रजा ज्ञानजा देवी प्रवराः पञ्च एव हि ॥ भार्गवच्यावनाप्नवानौर्वजामदग्न्येति चैव हि ॥ ३४ ॥ अस्मिन्गोत्रे भवा विप्राः

कहीगई है ॥ ३१ ॥ व इस वंश में उपजेहुए ब्राह्मण वेदों व शास्त्रों में परायण होते हैं और बड़े ऐश्वर्यवाले वे ब्राह्मण न्यायमार्ग के प्रवर्तक होते हैं ॥ ३२ ॥ यह बयालीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ४२ ॥ और यहां तेंतालीसवां खलस्थान है व वत्सगोत्र में उपजे हुए ब्राह्मण खेती के कर्म में प्रवृत्त होते हैं ॥ ३३ ॥ और गोत्रजा ज्ञानजा देवी है व पांच प्रवर हैं भार्गव, च्यावन, आप्नवान्, और्व व जामदग्न्य प्रवर हैं ॥ ३४ ॥ और इस गोत्र में उपजेहुए ब्राह्मण श्रौत अग्नियों के सेवक होते हैं और

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

वेदपाठ करनेवाले व तपस्वी तथा शत्रुमर्दक होते हैं॥ ३५ ॥ और क्रोधी, लोभी, प्रसन्न व यज्ञ करने और यज्ञ कराने में परायण होते हैं और सब प्राणियों के ऊपर दया करनेवाले व परोपकारी होते हैं ॥३६॥ यह तेंतालीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ४३ ॥ और वासंतडी में ब्राह्मणों का कुशगोत्र कहागया है और विश्वामित्र, देवरात व तीसरा औदल प्रवर है ॥३७॥ और इसमें चचाईदेवी गोत्रदेवी कहीगई है और इस वंश में जो पूर्वोक्त ब्राह्मण उत्पन्न हैं वे ब्रह्म में तत्पर होते हैं ॥३८॥ और पराया उपकार करने वाले व पराये चित्तके अनुवर्ती होते हैं और पराये द्रव्य से विमुख तथा पराये मार्ग के प्रवर्तक होते हैं ॥ ३९ ॥ यह चवालीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ४४ ॥ इसके उपरान्त

श्रौताग्निसुनिषेवकाः॥ वेदाध्ययनशीलाश्च तापसाश्चारिमर्दनाः॥ ३५॥ रोषिणो लोभिनो हृष्टा यजने याजने रताः॥ सर्वभूतदयाविष्टास्तथा परोपकारिणः॥ ३६॥ इति त्रयश्चत्वारिंशं स्थानम्॥ ४३॥ वासंतड्यां च विप्राणां कुशगोत्र मुदाहृतम्॥ विश्वामित्रो देवरातस्तृतीयौदलमेव हि॥ ३७॥ चचाई चात्र वै देवी गोत्रदेवी प्रकीर्तिता॥ अस्मि न्वंशे च ये जाताः पूर्वोक्ता ब्रह्मतत्पराः॥ ३८॥ परोपकारिणश्चैव परचित्तानुवर्तिनः॥ परस्वविमुखाश्चैव परमार्गप्रवर्त्त काः॥ ३९॥ इति चतुश्चत्वारिंशं स्थानम्॥ ४४॥ अतः परं च संस्थानं जाखासणमुदाहृतम्॥ गोत्रं वै वात्स्यसंज्ञं तु गोत्रजा शीहुरी तथा॥ प्रवराणि च पञ्चैव मया तव प्रकाशितम्॥ ४०॥ भार्गवच्यावनाप्नवानौर्वपुरोधसः स्मृ ताः॥ अस्मिन्वंशे च ये जाता वाडवाः सुखवासिनः॥ विप्राः स्थूलाश्च ज्ञातारः सर्वकर्मरताश्च वै॥ ४१॥ सर्वे धर्मैक विश्वासाः सर्वलोकैकपूजिताः॥ वेदशास्त्रार्थनिपुणा यजने याजने रताः॥ ४२॥ सदाचाराः सुरूपाश्च तुन्दिला दीर्घ

जाखासण स्थान कहागया है और वात्स्यसंज्ञकगोत्र है व शीहुरी गोत्रजादेवी है और पांचही प्रवरों को मैंने तुमसे प्रकाशित किया ॥४०॥ भार्गव, च्यावन, आप्नवान्, और्व व पुरोधस कहेगये हैं और इस वंश में जो उत्पन्नहैं वे ब्राह्मण सुखवासी होते हैं और स्थूल व बुद्धिमान् ब्राह्मण सब कर्मों में परायण होते हैं ॥४१॥ और सब धर्मही में केवल विश्वास करनेवाले तथा सब लोकों में एकही पूजित और वेदों व शास्त्रार्थों में निपुण और यज्ञ करने व यज्ञ कराने में तत्पर हैं ॥ ४२ ॥ और उत्तम

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आचारवाले व स्वरूपवान् तथा तोंदवाले व विद्वान् होते हैं और यहां शीहुरीदेवी कुलदेवी कहीगई है ॥ ४३ ॥ यह पैंतालीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ४५ ॥ और छियालीसवां स्थान मोट ब्राह्मणों का प्रकाशित कियागया है जो कि गोतीआ नाम संज्ञक है और इसमें कुशगोत्र है ॥ ४४ ॥ और पहला विश्वामित्र व दूसरा देवरात और तीसरा औदल है ये तीन प्रवर हैं ॥ ४५ ॥ और यहां राक्षसों को नाशनेवाली यक्षिणीदेवी है और इस वंश में जो उत्पन्न हैं वे ब्राह्मण ब्रह्म में परायण होते हैं ॥ ४६ ॥ और उनकी बुद्धि धर्म में प्रवृत्त होती है व धर्मशास्त्रों में वे स्थित होते हैं ॥ ४७ ॥ यह छियालीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ४६ ॥ और सैंतालीसवां

दर्शिनः ॥ शीहुरी चात्र वै देवी कुलदेवी प्रकीर्तिता ॥ ४३ ॥ इति पञ्चचत्वारिंशं स्थानम् ॥ ४५ ॥ षट्चत्वारिंशकं स्थानं मोटानां तु प्रकाशितम् ॥ गोतीआनामसंज्ञा तु कुशगोत्रमिहास्ति च ॥ ४४ ॥ विश्वामित्रं प्रथमं चैव द्वितीयं देवरातकम् ॥ तृतीयमौदलं चैव प्रवरत्रितयन्त्विदम् ॥ ४५ ॥ यक्षिणी चात्र वै देवी राक्षसानां प्रभञ्जनी ॥ अस्मिन्वंशे च ये जाता ब्राह्मणा ब्रह्मतत्पराः ॥ ४६ ॥ धर्मे मतिप्रवृत्ताश्च धर्मशास्त्रेषु निष्ठिताः ॥ ४७ ॥ इति षट्चत्वारिंशं स्थानम् ॥ ४६ ॥ सप्तचत्वारिंशकं च संस्थानं परिकीर्तितम् ॥ वरलीयाख्यसंस्थानं पवित्रं परमं मतम् ॥ ४८ ॥ भारद्वाजं तथा गोत्रं प्रवराणि तथैव च ॥ यक्षिणी चात्र वै देवी कुलदेवी प्रकीर्तिता ॥ ४९ ॥ आङ्गिरसं बार्हस्पत्यं भारद्वाजं तृतीयकम् ॥ अस्मिन्वंशे च ये जाता ब्राह्मणा पूतमूर्तयः ॥ ५० ॥ येषां वाक्योदकेनैव शुद्धयन्ति पापिनो नराः ॥ ५१ ॥ इति सप्तचत्वारिंशकं स्थानम् ॥ ४७ ॥ दुधीयाख्यं परं स्थानं गोत्रद्वितयमेव च ॥ धारणसं तथा गोत्रमाङ्गिरसकमेव च ॥ ५२ ॥

स्थान कहागया है व वरलीयनामक स्थान वह बड़ा पवित्र मानागया है ॥ ४८ ॥ और भारद्वाज गोत्र व प्रवर हैं व इसमें यक्षिणीदेवी कुलदेवी कही गई है ॥ ४९ ॥ और आंगिरस, बार्हस्पत्य व तीसरा भारद्वाज गोत्र है और इस वंश में जो ब्राह्मण उत्पन्न होते हैं वे पवित्रमूर्ति होते हैं ॥ ५० ॥ कि जिनके वचनरूपी जलही से पापी मनुष्य शुद्ध होजाते हैं ॥ ५१ ॥ यह सैंतालीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ४७ ॥ और दुधीयनामक जो उत्तम स्थान है उसमें दो गोत्र हैं धारणस व आंगिरस है ॥ ५२ ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और अगस्ति, दार्ढ्यच्युत व इध्मवाहनसंज्ञक प्रवर है और छत्राई महादेवी है व दूसरा प्रवर सुनिये ॥ ५३ ॥ कि आंगिरस, अम्बरीष व तीसरा यौवनाश्व है और ज्ञानदा व शेषलादेवी सब प्राणियों को ज्ञान देनेवाली है ॥ ५४ ॥ व हे राजन् ! इस वंश में उपजेहुए ब्राह्मण दुस्सह होते हैं और मद से उग्र व बड़े शरीरवाले तथा छली व मद से उद्धृत होते हैं ।।५५॥ और क्लेशरूपी व कालेरंगवाले तथा समस्त शास्त्रों में चतुर होते हैं और बहुत खानेवाले व प्रवीण और द्वेष व पाप से रहित होते हैं॥५६॥ यह अर्तालीसवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ४८ ॥ और यहां प्रसिद्ध हासोल्लास स्वस्थान को मैं कहता हूं इसमें पांच गोत्रों से संयुक्त शांडिल्यगोत्र है ॥ ५७ ॥ भार्गव,

अगस्तिदार्ढच्युतइध्मवाहनसंज्ञकम् ॥ छत्राई च महादेवी द्वितीयं प्रवरं शृणु ॥५३॥ आङ्गिरसाम्बरीषौ च यौवनाश्वस्तृतीयकः॥ ज्ञानदा शेषला चैव ज्ञानदा सर्वदेहिनाम् ॥ ५४ ॥ अस्मिन्वंशे समुत्पन्ना वाडवा दुस्सहा नृप॥ मदोत्कटा महाकायाः प्रलम्भाश्च मदोद्धताः ॥ ५५ ॥ क्लेशरूपाः कृष्णवर्णाः सर्वशास्त्रविशारदाः ॥ बहुभुग्धनिनो दक्षा द्वेषपापविवर्जिताः ॥ ५६ ॥ इत्यष्टाचत्वारिंशकं स्थानम् ॥ ४८ ॥ हासोल्लासं प्रवक्ष्यामि स्वस्थानं चात्र संश्रुतम् ॥ शाण्डिल्यगोत्रं चैवात्र प्रवरैः पञ्चभिर्युतम् ॥ ५७ ॥ भार्गवच्यावनाप्रवानौर्वं वै जामदग्न्यकम् ॥ यक्षिणी चात्र वै देवी पवित्रा पापनाशिनी ॥ ५८ ॥ अस्मिन्वंशे च ये जाता ब्राह्मणाः स्थूलदेहिनः ॥ लम्बोदरा लम्बकर्णा लम्बहस्ता महाद्विजाः ॥ ५९ ॥ अरोगिणः सदा देव सत्यव्रतपरायणाः ॥ ६० ॥ इत्येकोनपञ्चाशत्तमं स्थानम् ॥४९॥ वैहालाख्यं च संस्थानं पञ्चाशत्तममेव हि ॥ कुशगोत्रं तथा चैव देवी चात्र महाबला ॥ ६१ ॥ अस्मिन्गोत्रे भवा

च्यावन, आप्नवान्, और्व व जामदग्न्य प्रवर हैं और इसमें पापनाशिनी व पवित्र यक्षिणीदेवी हैं ॥ ५८ ॥ और इस वंश में जो ब्राह्मण उत्पन्न हैं वे मोटे शरीरवाले होते हैं और वे महाब्राह्मण लम्बे पेट व लम्बे कान तथा लम्बे हाथोंवाले होते हैं॥ ५९ ॥ और वे सदैव अरोग व देवता और सत्य के व्रत में परायण होते हैं ॥ ६० ॥ यह उंचासवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ४९ ॥ और वैहाल नामक पचासवां स्थान है व इसमें कुशगोत्र और बड़ी महाबलादेवी है ॥ ६१ ॥ और इस वंश में उपजे हुए ब्राह्मण

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

दुष्ट व कुटिलगामी होते हैं और धनी व धर्म में परायण तथा वेदों व वेदांगों के पारगामी होते हैं ॥ ६२ ॥ और सब दान व भोग में तत्पर तथा श्रौत कर्म में बुद्धि को लगानेवाले होते हैं ॥ ६३ ॥ यह पचासवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ५० ॥ और असालानामक उत्तम स्थान दो प्रवरोंवाला है और क्रम से कुश व धारण दो प्रवर हैं ॥ ६४ ॥ और विश्वामित्र, देवरात व तीसरा देवल प्रवर है और ज्ञानजादेवी गोत्रदेवी कहीगई है ॥ ६५ ॥ यह इक्यावनवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ५१ ॥ और बावनवां नालोला नामक उत्तम स्थान है और एक वत्सगोत्र व दूसरा धारणास गोत्र है ॥ ६६ ॥ और पूर्वोक्त प्रवर हैं व पहलेही कहीहुई देवी हैं व इस वंश में जो उत्पन्न हैं वे बड़े पवित्र

विप्रा दुष्टाः कुटिलगामिनः ॥ धनिनो धर्मनिष्ठाश्च वेदवेदाङ्गपारगाः ॥ ६२ ॥ दानभोगरताः सर्वे श्रौते च कृतबुद्धयः ॥ ६३ ॥ इति पञ्चाशत्तमं स्थानम् ॥ ५० ॥ असालापरमं स्थानं प्रवरद्वयमेव हि ॥ कुशं च धारणं चैव प्रवराणि क्रमेण तु ॥ ६४ ॥ विश्वामित्रो देवरातो देवलस्तु तृतीयकः ॥ ज्ञानजा च तथा देवी गोत्रदेवी प्रकीर्तिता ॥६५॥ इत्येकपञ्चाशत्तमं स्थानम् ॥ ५१ ॥ नालोला परमं स्थानं द्विपञ्चाशत्तमं किल ॥ वत्सगोत्रं तथा ख्यातं द्वितीयं धारणासं तथा ॥ ६६ ॥ प्रवराश्चैव पूर्वोक्ता देव्युक्ता पूर्वमेव हि ॥ अस्मिन्वंशे च ये जाताः पवित्राः परमा मताः ॥ ६७ ॥ बहुनोक्तेन किं विप्राः सर्व एवात्र सत्तमाः ॥ सर्वे शुद्धा महात्मनः सर्वे कुलपरम्पराः ॥ ६८ ॥ इति द्वापञ्चाशत्तमं स्थानम् ॥ ५२ ॥ देहोलं परमं स्थानं ब्राह्मणानां परंतप ॥ कुशवंशोद्भवा विप्रास्तत्र जाता नृसत्तम ॥ पूर्वोक्तप्रवराण्येव देवी पूर्वोदिता मया ॥ ६९ ॥ तस्मिन्गोत्रे द्विजा जाताः पूर्वोक्तगुणशालिनः ॥ ७० ॥ इति त्रिपञ्चाशत्तमं स्था

मानेगये हैं ॥ ६७ ॥ बहुत कहने से क्या है यहां सबही ब्राह्मण श्रेष्ठ होते हैं और सब शुद्ध व महात्मा तथा सब कुल की परंपरावाले होते हैं ॥ ६८ ॥ यह बावनवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ५२ ॥ व हे परंतप ! ब्राह्मणों का देहोल नामक उत्तम स्थान है हे नृपसत्तम ! वहां कुश वंश में उपजे हुए ब्राह्मण हैं और पूर्वोक्त प्रवर हैं व मुझसे पहले कहीहुई देवी है ॥ ६९ ॥ और उस गोत्र में पैदा हुए ब्राह्मण पूर्वोक्त गुण से शोभित होते हैं ॥ ७० ॥ यह तिरपनवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ५३ ॥ और सोहासीयानामक

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

उत्तम स्थान तीन गोत्रोंवाला है और भारद्वाज व वत्सगोत्र कहागया है ॥ ७१ ॥ और ज्ञानजा व सिहोली यक्षिणी क्रमसे है हे नृपोत्तम ? इस वंश की परीक्षा पहले कहीगई है ॥ ७२ ॥ यह चौवनवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ५४ ॥ इस समय मैं तुम से पचपनवें स्थान को कहता हूं कि पुरातन समय श्रीरामजीने संहालियानामक स्थान को दिया है ॥ ७३ ॥ उसमें कुत्स गोत्र में स्थित ब्राह्मण हैं और वे सदैव अपने धर्म में परायण व अपने कर्म में तत्पर होते हैं ॥ ७४ ॥ और आंगिरस, अम्बरीष व इसके उपरान्त यौवनाश्व प्रवर है और इसमें शांतिकर्म में शांति को देनेवाली शांता देवी है ॥ ७५ ॥ यह पचपनवां स्थान समाप्त हुआ ॥ ५५ ॥ हे परंतप ! मैंने यहां इस

नम् ॥ ५३ ॥ सोहासीयापुरं स्थानं गोत्रत्रितयमेव हि ॥ भारद्वाजस्तथा ख्यातं गोत्रं वत्सं तथैव च ॥ ७१ ॥ यक्षिणी ज्ञानजा चैव सिहोली च यथाक्रमम् ॥ एतद्वंशपरीक्षा च पूर्वोक्ता नृपसत्तम ॥ ७२ ॥ इति चतुःपञ्चाशत्तमं स्थानम् ॥ ५४ ॥ पञ्चपञ्चाशकं स्थानं प्रवक्ष्यामि तवाधुना ॥ नाम्ना संहालियास्थानं दत्तं रामेण वै पुरा ॥ ७३ ॥ तत्र वै कुत्सगोत्रस्था ब्राह्मणा ब्रह्मवर्चसः ॥ स्वधर्मनिरता नित्यं स्वकर्म्मनिरताश्च ते ॥ ७४ ॥ आङ्गिरसाम्बरीषे च यौवनाश्वमतः परम् ॥ शान्ता चैवात्र वै देवी शान्तिकर्म्मणि शान्तिदा ॥ ७५ ॥ इति पञ्चपञ्चाशत्तमं स्थानम् ॥ ५५ ॥ एवं मया ते गोत्राणि स्थानान्यपि तथैव च ॥ प्रवराणि तथैवात्र ब्राह्मणानां परंतप ॥ ७६ ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि त्रैविद्यानां परंतप ॥ स्वस्थानं हि मया प्रोक्तं यथाचानुक्रमेण तु ॥ ७७ ॥ शीलायाः प्रथमं स्थानं मण्डोरा च द्वितीयकम् ॥ एवडी च तृतीयं हि गुन्दराणा चतुर्थकम् ॥ ७८ ॥ पञ्चमं कल्याणीया देगामा षष्ठकं तथा ॥ नायकपुरा सप्तमं च डलीआ चाष्टमं तथा ॥ ७९ ॥ कडोव्या नवमं चैव कोहाटोया दशमं तथा ॥ हरडीयेकादशं चैव भदुकीया द्वादशं तथा ॥ ८० ॥

प्रकार तुमसे ब्राह्मणों के गोत्र, स्थान व प्रवरों को कहा ॥ ७६ ॥ व हे परन्तप ! इसके उपरान्त त्रैविद्यों के स्थानों को कहूंगा और क्रम से मैंने स्वस्थान को कहा ॥ ७७ ॥ पहला शीला का स्थान है व दूसरा मंडोरा स्थान है और तीसरा एवडी व चौथा गुंदराणा स्थान है ॥ ७८ ॥ और पांचवां कल्याणीया व छठां देगामा स्थान है और सातवां नायकपुरा व आठवां डलीआ स्थान है ॥ ७९ ॥ और कडोव्या नवां स्थान है व दशवां कोहाटोया स्थान है और गेरहवां हरडीया व बारहवां भदुकीया स्थान है ॥ ८० ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

और यहां संप्राणावा व कंदरावा स्थान कहागया है और तेरहवां वासरोवा व चौदहवां शरंडावा स्थान है ॥ ८१ ॥ और पंद्रहवां लोलासणा, सोलहवां वारोला स्थान है व मैंने यहां सत्रहवां नागलपुरा स्थान कहा है ॥ ८२ ॥ ब्रह्माजी बोले कि जो चातुर्विद्य ब्राह्मण नहीं आये थे वे फिर आये और उस सुन्दर स्थान में उन्होंने निवास किया ॥ ८३ ॥ और चौबीस संख्यक वे श्रीरामजी के शासन (आज्ञा) की मिलने की इच्छा से हनुमान्‌जी के समीप गये और फिर लौट आये ॥ ८४ ॥ व उनके दोष से वे सब स्थान च्युति को प्राप्तहुए और कुछ समय बीतनेपर उनका वैर हुआ ॥ ८५ ॥ और भिन्न आचार व भिन्न भाषावाले वे वेष के सन्देह को प्राप्त हुए व पंद्रह हज़ार

संप्राणावा तथा चात्र कन्दरावा प्रकीर्तितम् ॥ वासरोवा त्रयोदशं शरण्डावा चतुर्दशम् ॥ ८१ ॥ लोलासणा पञ्चदशं वारोला षोडशं तथा ॥ नागलपुरा मया चात्र उक्तं सप्तदशं तथा ॥ ८२ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ चातुर्विद्यास्तु ये विप्रा नागताः पुनरागताः ॥ वसतिं तत्र रम्ये च चक्रिरे ते द्विजोत्तमाः ॥ ८३ ॥ चतुर्विंशतिसंख्याका रामशासनलिप्सया ॥ हनूमन्तं प्रति गता व्यावृत्ताः पुनरागताः ॥ ८४ ॥ तेषां दोषात्समस्तास्ते स्थानभ्रंशत्वमागताः ॥ कियत्काले गते तेषां विरोधः समपद्यत ॥ ८५ ॥ भिन्नाचारा भिन्नभाषा वेशसंशयमागताः ॥ पञ्चदशसहस्राणां मध्ये ये के च वाडवाः ॥ ८६ ॥ कृषिकर्मरता आसन्केचिद्यज्ञपरायणाः ॥ केचिन्मल्लाश्च सञ्जाताः केचिद्वै वेदपाठकाः ॥ ८७ ॥ आयुर्वेदरताः केचित्केचिद्रजकयाजकाः ॥ सन्ध्यास्नानपराः केचिन्नीलीकर्तृप्रयाजकाः ॥ ८८ ॥ तन्तुकृद्याजनरतास्तन्तुवायादियाचकाः ॥ कलौ प्राप्ते द्विजा भ्रष्टा भविष्यन्ति न संशयः ॥ ८९ ॥ शूद्रेषु जातिभेदः स्यात्कलौ प्राप्ते नराधिप ॥

ब्राह्मणों के मध्य में कोई ब्राह्मण ॥ ८६ ॥ खेती के कर्म में परायण हुए व कोई यज्ञों में तत्पर हुए तथा कोई मल्ल और कोई वेदपाठी हुए ॥ ८७ ॥ और कोई वैद्यक करनेवाले तथा कोई धोबियों को यज्ञ करानेवाले हुए और कोई संध्या व स्नान में परायण तथा कोई नील करनेवालों को यज्ञ करानेवाले हुए ॥ ८८ ॥ और कलियुग प्राप्त होनेपर कोई वस्त्र बुननेवालों को यज्ञ कराने में परायण व कोई उनसे मांगनेवाले और भ्रष्ट होवेंगे इसमें सन्देह नहीं है ॥ ८९ ॥ व हे नराधिप ! कलियुग प्राप्त होने

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पर शूद्रों में जाति का भेद होगा और बहुतही भ्रष्ट आचारवाले लोगों को जानकर कुटुम्ब के बन्ध से पीड़ित ॥ ९० ॥ कोई ब्राह्मण हे राजन् ! भोजन व आच्छादन में स्वजनों से छोड़ दिये जावैंगे और कोई भी मेल होने से कभी कन्या को न ब्याहैगा तदनन्तर हे राजन् ! कलियुग में वे वणिज् तेली होवैंगे ॥९१॥ और कोई कुम्हार व कोई चावलों के बनानेवाले होवैंगे और कलियुग प्राप्त होनेपर कोई वणिज राजपुत्रों के आश्रय व कोई अनेक जातियों के आश्रित होवैंगे व कोई पृथ्वी में भ्रष्ट होवैंगे ॥ ९२ ॥ और उनके पृथक् आचार व पृथक् सम्बन्ध कियेगये और कितेक ब्राह्मणों का सीतापुर में निवास हुआ ॥ ९३ ॥ और कोई साभ्रमती के किनारे जहां कहीं

भ्रष्टाचारान्न परं ज्ञात्वा ज्ञातिबन्धेन पीडिताः ॥ ९० ॥ भोजनाच्छादने राजन्परित्यक्ता निजैर्जनैः ॥ न कोऽपि कन्यां विवहेत्संसर्गेण कदाचन ॥ ततस्ते वणिजो राजंस्तैलकाराः कलौ किल ॥ ९१ ॥ केचिच्च कुम्भकाराश्च केचित्तन्दुलकारिणः ॥ राजपुत्राश्रिताः केचिन्नानावर्णसमाश्रिताः ॥ कलौ प्राप्ते तु वणिजो भ्रष्टाः केपि महीतले ॥ ९२ ॥ तेषां तु पृथगाचाराः सम्बन्धाश्च पृथक्कृताः ॥ सीतापुरे च वसतिः केषांचित्समजायत ॥ ९३ ॥ साभ्रमत्यास्तटे केचिद्यत्र कुत्र व्यवस्थिताः ॥ सीतापुरात्तु ये पूर्वं भयभीताः समागताः ॥ ९४ ॥ साभ्रमत्युत्तरे कूले श्रीक्षेत्रे ते व्यवस्थिताः ॥ यदा तेषां परं स्थानं दत्तं वै सुखवासकम् ॥ ९५ ॥ पुनस्तेऽपि गताः सद्यस्तस्मिन्सीतापुरे स्वयम् ॥ पञ्चपञ्चाशद्ग्रामाश्च दत्तास्तु पुनरागमे ॥ ९६ ॥ रामेण मोढविप्राणां निवासांस्तेषु चक्रिरे ॥ वृत्तिबाह्यास्तु ये विप्रा धर्मारण्यान्तरस्थिताः ॥ ९७ ॥ नास्माकं वणिजां वृत्तौ ग्रामवृत्तौ न किञ्चन ॥ प्रयोजनं हि विप्रेन्द्रा वासोऽस्माकं तु

स्थितहुए और जो कोई सीतापुर से पूर्व भयभीत होकर आये ॥ ९४ ॥ वे साभ्रमती के उत्तर किनारे में श्रीक्षेत्रनगर में स्थित हुए जब उनको सुखवासक नामक उत्तम स्थान दियागया ॥ ९५ ॥ तब फिर वे उसीक्षण उस सीतापुर में आपही स्थित हुए और फिर आनेपर श्रीरामजी ने मोढ ब्राह्मणों को पचपन ग्राम दिये और उन ग्रामों में उन्होंने निवास किया व जीविका के बाहर जो ब्राह्मण धर्मारण्य के मध्य में स्थित हुए ॥ ९६ । ९७ ॥ उन्होंने कहा कि हे द्विजेन्द्रो ! वणिजों की जीविका व ग्राम की जीविका

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

में हमलोगों का कुछ प्रयोजन नहीं है बरन हमलोगों को यहां निवास रुचता है ॥ ९८ ॥ यह कहने पर उन त्रैविद्य ब्राह्मणों ने उन चातुर्विद्य ब्राह्मणों को आज्ञा दिया और उन ग्रामों में वे चातुर्विद्य द्विजोत्तम ब्राह्मण ॥ ९९ ॥ अपने कर्मों में परायण व शान्त और कृषीकर्म में लगेहुए थे और धर्मारण्य से थोड़ेही दूर पै वे गौवों को चराते थे ॥ ३०० ॥ वहां बहुत से ब्राह्मणों के पुत्र गोपाल हुए और चातुर्विद्य बालकों ने उनकी गौवों को चराया और उनके भोजन के लिये भलीभांति बनायेहुए अन्न पानादिको ॥ १ ॥ विधवा स्त्रियां व बालकलोग भी ले आते थे ॥ २ ॥ हे राजन्! कुछ समय के बाद परस्पर उनकी प्रीति हुई और प्रेम से गोपाल व बालकों की कन्याओं

रोचते ॥ ९८ ॥ इत्युक्ते समनुज्ञातास्त्रैविद्यैस्तैर्द्विजोत्तमैः ॥ तेषु ग्रामेषु ते विप्राश्चातुर्विद्या द्विजोत्तमाः ॥ ९९ ॥ स्वकर्मनिरताः शान्ताः कृषिकर्मपरायणाः ॥ धर्मारण्यान्नातिदूरे धेनूः सञ्चारयन्ति ते ॥ ३०० ॥ बहवस्तत्र गोपाला बभूवुर्द्विजबालकाः ॥ चातुर्विद्यास्तु शिशवस्तेषां धेनूरचारयन् ॥ तेषां भोजनकामाय अन्नपानादिसत्कृतम् ॥ १ ॥ अनयन्वै युवतयो विधवा अपि बालकाः ॥ २ ॥ कालेन कियता राजंस्तेषां प्रीतिरभून्मिथः ॥ गोपाला बुभुजुः प्रेम्णा कुमार्यो द्विजबालिकाः ॥ ३ ॥ जाताः सगर्भास्ताः सर्वा दृष्टास्तैर्द्विजसत्तमैः ॥ परित्यक्ताश्च सदनाद्धिक्कृताः पापकर्मणा ॥ ४ ॥ ताभ्यो जाताः कुमारा ये कातीभा गोलकास्तथा ॥ धेनुजास्ते धरालोके ख्यातिं जग्मुर्द्विजोत्तमाः ॥ ५ ॥ वृत्तिबाह्यास्तु ते विप्रा भिक्षां कुर्वन्ति नित्यशः ॥ अन्यच्च श्रूयतां राजंस्त्रैविद्यानां द्विजन्मनाम् ॥ ६ ॥ कुष्ठी कोऽपि तथा पङ्गुर्मूर्खो वा बधिरोऽपि वा ॥ काणो वाप्यथ कुब्जो वा बद्धवागथवा पुनः ॥ ७ ॥ अप्राप्तकन्यका ह्येते

ने भोजन किया ॥ ३ ॥ और उन द्विजोत्तमों से देखी हुई वे सब स्त्रियां गर्भिणी हुईं और पापकर्म से धिक्कार कीहुई वे घर से छोड़ दीगईं ॥ ४ ॥ और उनसे जो बालक उत्पन्न हुए वे कातीभ और गोलक संज्ञक हुए व वे द्विजोत्तम लोग पृथ्वीलोक में धेनुक ऐसे प्रसिद्ध हुए ॥ ५ ॥ और जीविका से बाहर वे ब्राह्मण नित्य भिक्षा करते थे व हे राजन्! त्रैविद्य ब्राह्मणों के अन्य चारित्र को सुनिये ॥ ६ ॥ कि कोई कुष्ठी व लँगड़ा, मूर्ख, बहरा, काना व कूबरा और बंधे वचनवाला पुरुष ॥ ७ ॥ कन्याओं को न पाये

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

हुए ये चातुर्विद्य ब्राह्मणों के आश्रित हुए व हे राजन्! बड़े द्रव्य के कारण उनकी कुँवारी कन्या ॥ ८ ॥ उस समय हे राजन्! व्याही गईं और उससे जो लड़के उत्पन्न हुए वे पृथ्वीलोकमें उसी से त्रिदलज उत्पन्न हुए ॥ ९ ॥ व मेलसे उपजे हुए उन ब्राह्मणोंने परस्पर जीविका किया व हे राजन्! त्रैविद्य ब्राह्मणोंका अन्य चरित्र सुनिये ॥ १० ॥ कि श्रीरामजी से दिये हुए ग्राम से कर लेने के कारण सब ब्राह्मणों ने इकट्ठा होकर उस ग्राम को भेंट लेकर ॥ ११ ॥ आधा निवेदन किया व आधे की रक्षा किया और यह मिला ऐसा मानते हुए वे ब्राह्मण चांचल्यभागी हुए ॥ १२ ॥ और जो महास्थान को गये वे विस्मय को प्राप्त हुए व उनके मध्य में किसी ब्राह्मण ने क्रोधित होकर

चातुर्विद्यान्समाश्रिताः॥ वित्तेन महता राजन्सुतास्तेषां कुमारिकाः ॥ ८ ॥ उद्वाहितास्तदा राजंस्तस्माज्जातार्भकास्तु ये ॥ त्रिदलजास्ते विख्याताः क्षितिलोकेऽभवंस्ततः ॥ ९ ॥ वृत्तिं चक्रुर्ब्राह्मणास्तेऽन्योन्यं मिश्रसमुद्भवाः॥ अन्यच्च श्रूयतां राजंस्त्रैविद्यानां द्विजन्मनाम् ॥ १० ॥ रामदत्तेन ग्रामेण करग्रहणहेतवे ॥ एकीभूय द्विजैः सर्वैर्ग्रामं प्रादाय तं बलिम् ॥ ११ ॥ अर्द्धं निवेदयामासुरर्द्धं चैवोपरक्षितम् ॥ एतल्लब्धं हि मन्वानास्ते द्विजा लौल्यभागिनः॥ १२ ॥ महास्थानगता ये च ते हि विस्मयमाययुः॥ तन्मध्ये कोऽपि विप्रस्तानुवाच कुपितो वचः॥ १३ ॥ विप्र उवाच॥ अनृतं चैव भाषन्ते लौल्येन महता वृताः ॥ पुत्रपौत्रविनाशाय ब्रह्मस्वेष्वतिलोलुपाः॥ १४ ॥ न विषं विषमित्याहुर्ब्रह्मस्वं विषमुच्यते ॥ विषमेकाकिनं हन्ति ब्रह्मस्वं पुत्रपौत्रकम् ॥ १५ ॥ ब्रह्मस्वेन च दग्धेषु पुत्रदारगृहादिषु ॥ न च ते ह्यपि तिष्ठन्ति ब्रह्मस्वेन विनाशिताः ॥ १६ ॥ न नाकं लभते सोऽथ सदा ब्रह्मस्वहारकः ॥ यदा वराटिकां

उनसे वचन कहा ॥ १३ ॥ ब्राह्मण बोला कि बड़ी चंचलता से घिरेहुए और ब्राह्मणों के धनों में बहुत ही लोभी मनुष्य पुत्रों व पौत्रों के नाश के लिये झूंठ बोलते हैं ॥ १४ ॥ विष को विद्वान्लोग विष नहीं कहते हैं बरन ब्राह्मण का धन विष कहाजाता है क्योंकि विष एकही को मारता है और ब्राह्मण का धन पुत्रों व पौत्रों को नाश करता है ॥ १५ ॥ और ब्राह्मण के धन से पुत्र, स्त्री व घर आदि के जलजाने पर ब्रह्मधन से नाश किये हुए वे भी नहीं स्थित होते हैं ॥ १६ ॥ और सदैव ब्राह्मण का

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

धन हरनेवाला वह मनुष्य स्वर्ग को नहीं पाता है और ब्राह्मण की कौड़ी को जब जो मनुष्य हरते हैं ॥ १७ ॥ तदनन्तर हरनेवाला मनुष्य तीन जन्मों तक नरक को जाता है और उससे दिये हुए जल को पूर्वज लोग कभी नहीं ग्रहण करते हैं ॥ १८ ॥ और क्षयाह में उसके पिंड व जलदान कर्म को पितर नहीं भोजन करते हैं और वह सन्तान को नहीं पाता है व मिलीहुई सन्तान जीती नहीं है ॥ १९ ॥ और यदि दैवयोग से सन्तान जीती है तो भ्रष्ट आचारवाली होती है ॥ २० ॥ गेरह ब्राह्मण बोले कि हे विप्र ! झूंठ नहीं कहागया हमलोगों को तुम क्यों दूषित करते हो और अपराध के विना किस को कड़ुई उक्ति योग्य होती है ॥ २१ ॥ हे पार्थ ! उस

चैव ब्राह्मणस्य हरन्ति ये ॥ १७ ॥ ततो जन्मत्रयाण्येव हर्त्ता निरयमाव्रजेत् ॥ पूर्वजा नोपभुञ्जन्ति तत्प्रदत्तं जलं क्वचित् ॥ १८ ॥ क्षयाहे नोपभुञ्जन्ति तस्य पिण्डोदकक्रियाः ॥ सन्ततिं नैव लभते लभ्यमाना न जीवति ॥ १९ ॥ यदि जीवति दैवाच्चेद्भ्रष्टाचारा भवेदिति ॥ २० ॥ एकादशविप्रा ऊचुः ॥ नासत्यं भाषितं विप्र कथं दूषयसे हि नः ॥ अपराधं विना कस्य कटूक्तिर्युज्यते किल ॥ २१ ॥ तच्छ्रुत्वा तैर्द्विजैः पार्थ ग्रामग्राहयिता वणिक् ॥ परिपृष्टः स तत्सर्वं कथयामास कारणम् ॥ २२ ॥ वणिजैरेव मे दत्तो बलिश्च द्विजसत्तमाः ॥ तत्सर्वं शुद्धभावेन कथितं तु द्विजन्मसु ॥ २३ ॥ ततोऽर्द्धदलं ज्ञात्वा ते कुपिता द्विजपुत्रकाः ॥ वृत्तेर्बहिष्कृतास्ते वै एकादश द्विजास्ततः ॥ २४ ॥ एकादशसमा ज्ञातिर्विख्याता भुवनत्रये ॥ न तेषां सह संबन्धो न विवाहश्च जायते ॥ २५ ॥ एकादशसमा ये च वहिर्ग्रामे वसन्ति ते ॥ एवं भेदाः समभवन्नाना मोढद्विजन्मनाम् ॥ युगानुसारात्कालेन ज्ञातीनां च

वचन को सुनकर उन ब्राह्मणों ने ग्राम को ग्रहण करनेवाले वणिज् से पूछा और उसने उस सब कारण को कहा ॥ २२ ॥ कि हे द्विजोत्तमो ! वणिजों ने मुझको बलि दिया है वह सब ब्राह्मणों से शुद्धभाव से कहागया ॥ २३ ॥ तदनन्तर आधा भाग जान कर वे ब्राह्मणों के पुत्र क्रोधित हुए तदनन्तर जीविका से बाहर किये हुए गेरह ब्राह्मण ॥ २४ ॥ त्रिलोक में कुटुम्ब से एकादशसमा ऐसे प्रसिद्ध हुए व उनके साथ संबन्ध व विवाह नहीं होता है ॥ २५ ॥ और जो एकादशसमा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

संज्ञक ब्राह्मण हैं वे गाँव के बाहर बसते हैं इस प्रकार समय से युग के अनुसार मोढ ब्राह्मणों के वंशों के व धर्म के अनेक भेद हुए ॥ ३२६ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे धर्मारण्यमाहात्म्ये देवीदयालुमिश्रविरचितायां भाषाटीकायां ज्ञातिभेदवर्णनं नामैकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ३९ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

दो॰ । धर्मारण्यमहात्म के, सुने मिलै फल जौन । चालिसवें अध्याय में, कह्यो चरित सब तौन ॥ नारदजी बोले कि हे ब्रह्मन् ! उस मोहेरकपुर में जाति का भेद होनेपर त्रैविद्य ब्राह्मणों ने क्या किया है उसको पूंछते हुए मुझसे कहिये ॥ १ ॥ ब्रह्मा बोले कि अपने स्थान में सब ब्राह्मण हर्ष से पूर्ण मन वाले थे और कोई अग्निहोत्र में

वृषस्य वा ॥ ३२६ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे धर्मारण्यमाहात्म्ये ज्ञातिभेदवर्णनंनामैकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ३९ ॥

नारद उवाच ॥ ज्ञातिभेदे तु संजाते तस्मिन्मोहेरके पुरे ॥ त्रैविद्यैः किं कृतं ब्रह्मंस्तन्ममाचक्ष्व पृच्छतः ॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ स्वस्थाने वाडवाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः ॥ अग्निहोत्रपराः केऽपि केऽपि यज्ञपरायणाः ॥ २ ॥ केऽपि चाग्निसमाधानाः केऽपि स्मार्ता निरन्तरम् ॥ पुराणन्यायवेत्तारो वेदवेदाङ्गवादिनः ॥ ३ ॥ सुखेन स्वान्सदाचारान्कुर्वन्तो ब्रह्मवादिनः ॥ एवं धर्मसमाचारान्कुर्वतां कुशलात्मनाम् ॥ ४ ॥ स्थानाचारान्कुलाचारानधिदेव्याश्च भाषितान् ॥ धर्मशास्त्रस्थितं सर्वं काजेशैरुदितं च यत् ॥ ५ ॥ परम्परागतं धर्ममूचुस्ते वाडवोत्तमाः ॥ ६ ॥ ब्राह्मणा ऊचुः ॥ यस्याभिधानं लिखितं रक्तपादैस्तु वाडवाः ॥ ज्ञातिश्रेष्ठः स विज्ञेयो बहिर्ज्ञेयस्ततः परम् ॥ ७ ॥ रक्तं पदं नाम साध्यं प्र

परायण व कोई यज्ञों में परायण थे ॥ २ ॥ और कोई अग्न्याधान करनेवाले व कोई सदैव स्मार्त थे और कोई पुराणों व न्याय के जाननेवाले तथा वेदों व वेदांगोंके कहनेवाले थे ॥ ३ ॥ और वे ब्रह्मवादी सुखसे अपने उत्तम आचारोंको करते थे इसप्रकार अधिदेवी से कहेहुए धर्माचार, स्थानाचार व कुलाचारों को करते हुए निपुण चित्तवाले उन ब्राह्मणों का वह सब धर्मशास्त्र में स्थित कर्म हुआ जोकि ब्रह्मा, विष्णु व शिवजी से कहागया था ॥ ४ । ५ ॥ और उन द्विजोत्तमों ने परंपरा से प्राप्त धर्म को कहा ॥ ६ ॥ ब्राह्मण बोले कि हे ब्राह्मणो ! रक्तपादों से जिसका नाम लिखा गया है वह जाति में श्रेष्ठ जानने योग्य है व उसके उपरान्त बाहर जानने योग्य है ॥ ७ ॥ और रक्तपद

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri, Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

साध्य नाम है व अपने वंश की प्रसिद्धि के लिये चन्दन व पुष्पादिकों से पूजित उन कुंकुम से कुछ लाल चरणोंवाले द्विजों से ॥ ८ ॥ मिलकर जो लिखा गया है वह रक्तपाद कहाजाता है और वे सब सावधान होकर श्रीरामजी के लेखको पूजन करैं ॥ ९ ॥ व सदैव ब्राह्मणलोग श्रीरामजी के हाथ की मुद्रा (छाप) को पूजन करैं और यदि जिनके उत्तम आचार में व्यभिचार आदिक दोष होवैंगे ॥ १० ॥ उनको वह दण्ड करने योग्य होगा जोकि विधिपूर्वक ब्राह्मणों से कहा गया है और जबतक दण्ड (बलि) नहीं देता है तबतक श्रीरामजी की मुद्रा का चिह्न नहीं होता है ॥ ११ ॥ क्योंकि बलि देने के विना मुद्रा का चिह्न नहीं

सिद्ध्यै स्वकुलस्य वै ॥ कुङ्कुमारक्तपादैस्तैर्गन्धपुष्पादिचर्चितैः ॥ ८ ॥ संभूय लिखितं यच्च रक्तपादं तदुच्यते ॥ रामस्य लेख्यं ते सर्वे पूजयन्तु समाहिताः ॥ ९ ॥ रामस्य करमुद्रां च पूजयन्तु द्विजाः सदा ॥ येषां दोषाः सदाचारे व्यभिचारादयो यदि ॥ १० ॥ तेषां दण्डो विधेयस्तु य उक्तो विधिवद्द्विजैः ॥ चिह्नं न राममुद्राया यावद्दण्डं ददाति न ॥ ११ ॥ विना दण्डप्रदानेन मुद्राचिह्नं न धार्यते ॥ मुद्राहस्ताश्च विज्ञेया वाडवा नृपसत्तम ॥ १२ ॥ पुत्रे जाते पिता दद्याच्छ्रीमात्रे तु बलिं सदा ॥ पलानि विंशतिः सर्पिर्गुडः पञ्चपलानि च ॥ १३ ॥ कुङ्कुमादिभिरभ्यर्च्यो जातमात्रः सुतस्तदा ॥ षष्ठे च दिवसे राजन्षष्ठीं पूजयते सदा ॥ १४ ॥ दद्यात्तत्र बलिं साज्यं कुर्याद्धि बलिपञ्चकम् ॥ पञ्चप्रस्थान्बलीन्दद्यात्सवस्त्राञ्छ्रीफलैर्युतान् ॥ १५ ॥ कुङ्कुमादिभिरभ्यर्च्य श्रीमात्रे भक्तिपूर्वकम् ॥ वित्तशाठ्यं न कुर्वीत कुले सन्ततिवृद्धये ॥ १६ ॥ तद्धि चार्पयता द्रव्यं वृद्धौ यद्भाषितं पुनः ॥ जन्मनोऽनन्तरं कार्यं जातकर्म

धारण किया जाता है व हे नृपोत्तम ! मुद्रा हाथवाले ब्राह्मण जानने योग्य हैं ॥ १२ ॥ पुत्र पैदा होनेपर पिता सदैव श्रीमाताजी के लिये बलि को देवै बीसपल घी और पांच पल गुड़ देवै ॥ १३ ॥ और पैदा हुआ पुत्र उस समय कुंकुमादिकों से पूजने योग्य है और हे राजन् ! सदैव छठें दिन छठी को पूजै ॥ १४ ॥ और उसमें घी समेत बलि को देवै व पांच बलियों को देवै और श्रीफलों से संयुत व वस्त्रोंसमेत पांच प्रस्थ प्रमाणभर बलियों को देवै ॥ १५ ॥ और भक्तिपूर्वक श्रीमाता के लिये कुंकुम आदि से पूजकर वंश में सन्तान की वृद्धि के लिये वित्तशाठ्य न करै ॥ १६ ॥ और वृद्धि में जो कहा गया है उस धनको देते हुए पिता को जन्म के बाद

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

विधिपूर्वक जातकर्म करना चाहिये ॥ १७ ॥ और इसमें जो वृत्ति ब्राह्मणों से कहीगई है वह विभाग कीजाती है कि पहली जितनी वृत्ति मिलै ॥ १८ ॥ उस जीविका का आधाभाग गोत्रदेवी के लिये देवै और पुत्र उत्पन्न होनेपर वणिज् को दूना होता है ॥ १९ ॥ और जो मांडलीय शूद्र हैं उनका यह आधा कर होता है और अडालजों का तिगुना व गोभुजों को चौगुना होता है ॥ २० ॥ यह व अन्य सब शूद्रजातियों में कहागया है और दैव के वश से जिसके हत्या का दोष उत्पन्न हुआ है ॥ २१ ॥ उसका वेदशास्त्री लोगों से विधिपूर्वक दण्ड करना चाहिये और अगम्यास्त्री के गमन से जब जिसको दोष उत्पन्न होवै तब त्रैविद्य जातिवाले श्रेष्ठ ब्राह्मणों को फिर उसका

यथाविधि ॥ १७ ॥ विप्रानुकीर्तिता याऽत्र वृत्तिः सापि विभज्यते ॥ प्रथमा लभ्यमाना च वृत्तिर्वै यावती पुनः ॥ १८ ॥ तस्या वृत्तेरर्द्धभागो गोत्रदेव्यै तु कल्प्यताम् ॥ द्विगुणं वणिजां चैव पुत्रे जाते भवेदिति ॥ १९ ॥ माण्डलीयाश्च ये शूद्रास्तेषामर्धकरंत्विदम् ॥ अडालजानां त्रिगुणं गोभुजानां चतुर्गुणम् ॥ २० ॥ इत्येतत्कथितं सर्वमन्यच्च शूद्रजातिषु ॥ यस्य दोषस्तु हत्यायाः समुद्भूतो विधेर्वशात् ॥ २१ ॥ दण्डस्तु विधिवत्तस्य कर्त्तव्यो वेदशास्त्रिभिः ॥ अगम्या गमनाद्यस्य दोष उत्पद्यते यदा ॥ तस्य दण्डःपुनः कार्य आर्यैस्त्रैविद्यजातिभिः ॥ २२ ॥ पङ्क्तिभेदस्य कर्त्ता च गोसहस्रवधः स्मृतः ॥ वृत्तिभागविभजनं तथा न्यायविचारणम् ॥ श्रीरामदूतकस्याग्रे कर्त्तव्यमिति निश्चयः ॥ २३ ॥ तस्य पूजां प्रकुर्वीत तदा कालेऽथवा सदा ॥ तैलेन लेपयेत्तस्य देहे वै विघ्नशान्तये ॥ २४ ॥ धूपं दीपं फलं दद्यात्पुष्पैर्नानाविधैःकिल ॥ पूजितो हनुमानेव ददाति तस्य वाञ्छितम् ॥ २५ ॥ प्रतिपुत्रं तु तस्याग्रे कुर्यान्नान्यत्र कुत्रचित् ॥ श्रीमाताबकुलस्वामिभागधेयं तु

दण्ड करना चाहिये ॥ २२ ॥ और जो पंक्तिभेद का करनेवाला है वह हज़ार गऊ का वधकर्ता कहा गया है और जीविका के अंश का विभाग व न्याय का विचार श्रीरामजी के दूत हनुमान्जी के आगे करना चाहिये यह निश्चय है ॥ २३ ॥ और उस समय या सदैव उन हनुमान्जी का पूजन करै व विघ्न की शान्ति के लिये तैलसे उनके शरीर में लेपन करै ॥ २४ ॥ और धूप, दीप व फलको देवै क्योंकि अनेक भांति के पुष्पों से पूजे हुए हनुमान्जी उसको मनोरथ देते हैं ॥ २५ ॥ उन हनुमान्जी के

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

आगे प्रत्येक पुत्र में ऐसा करै अन्यत्र कहीं न करै और पहले श्रीमाता व बकुलस्वामी को बलि देवै ॥ २६ ॥ पश्चात् ब्राह्मणों को प्रतिग्रह (दान) करना चाहिये और ब्राह्मणों के समाजों में न्याय व अन्याय के निर्णय में ॥ २७ ॥ हृदय में निर्णयको धरकर वहां बैठे हुए ब्राह्मणों को केवल धर्म की बुद्धि से निर्णय को सुनावै और पक्षपात वर्जित करै ॥२८॥ और सबों का सम्मत करना चाहिये क्योंकि वह विकाररहित होता है यदि बुलाया हुआ ब्राह्मण सभा में उससे भय को प्राप्त होवै ॥२९॥ तो निर्णय किये हुए अर्थ के विचार में उसका वचन न सुनना चाहिये और सब ब्राह्मण मिलकर जिसको वर्जित करैं ॥ ३० ॥ उसके साथ अन्न पानादिक

पूर्वतः ॥ २६ ॥ पश्चात्प्रतिग्रहं विप्रैः कर्त्तव्यमिति निश्चितम् ॥ समागमेषु विप्राणां न्यायान्यायविनिर्णये ॥ २७ ॥ निर्णयं हृदये धृत्वा तत्रस्थाञ्छ्रावयेद्द्विजान् ॥ केवलं धर्मबुद्ध्या च पक्षपातं विवर्जयेत् ॥ २८ ॥ सर्वेषां संमतं कार्यं तद्व्यविकृतमेव च ॥ आकारितस्ततो विप्रः सभायां भयमेति चेत् ॥ २९ ॥ न तस्य वाक्यं श्रोतव्यं निर्णीतार्थविचारणे ॥ यस्य वर्जस्तु क्रियते मिलित्वा सर्ववाडवैः ॥३०॥ अन्नपानादिकं सर्वं कार्यं तेन विवर्जयेत् ॥ तस्य कन्या न दातव्या तत्संसर्गी च तादृशः ॥ ३१ ॥ ततो दण्डं प्रकुर्वीत सर्वैरेव द्विजोत्तमैः ॥ भोजनं कन्यकादानमिति दाशरथेर्मतम् ॥ ३२ ॥ यत्किंचित्कुरुते पापं लघुस्थूलमथापि वा ॥ शुष्कार्द्रं वसते चान्ने तस्मादन्नं परित्यजेत् ॥ ३३ ॥ कुर्वंस्तत्पापभागी स्यात्तस्य दण्डो यथाविधि ॥ न्यायं न पश्यते यस्तु शक्तो सत्यां सदा यतः ॥ ३४ ॥ पापभागी स

सब कार्य वर्जित करै और उसको कन्या न देना चाहिये व उसका मेल करनेवाला भी वैसाही होताहै ॥ ३१ ॥ उसी कारण सब द्विजोत्तमों से दण्ड करना चाहिये और भोजन व कन्यादान करना चाहिये यह श्रीरामजी का सम्मत है ॥ ३२ ॥ और जो कुछ छोटा या बड़ा व सूखा या भीगा पाप मनुष्य करताहै वह सब उसके अन्न में बसता है इस कारण अन्न को त्याग देवै ॥ ३३ ॥ क्योंकि करता हुआ मनुष्य उसके पाप का भागी होता है और उसका विधिपूर्वक दण्ड करना चाहिये और शक्ति होने पर जो सदैव जिससे न्याय को नहीं देखता है ॥ ३४ ॥ उसी कारण वह पाप भागी जानने योग्य है यह सत्य है इसमें सन्देह नहीं है और जो दुष्टकर्मी

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

पापियों की घूस लेता है उनका सब पाप उसको होता है इसमें सन्देह नहीं है ॥ ३५ ॥ और उसका अन्न व कन्या को भी कभी न ग्रहण करै व जो मनुष्य पुत्रों का भी हित करै ॥ ३६ ॥ वह इन सब नियमों को पालन करै इसमें सन्देह नहीं है ऐसा पत्र लिखकर वे ब्राह्मण प्रसन्न हुए ॥ ३७ ॥ जिस प्रकार भयंकर कलियुग प्राप्त होने पर मनुष्य पाप न करैं ऐसा जानकर उन सबों ने न्यायधर्म को किया ॥ ३८ ॥ व्यासजी बोले कि कलियुग प्राप्त होने पर जिस लिये सब ब्राह्मण स्थान से भ्रष्ट होवैंगे उससे उत्कृष्ट पक्ष को ग्रहण करैंगे और पक्षपाती होवैंगे ॥ ३९ ॥ और म्लेच्छों के ग्राम कोलाविध्वंसियों से भोग किये जावैंगे और कलियुग में वे ब्राह्मण वेदोंसे भ्रष्ट

विज्ञेय इति सत्यं न संशयः ॥ उत्कोचं यस्तु गृह्णाति पापिनां दुष्टकर्मिणाम् ॥ सकलं च भवेत्तस्य पापं नैवात्र संशयः ॥ ३५ ॥ तस्यान्नं नैव गृह्णीयात् कन्यापि न कदाचन ॥ हितमाचरते यस्तु पुत्राणामपि वै नरः ॥ ३६ ॥ स एतान्नियमान्सर्वान्पालयेन्नात्र संशयः ॥ एवं पत्रं लिखित्वा तु वाडवास्ते प्रहर्षिताः ॥ ३७ ॥ प्राप्ते कलियुगे घोरे यथा पापं न कुर्वते ॥ इति ज्ञात्वा तु सर्वे ते न्यायधर्मं प्रचक्रिरे ॥ ३८ ॥ व्यास उवाच ॥ कलौ प्राप्ते द्विजाः सर्वे स्थानभ्रष्टा यतस्ततः ॥ ग्रहीष्यन्त्युत्कलं पक्षं तथा स्युः पक्षपातिनः ॥ ३९ ॥ भोक्ष्यन्ते म्लेच्छकग्रामान्कोलाविध्वंसिभिः किल ॥ वेदभ्रष्टाश्च ते विप्रा भविष्यन्ति कलौ युगे ॥ ४० ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ देशे देशे गमिष्यन्ति ते विप्रा वणिजस्तथा ॥ ज्ञायन्ते वै कथं सर्वैः केन चिह्नेन मारिष ॥ ४१ ॥ यस्मिन्गोत्रे समुत्पन्ना वाडवा ये महाबलाः ॥ ४२ ॥ व्यास उवाच ॥ ज्ञायते गोत्रसंज्ञाऽथ केचिच्चैव पराक्रमैः ॥ यस्य यस्य च यत्कर्म तस्य तस्यावटङ्ककः ॥ ४३ ॥ अवटङ्कैर्हि ज्ञायन्ते

होवैंगे ॥ ४० ॥ युधिष्ठिरजी बोले कि हे मारिष ! वे ब्राह्मण व वणिज् देश, देश में जावैंगे तो किस चिह्न से सबों से वे जानेजाते हैं ॥ ४१ ॥ जो कि बड़े बलवान् ब्राह्मण जिस गोत्र में उत्पन्न हैं ॥ ४२ ॥ व्यासजी बोले कि गोत्र की संज्ञा जानीजाती है और कोई ब्राह्मण पराक्रम से जानेजाते हैं और जिस जिसका जो कर्म है उस उसका वह अवटंक होताहै ॥ ४३ ॥ और अवटंकों से वे जानेजाते हैं और अन्यथा कभी नहीं जानेजाते हैं व हे नृपात्मज, राजन् ! गोत्रों से और प्रवरों तथा

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

अवटंकों से श्रेष्ठ मोढसंज्ञक ब्राह्मण जानेजाते हैं ॥ ४४ । ४५ ॥ युधिष्ठिरजी बोले कि तुम्हारे मुख से गोत्रों और प्रवरों से ये सुने गये हैं व किस शाखा के वे पढ़ने वाले हैं हे पितामहजी ! उसको मुझसे कहिये ॥ ४६ ॥ व्यासजी बोले कि जहां तहां स्थित बड़े बलवान् माध्यंदिनी शाखावाले ब्राह्मण जानेजाते हैं और गुणों से संयुत कोई ब्राह्मण कौथमी शाखा के आश्रित होकर स्थित होते हैं ॥ ४७ ॥ व हे महामते ! ऋग्वेद व अथर्वण वेद से उपजी हुई वह शाखा नष्ट होगई है इस प्रकार धर्मारण्य में धर्म से उपजे हुए वे बड़े ऐश्वर्यवान् ब्राह्मण पुत्रों व पौत्रों से संयुत हुए और बड़े ऐश्वर्यवान् सब शूद्र पुत्रों व पौत्रों से संयुत हुए ॥ ४८ । ४९ ॥

ज्ञायन्ते नान्यथा क्वचित् ॥ गोत्रैश्च प्रवरैश्चैव अवटङ्कैर्नृपात्मज ॥ ४४ ॥ ज्ञायन्ते हि द्विजा राजन्मोढब्राह्मणसत्तमाः ॥ ४५ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ गोत्रैश्च प्रवरैश्चैव श्रुता एते तवाननात् ॥ कां वा शाखामधीयानास्तन्मे ब्रूहि पितामह ॥ ४६ ॥ व्यास उवाच ॥ ज्ञायन्ते यत्र तत्रस्था माध्यन्दिनीया महाबलाः ॥ कौथमीं च समाश्रित्य केचिद्विप्रा गुणान्विताः ॥ ४७ ॥ ऋगथर्वणजा शाखा नष्टा सा च महामते ॥ एवं वै वर्तमानास्ते वाडवा धर्मसंभवाः ॥ ४८ ॥ धर्मारण्ये महाभागाः पुत्रपौत्रान्विताऽभवन् ॥ शूद्राः सर्वे महाभागाः पुत्रपौत्रसमावृताः ॥ ४९ ॥ धर्मारण्ये महातीर्थे सर्वे ते द्विजसेवकाः ॥ अभवन्रामभक्ताश्च रामाज्ञां पालयन्ति च ॥ ५० ॥ आज्ञामत्याऽऽदरेणेह हनूमन्तश्च वीर्यवान् ॥ पालयेत्सोऽपि चेदानीं संप्राप्ते वै कलौ युगे ॥ ५१ ॥ अदृष्टरूपी हनुमांस्तत्र भ्रमति नित्यशः ॥ त्रैविद्या वाडवा यत्र चातुर्विद्यास्तथैव च ॥ ५२ ॥ सभायामुपविष्टा येऽन्यायात्पापं प्रकुर्वते ॥ जयो हि न्यायकर्त्तॄणामजयोऽन्याय

व धर्मारण्य महातीर्थ में वे सब ब्राह्मणों के सेवक हुए और रामजी के भक्त वे श्रीरामजी की आज्ञा को पालन करते हैं ॥ ५० ॥ और पराक्रमी हनुमान्जी बड़े आदर से आज्ञा को पालन करते हैं इस समय कलियुग प्राप्त होनेपर वे ॥ ५१ ॥ हनुमान्जी अदृष्टरूप होकर वहां नित्य घूमते हैं और जिस कलियुग में त्रैविद्य व चातुर्विद्य ब्राह्मण ॥ ५२ ॥ जो सभा में बैठे हैं वे अन्याय से पापको करते हैं न्याय करनेवालों की जय होती है व अन्याय करनेवालों की पराजय

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

होती है ॥ ५३ ॥ और अपराध समेत पुत्र, पिता व भाई में जो पक्षपात करता है उसके ऊपर हनुमान्‌जी क्रोधित होते हैं ॥ ५४ ॥ और ये क्रोधित हनुमान्‌जी धन का नाश करते हैं व पुत्रनाश करते हैं और घर को नाश करतेहैं ॥ ५५ ॥ और सेवाके लिये बनाया हुआ जो शूद्र ब्राह्मणों की सेवा नहीं करता है व जो जीविकाको नहीं देता है उसके ऊपर हनुमान्‌जी क्रोधित होते हैं ॥ ५६ ॥ व श्रीरामजी का वचन स्मरण करते हुए हनुमान्‌जी धननाश, पुत्रनाश व स्थाननाश करते हैं ॥ ५७ ॥ व हे नृपोत्तम ! श्रीरामजी की प्रसन्नता से जहां कहीं भी स्थित वे ब्राह्मण या शूद्र धनहीन नहीं होते हैं ॥ ५८ ॥ और जो मूर्ख व अधर्मी पाप और पाषण्डमें स्थित होकर अपने

कारिणाम् ॥ ५३ ॥ सापराधे यस्तु पुत्रे ताते भ्रातरि चापि वा ॥ पक्षपातं प्रकुर्वीत तस्य कुप्यति वायुजः ॥ ५४ ॥ कुपितो हनुमानेष धननाशं करोति वै ॥ पुत्रनाशं करोत्येव धामनाशं तथैव च ॥ ५५ ॥ सेवार्थं निर्मितः शूद्रो न विप्रान्परिषेवते ॥ वृत्तिं वा न ददात्येव हनुमांस्तस्य कुप्यति ॥ ५६ ॥ अर्थनाशं पुत्रनाशं स्थाननाशं महाभयम् ॥ कुरुते वायुपुत्रो हि रामवाक्यमनुस्मरन् ॥ ५७ ॥ यत्र कुत्र स्थिता विप्राः शूद्रा वा नृपसत्तम ॥ न निर्द्धना भवेयुस्ते प्रसादाद्राघवस्य च ॥ ५८ ॥ यो मूढश्चाप्यधर्मात्मा पापपाषण्डमाश्रितः ॥ निजान्विप्रान्परित्यज्य परज्ञातींश्च मन्यते ॥ ५९ ॥ तस्य पूर्वकृतं पुण्यं भस्मीभवति नान्यथा ॥ अन्येषां दीयते दानं स्वल्पं वा यदि वा बहु ॥ ६० ॥ वृथा भवति वै पूर्वं ब्रह्मविष्णुशिवैः स्मृतम् ॥ तस्य देवा न गृह्णन्ति हव्यं कव्यं च पूर्वजाः ॥ ६१ ॥ वञ्चयित्वा निजान्विप्रानन्येभ्यः प्रददेत्तु यः ॥ तस्य जन्मार्जितं पुण्यं भस्मीभवति तत्क्षणात् ॥ ६२ ॥ ब्रह्मविष्णुशिवैश्चैव पूजिता ये

ब्राह्मणों को छोड़कर पराये कुटुम्बों को मानता है ॥ ५९ ॥ उसका पहले किया हुआ पुण्य भस्म होजाता है अन्यथा नहीं होता है और अन्य लोगों को थोड़ा या बहुत जो दान दियाजाता है ॥ ६० ॥ वह वृथा होजाता है ऐसा ब्रह्मा, विष्णु व शिवजी से कहागया है और पूर्वज पितरलोग उसके हव्य व कव्य को नहीं ग्रहण करते हैं ॥ ६१ ॥ और अपने ब्राह्मणों को छलकर जो अन्यलोगों के लिये दान देता है उसका जन्म में इकट्ठा कियाहुआ पुण्य उसी क्षण भस्म होजाता है ॥ ६२ ॥ ब्रह्मा, विष्णु

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

व शिवजी से जो ब्राह्मण पूजेगये हैं उनसे जो विमुख होते हैं वे रौरव नरक में बसते हैं ॥ ६३ ॥ और जो चंचलता से कुल का आचार व गोत्र का आचार लोप करता है और जो मोहित मनुष्य अपने आचार को नहीं करता है ॥ ६४ ॥ उसका सब नाश होजाता है और उसी क्षण भस्म होजाता है इस लिये सब कुल का आचार व स्थान का आचार ॥ ६५ ॥ और गोत्र का आचार धन के अनुसार पालन करनेयोग्य है हे राजन् ! इसप्रकार तुमसे प्राचीन धर्मारण्य कहागया ॥ ६६ ॥ सतयुग में ब्रह्मा, विष्णु व शिवादिकों से धर्मारण्य स्थापित कियागया है और त्रेता में सत्यमन्दिर व द्वापर में वेदभवन और कलियुग में मोहेरक कहागया है ॥ ६७ ॥ ब्रह्माजी बोले

द्विजोत्तमाः ॥ तेषां ये विमुखाः शूद्रा रौरवे निवसन्ति ते ॥ ६३ ॥ यो लौल्याच्च कुलाचारं गोत्राचारं प्रलोपयेत् ॥ स्वाचारं यो न कुर्वीत कदाचिद्वै विमोहितः ॥ ६४ ॥ सर्वनाशो भवेत्तस्य भस्मीभवति तत्क्षणात् ॥ तस्मात्सर्वः कुलाचारः स्थानाचारस्तथैव च ॥ ६५ ॥ गोत्राचारः पालनीयो यथावित्तानुसारतः ॥ एवं ते कथितं राजन्धर्मारण्यं पुरातनम् ॥ ६६ ॥ स्थापितं देवदेवैश्च ब्रह्मविष्णुशिवादिभिः ॥ धर्मारण्यं कृतयुगे त्रेतायां सत्यमन्दिरम् ॥ द्वापरे वेदभवनं कलौ मोहेरकं स्मृतम् ॥ ६७ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ य इदं शृणुयात्पुत्र श्रद्धया परया युतः ॥ धर्मारण्यस्य माहात्म्यं सर्वकिल्बिषनाशनम् ॥ ६८ ॥ मनोवाक्कायजनितं पातकं त्रिविधं च यत् ॥ तत्सर्वं नाशमायाति श्रवणात्कीर्तनात्सकृत् ॥ ६९ ॥ धन्यं यशस्यमायुष्यं सुखसंतानदायकम् ॥ माहात्म्यं शृणुयाद्वत्स सर्वसौख्याप्तये नरः ॥ ७० ॥ सर्वतीर्थेषु यत्पुण्यं सर्वक्षेत्रेषु यत्फलम् ॥ तत्फलं समवाप्नोति धर्मारण्यस्य सेवनात् ॥ ७१ ॥ नारद उवाच ॥ धर्मारण्यस्य

कि हे पुत्र ! बड़ी श्रद्धा से संयुत जो मनुष्य सब पातकों को नाशनेवाले धर्मारण्य के इस माहात्म्य को सुनता है ॥ ६८ ॥ उसका मन, वचन व शरीर से उपजाहुआ जो तीन प्रकार का पाप होता है वह सब एक बार सुनने व कहने से नाश को प्राप्त होता है ॥ ६९ ॥ हे वत्स ! धनदायक व यशदायक तथा सुख व संतान को देनेवाले माहात्म्यको सब सुखों के मिलने के लिये मनुष्य सुनै ॥ ७० ॥ सब तीर्थों में जो पुण्य होता है व सब क्षेत्रों में जो फल होता है उस फलको मनुष्य धर्मारण्य के सेवन से प्राप्त होता है ॥ ७१ ॥ नारदजी बोले कि धर्मारण्य का जो माहात्म्य है वह तुम्हारे मुख से सुनागया और जहां धर्मबावली में धर्मराज ने कठिन

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding:IKS-MoE
Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

तप कियाहै ॥ ७२ ॥ उस क्षेत्र की महिमा को मैंने तुमसे सुना तुम्हारा कल्याण होवै मैं धर्मारण्य को देखने की इच्छा से जाऊंगा ॥ ७३ ॥ हे चतुर्मुख ! तुम्हारे वचनरूपी जलके प्रवाह से मैं पवित्र होगया ॥ ७४ ॥ व्यासजी बोले कि हे पाण्डुनन्दन ! यह सब कथानक कहागया जिसको सुनकर मनुष्य गोसहस्र का फल पाता है ॥ ७५ ॥ और पुत्ररहित मनुष्य पुत्रों को पाता है व निर्धनी धनवान् होता है और रोगी रोग से छूटजाता है व बँधुवा मनुष्य बन्धन से छूटजाता है ॥ ७६ ॥ और विद्यार्थी कर्म को साधन करनेवाली उत्तम विद्या को पाता है और उसको तीर्थयात्रा का फल होता है व करोड़ कन्यादान के फल को पाता है ॥ ७७ ॥ व हे नरोत्तम ! जो स्त्री या

माहात्म्यं यच्छ्रुतं त्वन्मुखाम्बुजात् ॥ धर्मवाप्यां यत्र धर्म्मस्तपस्तेपे सुदुष्करम् ॥ ७२ ॥ तस्य क्षेत्रस्य महिमा मया त्वत्तोऽवधारितः ॥ स्वस्ति तेऽस्तु गमिष्यामि धर्मारण्यदिदृक्षया ॥ ७३ ॥ तव वाक्यजलौघेन पावितोऽहं चतुर्मुख ॥ ७४ ॥ व्यास उवाच ॥ इदमाख्यानकं सर्वं कथितं पाण्डुनन्दन ॥ यच्छ्रुत्वा गोसहस्रस्य फलं प्राप्नोति मानवः ॥ ७५ ॥ अपुत्रो लभते पुत्रान्निर्द्धनो धनवान्भवेत् ॥ रोगी रोगात्प्रमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात् ॥ ७६ ॥ विद्यार्थी लभते विद्यामुत्तमां कर्मसाधनाम् ॥ तीर्थयात्राफलं तस्य कोटिकन्याफलं लभेत् ॥ ७७ ॥ यः शृणोति नरो भक्त्या नारी वाथ नरोत्तम ॥ निरयं नैव पश्येत्स एकोत्तरशतैः सह ॥ ७८ ॥ शुभे देशे निवेश्याथ क्षौमवस्त्रादिभिस्तथा ॥ पुराणपुस्तकं राजन्प्रयतः शिष्टसंमतः ॥ ७९ ॥ अर्चयेच्च यथान्यायं गन्धमाल्यैः पृथक्पृथक् ॥ समाप्तौ नृप ग्रन्थस्य वाचकस्यानुपूजनम् ॥ ८० ॥ दानादिभिर्यथान्यायं सम्पूर्णफलहेतवे ॥ मुद्रिकां कुण्डले चैव ब्रह्मसूत्रं हिरण्मयम् ॥ ८१ ॥ वस्त्राणि च विचित्राणि गन्धमाल्यानुलेपनैः ॥ देववत्पूजनं कृत्वा गां च दद्यात्पय

पुरुष भक्ति से इसको सुनता है वह एक सौ एक पुश्तियों समेत नरक को नहीं देखता है ॥ ७८ ॥ व हे राजन् ! सज्जनों से संमत पवित्र मनुष्य पुराण की पुस्तक को उत्तम स्थान में धरकर रेशमी वस्त्रादिकों से ॥ ७९ ॥ और अलग २ चन्दन व मालाओं से यथायोग्य पूजन करै व हे राजन् ! ग्रंथ की समाप्ति में बांचनेवाले को पूजै ॥ ८० ॥ और संपूर्ण फल के लिये यथायोग्य दानादिकों से पूजै और मुंदरी व कुंडल और सुवर्ण का यज्ञोपवीत देवै ॥ ८१ ॥ और विचित्र वस्त्रों को देवै व चन्दन,

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow
CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri

माला और अनुलेपनों से देवता के समान पूजन कर दूधवाली गऊ को देवै ॥ ८२ ॥ इस प्रकार विधि से धर्मारण्य की कथा को सुनकर मनुष्य धर्मारण्य के निवास का फल पाता है इसमें सन्देह नहीं है ॥ ८३ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे धर्मारण्यमाहात्म्येदेवीदयालुमिश्रविरचितायां भाषाटीकायांधर्मारण्यनिवासिव्यवस्थावर्णनपूर्वक धर्मारण्यश्रवणमाहात्म्यवर्णनंनामचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

स्विनीम् ॥ ८२ ॥ एवं विधानतः श्रुत्वा धर्मारण्यकथानकम् ॥ धर्मारण्यनिवासस्य फलमाप्नोत्यसंशयम् ॥ ८३ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे धर्मारण्यमाहात्म्ये धर्मारण्यनिवासिव्यवस्थावर्णनपूर्वकधर्मारण्य श्रवणमाहात्म्यवर्णनंनाम चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

इति धर्मारण्यमाहात्म्यं समाप्तम् ॥

दो० । श्रीगणेश के पदकमल, युग को करिकै ध्यान । धर्मारण्यमहात्मकर, तिलक कियो सुखदान ॥ १ ॥

पढ़ै सुनै प्रत्येक दिन, जो याको चित लाय । ताकोधनअरुधान्यसब, मिलत बहुत सरसाय ॥ २ ॥

प्रथम बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेख़ाने में छपा ॥

CC-0. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow